साखी भावार्थ प्रकाश

टीकाकार

स्वामी कृष्णानन्द आचार्य

प्रकाशक

जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर

श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः

साखी भावार्थ प्रकाश

प्रकाशक : जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर

द्वितीय संस्करण : 2018, वि. सं. - 2075

मूल्य : /-

ISBN : 978-93-83415-19-9

© : लेखकाधीन

-: मुद्रक :-

Sakhi Bhavarth Parkash By
Swami Krishnanand Acharya
Pages :

भूमिका

मानव संवेदनशील प्राणी है। सुख दु:ख का अनुभव करता हुआ जीता है। कभी सुखकारक वृति बनती है, दूसरे ही क्षण में दुखात्मक वृत्ति उत्पन्न हो जाती है। सुख दुख का हेतु बाह्य विषयों को ठहराता है किन्तु वास्तविक हलचल तो अन्दर ही पैदा होती है। हलचल पैदा करने में कोई व्यक्ति विशेष या वस्तु कारण हो सकती है।

मानव सदा ही सुख की खोज में प्रयत्नशील रहा है। यही मानव की प्रथम आवश्यकता भी है। वह सुख चाहे कहीं से किसी भी प्रकार से मिले परन्तु मिलना अवश्य ही चाहिये। सुख प्राप्ति के अनेकों उपाय मानव नें सृजन किये है। उनमें एक उपाय संगीत कला भी है। संगीत कला का इतिहास भी मानव के साथ ही जुड़ा हुआ है। इस कला से आनन्द लेने वाले के लिये कोई ऊंच-नीच, गरीब-धनवान, छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं है। अपनी-अपनी भाषा देश काल के अनुसार सभी ने अपने-अपने गीत गाये है। अपनी मातृभाषा और अपने ही तर्ज पर गाये जाने वाले गीत ही अच्छे लगते है। उनमें भी यदि यन्त्रों का संगम हो तो कहना ही क्या है।

अनेक साहित्य विधाओं में जाम्भाणी साहित्य भी अपनी विशेष पहचान बनाये हुए है। सोलहवीं शताब्दी में अनेक कवि हुए है जिन्होनें उच्चकोटि के भक्ति काव्य की रचना की है। गुरु जम्भेश्वर जी ने स्वाभाविक रूप से सबदवाणी कही तथा उससे आगन्तुक श्रोता पर गहरा प्रभाव पड़ा था। सबदवाणी में भले ही छन्द, रस, अलंकार का विशेष ध्यान नहीं रखा गया परन्तु जो बात कही गई वह गहराईयों को छूती हुई बहुत ही असरदार एवं महत्त्वपूर्ण थी।

जाम्भोजी के शिष्य बिश्नोई कवियों ने भी अपनी कला कौशल तथा भक्ति भाव का प्रदर्शन, साखियों, हरजस, छन्द तथा आख्यान कथाओं द्वारा किया है। यह कार्य जाम्भोजी के विद्यमानता में ही प्रारम्भ हो गया था। उन साखी, आरती, हरजसों को हजूरी रचना के नाम से कहा जाता है। उन हजूरी कवियों में विशेष रूप से चारण कवि, उदोजी नैण तथा अन्य कुछ ज्ञात-अज्ञात कवि आते है। उन्होनें जो कुछ भी कहा या लिखा वह बहुत ही महत्वपूर्ण तथा यथार्थ रचना है। जैसा भी उन्होनें अपनी आंखों से देखा था वही तो कहा था।

वे कवि लोग तो इस समय विद्यमान नहीं है किन्तु उनकी साक्षी अर्थात् साखियां तो अब भी विद्यमान है।

जाम्भोजी के उत्तरवर्ती भी अनेक कवि हुए है जिनमें वील्होजी, केशवजी, सुरजनजी, हरजी, परमानन्दजी, गोकुलजी, साहबरामजी आदि प्रमुख है। इन्होनें जाम्भाणी साहित्य की अभिवृद्धि की है। साहित्य की अनेक विधाओं में ये पारंगत थे।

जागरण, सत्संग आदि अनेक शुभ अवसरों पर ये साखियां तभी से गायी जा रही है। कहा भी है-तीसरी आरती कंठ सुर गावै, नवधा भक्ति प्रभु प्रेम रस पावै। कंठ तथा सुर से साखियों शब्दों का गायन करना भी नौ प्रकार की भक्ति में एक भक्ति है। गायन करने से प्रभु में प्रेम बढ़ता है। गायन कर्ता एवं श्रोता को आनन्द की अनुभूति होती है। वह प्रेम रस ही प्रभु की प्राप्ति का स्वाद है।

गायन विद्या का बहुत ही महत्त्व रहा है अनेक कवियों, राग-रागनियों में छन्द गाये जाते है। जाम्भाणी साहित्य में भी इन साखियों के गायन की एक विशिष्ट विद्या है। ऐसी दुर्लभ ध्वनि अन्यत्र कहीं भी प्राप्य नहीं है। अर्ध सहस्र वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी अपनी विशेषता लिये हुए जाम्भाणी साहित्य चल रहा है। यहां पर परम्परा से राग गायन विद्या सीखते चले आ रहे है। सभी साखियों हरजसों में छन्द, लय आदि का पूर्णतया निर्वाह हुआ है। इनमें केवल राग रागनियां ही नहीं है। साखियों का विषय भी बड़ा ही गहन है। आध्यात्मिक, सामाजिक, भक्तिभाव, ब्रह्मज्ञान, योगसाधना आदि पर विचार गहनता से हुआ है। पाखण्डों का खण्डन, आचार-विचार की शुद्धता, उनतीस नियमों की व्याख्या तथा उनके पालन करने की चेतावनी जीवरक्षा तथा हरे वृक्षों की रक्षा करते हुए बलिदान होने वाले धर्मवीरों का इतिहास तथा गुरु जाम्भेश्वर जी को विष्णु रूप से स्वीकार करते हुए उनकी स्तुति, स्वर्ग मोक्ष प्राप्ति के उपाय, गुरुदेव तथा विश्नोईयों के स्वरूप का वर्णन, इत्यादि विषयों पर विचार इन साखियों में हुआ है। तत्कालीन वेषभूषा, रहन-सहन, पहनावा आदि पर भी व्यापक रूप से विचार हुआ है। यह सभी हमें इन साखियों से प्राप्त होता है।

उस समय जो कुछ भी इतिहास या वर्तमान के सम्बन्ध में लिखा जाता था वह सभी कुछ पद्य शैली में ही लिखा जाता था। अब तक साखियों की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। सर्वप्रथम श्री रामदास जी ने "साखी संग्रह प्रकाश" नाम से पुस्तक का प्रकाशन करवाया था। उसके पश्चात्

स्वामी विवेकानन्दजी ने ''जाम्भाणी साखी संग्रह'' के नाम से पुस्तक प्रकाशन करवायी थी तथा सन्त श्री कनिरामजी ने भी एक पुस्तक ''जम्भ हरिजस-साखी संग्रह'' प्रकाशित करवायी थी। किन्तु अब तक हिन्दी अर्थ सहित कोई पुस्तक प्रकाशन में नहीं आयी है। इसकी पूर्ति के लिये साखियों का हिन्दी भावार्थ करने का मैनें यह प्रयत्न किया है।

वस्तुत: इन साखियों की भाषा ज्यादा कठिन नहीं है बहुत ही सरल एवं स्वाभाविक है, फिर भी आधुनिक समय को देखते हुए हिन्दी भाषा में रूपान्तर करना जरूरी हो गया है इसलिये यह मेरा प्रयत्न है।

जागरणों में परंपरा से ये साखियां गायी जाती है तथा इनका हिन्दी भाषा में अर्थ भी अनिवार्य होता है। कुछ लोग मरूभाषा को नहीं जानते वे भी इन साखियों का लाभ उठा सके इसलिये यह प्रयास किया गया है। कुछ समय से यह मांग आ रही थी कि क्यों न शब्द वाणी की भांति साखियों का अर्थ भी किया जावे ताकि प्रत्येक के लिये इनका अर्थ समझना सुलभ हो सके।

मैनें आप सभी की प्रेरणा से यह महत्त्वपूर्ण कार्य करना प्रारम्भ किया था प्रभु परमात्मा की अनुकम्पा से तथा आप लोगों की सद्भावना से यह कार्य अतिशीघ्र ही पूर्ण हो गया इसमें कुछ भी त्रुटि रह गई हो तो आप मुझे क्षमा करें तथा कृपा करके अवगत करवायें ताकि आगामी प्रकाशन में भूल सुधार की जा सके। मैं आपका बहुत ही आभारी रहूंगा।

प्रथम संस्करण का प्रकाशन विद्याभूषण जी एडवोकेट बिजनौर निवासी ने करवाया था वे भी इस परिश्रम तथा धन द्वारा साध्य कार्य के लिये धन्यवाद के पात्र है। यह द्वितीय संस्करण ''जाम्भाणी साहित्य अकादमी'' के द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। अकादमी के साथ तन-मन-धन से जुड़े हुए हमारे सभी सदस्य तथा पदाधिकारीगण तथा अन्य सभी का धन्यवाद करता हूं। जिन्होनें इस कार्य के लिये मुझे सबल प्रदान किया है।

लेखन कार्य करना एक कला है जो परिश्रम साध्य है। यह परिश्रम मैनें किया है तथा केवल परिश्रम से ही कार्य नहीं हो पाता यह परिश्रम पाठकों तक पहुंचाया नहीं जा सकता। आप लोगों तक पहुंचाने के लिये धन की भी आवश्यकता होती है। जिसके पास धन है वे लोग साहित्य अभिवृद्धि में रूचि नहीं लेते है और जिसके पास धन का अभाव है वे कुछ भी नहीं कर सकते । इस पूनीत कार्य में

यदि कुछ अपनी कमाई का भाग लग जाये तो पुण्य का ही कार्य होगा।

आप लोगों के सहयोग एवं सद्‌भावना से यह पुस्तक आपके सामने है आप लोग इसका पठन-पाठन करें यही इसका फल है।

जाम्भाणी साहित्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातें-

1. मूल प्रकाशित पोथो ग्रन्थ ज्ञान, सबदवाणी, जम्भसागर, जाम्भा पुराण एवं साखी भावार्थ प्रकाश की पुस्तक ये पांच मिलाकर जाम्भाणी साहित्य पूर्ण हो जाता है।

2. मूल हस्तलिखित साहित्य से ये तीनों ग्रन्थ संकलित है, मूल-प्रमाण रूप से समाज के पास उपलब्ध है।

3. परमानन्द जी का प्रथम तथा वृहद् पोथो संग्रह अप्राप्त है उनमें कुछ रचनाऐं अप्राप्त है। हजुरी कवियों के छन्द तथा परमानन्द जी द्वारा लिखित साका।

4. यहां इस पुस्तक में 151 साखियां 11 छन्द दिये गये है जिनका भावार्थ सरल हिन्दी भाषा में किया गया है।

5. निवेदन है कि पाठक मूल साखियों को ही पढ़ें, जो मूल में पढ़ने से तथा गाने से आनन्द आयेगा वह अनुवाद में नहीं है। जहां कहीं मूल समझ में नहीं आये वहीं भावार्थ पढ़ें।

6. जांभोजी के समकालीन कवियों के द्वारा रचित साखियों को हजूरी कहा गया है।

7. साखी का अर्थ प्रमाण होता है ये साखियां ही ''जाम्भोजी हुए थे'' यह प्रमाणित करती है।

8. साखी छन्दां की तथा कणां की दो तरह से वर्णन हुआ है। छन्दों की साखियां अधिकतर ऐतिहासिक है वर्णनात्मक है तथा कणां की कण तत्व को बतलाने वाली दोहा के रूप में है और छन्दां की छन्द यानि छः लाइनों में एक छन्द होता है उसी रूप में है। ये सभी साखियां आरतियां भिन्न-भिन्न राग-रागनियों में गेय है।

आपका
कृष्णानन्द आचार्य
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
मो. 09897390866

संत कवियों द्वारा रचित साखियों एवं कवियों का विवरण

क्र.सं.	कवि नाम	पृष्ठ सं.
1.	तेजोजी चारण	22
2.	समसदीन जी	25
3.	आंछरे जी	29
4.	सुरजन जी	31
5.	शिवदास जी	34
6.	अभियादीन	37
7.	जोधो रायक	39
8.	केशोजी देहड़ू	41
9.	लालचन्द नाई	43
10.	आसनोजी	46
11.	अज्ञात कवि	49
12.	ऊदोजी नैण	74
13.	रायचंद सुथार	110
14.	अज्ञात कवि	122
15.	समसदीन	126
16.	दीप	131
17.	पदम	133
18.	सुरंदी	136
19.	केशोजी	137
20.	नागिन	140
21.	कूलचंद	141
22.	रेड़ोजी	146
23.	वाजिंद	149
24.	लखमण गोदारा	152
25.	आलम	155
26.	रैदास धतरवाल	166
27.	भीवराज	169

28.	गुणदास	172
29.	लाखाराम	174
30.	वील्होजी	176
31.	केशोजी गोदारा	200
32.	सुरजन जी पूनियां	234
33.	माखन जी	253
34.	रामूजी खोड़	254
35.	गोकुल जी	257
36.	हीरानन्द जी	268
37.	हरजी वणियाल	282
38.	दामोजी	299
39.	परमानन्द जी	304
40.	ऊदोजी अड़िंग	313
41.	गोविन्दराम जी	327
42.	साहबराम जी	333
43.	कुम्भाराम जी	336
44.	जगदीशराम जी	337
45.	हरियो	340
46.	रामकरण पूनियां	352

वर्णानुक्रम विषय सूची

क्र.सं.	साखी	पृष्ठ सं.
1.	अब जे चालो रे लाल मधुकर जी	164
2.	अहरण नांही हथोड़ा नांही	99
3.	अंतरजामी आत्मा गर्भ	251
4.	अलमे रो खरौ उमाहीयड़ो	126
5.	आवो मिलो जुमले जुलो	41
6.	आवो मिलो साधो मोमणो – साच सिदक	155
7.	आखर आखर लेखो मोमिणो	67
8.	आतम गंग न्हावो भाई	336
9.	आछै लागै महाराज दर्शन	339
10.	आवो जमो साधो सेवगो	307
11.	आओ मिलो जुमलौ करो	155
12.	आओ मिलो साधो मोमणो रल मिल	318
13.	आओ मिलो साधो मोमणो देखो जुमले री	337
14.	आग्यम जी अग्यान कृत	124
15.	उतर दिसा दोय मोमण आया	294
16.	एक मिलंता दोय मिले	104
17.	ऐसी सींचो बाड़ी सूख न जाई	199
18.	ओ जपिया रे जी भाई	301
19.	ओदरवास लियो मेरा जीयौ	243
20.	अब चलिये जां रे	162
21.	ओ गुरु आयो झांभराज देव	75
22.	ओ निज तीरथ तालवो जोत	203
23.	काया तो मोमण	88
24.	कलयुग किसन पधारे	217

25.	कलजुग तीरथ थापियो	110
26.	कलिमा कलम फिरि अब	157
27.	कलु देवजी चिरत बखाण	302
28.	करमणी चलणो इह	187
29.	कपिल सरोवर नाम	328
30.	कांगणा मेरे बाले श्री रंग	132
31.	कांय सखी तेरो मोमड़ो वेश	119
32.	गुरु की कथनी जुल्या मेरा बाबा	78
33.	गिरधर गोकुल आव	313
34.	गुरु तार बाबा	177
35.	गुरु जम्भेश्वर अवतार लियो–सर्वधर्म	112
36.	गुरु पूरो दातार	83
37.	गुरु कायमां दिवलो दीन दिल–हुइयो परदेशी	53
38.	घरि क्यूं न आवो प्रभु मेरे	134
39.	जग में तो दातार बड़ो रे (प्राणियां)	319
40.	जन्म हारवै दीन विगूता	193
41.	जां दिन संत मिले मेरा जीयो	221
42.	जागो जागो जम्बूदीपे	142
43.	जां दिन हंस चले	72
44.	जागो मोमणो नां सोवो	101
45.	जां थलियां देवजी भंवरो	254
46.	जीव के काजै जुमलै	200
47.	जीवड़ा जप जगदीश	212
48.	जीवला जी धन्य महुरत्य	140
49.	जीहो मिलो जमाति अरू गुरु	172
50.	जीवला जम्भ अचम्भो	147

51.	जिभिया जपले जम्भ	253
52.	जुमलै आवो गुरु भाइयों	31
53.	जुगमां जलम लियो मेरा	70
54.	जुमले जुल कै जाविये	93
55.	जुग जागो जम्भेश्वर राजा	223
56.	जुल्य चालो रे मेरा भाइया	138
57.	जोड़ो कालंग साथ विष्णु	174
58.	झड़कर बूठो भाव	249
59.	तरण तारण आयो	61
60.	तारण हार थला सिर आयो	16
61.	तैतीसां प्रतिपाल	257
62.	दीन जागो दीने जागो	95
63.	दीन मीठो मेवो	37
64.	दिल चंगा मन्य चांदिया	136
65.	देवतणी परमोध में	291
66.	देश पिछ्म रे गरज करै	247
67.	दोय तरवर इह बाग मैं	92
68.	निश दिन श्वांस घटै	323
69.	नरसिंह नर मुलतान	334
70.	नारायण नांव अनन्तो	91
71.	पन्द्रहा सौ अवतार लियो	239
72.	परम भगत पहलाद	333
73.	पतवो लिख दे	160
74.	पहले पहरे रैणिका विणजारियां	167
75.	पहले मेले की मांड हुई सोलह सै	183
76.	पण पालण पिसणां गंजण (साखी खेजड़ली की)	260

77.	पायल घड़दै सुघड़ सुनारा	106
78.	फिटि रे फिटि नर	289
79.	बाबै आप लियो अवतार	205
80.	बाबो आवियो आदि विष्णु	310
81.	बाबो आपै उपन्या आप	308
82.	बाबो सांभल जैसे बागड़ देश	181
83.	बाजै बाजै रे मादलिया	86
84.	बाबो जम्बुदीपे परगटियो (उमाहो)	195
85.	बाबो मिलियो त्रिभुवण तार	236
86.	बूचो बारा करोड़ में	225
87.	भगवंत आय भली बुध देवै	339
88.	भणो गुणो गुणवंतो देव	179
89.	महिपत मच्छ अवतार	277
90.	मन सो बूरो न कोय	284
91.	मेरा मन सौदागर	117
92.	मेरा लाल नै ऐसो हरजी	46
93.	मन को बुरो सुभाव	282
94.	म्हारे गुरु के पंथ नी जु चल्या	297
95.	मीठा तो बोलो भाइयो	27
96.	मिनखा जलम मिले मेरा	305
97.	मिनखा देही है अणमोली	315
98.	मेलो कर मोटा धणी	228
99.	मेधा नाम वैकुण्ठ	330
100.	मेरी आंखियां फरूके जी	57
101.	मेरे कानां आवाज हुई	114
102.	मेरे मन हुवो हुलास	29

103.	मेल्ह बाजोट खुवास बुलाया	340
104.	मैं गुरु पैख्यां मेरी माय	65
105.	मैं तो म्हारो श्याम सपीहर	81
106.	राजा बलि के द्वार	279
107.	रे मन मेरा ना कर मुकेरा	202
108.	रे गुरु भाई मानो विष्णु सगाई	234
109.	रे मन रांति तेरी पांति	171
110.	रे विणजारा न कर पसारा	169
111.	रे मन मीठा लोभ पईठा	55
112.	रे मन मुरख नेहचो तूं रख	288
113.	लाडै गौरी वर	130
114.	लोहट तणी जे लाज	271
115.	विष्णु विसार मत जाइरे प्राणी	19
116.	विष्णु विष्णु बखाण	245
117.	विसन विसन भणंतो	299
118.	विज्ञानी आतम थकै	189
119.	सत्य सुपन्तर दीठड़ा	122
120.	सहस्र नाम संभाल	316
121.	सदा न संग सहेलियां	149
122.	सही विसवा वीस	274
123.	सरस हिंडोलणो	268
124.	साधे मोमणे कीयो छः	49
125.	साधो सिंवरो सिरजणहार	208
126.	सांभल सांभल पदमण मांय	144
127.	साधो नारायण नांव अनंत	91
128.	सतगुरु दरसण म्हे जास्या	338

129.	सतगुरु आयो मोमणो	59
130.	सतगुरु वाचा क्यो सरै	241
131.	संतो सिवरो सिरजणहार	210
132.	समराथल आयो श्याम	152
133.	सतगुरु साहिबा सिरजण	137
134.	सतगुरु किरपा करी मेरा–केवल ज्ञान बतायो	321
135.	साधो भाई ऐसा देस हमारा	337
136.	सार हंस राजा होजी	39
137.	सिंवरो उतम रो राव	25
138.	सिवरो सतगुरु श्याम आयो	107
139.	सिले पछिम रे देश	214
140.	सिवरो सिरजणहार	219
141.	सुण मन भाई कहूं	336
142.	सेवगा सतगुरु बूझियो	324
143.	सांई राजा जुग दातार	34
144.	श्याम सिधारै चिलत कियो	115
145.	सौ दिन लिख दे रे जोयसी	43
146.	सौ दिन हरि की भगती	314
147.	हटवारे हलचल हुवो	231
148.	हम परदेशिया	97
149.	आरती	344
150.	छन्द	350
151.	साखी–रामकरण पुनियां	352

"श्री विष्णवे नम:"

दोहा-मंगलाचरण

अज्ञ अंधेरी रात थी, नहीं सूझत स्वगात।
मरूस्थल हि दिव्य वृज में, प्रगटे नन्द प्रभात।।१।।
पींपासर एक गांव है, लोहट क्षत्रिय पंवार।
हांसा थी घरे लक्ष्मी, वास करत सो बार।।२।।
कुं कुं चरण पंकज वदन, जन-जन के आराम।
दिव्य रूप अस देव को, लोहट किया प्रणाम।।३।।
बाल्य लीला को देख हि, सिंह बकरी का खेल।
कर्ण वेध किसनें किया, सात वर्ष में फेल।।४।।

गोधन उत्तम देश में, विपुल रूप आधार।
पंच गव्य के ग्रहण से, हो जावे भवपार।।१।।
गोधन कूं संवर्धन किया, पींपासर में आय।
दूदा कूं परचा दिया, सैनी से गउ पाय।।२।।
ग्वाल बाल संग रम रहे, बाल्य रूप भगवान।
लुकमींचण के खेल में, पहुंचे सकल जहान।।३।।
जाम्भ विष्णु कछु भेद नहीं, सब जग करत प्रणाम।
गोपालक सिद्ध बाल है, कृष्ण यति घनश्याम।।४।।

गोचारण के काल कूं, बीते बीस अरू सात।
पन्दरासै बंयालीस में, प्रगटे पन्थ विख्यात।।१।।
भगवी टोपी धार के, भग्न किये बहु पाप।
सम्भराथल तप पूत में, आन विराजे आप।।२।।
जंगल में मंगल किया, होय रह्या उछव।
साखी हरिगुण गावते, आये जति जन सब।।३।।
नियम बीस नव धार के, पहुंचे पद निर्वान।
साखी अर्थ कूं मैं चहूं, जाम्भेश्वर भगवान।।४।।

संस्कृत में साक्षी शब्द को ही बोलचाल की मरूभाषा में साखी कहते है। इनमें कुछ साखियां तो गुरु जाम्भेश्वर जी की विद्यमानता में ही गुरु देव

को लक्ष्य करके कही गई है तथा कुछ साखियों की रचना उतर काल में हुई है। यहां पर सर्वप्रथम हम उन अज्ञात कवियों की प्रसिद्ध साखियों का भावार्थ प्रस्तुत कर रहे है। उस समय के प्रत्यक्ष दृष्टा तथा यथार्थ वक्ता थे। गुरुदेव का दर्शन तथा शब्द श्रवण करके अपने को धन्य मानते हुए किसी सन्त हृदय महापुरुष ने लोगों को सचेत करते हुए तथा सम्भराथल पर चलने का आह्वान करते हुए कहा है।

साखी-1

तारण हार थलासिर आयो, जे कोई तिरै सो तिरियो जीवने।टेर।
जे जीवड़ै रो भलपण चाहो, सेवा विसन जी री करियो।१।
मिनखा देही पड़ै पुराणी, भले न लाभै पुरियो।२।
मत खीण्य जुण्य पड़ पुंणेरी, वले नै लहिस्यो परीयो।३।
अड़सठ तीर्थ एक सुभ्यागत, घर आये आदरियो।४।
देवजी री आस विसन जी री संपत, कूड़ी मेर न करियो।५।
उनथ नाथ अनवी निवाया, भारथ ही अण करियो।६।
रावां सुं रंक रंके राजिन्दर, हस्ती करै गाडरियो।७।
उजड़ बासा बसै उजाड़ा, शहर करै दोय घरियो।८।
रीता छालै छला रीतावै, समंद करै छिलरियो।९।
पाणी सूं घृत कुड़ी सूं कुरड़ा, सो घीता बाजरियो।१०।
कंचन पालट करै कथिरो, खल नारेलो गिरियो।११।
पांचा कोड़्या गुरु पहलादो, करणी सीधो तिरियो।१२।
हरिचन्द राव तारा दे राणी, सत सूं कारज सरियो।१३।
काशी नगरी मां करण कमायो, साह घर पाणी भरियो।१४।
पांचू पाण्डू कुंतादे माता, अजर घणे रो जरियो।१५।
सत के कारण छोड़ी हथनापुर, जाय हिमालय गरियो।१६।
कलियुग दोय बड़ा राजिन्दर, गोपीचन्द भरथरियो।१७।
गुरु वचने जो गूंटो लियो, चूको जामण मरियो।१८।
भगवी टोपी भगवी कंथा, घर-घर भिखीया नै फिरियो।१९।
खांडी खपरी लै नीसरियो, धोल उजीणी नगरियो।२०।
भगवी टोपी थलसिर आयो, ओ गुरु कह सो करियो।२१।

भावार्थ-जन साधारण को सचेत करते हुए कवि कहता है कि संसार सागर से

पार उतारने के लिये सम्भराथल पर स्वयं विष्णु अवतार धारण करके आये है। उनका यहां आने का मात्र प्रयोजन यही है। यदि कोई संसार सागर से मुक्ति चाहता है तो सम्भराथल पहुंचे और जाम्भोजी की शरण ग्रहण करें।१। यदि जीवात्मा का उद्धार चाहते है तो सम्भराथल पहुंचे और वहां जाकर स्वयं विष्णु की सेवा करें। श्रद्धा से नम्र होकर उनके शब्द श्रवण करें, यही उनकी सेवा होगी।२। यह मानव देह मिली है किन्तु इस बार अवसर चूक गये तो फिर बार-बार मौका नहीं मिलेगा। क्योंकि विरखे पान झड़े झड़ जायेला ते पण तई न लागूं "शब्द" यह शरीर ही एक नगरी है, इसमें बैठा हुआ जीवात्मा सुख सुविधा सम्पन्न है दूसरे शरीरों में ऐसी सम्पन्नता कहां है? इसलिये महत्वपूर्ण है। कहा भी है-काया कोट पवन कुटवाली कुकर्म कुलफ बणायो।३। हिन्दू शास्त्रों में अड़सठ तीर्थ प्रसिद्ध है, जहां पर भी संत महापुरूष ने तपस्या की है उस भूमि तथा जल को पवित्र किया है उस जल में स्नान करने को ही तीर्थ कहते है। इन तीर्थो में स्नान करना जो बहुकष्ट तथा धन साध्य है जहां तक बराबरी का सवाल है वह अड़सठ तीर्थो में चाहे स्नान कर आओ चाहे घर आये हुए सुभ्यागत का आदर सत्कार करें ये दोनों ही बराबर है। श्रम, कष्ट तथा धन से सुभ्यागत का सत्कार करना सरल है और तीर्थो में स्नान करना दुष्कर है किन्तु पुण्य मे बराबर है। कहा भी है-अड़सठ तीर्थ हिरदा भीतर बाहर लोका चारूं। तथा कोई कोई गुरु मुखी बिरला न्हायो।४।। जो कुछ भी संसार में दृष्टि गोचर होता है वह सभी कुछ विष्णु परमात्मा की ही संपति है। यदि धन संपति चाहते है तो प्राप्ति की आशा केवल विष्णु से ही रखें वही दाता है, दुनिया तो सभी भिखारी है। तथा जो कुछ भी प्राप्त हो चुका है उसमें झूठा मेरापन न रखें, अन्यथा फंस जायेंगे।५। जिन्होनें झूठी मेर की है उन्हें परमात्मा ने झूकाया है उन्हें धर्म के मार्ग पर बैलों को हल चलाने की भांति नाथ डालकर चलाया है। उदाहरण स्वरूप-महाभारत जैसा युद्ध दुर्योधन की अहं भावना ही का परिणाम था। कहा भी है-तउवा माण दुर्योधन माण्या अवर भी माणत माणूं।६। समय परिवर्तनशील है। जो कभी राजा थे, उन्हें तो रंक बनते हुए देखा है और रंक से राजा बनते हुए देखा गया है। गुरुदेव ने कृष्ण चरित्र से महमदखां नागौरी के हाथी को भेड़ का बच्चा बना दिया था। यही सभी कुछ विष्णु के चरित्र से संभव हो जाता है।७। जहां पर कहीं उजाड़ था यानि मानव का नामोनिशान नहीं था वहां पर तो विष्णु की माया से

बड़े-बड़े शहर बस गये और जहां पर शहर थे वहां पर उजाड़ हो गया है। जहां पर मात्र दो ही घर थे वहां पर नगरी तथा जहां पर नगरी थी वहां पर केवल दो घर ही देखने में आते है। विष्णु की माया से असंभव को भी संभव होता देखा गया है।८। जहां पर खाली था वहां तो भर दिया जाता है और भरे हुए को खाली कर देते है। जहां पर समुद्र था वहां पर तो बालुकामय क्षण भर में हो जाता है। कहीं समुद्र का छिलरिया बना दिया गया है तो कहीं समुद्र लहरा रहा है। यही सभी कुछ विष्णु की माया से सम्भव हो सकता है।९। जल का घृत, तोड़ी गयी बाजरी पर पुन: सिटा लगा देना यह कोई जादूगर का खेल नहीं है। यह अनहोनी भी होनी कर देना विष्णु की ही करामात है। ऐसा चरित्र गुरुदेव ने रतने को दिखाया था।१०। स्वर्ण को पलट कर के कथीर कर देना और खलि को नारियल कर देना यह भी विष्णु चरित्र के अतिरिक्त होना असंभव है। ऐसा चरित्र गुरुदेव ने ऊदोजी नेण तथा गंगापार के बिश्नोइयों को दिखाया था।११। उन्हीं तारने वाले विष्णु परमात्मा की शरण ग्रहण करके जिन लोगों ने अपना तथा अपने साथ अपनी आज्ञाकारिणी प्रजा का उद्धार किया है उन्हें बतला रहे है।

सर्वप्रथम सतयुग में प्रहलादजी ने कर्त्तव्य कर्म का पालन करते हुए अपने साथ पांच करोड़ जीवों का उद्धार किया और आगामी युगों में भी अपने बिछुड़े हुए साथियों के उद्धार का वरदान नृसिंह भगवान से मांगा था उसी कड़ी में त्रेता में हरिश्चन्द्र एवं उनकी धर्म पत्नी तारा एवं रोहितास ये तीनों प्राणी सत्य की रक्षा करते हुए अपनी नगरी राज को छोड़कर काशी में जाकर कालू स्याह के घर बिक गये थे। नीच के घर चाकरी करना स्वीकार किया किन्तु सत्य को नहीं छोड़ा, उसी सत्य के बल पर अपने साथ अपनी प्रजा तथा त्रेतायुग का नेतृत्व करते हुए सात करोड़ का उद्धार किया यह भी विष्णु के वरदान से ही संभव हुआ था।१३-१४।

द्वापर युग में पांच पांडव तथा द्रोपती एवं कून्ती माता ने धर्म रक्षार्थ जरणा करी। वन वन में खाक छानते फिरे परन्तु धर्म को नहीं छोड़ा, अन्त में राज्य प्राप्त होने पर भी राज्य को छोड़कर हिमालय में जाकर शरीर को त्याग दिया किन्तु धर्म पर अटल रहे। इसी कारण से नौ करोड़ का उद्धार कर सके। द्वापर का नेतृत्व इन्होनें ही किया था।१६।

इस कलयुग में दो बड़े राजा हुए उन्हें गोपीचन्द और भरथरी के नाम

से जानते है। इन दोनों ने राज-पाट छोड़कर अपने जीव की भलाई के लिये गुरु की शरण ग्रहण की तथा चतुर्थ आश्रम संन्यास स्वेच्छा से ग्रहण किया। कहां तो राज-पाट सुख भोग थे और कहां गुरु द्वारा भगवीं टोपी और भगवां चोला पहनकर हाथ में खण्डित खपरी लेकर अपनी ही नगरी धोल तथा उज्जयिनी में घर-घर जाकर भिक्षा मांगी, स्वकीय कल्याणार्थ स्वाभिमान गिराना होगा तभी कल्याण का रास्ता खुल पाता है। कहा भी है-''क्रोड़ निनाणवै राजा भोगी गुरु के आखर कारण जोगी, माया राणी राज तजीलो गुरु भेंटीलो जोग संझीलौ।'' वही भगवान विष्णु ही गोरख गुरु की भांति भगवी टोपी धारण करके सौभाग्य से सम्भराथल पर आये हुए है तो अवश्य ही सम्भराथल पर पहुंचकर शरण ग्रहण करें।२१।

साखी-2

विष्णु बिसार मत जाइरे प्राणी, तो शिर मोटो दावो जीवनैं।टेर।
दिन-दिन आव घटंती जावै, लगन लिख्यो ज्यूं साहो जीवनैं।
काला केश कलाहल आयो, आयो बुग बधावो जीवनैं।
गढ़ पालटियो कांय न चेत्यो, घाती रोल भनावे जीवनैं।
ज्यों ज्यों लाज दुनि की लाजै, त्यौं त्यौं दाब्यो दावौ जीवनै।
भलियो हुवे सो करे भलाई, बुरियो बुरी कमावै जीवनैं।
दिन को भूल्यो रात न चेत्यो, दूर गयो पछतावो जीवनैं।
गुरू मुख मूरखा चढ़ै न पोहण, मन मुख भार उठावे जीवनैं।
धन को गरब न कर रे प्राणी, मत धणियां नें भावे जीवनैं।
हुकम धणी के पान भी डुबे, शिला तिर उपर आवे जीवनैं।
खीण्य ही मासौ खिण्य ही तोलौ, खिण्य वाय दो वावै जीवनै।
चावल उड़ेला तुस रहेला, को बाइन्दो बावे जीवनैं।
खिण एक मेघ मंडल होय बरसै, खिण बाइन्दो बावै जीवनैं।
खिण एक जाय निरन्तर बरसै, खिण एक आप लखावै जीवनैं।
खिण एक राज दियो दुर्योधन, लेता वार न लावे जीवनैं।
सोवन नगरी लंक सरीखी, समंद सरीखी खाई जीवनै।
महरावण सा बेटा जीहक, कुंभकरण सा भाई जीवनै।
जिण रे पाट मन्दोदरी राणी, साथ न चाली साई जीवनैं।
जिण रे पवन बुहारी देतो, सूरज तपै रसोई जीवनै।

नव ग्रह रावण पाये बन्ध्या, कूवे मींच संजोई जीवनै।
वासन्दर जांरा कपड़ा धोवे, कोदूं दले बिहाई जीवनै।
जर जुरवाणां संकल वन्ध्या फेरी आपण राई जीवनैं।
तेण्यहु साहिब जी री खबर न पाई, जातो वार न लाई जीवनै।
गुरु परसादे यो पोह वीदौ, मानु विसनु दुहाई जीवनै।
चांद भी शरणें, शूर भी शरणें, शरणें मेरू सवाई जीवनै।
धरती अरू असमान भी शरणें, पवण भी शरणें वाई जीवनै।
सूर अकासे सेस पयाले, सतगुरु कह तो आव जीवनै।
भगवीं टोपी थल सिर आयो, जो गुरू कहे सो करियो जीवनै।

भावार्थ–हे प्राणी! परम पिता परमात्मा सर्व व्यापी भगवान विष्णु को मत भूल यदि भूल गया तो तेरे सिर पर बहुत बड़ा दावा मुकदमा अहसान हो जायेगा। परमात्मा विष्णु ने तुझे दिव्य मानव देह प्रदान की है। तुमने इसके बदले में क्या दिया? उन्हें यज्ञ, स्मरण, उपासना द्वारा याद रखना ही उन्हें प्रसन्न करना है और अपने सिर के भार को उतारना है। कहा भी है–विष्णु–विष्णु तूं भण रे प्राणी।1। वर्ष, मास, पक्ष, दिन, घड़ी, क्षण द्वारा तेरी आयु दिनों दिन घटती ही जा रही है। ऐसी अवस्था में शरीर पर विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार से लग्न देखकर विवाह की तिथि तय की जाती है ज्यों–ज्यों दिन व्यतीत होते है त्यों–त्यों विवाह की घड़ी नजदीक आ जाती है। ठीक उसी प्रकार से मृत्यु की घड़ियां भी नजदीक आ रही है।2। पहले बाल्य एवं युवावस्था में बाल काले ही थे तथा काले नाग की तरह चमक रहे थे किन्तु अब वृद्धावस्था में सफेद बगुले की भांति हो गये है। मानों ये बाल ही सूचना दे रहे है कि अब शरीर त्यागने का समय आ चुका है। मृत्यु से पूर्व मानव को सूचित करने के लिये यानि बधाई लेने के लिये आ गये है।3। यह शरीर रूपी गढ़ पलट गया है बाल्यावस्था से वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाना बिल्कुल उल्टा हो गया है। परन्तु वह भी अकस्मात नहीं हुआ है काल ने रोल डाल दी है यानि काल ने अपना प्रभाव जमा दिया है और दिन, घड़ी, पल द्वारा इस शरीर को काट डाला है, जीर्ण–शीर्ण कर दिया है। यह सभी कुछ अपनी जानकारी में देखते ही देखते हो गया है फिर भी सचेत नहीं हो सके।4। जो सज्जन व्यक्ति होगा वह तो अपनी सज्जनता नहीं छोड़ेगा तथा दुर्जन व्यक्ति भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ेगा, स्वभाव गुण–धर्म छोड़ना अति दुष्कर है किन्तु विष्णु की शरण

ग्रहण करके दुष्ट व्यक्ति को अपनी दुष्टता छोड़नी चाहिये क्योंकि यह अवसर व्यर्थ गंवाने के लिये नहीं मिला है।5। यदि कोई व्यक्ति दिन का भूला भटका रात्रि को घर आ जाये तो वह भूला हुआ नहीं माना जाता तथा यदि रात्रि में भी लौटकर नहीं आये तो वह समझो बहुत दूर चला गया है अब उसे लौटाना कठिन ही होगा। अर्थात् यदि कोई पूर्व में अनजान में कोई गलती कर बैठा है तो वह यदि जब भी सचेत होकर वापिस पश्चाताप करके अपने मार्ग में लौट कर आता है तो वह भूला हुआ नहीं माना जाता है और यदि कोई सभी कुछ तथ्य जान लेने के बाद भी असावधानी कर रहा है उसका कोई इलाज नहीं है कहा भी है–''जाणत भूला महा पापी''।6। गुरु मुखी होकर तो व्यक्ति कार्य करता नहीं है किन्तु मन मुखी होकर कार्य करता है वह अपने कार्य में सफल नहीं हो पाता व्यर्थ में परिश्रम का भार ही उठाता है इसलिये जीवन जीने की कला सीखने के लिये गुरु धारण अवश्य ही करें कहा भी है–''जा जीवन की विधि जाणी''।7। रे प्राणी! यदि तेरे पास अपार धन दौलत है तो उसका अभिमान मत कर। यह अहंकार परमात्मा स्वामी विष्णु को अच्छा नहीं लगता। यह धन भी क्षण भंगुर है किसी का दास नहीं है किन्तु हे मानव! तूं इसका दास हो चुका है। यह दासपना तुझे विष्णु से जोड़ना था, धन से तोड़ना था। किन्तु ऐसा नहीं किया।8। परमात्मा की आज्ञा चरित्र से सभी कुछ असंभव का संभव हो जाता है जैसे सूखा पता भी जल में डूब सकता है और सिला भी तिर सकती है। ऐसा रामावतार में समुद्र पर पत्थरों की पाल बांधकर दिखाया भी था।9। कभी परमात्मा की लीला से ऐसी विपरीत हवायें चलेगी जिससे चावल कण तो उड़ने लगेगा और भूसा थोथापन नहीं उड़ेगा अर्थात् धर्म अधर्म का निर्णय हो जायेगा। असली-नकली का पर्दाफास हो जायेगा।10। समय प्रति क्षण परिवर्तनशील है इसके पीछे भी विष्णु की शक्ति ही कार्य कर रही है जैसे एक क्षण में आकाश में मेघ आकर वर्षा प्रारम्भ कर देते है।11। दूसरे ही क्षण में कहीं अन्यत्र वर्षा प्रारम्भ हो जाती है जो निरंतर वर्षा होती रहती है। कभी ऐसी घड़ी भी आती है जो चारों तरफ से हवायें चलती है इन्हीं प्राकृतिक साधनों द्वारा ही भगवान स्वयं को प्रत्यक्ष दिखाते है।12। दुर्योधन को कुछ समय के लिये एक क्षण में ही राजा बना दिया गया परन्तु दूसरे क्षण में वापिस छीन भी लिया, वापिस राज्य छीनने में कुछ भी देर नहीं लगी।13।

अब आगे लंकापति रावण के बारे में बतला रहे है कि उस रावण के रहने के लिये स्वर्णमयी नगरी लंका थी जो चारों ओर समुद्र से घिरी हुई थी वही समुद्र ही खाई थी, सुरक्षा का उपाय था। उसी रावण के मन्दोदरी जैसी पटरानी थी। मरते समय वह लंका व रानी साथ नहीं जा सकी। आगे फिर विशेषता बतला रहे है-जिस रावण के यहां स्वयं पवन देवता बुहारी देता था और सूर्यदेवता ही रसोई पकाता था। तथा नौ ग्रहों को रावण ने अपने वशीभूत करके खम्भे के बांध दिया था कि कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। मृत्यु को तो रावण ने कुवे में लटका रखी थी कि न तो कभी निकल सकेगी और न ही मेरे उपर प्रभाव जमा सकेगी। अग्नि देवता ही स्वयं रावण के कपड़े धोती थी यानि अपने ताप से शुद्ध करती थी। बेहमाई यानि भाग्य या ब्रह्माजी जो स्वयं रावण के यहां आटा पिसना, दाल दलने का कार्य कर रहे थे। बुढ़ापा रोग आदि कष्टदायक बिमारियों को तो रावण ने जंजीरों से बांध रखी थी। जिससे रावण के उपर असर नहीं कर सके। इस प्रकार से देवताओं को वश में करके अपने अजर-अमर का उपाय करने वाले रावण का भी कुछ पता नहीं चला कि कहां को चला गया। कहां तक उस रावण की ताकत एवं अहंकार का वर्णन करें। सूर्य, चन्द्र, सुमेरू, वायु, धरती, आकाश, अग्नि आदि सभी देवताओं को अपने अधीन कर लिया था तथा उनमें स्वेच्छा से कार्य ले रहा था। रावण ने अति कर दिया था जिनसे सम्पूर्ण लोकों में त्राहि-त्राहि मच गई थी। उसी रावण का भी अहंकार चूर-चूर हो गया देवता छूट गये और सभी के लिये लंका सुलभ हो गई। यह सभी कुछ विष्णु की माया का ही करामात है। कहा भी है-'रावण सो कोई राव न देख्यो' कवि कहते है कि वही विष्णु ही भगवीं टोपी धारण करके सम्भराथल पर गुरु रूप में आये है। हे लोगों! जैसा गुरु कहते है वैसा ही करो उसी में ही भलाई है।

कवि तेजोजी चारण - 1

तेजोजी चारण श्री गुरु जाम्भेश्वर जी से पाहल लेकर बिश्नोई बने थे। इनको कुष्ट रोग था जाम्भोजी से भेंट वार्तालाप एवं जाम्भोजाव तालाब में स्नान करने से रोग की निवृति हो गई थी। जाम्भाणी साहित्य के अनुसार विक्रम संवत् 1480 से 1575 के बीच इनका जीवन काल था। इनकी विभिन्न रचनाऐं है। हरजस, छन्द, गीत, आदि सभी कुछ अध्ययन करने योग्य है। यहां पर उनके द्वारा रचित मात्र एक साखी का अनुवाद किया जा रहा है।

साखी-3

साच तूं मेरा सांई, अवर न दूजा कोई।1।
जिण आ उमति उपाई, सिरजण हारो सोई।2।
साचा सेती सन्मुख, दुमना सेती दोई।3।
खालक सूं छाने कित, छिन कीजै चोरी।4।
भगवत नै सब सूझै, गढ़ दरवाजा मोरी।5।
किहिंका मइया बाबो, किहिंका बहण र भाई।6।
सब देखंता चाल्या, काहु की कछु न बसाई।7।
हंसा उड़ चाल्या, जब बेलड़िया कुम्हलाई।8।
हंसा उडण की बारी, सुकरत साथ सगाई।9।
किण ही सुगरे मोमण ने, बांधी सत की पाली।10।
आवैलो जब खोजी, लेलों खोज निकाली।11।
कोड़ी पांच पार पहोंता, जां की धार करारी।12।
कोड़ी सात पार पहोंता, हरिचंद सा शुचियारी।13।
कोड़ी नव पार पहोंता, बार बारा की आयी।14।
साह सही सूं आयो, थलसिर एकल वाई।15।
निर्गुण रूप निरंजण, अलख न लखियो जाई।16।
दीन ताज दीन बोले, जम्भ तेरी शरणाई।17।

भावार्थ-हे सतचित आनन्द स्वरूप परमेश्वर! आप ही मेरे ईश्वर स्वामी हो। आप से भिन्न और किसी को मैं जानता नहीं हूं। और नहीं किसी से मेरा सम्बन्ध ही है।1। जिस निराकार निरंजन ने सर्वप्रथम रचना की इच्छा प्रगट की, ''एकोहं बहुस्याम प्रजायेय'' मैं एक से अनेक हो जाऊं। अकल रूप मनसा उपराजी। इस प्रकार की इच्छा करने वाले सर्वेश्वर ही सृष्टि के रचयिता है। पालन-पोषण कर्ता विष्णु ही है। उनसे भिन्न मैं किसी ओर को क्या जानूं।2। जो वास्तव में सच्चा है उसके तो सतगुरु देव सन्मुख ही रहते है क्योंकि भक्त तथा भगवान दोनों ही सच्चे है इसलिये मेरा विलाप है परन्तु जो दुमना है अर्थात् कथनी और करनी में अन्तर है। झूठ-कपट वासना से युक्त है उनसे मेरे सच्चे प्रभु सदा ही दूर है।3। वह परमात्मा सर्व व्यापक है उनसे कुछ भी छुपा हुआ नहीं है तो फिर उनसे छुपकर के चोरी कैसे कर सकते है। चोरी भले ही करें किन्तु उनका लेखा-जोखा अवश्य ही देना होगा।4। उस

परमात्मा को तो सभी कुछ दिखाई देता है चाहे आप कहीं भी किसी भी गढ़ दरवाजे अथवा गुफा में छुप जाओ।5। व्यक्ति अपने शरीर तथा माता-पिता, बहन-भाई के पालन-पोषण करने के लिये ही तो चोरी करता है, दुष्कर्म करता है परन्तु विचार करके देखा जाये तो न तो अपना शरीर ही निजी है और न माता-पिता, बहन-भाई ही सदा साथ देने वाले है तो फिर अपने जीवात्मा को क्यों पाप पंक में डूबो रहा है।6। सभी कुछ इन्हीं आंखों से देखते हुए चले गये। ''थिर न लाधो थाणों'' लाख उपाय करने पर भी किसी को बचाने में समर्थ नहीं हो सके।7। जब शरीर वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया तब यह जीवात्मा रूपी हंस छोड़कर चला जाता है जिस प्रकार से हंस बेल-वृक्ष आदि कुम्हला जाते है तो उसे छोड़कर चले जाते है, अन्यत्र वास लेते है वही दशा जीवात्मा की होती है।8। अन्य हंस तो उड़कर चले गये है। हे जीवात्मा! अबकी बार तेरी भी बारी आ गयी है और जर्जरित शरीर छोड़कर तुम्हें अभी प्रस्थान करना होगा। यहां से चलते समय साथ में कुछ भी नहीं चलेगा परन्तु एक मात्र शुभ कर्म ही साथ चलेंगे, आगे जाकर गवाही देंगे। कहा भी है-सुकरत साथ सगाई चालै।9। इस संसार में सुगरे भक्त ने ही सत की पाल बांधी है, अपने जीवन में सत को अपनाया है जिससे काम क्रोध लोभादि से रक्षा करने में समर्थ हो सके। अन्य तो बहाव में बहे जा रहे है।10। जब अन्त काल में यम के दूत खोजकर लेने के लिये आयेंगे तब आप चाहे कहीं भी छुपने की कोशिश क्यों न करें वह खोज ही लेगा और पकड़कर ले ही जायेगा।11। इस सत के मार्ग पर चलते हुए प्रहलाद के साथ सतयुग में पांच करोड़ पार पहुंच गये क्योंकि उन लोगों ने कष्ट उठाकर भी धर्म के मार्ग को नहीं छोड़ा।12। त्रेता में सात करोड़ हरिश्चन्द्र के साथ पार पहुंच गये क्योंकि हरिश्चन्द्र स्वयं पवित्र आत्मा सत्यवादी थे तो उसकी प्रजा भी वैसा ही आचरण करने वाली थी।13। द्वापर युग में नौ करोड़ युधिष्ठिर के साथ पार पहुंच गये। और अबकी बार इस कलयुग में कवि कहता है कि हमारी बारी है। हम उन्हीं प्रहलाद पन्थ के बिछुड़े हुए जीव है, अब अवसर आ चुका है।14। इस सम्भराथल पर स्वयं विष्णु ही सत्य के रूप में आये है स्वयं अकेले होते हुए भी जगत के जीवों को तारने के लिये बीड़ा उठाया है अबकी बार यदि चूक गये तो फिर सदा के लिये भटक ही जायेंगे।15। कवि तेजो कहते है कि वह तो निर्गुण निरंजन अलख रूप है यदि तर्क वितर्क के द्वारा

उन्हें जानने की कोशिश करेंगे तो निश्चित ही असफल रहेंगे। हे गुरुदेव! हम तो आपकी शरण ग्रहण ही कर सकते है। दीन भाव से विनती ही कर सकते है इसके अतिरिक्त आपके बारे में जानने का कोई उपाय नहीं है। इस साखी द्वारा तेजोजी कवि ने जन साधारण को सम्भराथल पर जाकर जीवन की भलाई करने का आह्वान किया है।

कवि समसदीन-2

विक्रम संवत् 1490-1550 में इन्होनें अपना जीवन यापन गुरु जाम्भोजी की शरण ग्रहण करके किया था। ये नागौर के मुसलमान थे। जाम्भोजी के दिव्य अलौकिक लीला देखकर शिष्य बन गये थे। उन्होनें अपने जीवन काल में दो साखियों की रचना की थी ये दोनों ही साखियां अच्छी मानी जाती है ये हजूरी कवि थे।

साखी-4 कणां की

सिंवरो उत्तम रो राव, सांई राजा मन जपिये।1।
देकर दिल को साच, जुमले रलि मिलिये।2।
जित पिकर अमि कचोल, खेवट ज्यूं ढुलिये।3।
चरियों चरणै जोग, अवचर परहरियो।4।
अवचर बाढ़ेला रोग, आफिर ना मरियो।5।
ज्यूं-ज्यूं कहै म्हारौ श्याम, आगै-आगै पग धरियो।6।
देख हरिड़ा बाग, चोरी बंदा ना करियो।7।
चोरी है अणराय, जीवड़ा भल डरियो।8।
ठाडो बेलूं को रेत, झबूकला पवण घणा।9।
बरखत आंखें खोलि, नीपजैला जीव सरया।10।
डूंगर तरला वास, दीसै तरू जै हर्‌या।11।
जित वै दीसै चतुर सुजाण, आवो बंदा जाय घरा।12।
सायर लहरा लेह, ऊंडो देखी डरया।13।
संबल थे जां पास, सोई मोमणा पार लंघ्या।14।
संबल बिहुणा वीर, झुरवै तीर खड़या।15।
झुरवै राति र द्यौंस, घायल ज्यौं कुरहौ।16।
अगर चंदण की नाव, बेड़ो म्हारो श्याम सज्यो।17।
बोले समसदीन, खेवट पारि लंघ्यो।18।

भावार्थ–हे मानव ! संसार के सर्वोतम पुरूषों के भी शिरोमणी राजा स्वामी का ही स्मरण करें। उस परमात्मा सांई का जप भी मानसिक ही करें। वही उत्तम होगा। ''यज्जपस्तदर्थ भावनम्'' जप के साथ ही साथ उस परमात्मा–आत्मा का ध्यान भी करें तभी उत्तम जप होगा।1। हम जागरण जुमलै सत्संग में अवश्य ही जावैं किन्तु वहां पर भी सच्चाई से केवल ज्ञान ग्रहणार्थ ही जावें अन्यथा कुछ भी लाभ नहीं मिलेगा।2। वहां सत्संग में ज्ञानामृत घोला जाता है, उस भरपूर रस का पान करें। रसपान से जब तृप्त हो जायेंगे तो फिर दूसरों को बांटने में समर्थ हो सकेगे जिस प्रकार से नौका चलाने वाला खेवट अपनी नौका में भरा हुआ जल बाहर फेंकता है अन्यथा नौका डूब जायेगी। उसी प्रकार से हम भी जब ज्ञानामृत से भर जायेंगे तो फिर दूसरों को बांटने में समर्थ हो सकेगे।3। करने योग्य कर्त्तव्य कर्म ही करें जो शास्त्रों में विहित है तथा जो शास्त्रों में निषिद्ध अकरणीय कर्त्तव्य है उन्हें न करें।4। अवचर अकर्त्तव्य यानि पाप कर्म करेंगे तो वे कर्म निश्चित ही रोग बढ़ायेंगे, अनेकों प्रकार के कष्ट ही देंगे। इस प्रकार के कष्टों रोगों को झेलते हुए जीवन को समाप्त ही कर देगा।5। जिस प्रकार से हमारे घनश्याम भगवान विष्णु गुरु जाम्भोजी आज्ञा दे वही कार्य करें। बिना आज्ञा के मनमुखी होकर आगे एक कदम भी न बढ़ायें।6। यदि किसी के पास धन–दौलत है वह सुखी है यानि हरा–भरा है तो उसके धन को देखकर मन न ललचायें अर्थात् चोरी न करें क्योंकि चोरी करना पाप है, शास्त्र निषिद्ध है इस पाप कर्म से बचें।याद रखना एक दिन अवश्य ही मरना होगा तब पाप कर्मों का दु:ख उठाना ही होगा।8। मनुष्य का स्वभाव है कि वह आज के कार्य को कल पर टालने की कोशिश कर रहा है। कवि कहता है कि कल का क्या पता है आज युवावस्था है बुद्धि तथा शरीर स्वस्थ है तो कल का कार्य आज ही कर लेना चाहिये। कल वृद्धावस्था आ जायेगी इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहते है कि आगामी दिनों में तो सर्दी आने वाली है उस समय बेलू रेत ठण्डी हो जायेगी तथा ठण्डी हवायें भी अत्यधिक चलेगी अर्थात् बुढ़ापा आ जायेगा। यदि कुछ करना है तो इस वर्षा ऋतु में ही सर्वोतम अवस्था है इसी में कर लें कल का भी तो क्या पता आयेगा कि नहीं यदि आ भी जाये तो भी दोषों से युक्त होगा।10। इसलिये हे जीव ! आंखें खोलकर देख ! शुभ कार्य करें तभी जीव की भलाई हो सकेगी। वर्षा की भांति परोपकार के लिये तैयार हो जा।11। जिस प्रकार से पहाड़ के नीचे

के वृक्ष हरे-भरे दिखाई देते है किन्तु ऊपर के वृक्ष सूख जाते है क्योंकि उन्हें जल, खाद, मिट्टी पूर्णतया नहीं मिल पाती उसी प्रकार स वे जन भी धन्य है जो परमात्मा की शरण ग्रहण की है स्वयं को मिटा दिया है और अपने उपर सदैव पर्वत की भांति परमात्मा की छत्र छाया मानते है वे ही हरे-भरे पूर्ण तथा चतुर सुजान है। हे मानव! आओ! अपने भी उसी मार्ग को पकड़कर हरे-भरे होकर अपने घर वैकुण्ठ लोक में पहुंचे।13। आगे वहां पर अमृत सागर लहरें ले रहा है किन्तु गहराई भी बहुत है उसमें स्नान करने से डर लगता है किन्तु जिसके पास संबल है यानि परमात्मा की शक्ति साथ हैं वे लोग नहीं डरते वे तो गहराई में पहुंच करके नहा लेते है क्योंकि वे तो भक्त है इनके विपरीत जो संबल रहित है वे तो किनारे पर ही बैठे है समुद्र की लहरों को देखकर ही डर गये है। अन्दर प्रवेश करके स्नान करने की हिम्मत ही नहीं जुटा रहे है। कहा भी है- ''तैरू तैरियत तीर, जे तीस मरे तो मरियो'' कुछ लोग तो पार उतर गये किन्तु दूसरे लोग तीर पर बैठे हुए भी प्यासे है। दिन-रात कलाप कर रहे है घायल की भांति विलाप करते हुए दुखी हो रहे है। कवि समसदीन कहते है कि हमारे श्याम विष्णु परमात्मा ने तो हमारे लिये अगर तथा चन्दन काष्ठ की नौका बनाकर खूब सजाई है। हमें तो उसी में बैठाकर स्वयं खेवट बनकर नाव चलाकर पार उतार देंगे। हम तो निश्चिन्त हो गये हैं क्योंकि हमने तो प्रत्यक्ष देवता की शरण ग्रहण की है।

साखी कणां की-5

मीठा तो बोलो रे भइया निवखिव चालो, ना तोड़ो गुरु से नेहा।1।
मोमण हुवै सो बीरा आपो रे मारे, अवरा मारण केहा।2।
मोमण हुवै सो बीरा तूटी रे साधे, दुश्मण घातेला वेहा।3।
भरी सभा में बीरा पड़दो रे पाड़े, दोजखी जैला दुष्टी एहा।4।
हंसा तो हंदी बीरा टोली रे आवै, सरवर करण सनेहा।5।
जांहरी तो पालहि बीरा पातिक रै नासै, लहियो मोमण एहा।6।
हंस चलंतै बीरा पिंड पड़ेलौ, वास कलियल केहा।7।
कसी कुदाला लेकर रे चाल्या, घर सूं बाहिर एहा।8।
माटी सूं माटी रलमिल जैली, कूं-कूं वरणी एहा।9।
तेरी संख्या तो उपरि पुवण ढुलेलो, घण हर वर्षेला मेहा।10।
ऊपर हाली रे भइया हल रे खड़ेलो, ढ़ोर चरेला एहा।11।

नेकी रे बदी थारे साथ हुवैली, जग करो ला जेहा।12।

ओह महारस समसदीन बोले, मीठा दीन सनेहा।13।

भावार्थ– हे भाई! सत्य प्रिय मधुर बोलो। इस संसार में सुखी जीवन के लिये नम्रता क्षमा भाव रखते हुए चलो। गुरु परमात्मा जाम्भोजी से प्रेम भाव रखो। एक क्षण भी परमात्मा में वृति का तार टूट न जाये।1। हे भाई! मोमण जिन्होनें मोह और मन को जीत लिया है मोम के समान जिनका हृदय कोमल हो गया है ऐसा भक्त तो स्वकीय अहंकार को मिटा देता है तथा जो स्वयं को ही मार लेता है अहं भाव को मिटा देता है वह भला दूसरों को कैसे मार सकता है।2। हे वीर! यदि मोमण भगवान का प्यारा भक्त होगा तो वह टूटी हुई बात को भी जोड़ लेगा। बिखरे हुए दिल को जोड़ लेगा किन्तु दुष्ट व्यक्ति तो उल्टा ही है। जुड़े हुए को तोड़ना ही जानता है बीच में दरार पैदा कर देता है।3। दुष्ट व्यक्ति तो भरी सभा में जाकर जो गोपनीय बात है जो कहने योग्य बात नहीं है वही जाकर कहेगा जिससे उपद्रव हो जाये। कवि कहता है कि ऐसे दुष्ट लोग तो निश्चित ही भयंकर नरक में गिरेंगे।4। हे भाई! ध्यान से देख। जो हंस सदृश पवित्रात्मा है उनकी तो अनेकों टोलियां आ रही है क्योंकि उन्हें मानसरोवर की उपलब्धि हो चुकी है यहां पर उनके जीवन के आधार मोती सुलभ है तूं पीछे क्यों रह रहा है अब अवसर आ चुका है अर्थात् सम्भराथल पर गुरु जाम्भोजी विराजमान है उनके पास हंस रूपी आत्माऐं पहुंचती है तो उन्हें अमृत रूपी मोती प्रदान करते है।5। हे भाई! जिस गुरु की पाहल लेने से सभी पाप भाग जाते है ऐसी पाहल जाकर ग्रहण करनी चाहिये। सभी मोमण ले रहे है और अपने को धन्य मान रहे है।6। हे भाई! यदि यह समय व्यतीत हो गया तो फिर यह शरीर एवं समय तो लौट कर वापिस नहीं आयेगा। एक दिन यह हंस इस शरीर से उड़ जायेगा तो यह शरीर गिर जायेगा। इस शरीर से निकलने के पश्चात इस हंस आत्मा की न जाने क्या गति होगी। यह पवित्र हंस न जाने किस अशुद्ध निकृष्ट शरीर में जाकर वास करेगा बिना सुकृत के निश्चित ही दुखदायी स्थिति ही होगी।7। पीछे मृत पड़े हुए शरीर को शीघ्र ही घर से बाहर उठाकर ले जायेंगे वहां श्मसान भूमि में ले जाकर कसी कुदाल फावड़ा से भूमि में गढ़ा खोदकर जमीन में गाड़ देंगे। वहां पर यह शरीर मिट्टी में मिल जायेगा। जीवित अवस्था की कूं-कूं वरण वाली देह कितनी सुन्दर तथा सौम्य थी परन्तु अब इसकी यह दशा होगी बड़ा ही आश्चर्य है।9। मिट्टी

को मिट्टी में मिलाकर लोग वापिस घर लौट आयेंगे और थोड़े दिनों का शोक भी मना लेंगे।10। तुम्हारी समाधी देह पर ठण्डी हवायें चलेगी कभी अत्यधिक वर्षा होगी। हाली तुम्हारे शरीर पर हल भी चलायेंगे और कभी तेरे उपर घास उग आयेगा तब पशु भी चरेंगे। इतनी पवित्र देह की यह दशा हो जायेगी। परन्तु तुम्हारा वश कुछ भी नहीं चलेगा।11। इस जीवात्मा के साथ में तो केवल नेक कर्त्तव्य, कर्म, ईमानदारी, सच्चाई एवं परमात्मा की भक्ति ही साथ चलेगी। वही वहां पर साक्षी का कार्य करेंगे और नरक से बचायेंगे। कवि समसदीन कहता है कि मैनें यह महारस बतलाया है जो अत्यन्त ही मधुर एवं स्नेह वाला है जो कोई धारण करना चाहे तो वह अवश्य ही निहाल हो जायेगा।12।

कवि-3 'आंछरे'

जन्म विक्रम संवत् 1500-1550 के आसपास होना अनुमानित है ये बीकानेर के समीपस्थ किसी गांव के थे। गुरु जाम्भोजी के हजूरी भक्त थे। उनका सिद्ध योगी होना इस साखी से ध्वनित होता है साखी राग मल्हार में गेय है।

साखी कणां की-6

मेरे मन हुवो हुलास, संभरथलि जाइये।1।
संभराथल जाइये खरच नांही, बीच अमावस कीजिये।2।
उतारि गहणौ होय लहणौ, बिलस लाहौ लीजिये।3।
काहें का मैं करूं दीपक, काहें केरी बातियां।4।
काहें का मैं घिरत छालूं, जगों छमासी रातियां।5।
सोने का मैं करूं दीपक, रूप वाती छलाविया।6।
सुरह गऊ का घिरत छालूं, जगौ छमासी रातियां।7।
सधि होकर करि जगों दीपक, दासी हूं मैं तेरिया।8।
अपणे धणी सूं सार खेलूं, कला राखो मेरियां।9।
प्रबत दोय चीर उतरया, सोने तार छलाविया।10।
सोई पहर धंण चौक बैठी, ईद देखण आइयां।11।
कह आंछरै करौ करणी, पारि पहुंचो भाइयां।12।

भावार्थ-कवि कहता है कि मेरे मन में आनन्द की लहरें उठ रही है क्योंकि मैनें अमृत का पान किया है। यदि आप भी चाहें तो अवश्य ही सम्भराथल जाओ।1। सम्भराथल पर पहुंचने में कुछ भी खरचना नहीं पड़ेगा। वह स्थल

सभी के लिये सुलभ है। यदि जाना है तो फिर वहां पर अमावस्या की पुण्य रात्रि वहीं पर व्यतीत कीजिये। सूर्य चन्द्र एक राशि में आना ही अमावस्या रात्रि है उस अन्धकार में भी गुरुदेव सूर्य सदृश ज्ञान का प्रकाश करते है।2। वहां पहुंच करके अमृत पान तथा मन की प्रसन्नता के लिये यह अहंकार रूपी अलंकार गिराना होगा। तभी ज्ञान की प्राप्ति हो सकेगी। अन्यथा वहां पर पहुंच कर भी खाली हाथ लौटना पड़ेगा। जीवन में आनन्द की प्राप्ति होना ही जीवन जीने का लाभ है।3। आगे कवि पुनः कहता है कि वहां सम्भराथल पर पहुंच कर भी मुझे दीपक आदि से गुरु पूजा करनी होगी उसके लिये स्वयं प्रश्न करके उसका समाधान देते है कि किसका दीपक बनाउंगा और किसकी बतियां बनाउंगा किसका घृत भर करके दीपक जलाउंगा तथा लंबी रात्रि में जागरण करके प्रभु का स्मरण करूंगा।5। आगे स्वयं ही अपने प्रश्नों का उतर देते हुए कहते है कि इसमें कोई समस्या नहीं है। स्वर्ण का मैं दीपक बनाउंगा अर्थात् कंचन जैसी यह उत्तम काया ही मेरा दीपक होगा तथा रूपे की दीपक में बतियां होगी। वहां पर सुरह कामधेनु का पवित्र घृत है वही दीपक में भरकर रखूंगा, दीपक को प्रज्वलित करने वाले देव स्वयं ही विराजमान है ऐसा दीपक जब जल उठेगा तो फिर मन की वृतियां शांत हो जायेगी, आनन्द विभोर होकर आत्मस्थ हो जायेगी तो मैं समाधी अवस्था को प्राप्त कर लूंगा।6। ऐसी अवस्था में छः मासी अर्थात् पूरे दक्षिणायन के छः महीने जीत लूंगा और उतरायण में इच्छित मृत्यु को प्राप्त कर लूंगा।7। इस प्रकार से सचेत होकर मैं नित्य प्रति दीपक जलाऊंगा, समाधी को प्राप्त होता जाऊंगा। अब तो मैं आपका दास हो चुका हूं, मेरी बाह्य सांसारिक कामनाऐं निवृत हो चुकी है।8। अपने स्वामी परम पिता परमात्मा के साथ ही मैं नित्यप्रति खेला करूंगा। वही मालिक ही मेरी लज्जा रखेंगे मेरे जीवन को चलायेंगे अब मुझे कुछ भी करना शेष नहीं रहेगा।9। हे प्रभु! जब मेरी समाधी परिपक्व अवस्था में पहुंच जायेगी तो पर्वत से अर्थात् अलौकिक स्वर्गीय दो सिद्धियां उतरकर मेरे सामने आयेगी, ये सिद्धियां स्वर्णमय तारों से संचित चीर की भांति आकर मुझे ढ़कने का प्रयास करेगी। मुझे आगे बढ़ने से रोकेगी किन्तु मैं उनका विरोध भी करूंगा उनसे लड़ाई करने से तो मैं जीत नहीं सकूंगा क्योंकि वे तो आपकी ही माया है मैं उनसे समझौता करके धारण कर लूंगा यही अच्छा होगा। उन्हीं सिद्धियों को पहन, ओढ़कर मैं सभी के सामने चौक पर बैठ

जाऊंगा, कहीं लुका छिपी नहीं होगी। अर्थात् मैं अपनी समाधी से विचलित नहीं होऊंगा तो स्वयं इन्द्र भी मुझे देखने के लिये आयेंगे। हो सकता है मेरी तपस्या से इन्द्र को भी खतरा हो। हे देव! यदि आपका कृपा हस्त मेरे उपर रहेगा तो इन्द्र भी मेरी तपस्या भंग नहीं कर सकेंगे।11। आंछरे कहते है कि कर्तव्य कर्म करो तो निश्चित ही संसार सागर से पार पहुंच जाओगे अन्यथा देखते ही रह जाओगे। हे भाई! यही चेतावनी है।

कवि संख्या-4 'सुरजनजी'

इनका समय अनुमानतः विक्रम संवत् 1500-1570 है। जाम्भाणी साहित्य में सुरजन जी के नाम से तीन कवि हुए है ऐसा उल्लेख है परन्तु ये प्रथम तथा हजूरी संत कवि थे। इन्होनें एक साखी राग सुबह में गेय की रचना की है। यह जागरण की चौथी साखी प्रसिद्ध है।

साखी कणां की-7

जुमलै आवो गुरु भाइयो, सुपह करौ जे काय।1।
ज्ञान श्रवणे सांभलो, शब्द सुणो हितलाय।2।
गुरु फुरमाई से करौ, कुपही करौ न काय।3।
दान दया जरणा जुगति, सत व्रत शील सभाय।4।
आठ धरम नवधा भगति, साध सेव सत भाय।5।
आचारे ब्रह्मा सही, जोग ज ध्यान दिढ़ाय।6।
आण तजो विष्णु भजो, पाप रसातलि जाय।7।
जिण ओ जीव सिरजियौ, सो सतगुरु सुरराय।8।
जुगां जुगां जीवै जको, अवगति अकल ज थाय।9।
मात पिता जाकै नहीं, पख परवार न थाय।10।
जोत सरूपी जग थई, सरवै रह्यो समाय।11।
अटल इडग एक जोति है, ना कही आवै न जाय।12।
जन सुरजन वा परसिया, आवागुवण न थाय।13।

भावार्थ-हे गुरु भाइयों! आप और हम एक ही गुरु के शिष्य होने से गुरु भाई है। सभी का एक ही धर्म कर्म एवं व्यवहार है। इसलिये हे भाई! आप लोग जमे जागरण जहां पर सत्संग होता है, सत्य असत्य का विवेक होता है ऐसी जगह पर आप क्यों नहीं जाते। वहां जाकर अपने जीवन का लक्ष्य मार्ग स्वयं ही निर्धारित करें। यही जीवन में शुभ मार्ग एवं कर्म होगा।1। कानों द्वारा मन

लगाकर जागरण में ज्ञान श्रवण करें तथा गुरुदेव के बताये हुए शब्दों को ग्रहण करें। ये विद्या जागरण में ही मिल सकती है तथा सभी के हितकारी है।2। जैसा गुरुदेव ने फरमाया है वैसा ही करें। पाप कर्म कभी न करें तथा कुमार्ग पर कभी न चलें। यही शिक्षा जागरण में आकर ग्रहण करें।3। आगे कवि बतला रहे है कि जागरण में हमें आठ प्रकार के धर्म अंगों को सीखना है तथा उन्हें धारण करके पूर्ण धार्मिक होना है। आठ धर्म के अंग ही धर्म कहलाते है। सर्व प्रथम दान आता है। दान का अर्थ देना है। मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपनी कमाई से दसवां भाग धार्मिक कार्य में सुपात्र को देता रहे उससे धन शुद्ध होता है। कहा भी है-थोड़े मांही थोड़ेरो दीजै, होते नांह न कीजै। दूसरा धर्म बतलाया है कि महापुरूषों ने दया को ही धर्म का मूल बताया है। ''दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान'' दीन दु:खी पर करूणा करके उसकी हर प्रकार से रक्षा करना ही दया कहलाती है। तीसरा धर्म जरणा बतलाया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, इर्ष्या आदि सदैव हमें जलाती रहती है। किन्तु अवसर पाकर हम उन्हें जला दें। कहा भी है-''देख्या अदेख्या, सुण्या असुण्या क्षमा रूप तप कीजै, जरिये जरणी करिये करणी, यही जरणा है चौथा धर्म जुगति बतलाया है जिसे गीता में युक्ताहार विहार से कहा गया है। अहार-विहार आदि सभी युक्ति पूर्वक करना ही जीवन जीने का सुलभ उपाय बतलाया है। पांचवां धर्म सत्य बतलाया है। ''सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्'' सत्य बोलें परन्तु प्रिय भी बोलें यदि सत्य है किन्तु प्रिय नहीं है तो ऐसी वाणी कदापि न बोलें। सत्य ही परमात्मा है सत्य ही आत्मा है जगत प्रपंच झूठा है। सत्य को सत्य से मिलाना ही धर्म है। छठा धर्म व्रत है। वेद विहित तथा गुरु के द्वारा बताया हुआ अमावस्यादि व्रत करना ही सत्य व्रत कहलाता है। कहा भी है कि ''अमावस्या का व्रत राखणों'' व्रत का अर्थ होता है सत्य प्रतिज्ञ होना। सातवां धर्म शील कहा गया है। शील शब्द बहुत ही गंभीर अर्थ को समेटे हुए है। शील का अर्थ ब्रह्मचर्य की रक्षा करना भी है। पराई स्त्री को मां-बहन सदृश देखना, नम्रता का व्यवहार करना, स्वभाव से ही शीतल सौम्य सज्जन होना ये सभी अर्थ शील के अन्तर्गत आ जाते है। आठवां धर्म यहां पर स्वाभाविक रूप से आये हुए दुर्गुणों को खोज करके बाहर निकालना है किसी दुर्जन की संगति से या अन्य कारणों से दुर्गुण आ जाते है जैसे-चोरी, नशा, कठोरता, क्रूरता, नीचता, धोखा-धड़ी करना इत्यादि। इन सभी आदतों को

त्याग करके इनके विपरीत सद्‌गुणों को धारण करना ही आठवां धर्म है। अब आगे नवधा भक्ति बतलाते है। नवधा भक्ति की व्याख्या तुलसी रामायण के अनुसार की जाती है।

चौपाई

नवधा भक्ति कहौ तोहि पाहि, सावधान सुनु धरू मन मांहि।
प्रथम भक्ति संतन्ह कर संगा, दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।8।

दोहा

गुरु पदपंकज सेवा, तीसरी भक्ति अमान।
चौथी भगति मम गुन गन, करइ कपट तजि गान।

चौपाई

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा, पंचम भजन सो वेद प्रकाशा।1।
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा, निरत निरंतर सज्जन धर्मा।2।
सातव सम मोहि मय जग देखा, मोते संत अधिक कर लेखा।3।
आठव जथा लाभ संतोषा, सपनेहुं नहिं देखई पर दोषा।4।
नवम सरल सब छल हीना, मम भरोस हिय हरष न दीना।5।
नव महु एको जिन्ह के होई, नारि पुरूष स चराचर कोई।6।

इस प्रकार से नवधा भक्ति श्री रामचन्द्र जी ने शबरी के प्रति बतलाई थी। कुछ लोग केवल ब्रह्मज्ञान की बात ही करते है किन्तु कवि कहता है कि यह ब्रह्मज्ञान केवल कहने और सुनने की ही बात नहीं है वह तो आचरण में लाया जाता है तभी वह ब्रह्मज्ञान है अन्यथा तो केवल गाल बजाना ही है। ब्रह्मज्ञान को आचरण में लाने के लिये योग द्वारा ध्यान दृढ़ करना होगा तभी उस महारस का अनुभव हो सकेगा।6। हे गुरु भाईयों! जैसे गुरु देव ने कहा है– ''विष्णु–विष्णु तूं भण रे प्राणी'' उसी बात को मैं आपसे कह रहा हूं कि आन देव यानि भूत प्रेत चौसठ योगिनी, बावन भैरूं आदि देवता कहे जाने वाले तथा कथित जन्मे हुए जीवों को छोड़कर एक ईश्वर विष्णु का ही भजन स्मरण करो। जिससे तुम्हारे पाप रसातल चले जायेंगे।7। जिस परमात्मा विष्णु ने इस जीव के लिये यह दिव्य देह रची है वही तो सिरजनहार यहां सम्भराथल पर विराजमान है जो सतगुरु रूप से आकर उपदेश दे रहे हैं।8। वह परमात्मा विष्णु तो युगों–युगों तक जीवित रहने वाले तथा उनकी गति कार्य चरित्र के बारे में थाह नहीं पाया जा सकता, बुद्धि की दौड़ वहां तक नहीं

पहुंच सकती।9। वह विष्णु स्वयं सृजनहार है परन्तु उनके माता-पिता, भाई-बहन आदि परिवार नहीं है क्योंकि वे स्वयं ज्योति स्वरूपी है सम्पूर्ण जगत में कण-कण में समाये हुए हैं।11। वही विष्णु ही सम्भराथल पर स्थित होकर अटल अडिग हो चुके है। इस समय कहीं आते जाते नहीं है कहा भी है-"अडिग ज्योति सम्भराथले" गुरुदेव ने कहा है कि मेरी ज्योति सम्भराथल पर अडिग रहेगी भूल नहीं जाना यदि भूल गये तो निश्चित ही दोरे दु:ख में गिर जाओगे।12। सुरजन जी कहते है कि जिसने भी सम्भराथल पर आकर दर्शन स्पर्श ज्ञान श्रवण किया है वह तो निश्चित ही संसार के आवागवण से छूट जायेगा।

कवि संख्या' 5 'शिवदास'

जन्म संवत् 1500-1570 अनुमानित है। ये जाम्भोजी के शिष्य सदा ही साथ रहने वाले हजूरी कवि थे। इन्होनें एक साखी की रचना की है जो राग सुहब में गेय है।

साखी-8

सांइयां जुग दातार, पांणी सूं पिण्ड करणा।1।
गरभ रह्यो दस मास, दूभर दिन छलणा।2।
निंवण निंवै तदि जीव, सांई तो सरणा।3।
सांइयां बाहिर काढ़, दसबंद तो करणा।4।
जद पूगा नौ मास, बालक अवतरणा।5।
लागो कलि को बाव, वै दिन विसरणा।6।
बाजै बिड़द बधाव, कीजै कोड घणा।7।
अरथ-गरथ धन माल, दीजै धर सरणा।8।
रूड़ी राज कुंवार, इधिका आभरणा।9।
सोवण सेज सुख वास, पाटू पाथरणा।10।
चड़ि चालै चक डोल, घोड़ा उदगरणा।11।
जब पूगी जम डांग, गाफिल थर हरणा।12।
परवाणा पतिसाह, एदी जम करणा।13।
सूंक न मांडै हाथ, जालमै देह धरणा।14।
अन पांणी सूं सोच, दांतण क्या करणा।15।
मात-पिता सुत नार, बांधव चार जणां।16।

किये पिछोकड़ वास, ले गया बीच बणां।17।
मेल्यो धरण उतार, बांधव बीसरणा।18।
कोयल करै किलोल, बैठी आंब बणां।19।
बोलै मधुरा बैण, दुनियां नै दुख घणां।20।
तलै उतारयो जाय, धरती रो सरणा।21।
आप ज मरणां होय, औरां नै क्या झुरणां।22।
सत बोलै शिवदास, भक्ति हरि ऊधरणां।23।

भावार्थ–सम्पूर्ण जगत के रचयिता सांई सभी के स्वामी–ईश्वर है। परमात्मा ने ही अनेक भिन्न–भिन्न आकृति के शरीरों की रचना रजवीर्य रूपी जल से की है। ऐसे विचित्र सृष्टि के रचयिता को बार–बार प्रणाम है।1। शरीर की रचना होने के पश्चात् वह जीव दस महीने तक गर्भ में ही रहता है। वहीं पर ही फूलता–फलता है वे दिन जीव के लिये अति कष्टदायक होते है फिर भी उन्हें पूरा पता तो करना ही पड़ता है।2। गर्भवास में पड़ा हुआ जीव उस समय अनेकों प्रकार की विनती करता है हे प्रभु! अब तो तुम्हारा ही आसरा है। आप ही मेरी रक्षा करने वाले है।3। हे सांई! मुझे अति शीघ्र इस गर्भ रूपी नरक से सुरक्षित बाहर निकालें। संसार में जन्म लेकर अपनी कमाई का दसवां भाग अवश्य ही दान पुण्य में खर्च करूंगा।4। जब नौ महीने पूर्ण हो जाते है तो बालक जन्म लेता है। संसार की हवा लगती है।5। जब उसे कलयुग की हवा लगती है तो गर्भ की बातों के किये हुए वायदे को भूल जाता है। जब प्रथम बार रोता है तो यही संकेत देता है कि वहीं के वायदे वहीं रह गये।6। बालक का जन्म होता है तो फिर गाना–बजाना उत्साह होता है बधाइयां बंटनी प्रारम्भ हो जाती है। सभी परिवार के लोग आते है और बहुत ही प्यार करते है।7। उसी प्यार में अपना धरती में गड़ा हुआ धन भी ले आते है और उस बच्चे के निमित सभी कुछ अर्पित कर देते है। जन्म लेने के साथ ही उसे धनवान बना दिया जाता है।8। हमारा राजकुमार बहुत ही सुन्दर है तथा इसे सजाने संवारने के लिये अनेकों स्वर्ण अलंकार भेंट किये जाते है।9। सोने के लिये सुन्दर सेज पलंग बिछाया जाता है उस पलंग पर सुन्दर सुकोमल पथरणा आदि बिछाये जाते है।10। जब बालक कुछ बड़ा हो जाता है तो उसकी सवारी के लिये अच्छे से अच्छा घोड़ा लाकर देते है। राजकुमार घोड़े पर चढ़कर बड़ा ही सुन्दर दिखाई देता है।11। इतने सुन्दर दिखने वाले

राजकुमार पर भी यम के दूत दया नहीं दिखाते। एक समय ऐसा भी आता है कि यम के दूतों का झुण्ड वहां पहुंच जाता है तो फिर गाफिल मूर्ख पापी जन वह कुमार थर-थर कांपने लगता है। कहा भी है- थरहर कांपै जीवड़ो डोलै, उत माई पीव कोई न बोलै।'' आगे ले जाकर यम के दूत जीव को अपने पातशाह यमराज को सौंप देते है वहां पर यमराज पीछे की कमाई का हिसाब-किताब देखता है वहां पर पुण्य का खाता बिल्कुल ही खाली मिलता है। गर्भ के वास में किये हुए वचनों को भी नहीं निभा सका ऐसे पापी को तो घोर नरक में डाला जाता है।13। आगे कर्मों के अनुसार शरीर प्राप्ति बतलाते हुए कवि कहता है कि यदि जीव में किसी बड़े या छोटे पद पर पहुंचकर घूस-रिश्वत के लिये हाथ बढ़ाता है तो उसे भयंकर विशाल हाथी या मगरमच्छ आदि देहों की प्राप्ति होगी जो कभी पेट भरकर घास चारा आदि नहीं पा सकेगा सदा भूखा ही रहना पड़ेगा।14। या फिर ऐसा शरीर मिलेगा कि कभी भी खाने को नहीं मिलेगा अथवा शरीर में कोई भयंकर रोग हो जायेगा। पेट में अन्न का कण भी नहीं जा सकेगा। मूंह खोलने की भी नौबत नहीं आयेगी।15। अब आगे बतला रहे है कि जीवात्मा को तो यम के दूत पकड़कर ले जायेंगे उन्हें यथा कर्मानुसार दण्ड प्रदान करते है। परन्तु पीछे मृत शरीर की क्या दशा होती है। कभी इसी पर स्वर्ग के अलंकार सेज आदि सुख सुविधायें थी किन्तु आज उसे माता-पिता, पुत्र, नारी आदि परिवार के चार आदमी कंधे पर उठाकर ले चलते है।16। चलते-चलते मार्ग में उतार कर एक जगह पुन: विश्राम लेते है और वहां पर भी अधिक देर न रुक कर फिर उसे उठाकर चलते है और उसे घने वन में गांव से दूर ले जाकर वहां पर ही उनका अन्तिम संस्कार करते है।17। इतनी देर तक तो वह मृत शरीर चार आदमियों के कंधे पर था परन्तु अब कंधे से उतार कर धरती पर रख दिया जाता है। अन्तिम धरती की ही शरण ली जाती है। अपने प्रिय भाई बन्धु सभी कुछ पीछे छूट गये है उसे तो अकेला ही जाना होगा।18। कवि कहता है कि वहां पर श्मशान भूमि में आम की वणी में कोयल बैठी हुई किलोल कर रही है और मधुर वाणी बोलती हुई मानो यह कह रही है कि दुनियां में दु:ख बहुत है जो कोई भी मोह माया के वशीभूत हो जाता है वह इसी प्रकार से बिलखता है और दुखी हो जाता है। यहां पर पहुंचने पर क्षण भर के लिये मानव संसार की असारता का अनुभव करता है।20। वहां पर उस कोमल शरीर के लिये हाथ में कसी

कुदाला लेकर गड्डा यानि घर बनाते है उसी शरीर को वहीं पर धरती की गोद में सदा के लिये सुलाया जायेगा। उस शरीर की अन्तिम क्रिया करके जमीन में दबा करके वापिस घर लौट आते है तो रोना चिल्लाना ही शेष रह जाता है। कवि कहता है कि यह कैसा रिवाज है जब स्वयं को भी मरना है तो दूसरों के लिये क्या रोना पीटना चिल्लाना है यदि रोना ही है तो स्वयं के लिये ही रोयें। कबीर ने कहा है-

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवै।।

शिवदास जी कहते है कि मैं सत्य कहता हूं कि जो हरि विष्णु की भक्ति करेगा वह निश्चित ही भवसागर से पार उतर जायेगा। जन्म मरण के चक्कर से छूट जायेगा। यह साखी विशेष रूप से बिश्नोई साधु के अन्तिम यात्रा के अवसर पर गायी जाती है। ऐसी परंपरा है।

कवि संख्या-6 ''अभियादीन''

जन्म संवत् 1500-1570 के मध्य जीवन काल अनुमानित है। ये नागौर के गृहस्थ मुसलमान थे। जाम्भेश्वर जी की वाणी तथा सिद्धि नियम धर्म से प्रभावित होकर शिष्यत्व स्वीकार किया था। इनकी रचना 14 पंक्तियों की कणां की एक साखी मिली है जो स्वयं को पहचानने की चेतावनी देती है।

साखी कणां की-9

दीन मीठो मैवो, जुग करि देखो खारो।1।
ग्यान इम्रत मेवौ, मोमणां नै दीन पियारो।2।
झूठ चारी अरू झगड़ो, कहर क्रोध निवारो।3।
खोहणी दाणों खीणां, वादो अरू अहंकारो।4।
छोड़ी मंडप अरू मेड़िया, आयो जुंवर अहंकारो।5।
दूजा रहण नै रहसी, यो ही गयो संसारो।6।
अह बागर बाड़ी, कांय हरियावा चारो।7।
हरिया वै अकेलो, मोमणां नै का पछेयारो।8।
दूजा कथन कांय मानो, हकीकत कांय निवारो।9।
रंग पाह उतर गयो, दुनियां नै रच्यो पसारो।10।
पोह अलगो मेल्हयो, बीच करि गयो अंधियारो।11।
से तो वांसे रहिया, जांको तकै छो लारौ।12।

से तो पारि पहुंता, जांह को न थे उभारो।13।
दीन अमियां बोलै, उरिन राखो देई पारो।14।

भावार्थ–सत्‌चित आनन्द रूप परमेश्वर ही मीठा मेवा है। परमात्मा के अतिरिक्त तो सम्पूर्ण संसार ही कड़वा है। इस जगत में राग द्वेष सुख दुःख इर्ष्या आदि भरे हुए कड़वाहट के तालाब ही है।1। सद्‌गुरु देव से प्राप्त ज्ञान ही अमृत का मेवा है। उस मेवे को छोड़कर ऐसा कौन होगा जो संसार का विषपान करेगा। भक्त लोगों को तो दीन धर्म ही प्यारा है।2। उस अमृत की प्राप्ति के लिये गुरु की शरण ग्रहण करो तथा व्यर्थ का वाद–विवाद झगड़ा कलह क्रोध को छोड़ना होगा।3। इस व्यर्थ की कलह क्रोधादि से तो महाभारत जैसे युद्ध में कई अक्षौहिणी सेना खप गई थी। वे सभी मरने वाले राक्षस ही तो थे। क्योंकि वे व्यर्थ के वाद–विवादी और अहंकारी थे। इन्हीं कुकर्मो से वे लोग महल घर बार छोड़कर चले गये जिस राज्य के लिये लड़ रहे थे वही पीछे छूट गया उन लड़ने वालों को मृत्यु पकड़कर ले गई।5। जिन्होनें स्वयं अपने रहने के लिये मन्दिर महलों का निर्माण करवाया था किन्तु उन्हीं में अब दूसरे ही लोग रह रहे है। वे तो बेचारे सुख का स्वपन देखते ही चले गये। एक क्षण भी नहीं ठहर सके।6। परायी वस्तु धन या हरे भरे खेत घास को देखकर उस पर मन क्यों ललचाते हो और उसको हड़पने की कोशिश क्यों करते हो। जबरदस्ती करके परायी वस्तु हड़पना यह कहां तक उचित है? ऐसा क्यों करते हो क्या वह वस्तु तुम्हारे साथ जायेगी।7। हो सकता है अभी तो इस कुकर्म कराने में तुम्हारे सहयोगी हो परन्तु यहां से जब रवाना होगा तब सर्वथा अकेला ही जायेगा। समय व्यतीत हो जाने पर फिर भक्तों से प्रेम किया तो भी क्या काम आयेगा।8। परमात्मा विष्णु ने जब समझाया था वह तो तुमने नहीं मानी किन्तु किसी अन्य कुकर्मी जन ने जो बात कही वही स्वीकार की तो तुमने वास्तविक बात को छोड़ दिया ऐसा क्यों किया, ऐसा नहीं करना चाहिये था।9। उतम संग से चढ़ा हुआ उतम रंग तो कुसंग करने से एक तरह से उतर गया और कुसंग से चढ़े हुए रंग ने पसारा किया है। जिससे पूर्णतया संसारी हो गया है। सचेत नहीं रह सका जिसका फल दुःख के सिवाय और क्या हो सकता है।10। जो मार्ग पकड़ा था उसे तो छोड़ दिया यदि मार्ग मार्ग जाता तो प्रकाश था अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंच जाता परन्तु अब तो बीचोबीच ही लटक गया न आगें जा सका और न ही पीछे वापिस लौट ही सकता

बीचोबीच ही अन्धकार में पड़कर अंधा हो चुका है अब क्या उपाय हो सकता है।11। जिसका तुमनें सहारा लिया था वे भी पीछे ही रह गये। कमजोर का सहारा कभी सफलता नहीं दिला सकता। जो स्वयं कमजोर है वह दूसरों को शक्ति प्रदान कहां से करें।12। इसके विपरीत वे साधु जन जो परमात्मा की शरण ग्रहण की थी वे तो उतम संग से पार पहुंच गये, जन्म मरण के चक्कर से छूट गये क्योंकि उन पर किसी प्रकार का भार नहीं था उन्होनें अपना भार अपने स्वामी को सौंप दिया था।13। हे देव! मैं अभिया कवि प्रार्थना कर रहा हूं कि मुझे पार उतार देना मैं कहीं बीच में ही न रह जाऊं ऐसे ही कहीं भटक गया तो फिर चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार छा जायेगा।

कवि संख्या-6 जोधो रायक

इनका जीवन काल 1500-1570 मध्य अनुमानित है। ये हजूरी कवि थे। ये संभवतः रायक जाति से सम्बन्धित रहे होंगे। इन्होनें अपने गुरु भाईयों से जुमलै में आने का आह्वान किया है। जहां गुरुदेव विराजमान है। राग हंसो में गेय 17 पंक्तियों की एक साखी इनकी यह प्राप्त है।

साखी कणां की-10

सार हंस राजा हो जी, बैठो तखत रचाय।1।
गुण बेलड़ियां हो जी, तुम कित बसियां रात।2।
हम वासो वसियो हो जी, खालक के दरबार।3।
हमें काम पड़्यो हो जी, मोमण था शुचियार।4।
मोमण आवैला हो जी, कर कुरज्यां ज्यों डार।5।
मोमण मिलैला हो जी, लांबी-लांबी बांह पसार।6।
मोमण बैसेला हो जी, हंसा रै उणियार।7।
मोमण बोलैला हो जी, कर मोरा जां झिंगार।8।
भुंय लाधी छै हो जी, जे कण ल्योह निपाय।9।
कण चुणि चुण्य ल्यो हो जी, राच्यो न रहो संसार।10।
राजा कर्ण भलो थो हो जी, कंचन को दातार।11।
राजा विदुर भलो थो हो जो, साहेब को शुचियार।12।
जीवड़ा के काजे हो जी, राजा हरिचंद बेची नार।13।
पांचुं पाण्डु भला था हो जी, धन्य कुंता दे माय।14।
ढहि वृक्ष पड़ैला हो जी, धरण सहै भूंय भार।15।

जमला जागैला हो जी, कांसी के झणकार।16।

जोधो रायक बोलै हो जी, कलि दसवै अवतार।17।

हे देव! आप तो सार रूप हंस राजा हो। जिस प्रकार पक्षियों का सर्वश्रेष्ठ राजा हंस होता है। उसी प्रकार आप भी तो मनुष्यों का राजा हो। इसलिये आप यही संभरा नगरी पर ही तखत-आसन लगाकर बैठो जी।1। हे देव! आप तो गुणों की बेलड़ियां हो जी, जिस प्रकार नागर बेल दिन दुनी रात चौगुनी बढ़ती है और सुवासित करने वाली है उसी प्रकार आप भी तो आगन्तुक मोमणों को आनन्दित करते हो। आपका यश भी उतरोतर बढ़ता ही जा रहा है। आप इतने दिनों तक कहां रहे। आपके बिना तो यहां मानो दिन भी रात्रि जैसा ही था।2। हमनें तो खालक परमात्मा के दरबार में ही रात्रि में निवास किया है। हमारा अन्य कुछ भी कार्य यहां आने का नहीं था। हम तो उस परमात्मा के भक्त बनकर शरण ग्रहण करने के लिये यहां आये है।4। अन्य भी भक्त अवश्य ही आयेंगे जिस प्रकार कुरज पक्षी पंक्ति बनाकर एक स्वर में मधुर गाना करती हुई उड़ती है उसी प्रकार प्रिय भक्त भी एक पंक्ति बनाकर सुमधुर करूणामय गायन करते हुए आयेंगे जी।5। यहां सम्भराथल पर आकर मोमण आपस में एक-दूसरे का आलिंगन लंबी-लंबी भुजाऐं फैलाकर करेंगे। उस समय उनका प्रेम देखते ही बनेगा।6। तथा भक्तजन यहां सम्भराथल पर देव दर्शनार्थ आयेंगे। जिस प्रकार हंस मान सरोवर पर आते है और बैठे हुए शोभायमान होते है उसी प्रकार भक्त भी इस सम्भराथल पर शोभायमान होंगे।7। यहां पर बैठकर शब्दोच्चारण करेंगे जिस प्रकार मयुर बोलते है। सभी भक्त तेजस्वी है उनकी ध्वनि भी उच्चस्वर एवं मधुर है।8। इस समय ज्ञानी भक्तों को सुधरी हुई धरती का खेत मिल गया है इसमें अपनी इच्छानुसार कण तत्व की उपज कर सकेगे अर्थात् सतगुरु की प्राप्ति हो चुकी है इसलिये अब तत्व की प्राप्ति कर लेंगे।9। हे भक्तों! अब ज्ञान रूपी कण इधर-उधर बिखर रहा है इसलिये चुन करके एकत्रित कर लो। जीवन में ज्ञान को स्थान दो केवल संसार की मोह माया में ही अटके मत रहो।10। राजा कर्ण अच्छा दानी था जिन्होनें स्वर्ण का ही दान दिया तथा विदुर भी वैसा ही महादानी था जो साहब भगवान का प्रिय भक्त तथा बड़ा ही पवित्रात्मा था।11। अपने जीव की भलाई के लिये सत्य का पालन करते हुए हरिश्चन्द्र ने अपनी प्रिया भार्या को ही बेच डाला था।13। इसी प्रकार से पांच पाण्डव

भी बहुत ही उच्चकोटि के महापुरूष हुए तथा उनकी माता कुन्ती को भी बार-बार धन्य है जिन्होनें ऐसे पुत्र रत्न पैदा किये तथा उन्हें संस्कारित करके योग्य बनाया।14।जिस प्रकार वृक्ष सूख जाता है तो धरती में ही विलीन हो जाता है उसी प्रकार से यह शरीर भी अन्त में धरती में ही मिल जाता है।15। जब शरीर गिर पड़ेगा तो यमदूत भी जग जायेंगे सचेत हो जायेंगे और जीव को पकड़कर ले जायेंगे। जीव भी जिस प्रकार से कांसी की आवाज कांसी में ही समा जाती है और चोट करने पर प्रगट होती है उसी प्रकार जीव का भी आवागमन होता है। कहा भी है-''कंसे शब्दे कंस लुकाई, बाहर गयी न रीऊं''। जोधोजी रायक कहते है कि सम्भराथल पर इस समय कलयुग में यह दसवां अवतार हुआ है।

कवि सं.-8 'केशोजी देहडू.'

जीवन काल 1500-1580 अनुमानित है ये हजूरी कवि केशोजी थे। इनकी मात्र एक ही साखी मिलती है। राग सुहब में गेय कणां की साखी है। इसे जुमलै की तीसरी साखी के रूप में मान्यता प्राप्त है।

साखी कणां की-11

आवो मिलो जुमलै जुलो, सिंवरो सिरजणहार।1।
सतगुरू सतपन्थ चालिया, खरतर खण्डाधार।2।
जम्भेश्वर जिभिया जपो, भीतर छोड़ विकार।3।
सम्पति सिरजणहार की, विधिसूं सुणो विचार।4।
अवसर ढ़ील न कीजिये, भले न लाभे वार।5।
जमराजा वांसे वहै, तलबी कियो तैयार।6।
चहरी वस्तु न चाखिये, उर पर तज अहंकार।7।
बाड़े हूंता बीछड़ा जांरी, सतगुरू करसी सार।8।
सेरी सिवरण प्राणियां, अन्तर बड़ो अधार।9।
पर निन्दा पापां सीरे, भूल उठावै मार।10।
परलै होसी पाप सूं, मूरख सहसी भार।11।
पाछै ही पछतावसी, पापां तणी पहार।12।
ओगण गारो आदमी, इला रै उर भार।13।
कह केशो करणी करो, पावो मोख द्वार।14।

भावार्थ-जन साधारण को सम्बोधित करते हुए केशोजी कह रहे है

कि आओ मिलकर जुमले में बैठो और ज्ञान श्रवण करो तथा सिरजनहार भगवान विष्णु का स्मरण करो।1। सतगुरु जाम्भोजी ने यह बिश्नोई सतपंथ चलाया है। इस मार्ग पर चलो तो अवश्य ही मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी किन्तु इस पन्थ पर चलना कठिन अवश्य ही है। जिस प्रकार तरवार की धार पर चलना कष्ट साध्य है उसी प्रकार इस पंथ पर चलना भी है। कहा भी है–'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्या' धर्म के मार्ग पर चलना तो छुरे की धार पर चलना है। प्रारम्भ में कठिनता तो होगी तो उसका फल बड़ा ही मधुर होगा इसलिये कठिन होते हुए भी त्याज्य नहीं है किन्तु ग्राह्य है।2। जाम्भेश्वर भगवान विष्णु का जप जिभ्या द्वारा जपो ''यज्जपस्तदर्थ भावनम्'' जप के साथ ही जिसका जप किया जाता है उसका ध्यान भी करना चाहिये। तभी वह जप कहलाता है। भीतर के विकार काम-क्रोधादि का त्याग करे तभी जप सफल होगा।13। यह धन दौलत की संपति जिसे अपना मान रखा है वास्तव में यह सिरजनहार भगवान विष्णु की ही है। उन्होनें ही प्रदान की है उन्हीं की ही निजी संपति है। हम क्यों व्यर्थ में ही झूठे मालिक बनकर अभिमान करें। यह बात विचार करने योग्य है।4। यह मानव जीवन एक अवसर मिला है कुछ करने के लिये, बन्धन से छूटने के लिये, यदि इस बार भी ढ़ील दे दी गयी तो फिर बार-बार यह मानव देह रूपी अवसर नहीं मिलेगा।5। यमराज वहां से अपने स्थान से तुम्हें लेने के लिये चल पड़े है।, पीछे तलब हिसाब किताब लेने वाले अपने चित्र गुप्त को तैयार करके आ रहे है वहां तो किसी प्रकार की ढ़ील नहीं है किन्तु तुम्हारी तरफ से ढ़ील चल रही है। तुम जाने के लिये अब तक तैयार नहीं हुए हो। अर्थात् मृत्यु सदा ही ले जाने के लिये तैयार खड़ी है जब भी अवसर मिलेगा तभी ले जायेगी। इसलिये इस जीवन का विश्वास करना ही बहुत बड़ा धोखा है।6। चहरी अखाद्य वस्तु जैसे मांस मदिरा आदि एवं अपवित्र भोजन जलादि ग्रहण नहीं करना चाहिये। उसे तो हृदय से घृणा करके परित्याग देना ही ठीक है। अन्यथा मन बुद्धि शरीर सभी को नष्ट कर देगा।7। प्रहलाद के बाड़े के बिछुड़े हुए जीवों की सतगुरु अवश्य ही सहायता करेंगे, तुम्हें गुरुदेव के जुमलै में सम्मिलित होने की आवश्यकता है। हे प्राणी! तूं मानव देह में आया है। इस देह को प्राप्त करके भगवान विष्णु का स्मरण मनसा, वाचा, कर्मणा द्वारा करें। यदि इस देह के द्वारा परमात्मा को याद नहीं किया और यह शरीर जर्जरित होकर नष्ट हो गया

तो फिर आगे तेरी क्या दशा होगी। इस जीवात्मा को बैठने के लिये कोई शरीर तो चाहिये वह तो तुझे यह मानव देह का तो नहीं मिलेगा। इससे तो तूं बहुत ही दूर चला जायेगा। अन्य भले ही निकृष्ट योनी का शरीर मिले।9। परायी निन्दा करना शिरोमणी पाप है। इसलिये जो भी पराई निंदा अनहोनी बात जो किसी को नीचा दिखाये ऐसी वार्ता करके अपने को महान सिद्ध करता है तो वह समझो दुनियां के पाप का भार अपने कन्धे पर उठाये हुए कितने दिनों तक चलेगा। एक दिन प्रलय को प्राप्त हो जायेगा। मृत्यु का ग्रास बन जायेगा। तब मूर्ख यमदूतों की मार सहन करेगा।11। पीछे बहुत ही पछतायेगा, अपने कुकर्मो के लिये रोयेगा किन्तु फिर क्या हो सकता है। समय बीत जाने पर फिर पीछे पछतावा ही तो रहता है।12। अवगुणों से भरा हुआ आदमी इस धरती पर भार है। यह धरती, वृक्ष, पहाड़, नदी, नाले, पशु, पक्षी से भार नहीं मरती किन्तु दुष्ट पापी के भार से दब जाती है। तभी भार उतारने के लिये स्वयं विष्णु ही सम्भराथल पर आये है।13। कवि केशोजी कहते है कि कर्त्तव्य कर्म करोगे तो मुक्ति का द्वार खुलेगा अन्यथा तो दुख नरक का द्वार तो खुला ही पड़ा है।14।

कवि संख्या-9 'लालचन्द नाई'

जन्म विक्रम संवत् 1580 अनुमानतः है ये बीकानेर के किसी गांव के है। लूर में इनका नाम आता है इसलिये हजूरी कवि होना प्रमाणित होता है। इनकी एक साखी छंदा की मिलती है जो राग गवड़ी में गेय है। इस साखी के प्रसंग में ऐसा कहा जाता है कि किसी प्रसिद्ध ज्योतिषी द्वारा लोगों के भविष्य ग्रहों का प्रभाव बताते देखकर कवि ने यह साखी उसको लक्ष्य करके कही थी।

साखी-12 'छन्दा की'

सो दिन लिख दे रे जोयसी, हंसराय करै पयाणों।
धंधो अधिक निवारिये, सब जुग होय बिडाणों।
जग बिडाणों मन पछताणों, विसन-विसन ध्याइये।
पुण्य मार्ग धर्म क्रिया, दियो सोई पाइये।
सुकरत पाछो लाछ लिछमी, संग कछु न होयसी।
जां दिन हंस करै पयाणों, सो दिन लिखदे जोयसी।1।
तिल तिल घड़ी महूंरता, सोई दिन नेड़ो आवै।
इणि कलि बहुला पंडिता, सो दिन कोई न बतावै।

दिन न बतावै जद लैण आवै, जब जीव संकट पड़ै।
राव राणा खान खोजां, तास सूं कोई न अड़ै।
पकड़ गुन्ही ज्यूं चलावै, ता दिन कुण छुड़ावसी।
तिल तिल घड़ि महूरतां, सो दिन नेड़ो आवसी।2।
नख चख सूं जीव नीसरे, तां दिन को डर भारी।
नाणों किण रो सैणों, छोड़ चाल्या कुड़ी प्यारी।
कुड़ी प्यारी हंस छोड़ चाल्यो, हेत हुरमत सब गई।
नितवार चंदण खोल करतो, छिन एक में गंदी भई।
परहरो माया लाछ लिछमी, पूत प्रीतम नारियां।
नख चख सूं जीव नीसरे, तां दिन को डर भारीयां।3।
फंद पड़्यो जम दूत को, तब मूरखों पछताणों।
सांई जी रो सुमरण ना कियो, बूझत ही सकुचाणों।
सकुचाय जीव नै जबाब न आवै, कहो किस विध छूटिये।
तेरा संग साथी नहीं कोई, गयो जम पूर ही कूटिये।
देख माया गरब करतो,सीस मुकुट मोती जड़े।
कह लालचन्द पछताण लागां, जमदूत के पानै पड़े।4।

भावार्थ–हे ज्योतिषी! यदि तूं भविष्य की बात बतलाता है तो वह दिन बतला दे जिस दिन यह जीव रूपी हंस यह शरीर छोड़कर यहां से प्रस्थान करेगा। यदि नहीं बतला सकता तो फिर क्यों पाखण्ड करता है। कोई भी बतला भी कैसे सकता है क्योंकि मृत्यु का कुछ भी समय निश्चित नहीं है। यदि मृत्यु से पूर्व ही पता लग जाये तो काम धन्धे बहुत ही ज्यादा है उन्हें निपटाया जा सकता है। अथवा कार्य अधिक होने से इस हंस को रोका भी जा सकता है किन्तु इस जगत को ऐसा दण्ड दिया गया कि अब तक किसी को स्थिर नहीं रहने दिया गया है। ''अनेक-अनेक चलंता दीठा, कलि का माणस कौन बिचारूं'' यह जगत बिछुड़ जायेगा। मन में तो केवल पछतावा ही रह जायेगा इसलिये हे ज्योतिषी! विष्णु-विष्णु इस मन्त्र का जप करते हुए परमात्मा का ध्यान कर, पुण्य का मार्ग एवं धार्मिक क्रिया तथा कुछ दिया हुआ दान ये ही सुकृत है इन्हीं का सुमधुर फल मिलेगा। पुण्य कर्म तो किया नहीं परन्तु पाप कर्म के द्वारा अर्जित की गयी धन माया, स्त्री आदि साथ में कुछ भी नहीं जायेगा। हे जोयसी! वह दिन लिख दे, जिस दिन यह हंस राजा

इस शरीर से निकल करके प्रस्थान करेगा।1। क्षण-प्रहर, दिन-रात, पक्ष-मास, वर्ष इस प्रकार से समय व्यतीत होता जा रहा है। मृत्यु नजदीक आ रही है। इस कलयुग में बहुत से पण्डित है किन्तु वह मृत्यु का दिन निश्चित रूप से कोई भी नहीं बता पा रहा है। यह आश्चर्य ही है। जब लेने के लिये यम के दूत आते है तो यह बेचारा जीव महा संकट में पड़ जाता है। यदि दिन निश्चित हो तो कुछ उपाय किया जा सके परन्तु कोई बतानें वाला भी नहीं है। इस दुनियां में बड़े-बड़े शूरवीर राजा है, खान है, खोजी है, पंडित विद्वान है किन्तु मृत्यु के सामने कोई भी नहीं लड़ सकता है सभी हार मान लेते है। यम के दूत इस जीव को पकड़कर अपराधी की भांति हाथ में बेड़ियां डालकर जबरदस्ती आगे करके पैदल ही चलाते है कवि कहता है कि इस भारी कष्ट से कौन छुड़ा सकता है। इसलिये हे मानव! सावधान हो जा वह दिन तिल-तिल, क्षण-क्षण व्यतीत होता हुआ नजदीक आ रहा है।2। जब वह जीवात्मा शरीर से बाहर निकलेगा तो इसके बाहर निकलने के नौ दरवाजे हैं। नेत्र, कान आदि न जाने किस दरवाजे से बाहर निकलेगा उस दिन का डर भारी है जैसा हम इस जीव से प्यार करते है अपनें शरीर और जीव का गहरा सम्बन्ध स्थापित करते आ रहे है। वैसा यह जीव शरीर कुटुम्ब परिवार को अपना बन्धु नहीं मानता इसलिये यह शरीर आदि कुटुम्ब को छोड़कर चला जाता है। पूर्व का प्रेम प्यार लालन-पालन सभी कुछ धरा ही रह जाता है। झटिति छूट जाता है। इस शरीर पर नित्य प्रति चंदन तेल फुलेल लगाता था इसे बड़े सलीके से सजा संवारकर रखता था किन्तु यह जीव जब चला गया तो वही देह गंदी बदबूदार हो गयी। यह कार्य एक क्षण में ही हो गया। इसलिये हे मानव! यह जो बाह्य चाकचिक्य दौलत पुत्र परिवार ये सभी धोखा देने वाले है एक दिन छूट जायेंगे अत: इनसे लगाव मत रखो। जिस दिन नख-चख आदि नौ दरवाजों से निकलेगा उस दिन का भारी डर है।3। फिर क्या हो सकता है जो कार्य पहले होने वाला था अब न हो सकेगा। जीव को आगे ले जाकर धर्म कर्म के बारे में पूछा जायेगा तो फिर वहां कुछ भी जवाब नहीं दे सकेगा मुख से जबान नहीं निकलेगी संकुचित हो जायेगा, इस शरीर के छूट जाने पर भी आगे सूक्ष्म शरीर जीवात्मा सहित जाता है क्योंकि परमात्मा का स्मरण तो किया नहीं अब दु:खों से कौन छुड़ा सकता है। वहां संकुचित हुआ जीव जवाब नहीं दे सकेगा वहां पर पूछा जायेगा कि कहिये अब कैसे छूटोगे। यहां

पर तो तेरे संग साथी कोई नहीं है। वहां मृत्यु लोक में थे वे छुड़ा देते किन्तु अब यहां कोई नहीं है पीछे ही रह गये है। यहां तो जबरदस्ती मार पड़ेगी। वहां संसार में तो धन माया को देखकर अहंकार करता था, अपने सामने किसी को कुछ भी नहीं समझता था। तेरे सिर पर स्वर्ण मुकुट था। जिसमें अनेकों मोती जड़े हुए थे किन्तु अब वहां से सभी कुछ कहां गये साथ में लेकर क्यों नहीं आये कवि लालचन्द कहते है कि अब तो जीव वहां यमपुरी में पछताने लगा क्योंकि कठोर भयावने यमदूतों के हाथ चढ़ गया था। अब कोई भी उपाय छूटने का नहीं था।4।

कवि संख्या-10 'आसनोजी'

विक्रम संवत् 1500-1600 के मध्य है ये महलाणा गांव के सोढ़ा जाति के भाट थे। जाम्भेश्वर जी के धर्म नियम से प्रभावित होकर शिष्य बन गये थे। ये गायन विद्या में प्रवीण थे। जाम्भोजी ने यह कार्य भी उन्हें सौंपा भी था। कालान्तर में बही लिखने का कार्य भी करने लगे थे। अभी भी इनके वंशज महलाना में यह कार्य कर रहे है। लूर में इनका नाम आता है। हरजस के अन्तर्गत इनका गाया हुआ मल्हार राग में एक झूमखो है जो फूलों का एक गुलदस्ता है वह गुरुदेव को समर्पित किया है। कवि के पास गुरु को समर्पित करने को और सबसे बड़ा उपहार क्या हो सकता है।

झूमखो राग मल्हार-13

मेरा लाल नै, ऐसो हरजी रो झूमखो, पांचूं परमल भारी।
ए पांचूं जे बस करै, साइ पतिवरता नारी।1।
इव गुणवंती कांमणी, निगणो मेरो नांह।
एकणी वास वसंतड़ा, अब क्यों मेल्हयौ जाय।2।
धण पुराणी जीव नुवो, निति उठि झगड़ो होय।
धण पिछाणै पीव नै, आवागुवण न होय।3।
पाल पुराणी जल नुवों, हंसा केल कराय।
बालापण की प्रीतड़ी, चुण-चुण हरि चुगाय।4।
गिगन मण्डल मां कोठड़ी, घुरै दमांमा घोर।
मन मधकर सूं मिल रह्यो, छेद्या कर्म कठोर।5।
बंक नाल नीझर झरै, अमर मरे नहीं जीव।
पलटि जोगणि जोगी हुवै, सुन्य महारस पीव।6।

गंग जमन सुरसती, त्रिवेणी तटि असनान।
चंद सूरजि अंतरै, अठसठि तीरथ थान।7।
कणि ओ झूबखो गावियो, किण अह किया बखांण।
जा घटि अंणभै उपजै, जाका अह इहनाण।8।
अरध उरध वसेर हो, भंवर गुफा एक ठांव।
पांच पचीसूं वसि करे, संभू जांको नांव।9।
अगम निगम जहां गम नहीं, वरन विवरजत दीठ।
आसानन्द ऐसी कहै, पीयो अमीरस मीठ।10।

इस शरीर में रहनें वाला जीवात्मा ही मेरा लाल है। इस बात को मन बुद्धि कहती है क्योंकि इनके लिये तो जीवात्मा से बढ़कर और कोई प्रिय लालन-पालन करने के योग्य नहीं है। इस लाल का हरिजी ने यह पंच तत्व का दिव्य मानव शरीर दिया है। यहां पर यह शरीर ही रंग बिरंगे फूलों का झूमखा-गुच्छा है। इस शरीर रूपी झूमखे में पांच पुष्प यानि पांच ज्ञानेन्द्रिय है। जो सुवास अर्थात् ज्ञान ग्रहण करती है। आगे कवि कहता है कि इन पांच ज्ञानेन्द्रियों को जो वश में करले वही पतिव्रता स्त्री है। अर्थात् वही जीवात्मा परमात्मा का प्रिय भक्त है। जीव और ईश्वर पत्नी तथा पति के रूप में कहे है।1। यह जीव तो गुणों वाला है अर्थात् इस जीव रूपी स्त्री के तो सत्व रज और तम ये तीनों गुण सदा ही रहते है परन्तु वह परमात्मा पतिदेव तो निर्गुण है। निर्गुण और सगुण का मेल कैसे होगा। कभी दोनों एक भी हो जाते है। अभ्यास द्वारा किन्तु जब भी अभ्यास खंडित होता है तो पुनः अलग हो जाते है। कवि कहता है कि ऐसी वियोग अवस्था जीव रूपी पत्नी के लिये असह्य ही है। प्रथम रस का पान किया, अब उसे कैसे त्यागा जा सकता है इसलिये मिलने की इच्छा बनी रहती है।2। पत्नी रूप जीव तो पुराना है और पति परमेश्वर सदा नया ही है अर्थात् हमारा इस जीव से तो परिचय जन्म जन्मान्तरों का है परन्तु परमेश्वर का परिचय तो इस मानव देह में आने से ही हुआ है। इसलिये परिचय नया है तथा नया होने से स्थायी नहीं हो पा रहा है। उसे स्थायी टिकाऊ बनाने के लिये नित्य प्रति भजन, उपासना करते है अर्थात् उसी से ही झगड़ा करते है। यह कार्य नित्य प्रति संध्या समय में तो अवश्य ही होता है। कवि कहता है कि जो पत्नी यदि पति को पहचान ले अर्थात् जीव ईश्वर को ठीक प्रकार से जानकर अनुभव कर ले तो फिर कभी बिछुड़ना नहीं होगा

अर्थात् जन्म मृत्यु के चक्कर से छूट जायेगा।3। तालाब तो पुराना है और उसमें आया हुआ जल नया है, उसमें हंस क्रीड़ा कर रहे है हंस इसी तालाब पर ही क्यों आया क्योंकि इसे बाल्यावस्था से ही प्रेम है। यहां पर आकर केवल मोती रूपी हरि नाम को चुगता है अर्थात् यह जीवात्मा तो प्राचीन है किन्तु यह शरीर नया है। इस नये शरीर में यह जीव रूपी हंस क्रीड़ा कर रहा है। इस शरीर से ही प्रेम हो गया है क्योंकि जब से सृष्टि रची गयी थी उस प्रथम अवस्था से ही इस मानव शरीर से इस जीव को सदा ही प्रेम से लगाव रहा है। क्योंकि हंस को मोती सदृश ज्ञान आनन्द की प्राप्ति इस शरीर से ही होती है। अन्य शरीरों से दुर्लभ है।4। दसवें द्वार त्रिकुटि को गगन मण्डल कहा है वहां पर अनहद नाद रूपी अनेकों बाजे बज रहे हैं। सप्त स्वरों की झणकार वहां सुनी जा सकती है। उस स्थान को एक कोठड़ी कहा है। उसी कोठड़ी यानि त्रिकुटि में यह चंचल मन जा कर ठहर गया है। उन्हीं बाजों की मधुर ध्वनि सुनने में मस्त हो गया है। समाधी को प्राप्त होकर शांत हो गया है। उसे आनन्द की लहरों से शांति मिल चुकी है ऐसी अवस्था आने से सभी कर्म फल कट जाते है कहा भी है–ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणी भस्मसात् कुरूते अर्जुन।5। वहां त्रिकुटि में तीन नदियों का संगम है यथा गंगा, यमुना, सरस्वती या इडा, पिंगला तथा सुषुम्ना कही गयी है। इनमें प्राण जब सुषुम्ना में चला जाता है तो मन स्थिर हो जाता है और उसी सुषुम्ना यानि बंकनाल से अमृत का स्राव प्रारम्भ हो जाता है। यह मन वहीं बैठकर अमृत पान करता है और अपने सुख का अंदेशा जीवात्मा तक पहुंचा देता है वही आनन्द एवं अमृत पान की स्थिति है ऐसी अवस्था में पहुंचकर जीव अजर अमर हो जाता है। पहले तो यह जीव जोगणी था अर्थात् पत्नी के रूप में था किन्तु अब अमृत पान करके यह भी योगी पुरूष बन जाता है अर्थात् अपने पति परमेश्वर के सदृश ही सत्‌चित आनन्द रूप हो जाता है। क्योंकि इसने भी तो शून्य से अमृत रस का पान कर लिया है और अमर हो गया है।6। गंगा यमुना सरस्वती इन तीनों के मिलान को ही त्रिवेणी कहा जाता है इस त्रिवेणी के तट पर स्नान सुलभ हो जाता है। जिसने भी महा अमृत का पान योग अभ्यास द्वारा किया है, वह सदा ही स्नान करता है। सूर्य चन्द्र भी उसके लिये आकाश में दूरस्थ होते हुए अति निकट हो जाते है अर्थात् सूर्य चन्द्र भी उसके लिये सहायक सिद्ध होते है तथा अड़सठ तीर्थ भी उसके लिये वहीं पर ही आ जाते है। उसे कहीं भी भटकने

की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् संसार में उसके लिये अप्राप्य कुछ भी नहीं होता।7। कवि कहता है कि झूमखा किसने गाया है और कौन इसकी व्याख्या करता है। स्वयं उतर भी देते है कि जिसके हृदय में इस अमृत पान का अनुभव हुआ है वही तो गा सकता है और व्याख्यान भी कर सकता है। जिसके हृदय में अनुभव हुआ है उनकी यह पहचान है कि वह गा भी सकता है और दूसरों को समझा भी सकता है। कवि का दावा है कि यह झूमखा बिना अनुभव के नहीं कहा जा सकता।8। पंच महाभूत आकाश, वायु, तेज, जल और धरणी इन्हीं से शरीर की रचना होती है ये ही पांचों इस शरीर में ओत-प्रोत है। कवि कहता है कि एक भंवर गुफा स्थान है जहां भंवरा यानि जीवात्मा रहता है। वह उस गुफा में बड़ी ही युक्ति से रहता है वह स्थान हृदय ही हो सकता है। कहा भी है-ईश्वर सर्व भूतानां हृद् देशे अर्जुन तिष्ठति, हृदय नांव विष्णु को जंपो। उस गुफा के ऊपर नीचे इन्हीं पांच तत्वों का बसेरा है। कवि कहता है कि जो साधक इन पांच तत्व एवं इनकी पच्चीस प्रकृतियों को स्वभावों को वश में कर लेता है वह स्वयंभू ही हो जाता है। जीव ईश्वर की एकता हो जाती है।9। जहां तक वेद शास्त्र आदि की पहुंच नहीं है। ये तो इधर ही व्यवहारिक ज्ञान तक ही सीमित है। क्योंकि न तो उसके कोई रूप रंग गुण धर्म ही है जो दृष्टि गोचर हो सके। कहा भी है-वर्ण विवरजत, कवि आसानन्द कहते है कि ऐसा दिव्य अगोचर परमात्मा का स्वरूप ही अमृत रस है तथा बड़ा ही मधुर है उसे अवश्य ही पान करो। अमृत पान से तुम्हारा जीवन धन्य हो जायेगा।10।

कवि अज्ञात-11

संवत् 16 शताब्दी की एक जुमलै की साखी हजूरी कवि द्वारा रचित है यह साखी जुमलै में प्रथम गायी जाती है ऐसी परंपरा है।

साखी कणां की-14

साधे मोमणे कियो छै इलोच, जुमलो रचावियो।1।
इण जुमलै नै पूजैली करोड़, गुरु फुरमावियो।2।
दिल म्हां दुसमण पाल, तो जुल जुमलै आवियो।3।
मोमणो मेल्हो मन की भ्रान्त, कुफर चुकावियो।4।
पांचे करोड़ै गुरु पहलाद, मुखी रे कहावियो।5।
साते करोड़े हरिचन्द राव, आच्छो करण कमावियो।6।

नवे करोड़े दहुठल राव, सुरग सिधावियो।7।
इब के बारे गुरु जम्भ देव, कलि मां आवियो।8।
आयो गुरु लियो छै पिछाण, भलो हुवै लो भावियो।9।
सम्भराथल लियो मेल्हाण, तखत रचावियो।10।
कुपातर से अलगा टाल, सुपह रे बतावियो।11।
सासतर वेद विचार, उतम पंथ चलावियो।12।
गुरु म्हारो बैठो खेवट तांण, अबूझ बूझावियो।13।
गुरु म्हारे फेरयो सांभल ज्ञान, सुपह बतावियो।14।
गुरु म्हारै अमला रा मलिया मांण, अनु नवावियो।15।
पहलादा सूं कोल संभाल, वाचा पालण आवियो।16।
जांरा देवजी सारेला काज, गुरु जम्भ ध्यावियो।17।
जे ध्यायो जम्भेश्वर देव, तां फल पावियो।18।

भावार्थ– साधुजन एवं भक्तों ने मिलकर विचार किया कि जब श्री देव की विद्यमानता नहीं रहेगी तब हमारा तथा हमारी पीढ़ी की क्या दशा होगी। गुरुदेव ने यह फरमाया कि आप सभी मिलकर बैठो और जुमला यानि सत्संग करो। इसी जागरण की परंपरा को करोड़ों लोग पूजा करेंगे अर्थात् अपने जीवन में अपनाकर अपने कर्त्तव्य कर्म का निर्धारण करेंगे।2। हे मोमण! जुमलै में अवश्य ही आओ। आते समय साथ में अपने दुश्मनों को साथ लेकर न आयें। ये पूर्वाग्रह, इर्ष्या अहंकार आदि को छोड़कर ही आयें। तभी आने का लाभ होगा।3। हे मोमणों! मन की भ्रांति यहां आकर मिटा दीजिये तभी यहां आना सफल होगा।4। आगे बतला रहे है कि इसी सत्संग के प्रभाव से प्रहलाद जी ने अपनी प्रजा संगी साथियों का उद्धार किया था जो पांच करोड़ थे।5। सात करोड़ को लेकर हरिश्चन्द्र भवसागर से पार उतर गये क्योंकि उन्होनें तथा उनकी प्रजा नें सत्य का पालन किया था। संत पुरूषों की संगति की थी।6। इसी प्रकार से नौ करोड़ के मुख्य प्रधान राजा युधिष्ठिर हुए। जो अपनी प्रजा को लेकर पार पहुंच गये।7। इस बार स्वयं विष्णु ही जाम्भोजी के रूप में यहां पर आये है। इस कलयुग में अवतार लेकर प्रहलाद के बिछुड़े हुए साथियों को अवश्य ही मिलायेंगे। ऐसी गुरुदेव की प्रतिज्ञा है।8। गुरु आये है सभी का पिछाण भी करेंगे तथा सभी का भला भी करेंगे।9। इस समय सम्भराथल पर आकर विराजमान हुए है। यदि कोई

मिलना चाहे तो अवश्य ही भेंट करें।10। गुरुदेव सुपात्र एवं कुपात्र का निर्णय करके जो सुपात्र है उन्हें तो कृपा करके मार्ग बताकर पार उतारते है। किन्तु कुपात्र को तो दूर से ही हटा देते है क्योंकि शैतान की कुबधा ही खेती।11। गुरुदेव ने शास्त्र वेदों का विचार करके तथा वर्तमान की लोक परिस्थिति देखकर समयानुसार उतम पन्थ चलाया था।12। हमारे गुरुदेव इस समय नौका तैयार करके बैठे हुए है जो कोई भी नौका पर सवार हो जायेगा उसे तो निश्चित ही भवसार से पार उतार देंगे तथा जो अबूझ अज्ञानी है उसके अज्ञान को नष्ट कर देंगे।13। हमारे गुरु ने ज्ञान का डंका बजा दिया है, सुमार्ग बता दिया है इस समय भी यदि कोई सचेत न हो सका तो फिर सदैव सोता ही रहेगा।14। जो अमली लोग थे अर्थात् नसेड़ी अहंकारी आदि उनके अहंकार को मिटा दिया। जो कभी किसी के सामने नमन करना झुकना नहीं जानते थे उन्हीं लोगों के अहंकार को मिटा दिया।15। गुरुदेव का यहां मरूभूमि में आने का यही प्रयोजन था। क्योंकि प्रहलाद से वचन सतयुग में किया उसी वचन को पालने के लिये अपनी प्रतिज्ञा निभाने के लिये यहां आये है। ''प्रहलाद सूं वाचा कीवी, आयो बारां काजै''।16। देवजी उस सज्जन के कार्य तो अवश्य ही पूर्ण कर देंगे जिसने देवजी का ध्यान मनन तथा श्रवण किया है। जब तुम स्वयं अपने आप पर कृपा करोगे, शुभ कार्य में प्रवृत होंगे तो परमात्मा भी आपकी सहायता अवश्य ही करेंगे।17। जिसने भी श्रीदेव जाम्भेश्वर जी का ध्यान किया उसने फल अवश्य ही प्राप्त किया है ऐसी कवि की पक्की धारणा है। कर्म का फल तो ध्रुव सत्य है।18।

कवि अज्ञात-12

यह सौलहवीं शताब्दी की रचना है। यह कणां की साखी प्राप्त है। इस छोटी सी साखी में कवि ने गुरुदेव की महिमा का वर्णन किया है।

साखी कणां की-15

गुरु भाईयों ।टेर।

दीवलौ दीन दिलां मां ध्याइयै, हुइये सुरा सारीखा।1।
राजिये राज तज्यो जीव काजै, गुरु सिख मांगी भीखा।2।
चंद छिपै निस होय अंधियारौ, गुरु विण एह परीखा।3।
कांही अंनेसो कांही मनेसो, सब सुणियों इहि गुरु की सीखा।4।
साथ चले हम सीर जे भाइयो, करतब झूरी झीखा।5।

हांसल जमां मूवां जीव जाणै, जदि गुरु मांगे जी का।6।
जुमलै गोठि मिलो संग साधो, अवधूं में कांय देखो देखा।7।
सतगुरु सांई सब तुझ तांई, पाप धर्म का लेसी लेखा।8।
गुरु फुरमाई टलै न भाई, गुरु सबदां ही मेखां।9।
गुरुवट छूटी करणै पहलै, रहै न एका रेखा।10।

भावार्थ–हे गुरु भाइयों! दीपक सदृश स्वयं ज्योति स्वरूप परमात्मा को अपने दिलों में हृदय में राखो, उन्हीं का ध्यान स्मरण करो। कहा भी है– ''हृदय नाम विष्णु का जंपो हाथे करो टवाई'' परमात्मा का ध्यान करते हुए आप भी स्वयं तद स्वरूप हो जाइये। ध्यान में ऐसी ही विशेषता है कि वह अपने को जिस रूप का ध्यान करता है उन्हीं रूप में बना देता है।1। बड़े–बड़े राजाओं ने भी अपनी भलाई के लिये जीव का कल्याण करने के लिये राज–पाट छोड़ दिया और गुरु की शिक्षा ग्रहण की तथा गुरु के कथनानुसार जीवन यापन करते हुए भिक्षा मांगकर जीवन निर्वाह किया। कहा भी है–करोड़ निनाणवें राजा भोगी गुरु के आखर कारण जोगी।2। जब चन्द्रमा छिप जाता है तो घोर अन्धकार छा जाता है उसी प्रकार गुरु के बिना संसार में अज्ञान अन्धकार छा जाता है। चन्द्र सदृश गुरु के विद्यमान रहने से अन्धकार नहीं रहता यही सद्गुरु की परीक्षा है।3। सद्गुरु जब सच्ची यथार्थ बात बोलते है तथा कभी किसी को फटकार भी सुनाते है तो किसी को प्रसन्नता होती है अन्य किसी दूसरे को दु:ख भी होता है। किन्तु गुरु किसी की परवाह नहीं करते कवि कहते है कि इतना होनें पर भी गुरु तो सभी के हित की बात कहते है। उन्हीं को अवश्य ही सुनिये। वे तुम्हारा अपमान नहीं करते किन्तु सीख देते है। सच्चाई सदैव कड़वी ही होती है।4। हे गुरु भाईयों! हम सभी मिलकर एक साथ चलें। हम सभी एक ही पन्थ के राही है। हमारा धर्म कर्म गुरु एक ही है। हम अपनें कर्तव्य कर्म से रहित होकर आपस में व्यर्थ के विचार में न फंसें।5। इस संसार में हम आये थे तो कुछ सिर पर ऋण का कुछ बोझ था। उस कर्जे को हमने उतारा या नहीं? हासिल यानि कर जमा किया या नहीं? इस बात का जवाब तो जीव यहां से इस शरीर को छोड़कर जायेगा तब उससे पूछा जायेगा। यह कार्य भी गुरुदेव की आज्ञा से ही होगा।6। हे सज्जनों! जुमले जागरण सत्संग में मिलकर बैठो, साधु की संगति करो, अपने जीवन के बारे में विचार विमर्श करो, क्यों किसी दूसरे की तरफ

देख रहे हो। क्या किसी अवधू के दर्शन से तुम्हारा कल्याण हो जायेगा ? कहा भी है-गोरख दीठा सिद्ध न होयबा।7। हे भाई ! सतगुरुदेव ही स्वयं परमात्मा है और उनकी दृष्टि से सभी को देखती है फिर क्यों छुपकर पाप करने की हिम्मत करता है। वह तो पाप पुण्य का हिसाब कर लेंगे।8। हे भाई ! जैसा गुरु ने कह दिया है वह कभी टलने वाला नहीं है। देशकाल वस्तु से अपरिच्छिन्न है उनके कहे हुए शब्द लोहे की लकीर है अथवा लोहे की खूंटी या मेख है जहां पर भी गाड़ दी वहीं पर ही मजबूत हो जायेगी कभी उखड़ने वाली नहीं है।9। यदि गुरु का मार्ग छूट गया और मनमुखी हो गया तो फिर कर्ण जैसी गति हो जायेगी कहा भी है-मनमुख दान जू दीन्है करणै, आवागवण जूं आइयो। यदि एक भी धर्म नियम टूट गया तो फिर एक टूटने से सभी टूट जायेंगे।10।

अज्ञात कवि-13

सौलहवीं शताब्दी की यह रचना अनुमानित है। यह कणां की साखी है। इन दस पंक्तियों की साखी में कवि नें विष्णु का जप और संसार की असारता बतलाई है।

साखी कणां की-16

गुरु कायमा।टेक।
दिल मां दया सेवियो साधो मोमणों, परदेशी संसारी।1।
सै देशीड़ा आगल हुवैला, सुक्रत लेह सिधारी।2।
सुक्रत सुरग सुहेला हुइये, मन मां देख विचारी।3।
गरथ बिहुंणा जिसा व्योपारी, क्रिया बिहुणा हारी।4।
संबल बिहुणा कोस न चालिये, घर है भूंयजल पारी।5।
दिन दिन आव घटै सौणि मनवां, ज्यौं छक्यो तिथि सारी।6।
खालक राजा लेखो मांगै, पूगी मौत हंकारी।7।
विसन जी की सेवा मनसा मेवा, मिले अतिवर नारी।8।
विसन जपंता पाप न रहसी, पोह उतरि व्योपारी।9।
सुरां सूं मेलो कान्ह दिसावर, गोठि मिलो दीदारी।10।

भावार्थ-हमारे सतगुरुदेव इस समय सम्भराथल पर कायम है अर्थात् प्रत्यक्ष रूपेण दर्शन दे रहे है। हे साधों ! हे मोमणों ! दिल में दया भाव रख कर छोटे-बड़े सभी की सेवा करें। प्राणी मात्र की सेवा ही ईश्वर सेवा है। यह

जीव इस संसार रूपी देश में आया हुआ है कहा भी है–घर आगी इत गोवलवासो, गोवलवास कमायले जीवड़ा। इस परदेशी का क्या विश्वास है। यह कब यहां से प्रस्थान करके इस देश से अलग हो जायेगा। इसलिये यहां से जाते समय सुक्रत लेकर ही जायें। इस संसार में रहकर ही सुक्रत कमाया जा सकता है।2। पुण्य कर्म से ही स्वर्ग लोक भी शोभायमान हो जायेगा। वहां आगे बधाई बंटेगी, स्वागत होगा, आप वहां जाकर नरक को भी स्वर्ग में बदलने की क्षमता रखते है। इसलिये मन में देख विचार करें।3। जिस प्रकार से कोई व्यापारी व्यापार करने के लिये परदेश में चला तो जाता है परन्तु पास में रूपये धन आदि नहीं है तो वह व्यापार कहां से करेगा। ठीक उसी प्रकार से क्रिया विहीन नर की दशा होगी। यहां से अन्तिम प्रस्थान करते समय कुछ पारलौकिक धन साथ अवश्य ही लेकर जायें।4। बिना ताकत के एक कोश भी रवाना न होना अर्थात् आगे परलोक में प्रस्थान करते समय धर्म सुकर्म का संबल लेकर ही जायें क्योंकि आगे जिस घर को वापिस जाना है वह घर अति दूर सात समुद्र से पार है उस अथाह समुद्र को कैसे लांघ सकोगे।5। हे मन राजा! इस शरीर की आयु क्षण, मास करके घटती जा रही है। इस बात का कभी ख्याल किया है? जिस प्रकार से सम्पूर्ण तिथियां घटती जा रही है वही दशा तेरे इस पंचभौतिक की भी हो रही है।6। अहंकारी मृत्यु जब शरीर को तोड़ मरोड़ करके जीवात्मा को लेने के लिये आ जाती है तो उसे ले ही जाती है तथा खालक परमात्मा के ही सेवक यमराज के सामने खड़ी कर दी जाती है। वहां पर स्वयं उससे जीवन का लेखा जोखा मांगते है।7। विष्णु की सेवा भजन करना ही मानसिक मेवा है किन्तु हे मन! तुमने सेवा की ही नहीं, उस मीठे मेवे की तरफ ध्यान ही नहीं दिया किन्तु इसके विपरीत संसार के विषय भोगों में ही उलझा रहा वही सुख भोगता रहा, वहां सुख कहां था। वह तो एक मात्र झलक ही थी।8। हे व्यापारी! विष्णु–विष्णु ऐसा जप करेगा तो तेरे पास पाप नहीं रहेंगे और पाप से रहित हो जायेगा तो तुझे आगे का रास्ता साफ दिखलाई देगा, उसे पकड़ करके पार उतर जायेगा। हे मानवों! तुम्हारा यह अवसर है कि देवताओं से भेंट करने की युक्ति अवश्य ही समझो। इसके लिये कृष्ण द्वारा कही हुई गीता ही आपके लिये निर्देश है। उसे जानने के लिये संगोष्ठि में जाकर बैठो वहां तुम्हें उस दीदार के दर्शन अवश्य ही हो जायेंगे।10। कहा भी है–कान्ह दिशावर जे कर चालो।

कवि अज्ञात-14

सौलहवीं शताब्दी। इस साखी के चार छन्द है। इस साखी में मन को समझाते हुए कवि कहता है कि हे मन! तूं सांसारिक वासनाओं को त्यागकर अमृत रूपी परमात्मा की तरफ बढ़-

साखी छंदां की-17

रे मन मीठा लोभ पइठा, लिखूं सूं मन्यसा काची।
हिरदे ज्ञान लिख ले मनवा, विसन महुरत वाची।
बैठो हंस काया गढ़ बोले, नर निरहारी दीठो।
किरिया सार काया कसौटी, लोभ पड़्यौ मन मीठो।1।
रे मन खारा विरचण हारा, विरचि काया गढ़ लेलो।
जीव सत को साथ सुहेलो, साच कहुं मन सुध चालो।
कांय मन फिरे अकेलो, पांचां मांहि मुखी था रे जीव।
कूड़ कपट सोह निवारी, हरख्यौ हरि जंपै नहीं पीव।2।
रे मन झूठा करि पांच अपूठा, ज्यों चालो त्यूं चाली।
मन हठ माण मेर जे छाड़ो, कूड़ कपट सोह पाली।
पालो पवंण प्रीति घण संचो, नर निरहारी दीठो।
हरि पखो कांय हुजति साझौ, मन झगड़ालू झूठो।3।
सत करि बंदा पर हरि निंदा, पांचो जुमलो कीजै।
दसबंद देव तणों कांय राखो, दरगै लेखो लीजै।
जिहिं मन खोटा तिहिं मन तोटा, नै करि पराई निन्दा।
हिरदै जो हरख्यौ हरि जंपो, सो सत सीधा बंदा।4।

भावार्थ-कवि अपने ही मन को समझाते हुए कहते है कि रे मन! तूं मीठा बनकर लोभ में प्रवेश कर गया है तूनें अपनी चालाकी से मुझे लोभ में डुबा दिया है। हे मन! मैं तेरी ही करामात लिख रहा हूं। मुझे अपने ही दिल में तेरी तस्वीर दिखाई दे रही है। जिस प्रकार से कांच के दर्पण में मुख दिखाई देता है। इसलिये मैं तेरी कार गुजारी को ठीक से समझ रहा हूं। रे मन! हृदय के द्वारा उत्पन्न हुए ज्ञान को लिख ले, अपने लिये थोड़ी देर चंचलता को त्याग करके विष्णु का जप करले। काया रूपी गढ़ में हंस रूपी जीवात्मा बैठा हुआ यह बात बोल रहा है तुझे सीख दे रहा है उस हंस को सांसारिक विषयों से कुछ भी प्रयोजन नहीं है क्योंकि वह तो नर-निरहारी है। सभी को इस रूप

में प्रत्यक्ष भी होता है इस संसार में शुद्ध क्रिया कर्म ही सार है और जीवन में शुद्धाचरण ही कसौटी है इसी से कसकर जीवन को पवित्र बनाया जा सकता है। किन्तु हे मन! तूं तो संसार के लोभ में मीठा बनकर फंस गया है। रे मन! तूं तो कभी मीठा बनकर इस काया गढ़ को खींच कर ले जाता है तो कभी खारा बनकर भी जबरदस्ती खींचता है। मुझे मालुम है कि तूं ऐसी करामात करता है। मैं सत्य कहता हूं कि इस जीव और सत्य सनातन परमात्मा का साथ ही सदा शोभायमान हो सकेगा। इसलिये हे मन! शुद्धता और सत् क्रिया का पालन करते हुए आगे बढ़ो। आकाश, वायु, तेज, जल और धरणी ये पांच तथा पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच प्राण एवं पांच कर्मेन्द्रिय इनमें मुख्य श्रेष्ठ जीवात्मा ही है कहा भी है–'पंच आत्मा परिवारूं' हे मन! तूं अकेला ही क्यों भटक रहा है। इन पांचों की मण्डली के साथ ही संयोग करके आत्मा से क्यों नहीं जुड़ जाता। रे मन! तूं झूठ कपट मोह को छोड़कर इन्हीं दु:खों से छूटकर क्यों न हर्षित होकर उस परमात्मा सर्वेश्वर स्वामी को भजता।2। रे मन! तूं झूठा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, इर्ष्या इन पांचों से सम्बन्ध क्यों जोड़ा है इनको पीठ क्यों नहीं दिखा देता, इन्हें पीछे छोड़कर जैसा मैं चलता हूं, सतचित आनन्द स्वरूप की तरफ बढ़ता हूं तूं भी उसी तरफ क्यों नहीं बढ़ता। यदि स्वकीय मन का हठ है कि यह मेरा है, यह छोड़कर यदि आगे बढ़े तो स्वत: ही झूठ–कपट की वासना निवृत हो जायेगी। व्यर्थ के वाद–विवाद एवं अहंकार की पुष्टि के लिये सौ झूठ एवं अहंकार का सहारा लेना पड़ता है। मन और प्राणों का गहरा सम्बन्ध है इसलिये कहा है कि पवण को रोको अर्थात् प्रणायाम करो। उससे मन भी रूकेगा प्राण वायु को स्थिर करना ही मन को रोकना है। तथा दूसरा उपाय बतलाया है कि परमात्मा के प्रति प्रेम भाव का अधिकता से संचार करो तो उस नर रूपी निरहारी भगवान का दर्शन हो जायेगा। हरि स्मरण कथा चरित्र के अतिरिक्त क्यों व्यर्थ की बातें करते हो यह मन तो तर्क रूपी कैंची को हाथ में लिये हुए है सभी को ही काटता जा रह है यानि झूठा झगड़ा करना इसका स्वभाव हो गया है।3। हे बंदा! सत्य का ही व्यवहार करना सदा घर में बैठकर पांच साखी गाकर जुमला करना या पांच भाई–बन्धु, मोमण बैठकर स्वयं ही जागरण सत्संग करते रहना, अपनी कमाई से दसवां भाग परमात्मा के अर्पण यज्ञ, दान द्वारा करते रहना, दसवां हिस्सा अपने कार्य में न लगाना अन्यथा इसका हिसाब आगे लिया जायेगा। जिसका

भी मन खोटा है यानि बाहर कुछ और अन्दर कुछ और धोखाबाज है उसी के ही सदा घाटा रहेगा इसलिये किसी की निंदा करना ही महापाप है। सीधा सरल बंदा तो वही है जो हिरदै में हरि का स्मरण हर्षित होकर करता है। अन्यथा किसी के दबाव से या देखा देखी माला घुमाता है वह सत पुरूष तथा भक्त नहीं है।4।

कवि अज्ञात-15

सौलहवीं शताब्दी की इस साखी में विशेष रूप से अतिथि सत्कार का महत्व बतलाते हुए भगवान के भक्त द्वारा साधु की सेवा तथा आनें की प्रतीक्षा का वर्णन है साथ ही प्रचलित सगुनों पर भी प्रकाश डाला है। यह अपने आप में निराली साखी है।

साखी कणां की-18

मेरी अंखियां फरूकै जी, काग करूंकै आंगणै।1।
पड़ोसण बूझै जी, पाहुंणा कोई आयसी।2।
घोड़लियां खुर बाजै जी, बैला के बाजै घुंघरूं।3।
साधु मोमण आयै जी, धन्य दिहाड़ौ धन्य घड़ी।4।
काठ चंदण मंगाऊं जी, छोल घड़ांऊं पालकी।5।
पाट रेसम बणाऊं जी, दावण द्यौ मखतूल की।6।
सलेफ बिछाऊं जी, आलम सांई गींदवों।7।
साधु मोमण पोढ़े जी, धन्य दीहाड़ो धन्य घड़ी।8।
कोरा चरूं चहोड़ूं जी, जल मंगाऊं गंग को।9।
झीनवै का चावल जी, दाल हरि हरि मूंग की।10।
गायां को घृत मंगाऊ जी, दही मंगाऊ भूरी भैंस को।11।
कासमीरी थाली जी, लोटो मंगाऊ मुंहम को।12।
साध मोमण जीमै जी, अंचल झोली बीझणों।13।
पड़ोसणी बूझै जी, पाहुंणा क्या लाइयां।14।
म्हानै सुरग बतावै जी, रतन काया पहरायसी।15।

भावार्थ- एक सखी भक्त दूसरी अपनी पड़ोसण सखी से कह रही है कि आज तो मेरी आंखें फड़क रही है अर्थात् बार-बार झपक रही है तथा कौवा आंगन में आकर बोल रहा है। यहां अवश्य ही कोई अतिथि आयेंगे। यह सगुन होता है किसी के आने का, ऐसी मान्यता है।1। ऐसी वार्ता सुनकर

उससे पड़ोसन पूछती है कि यह तो बतलाओ कि आज तुम्हारे ऐसे कौन से पाहुने बटाऊ आनें वाले है।2। इस प्रश्न का जवाब देती हुई गृहिणी कहती है कि हमारे यहां पर तो मोमण भक्त साधु जन ही आ सकते है और हमारे प्रिय अतिथि कौन हो सकते है। जरा कान खोलकर सुनो, घोड़ों की टाप सुनाई दे रही है और बैलों के पैरों में बंधे हुए घुंघरू बज रहे है। हे सखी! शीघ्र ही अब पहुंचने वाले है।3। आज का दिन और घड़ी हमारे लिये धन्य है जो इस शुभ अवसर पर हमारे घर पर साधु भक्त आयेंगे।4। हे सखी! सर्व प्रथम उनके बैठने के लिये आसन चाहिये। वह आसन कोई साधारण लकड़ी का पाट तो क्या होगा उसके लिये तो चंदन की लकड़ी मंगवा कर उस लकड़ी को सुधार कर अच्छे कारीगर से सुन्दर पालकी बनाऊं तभी सत्कार हो सकेगा।5। उस पालकी तथा पाट पर रेशम की तथा मखमल की गद्दी बिछाऊंगी। उस पलंग की दावण भी मखमल की डोरी की ही बनाऊंगी।6। आलमसाई सर्वश्रेष्ठ गद्दा बिछाकर ऊपर रेशम की चादर बिछाऊंगी।7। उस सुन्दर पलंग पाट तथा पालकी पर साधु भक्त जन पोढ़ेंगे झूलेंगे यही मेरी शुभ कामना तथा भावना है। वह ऐसा समय आयेगा तो मैं धन्य-धन्य हो जाऊंगी।8। जब साधु मोमण शांति पूर्वक विराजमान हो जायेंगे तब मैं उनके लिये भोजन की व्यवस्था करूंगी। उसके लिये तो मुझे सर्वप्रथम जल लाना होगा। नये घट को लेकर मैं स्वयं जाकर गंगा जल भर लाऊंगी और उस पवित्र जल से भोजन तैयार करूंगी।9। झीनव अर्थात् सर्वश्रेष्ठ चावल जो पवित्र देश में उत्पन्न होते है वे ही मंगाऊंगी और हरे हरे मूंग की दाल बनाऊंगी।10। गऊवों का घृत मंगाऊंगी और दही भूरी भैंस का लाकर जिमाऊंगी।11। काश्मीर से थाली मंगाऊंगी और लौटा महम का मंगाऊंगी।12। सभी वस्तुऐं तैयार हो जायेगी तब साधु मोमण भोजन करने के लिये बैठेंगे और मैं अपने ही आंचल रूपी पंखे से हवा करूंगी पंखा झलूंगी।13। अब आगे पड़ोसण पूछ रही है कि हे सखी! तूं इतनी सेवा करेगी तो तेरे लिये साधु मोमण क्या लायेंगे? तुझे उपहार क्या देंगे, तेरी सेवा का प्रेम श्रद्धा का क्या होगा?।14। इस प्रश्न का उतर देती हुई कहती है कि हे सखी! ये साधु मोमण तो हमें स्वर्ग जाने का मार्ग बतलाते है और ये ही इस संसार को छोड़कर जायेंगे तो हमें रतन काया दिलवायेंगे। इसी रतन काया को लेकर ही हम स्वर्ग में जा सकते है अन्यथा तो दुर्गति ही होगी। यही मेरी सेवा का फल है। कहा भी है-रतन काया सोभंति

लाभे पार गिराये जीव तिरै।15। यहां पर एक श्रद्धालु भक्त अपनी भक्ति की पराकाष्ठा बतला रही है। श्रद्धा भावना को इस साखी द्वारा प्रगट किया है। अतिथि सेवा परंपरा की एक झलक इस साखी द्वारा मिलती है इसलिये इस साखी का अपना ही महत्व है।

कवि अज्ञात-16 'सौलहवीं शताब्दी'

राग आसावरी में गेय एक छंदा की यह साखी है। इस साखी में गुरुदेव की महिमा का गुणगान किया है। जन साधारण के लिये मोक्ष की प्राप्ति हो इसके लिये सुक्रत करने का कवि ने आह्वान किया है।

साखी छन्दां की-19

सतगुरु आयो मोमणों महरि करि, सुरनऊ विनऊ साच।
सतयुग कोल संभालिया, बारां पालण वाच।
वाचा तो पालण विसन आयो, सहज सतपंथ चालियो।
गुरु ज्ञान रूपी धर्म बहुविध, मुक्ति मार्ग दिखावियो।
मानों हकीकत वरत अनहद, करो गुरु फरमावियो।
कलिकाल कवल कीयो, महर कर गुरु आवियो।1।
सुगुरु कुगुरु बहु आंतरो, सांभलि प्राणी भेव।
अनन्त गुणों गुरु परखी लहो, दोष विवरजत देव।
देव दोष अठारै बरज्या, जांसे कलंक न लाग ही।
गुरु ज्ञान केवल वाचा अवचल, जोति जुगजुग जागही।
अतिपात संभाल रे जीव, जांह संग दुतर तीरो।
अवर गुरु की न करो सेवा, सुगुरु कुगुरु बहु आंतरो।2।
अवसर जहां न चेतियो जी, भले न लाभे वेर।
थोड़े रे जीवण कारणै, मनों न कीजै मेर।
न कर मेरा नहीं तेरा, कलपि भार न लीजिये।
छाड़ि मन मुख होय गुरुमुख, जो गुरु कहै सो कीजिये।
काम, क्रोध, कुलोभ परहर, ध्यान मन सूंधे करें।
जुग चोथे विसन प्रगटे, चेत जीव इण अवसरे।3।
तेतीसां सूं मेल करावो, सुरां मिलावण काज।
जिण खंडी जंवर न संचरै, ऋषियां निश्चल राज।
जहां ऋषियां राज निश्चल, सदा कोड़ि सुहावणा।

हूर कांमणी करै केली, रतन गढ़ रलि आंवणां।
दुख दारिद्र पिसण नांही, जम न कौ पहुंचै कले।
सोई पंथ संभाल रे जीव, चाल मन तेतीसां मिले।4।

भावार्थ–हे मोमणों! कृपा करके स्वयं विष्णु ही यहां पर सुरनर के रूप में आये है। कहा भी है–"सुरनर तंणो सन्देशो आयो" मैं बार–बार सच्चे दिल तथा मन से प्रणाम करता हूं। सतयुग में प्रहलाद के साथ किये हुए वचनों को पूरा करने के लिये ही आये है। यहां पर बारह करोड़ का उद्धार करके अपना वचन पूरा करेंगे। यहां पर तो निश्चित ही अपने वचनों को निभाने के लिये ही आये है और सहज ही में विष्णु पथ पर यह बिश्नोई मार्ग बताया है गुरु ने ज्ञान द्वारा नाना पन्थों का सार निकालकर एक धर्म में समावेश कर दिया है और हमें मुक्ति का मार्ग बता दिया है। गुरु द्वारा बताया हुआ मार्ग वास्तव में सत्य है और हकीकत है इसलिये मान्य है। यह अनहद नाद रूपी शब्द इस समय चल रहा है यत्र तत्र सुनाई दे रहा है। यह भी व्यतीत हो रहा है समय रहते हुए ग्रहण कर लेना चाहिये। जैसा गुरु ने कहा है वैसा ही करना चाहिये। कलयुग में कृपा करके स्वयं विष्णु ही गुरुदेव के रूप में आये है। सतयुग में दिये हुए वचनों का पालन किया है।1।

सुगुरु और कुगुरु में बड़ा ही अन्तर है। हे प्राणी! संभलकर चलना कहीं धोखा न हो जाये कुगुरु के जाल में फंस गया तो सर्वनाश हो जायेगा। यहां पर सम्भराथल पर विराजमान गुरु में अनन्त गुणों का भण्डार है परीक्षा कर लेनी चाहिये। ये देव तो सभी दोषों से रहित है इसलिये सुगुरु है। स्वयं देव ने–"कैते कारण क्रिया चूक्यो" शब्द द्वारा अठारह दोष गिनाये है और मानव के लिये वर्जनीय बताये है। ये दोष जिनमें नहीं है उसे कोई भी कलंक नहीं लगेगा। किन्तु कुगुरु में ये सभी दोष होते है। सतगुरु को कैवल्य ज्ञान देते है, उनकी वाणी अवचल, अटल एवं सत्य है। उनकी ज्योति तो युगों–युगों तक जलती रहेगी और अपने प्रकाश से सर्व साधारण को जगाती रहेगी। रे जीव! अब तो संभलकर चल अति हो रही है। अभी नहीं तो फिर कभी नहीं यह समय गुरु के साथ नाव में बैठकर पार उतरने का है। इसलिये अवर गुरु की सेवा न करें। क्योंकि सुगुरु और कुगुरु में बड़ा ही अन्तर है।2।

यह अवसर आया हुआ है इसमें भी यदि सचेत न हो सके तो फिर ऐसा समय बार–बार फिर नहीं आयेगा। थोड़े से जीने के लिये इस संसार की

वस्तुओं में मत फंसो, मन से मेरा न समझो। न यह मेरा और न कह तेरा, यह मेरा और तेरा कह कर ही बीच में खाई डालना है। अपने की रक्षा और पराये का विनाश यह भावना रखकर क्यों कलाप कर रहा है। व्यर्थ में ही दु:ख का बोझ उठा रखा है। मनमुखी कार्य को छोड़कर गुरु मुखी होकर कार्य करें। कहा भी है-''गुरु मुखी मुरखों चढ़े न पोहण मन मुखी भार उठावे।'' जैसा गुरु ने कहा है वैसा ही करें। काम, क्रोध, कुलोभ त्याग करके मन से प्रभु का ध्‍यान करें यही मन को साधने का उपाय है। इस चौथे युग में स्वयं विष्णु प्रगट हुए है। हे जीव! इस अवसर पर सचेत हो जा।3।

हे गुरुदेव! आपनें जो समय-समय पर तैतीस करोड़ का उद्धार किया है, हमें उनसे मेल करा दो। वहां वे देव स्वरूप में ही है। उनसे हम मिलेंगे तो बड़ी ही प्रसन्नता होगी। वहां पर इस जीव को खंडित करने के लिये यमराज न पहुंच सके, वहां पर तो हमारे ऋषियों का राज ही निश्चल यानि अडिग है। जहां पर ऋषियों का राज होगा। वहां पर यमराज का क्या काम है। वहां तो सदा ही प्रेम शोभायमान होता है। वहां पर अनेक अप्सरायें नृत्य गान करती है। उनकी रतन सदृश सौम्य काया है ये सभी मिलजुल कर आती है और महोत्सव मनाती है। प्रेम का संचार करती है। वहां पर किसी प्रकार का दुख दरिद्र नहीं है। और न ही कलयुग का प्रभाव ही है। और न ही यमदूत ही पहुंच पाते हैं। ऐसा स्वर्गीय सुख दिलाने वाला यह बिश्नोई पंथ है। रे जीव! इस पंथ पर संभलकर चल तुम अवश्य ही उन्हीं तैतीस करोड़ देवताओं से भेंट कर सकोगे।4।

कवि अज्ञात-17 'सोलहवीं शताब्दी का हजूरी'

इस साखी में कवि ने गुरुदेव की महिमा का गान करते हुए नौ अवतारों का वर्णन तथा कार्य का संक्षेप रूप में दिग्दर्शन किया है। यह साखी प्राचीन किसी हजूरी भक्त द्वारा वर्णन की गयी है इसलिये इसका महत्व है।

साखी छंदां की राग आसावरी-20

तरण तारण जम्भराज आवियो, तेतीसां प्रतिपाल।
बारां क्रोड़ समावसी, दैतां रो खौंकाल।
दैतां रो खौंकाल आयो, जम्भ सारे वारतो।
जगै जोति चांद सूरज, करै सबरी आरतो।
तखत सांई रच्यो साचो, कण तत सबद सुणावियो।

करोड़ बारा लेण आयो, तरण तारण जम्भराज आवियो।1।
फिरी दुहाई राय विसन की, गुण गन्द्रफ जांकै मीत।
चीणम चीण गढ़ मां कटकिया, तुम क्यों सोवो नचीत।
तुम रेण कांय नचीत सोवो, सोहड़ सांवत है खड़ा।
भयाचीत भड़हड़ा परबत, पोली आगै ढहि पड़ा।
प्रथम आगली रीस उपनी, श्याम सुरतां किसन की।
छोड़ी पूरब नुव्यां पछंम, फिरी दुहाई राय विसन की।2।
कलि कालंग जगावियो, गरब करो मन थोड़ा।
दुलभ संक माने नहीं, दाल चरे कठ घोड़ा।
दाल चरे कठ घोड़ा, आवै सोहड़ सांवत मुहि मिलै।
लंक गढ़ में एक रावण, सुरां असुरां नर दलै।
लख रावण लख महारावण, कुंभकरण सा भाइयों।
उजीणी नगरी हुई गहमह, कलि कालंग जगाइयो।3।
दुल दुल पाखर मेल्ह करै, आखिर देह लगाम।
तिहिं चड़ि आवै महमंद, हनफियो महदी साह सलेम।
महदी साह सलेम चड़ियो, जुलफे कार झंपऐं।
थरा हरे धरती मेरू अम्बर, लोक तीनों कंपऐं।
सजे गरूड़ वाहण चढ़े जम्भराज, छपन कोड़ी जादु मिले।
साध पुगी लेवे लेखो, मेल्ह पाखर दुल दुलै।4।
अलख निरंजण मनसा यों धरी, नव फेर कियो कबूल।
श्री हरि श्याम ओलख्यो, दसवें फेर अमूल।
दसवें फेर अमूल कालिंग, खलक खालक ध्याइयों।
फुरमाण राय विसन को, मोहे सम्भर वर पाइयो।
संख पूर सति विधि सूं, छतर सिर जुग जुग धरे।
नाचे नारद करै अखाड़ौ, अलख मनसा यूं धरे।5।

भावार्थ–संसार सागर से पार उतारने के लिये जाम्भेश्वर जी आये है। स्वयं विष्णु सर्व सृष्टि के पालन पोषण कर्ता है। तेतीस करोड़ पार पहुंचाने के अपने वचनों को निभाया है। इस समय इस कलयुग में तो बारह करोड़ को पार उतारेंगे उन्हें तो परमात्मा के स्वरूप में मिला देंगे किन्तु दैत्य जनों का तो नाश ही होगा। इस प्रकार से दैत्यों के नाश होने का समय आ गया है।

भक्तों की आशा वार्ता तो पूर्ण ही करेंगे। गुरुदेव की देह तथा मुखमण्डल सूर्य चन्द्र की भांति प्रकाशमान हो रही है। मानों सारे जगत की ही आरती उतारी जा रही है। इस संसार के कण-कण में वही तो समाया हुआ है। उसी की ही आरती की जा रही है। वह सांई परमात्मा सच्चा आसन लगाकर विराजमान हुए है और कण तत्व बताने वाले शब्द सुना रहे है। इन्हीं शब्दों द्वारा प्रहलाद के बिछुड़े हुए बारह करोड़ का उद्धार करेंगे। इसी प्रयोजन से यहां पर आये है।1।

सभी जगहों पर विष्णु की ही दुहाई एवं जय जयकार हुई है। गन्धर्व, देव आदि सभी परमात्मा के ही मित्र तथा सहयोगी है। आगे कवि यहां पर चीन देश में आयी हुई प्राकृतिक विपति, तूफान, भूकम्प आदि का सांकेतिक भाषा में वर्णन करते हुए कहते है कि चीन देश में बसने वाले उन भयंकर राक्षसों का विनाश भी तो विष्णु ने ही अपनी प्राकृतिक शक्तियों द्वारा किया था। ऐसी चीन गढ़ में विपति आयी थी। हे प्राणी! तूं क्यों निश्चित होकर सो रहा है। बड़े-बड़े सांवत राजा महाराजा भी उस मृत्यु के डर के मारे थर-थर कांप रहे है। कभी वह काल आयेगा तो बड़े-बड़े पर्वत, महल पोल सभी कुछ ढ़ह पड़ेंगे। पूर्व में भी कई बार ऐसा हो चुका है। न जाने कोई कभी का कर्म उदय हो जाये और प्रकृति का प्रकोप बढ़ जाये तो फिर कुछ भी हो सकता है। कृष्ण आदि अवतारों का वह सदा ही सौम्य रूप ही तो सामनें नहीं रहता कभी उनके विकराल रूप का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार से पूर्व देश को छोड़कर पश्चिम देश को झुकाया था और विष्णु की ही माया है जिसे बड़े-बड़े सांवत राजा महाराजा भी उस मृत्यु के डर के मारे थर-थर कांप रहे है। विष्णु की ही आखिर में जय जयकार हो गयी थी।2।

इस कलयुग में आकर गुरुदेव ने कालंग अर्थात् कलयुग को ही जगाया है। कलयुग के बढ़ते प्रभाव को कम किया है। कलयुग से कहा कि तूं अपनी ताकत के आधार पर अधिक गर्व कर रहा है। मैं तेरा प्रभाव जानता हूं और इसका इलाज भी जानता हूं। अन्य साधारण पुरूष से तो यह कलयुग घोड़े की भांति काबू में आने वाला नहीं था। क्योंकि इसके प्रभाव से कुछ पाखण्डी लोग काठ के घोड़े को भी दाल चराने लगे थे अर्थात् ठग विद्या में प्रवीण थे। ऐसे लोग समाज में आते और अपना करिश्मा दिखाकर अपनी धाक जमाते और अपनी ही पूजा करवाते थे। ये तो बहुत ही छोटे लोग थे किन्तु गढ़ लंका में भी एक मायावी राक्षस रावण था। तथा अन्य भी रावण

तथा कुम्भकरण महिरावण सदृश लाखों योद्धा उनके पास में थे। सभी मिलकर सुर असुर मानव आदि को नष्ट कर दिया करते थे। उसी प्रकार उज्जैन नगरी में भी हलचल मची थी किन्तु समय आने पर विष्णु ने ही सभी का सफाया कर दिया था। तो फिर इस कलयुग की क्या करामात है।3।

कलयुग रूपी उदण्ड घोड़े पर काठी रखकर लगाम डाल दी थी और इसके उपर सवार भी हो चुके थे। अब कलयुग रूपी घोड़े पर चढ़कर स्वयं विष्णु ही नाना रूप अर्थात् अवतार लेकर आयेंगे तथा आये भी है वे किसी भी रूप अथवा नाम से जाने जा सकते है। वही विष्णु ही महंमद साह सलेम आदि नामों से आये है वही आगे कलंकी नाम से भी आयेंगे। उनके यहां पर आने से धरती के उपर रहने वाले पापी तो क्या पर्वत मेरू आकाश आदि सभी कंपायमान हो जायेंगे। वही विष्णु ही मानों सुसज्जित गरूड़ पर सवार होकर आये है और अपने बिछुड़े हुए छप्पन करोड़ यादवों से मिले है। उन्हें उनके कर्त्तव्य कर्म का बोध करवाया है तथा उनको पाप का दण्ड भी दिया है।4।

उसी अलख निरंजन परमात्मा ने ही अब तक नौ बार अवतार धारण किया है और अपने वचनों को निभाया है। परमात्मा की इच्छा ही इसमें प्रमाण है। इस समय जाम्भेश्वर जी के रूप में स्वयं हरि श्याम आये है जो पहचाने जा सकते है। आगे पुनः दसवें कल्कि अवतार की बारी है। जब भी प्राणी भूल करता है तो वही खालक इस खलक में भागकर आते है। राय विष्णु का सिद्धान्त इस जगत में स्थापित करते है और विजय प्राप्त करके ही वापिस जाते है। यहां पर विधि-विधान से पूजित होकर विजय सूचक शंख बजाकर के अपने सिर पर हर्ष उल्लास से मुकुट धारण करते है। यह कार्य युगों-युगों से हो रहा है। जब संसार में भक्ति की स्थापना हो जाती है तो नारद जी भी भक्तों के साथ नृत्य करते है और उस अलख पुरूष को हृदय में धारण करके कृत्य-कृत्य हो जाते है।5।

कवि अज्ञात-18 'सोलहवीं शताब्दी'

ये हजूरी कवि थे। इस साखी में कोई कन्या अपनी मां से कह रही है कि हे मां! गुरु की सेवा ही भगवान की सेवा है परन्तु कई लोग न जानें क्यों निंदा भी करते है। इस साखी में भक्ति तथा गुरु महिमा का वर्णन हुआ है।

साखी छन्दां की राग आसावरी-21

मैं गुरु पेख्या री माय, सोई सतगुरु त्रिभुवण को राव री।
उन लिख दिया री मेरी माय, सोई जाप जपूं उमाव री।
अधिक उमावहो साध प्राणी, थूल अंत न पाइयो।
गिगन मंडल लोक तीनों, जिन बिन थंभ रहाइयो।
गिरि मेर पर्वत पवण पाणी, चंद सूर जिण सिरजियां।
जीव काजै विष्णु जंपो, मेरी मांय सतगुरु पेखियां।1।
यो है विणजारो री मेरी मांय, बिणज करण आयो संसार री।
यो है सराफीड़ौ री मेरी माय, परिखि लहो चुंणि मोती री।
लियो मोती विसन जोति, साच वाणी भाव ही।
ब्रह्मज्ञान ध्यान केवल, सकल सार लहावही।
कलिकाले वेद अथर्वण, सहज पंथ चलावियो।
संभराथलि जोत जागी, जुग विणजण आवियो।2।
कई कई निंद करै मेरी मांय, वद दुनि गुरु साधा पायो।
तिन वैकुण्ठा री मेरी माय, धजां क जीव सु अवसर लायो।
लाय अवसर राय त्रिभुवन, चरित किया संसारियां।
द्वीप द्वीप खांड खांड, आप अजा चारियां।
निरहारी सबद भेदी, सुख में दुख में सारीका।
कर्म रेखा विसन भेंटियो, संसार निंदक बिंदका।3।
यो है जीव लिया मेरा जीव, बार हुई चित चेत सबेरा।
उन रथ जोतिड़ा री मेरी माय, आया सरस धोरी लेण हारा।
सरस धोरी लेणहारा आयो, मच्छ कच्छ वाराह हुए।
नरसिंह वामन परशराम, बोहड़ी प्रभ न पाइयें।
गोरख जाम्भा कान्ह, लिछमण प्रसिद्ध परलई।
पांच सात नव कोड़ी बारां, वार बारा की हुई।4।

भावार्थ-एक कन्या अपनी माता से कह रही है कि-हे माता! मैनें आज सतगुरु के दर्शन किये है। ये कोई साधारण गुरु नहीं थे। वे तो स्वयं तीनों भवनों के राजा थे। उन गुरु ने तो मेरे हृदय में विष्णु का जप लिख दिया है। इस समय मैं वही जप रही हूं। इससे मेरे हृदय में उमंग की लहरें उठ रही है। इस समय मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है, तथा अन्य भी साधु सन्तों

को भी प्रसन्नता हो रही है इसका कोई अन्तपार नहीं है। जिस गुरु का मैनें दर्शन पाया है उसी गुरु ने ही तो तीनों लोक एवं सम्पूर्ण गगन मंडल बिना ही खम्भे ठहरा रखा है। तथा गिरि पहाड़, सुमेरू हिमालय, पवन, पानी, सूर्य, चन्द्र आदि सभी कुछ उन्हीं का ही बनाया हुआ है। हे मेरी मां! अपने जीव की भलाई के लिये विष्णु का ही जप करें वही विष्णु ही सतगुरु के रूप में मैने देखा है।1।

हे मेरी मां! यह विष्णु ही गुरु जाम्भोजी के रूप में यहां संसार में एक व्यापारी की भांति व्यापार करने के लिये आये है। ये विष्णु बहुत ही चतुर व्यापारी है, धोखा नहीं खा सकते। इसलिये जो अच्छी-अच्छी वस्तुएं है उन्हें ही ठीक मूल्य देकर लेंगे अर्थात् जो हीरे मोती सदृश भक्त जन है उन्हीं को ही ले जायेंगे तथा जो काच सदृश नकली है उन्हें नहीं अपनायेंगे। ऐसे जो मोती है उन्हें ही लिया है क्योंकि वे तो स्वयं विष्णु ज्योति स्वरूप है उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता। उनकी वाणी सच्ची है तथा सभी को अच्छी भी लगती है इसलिये आकर्षित हो जाते है। उनकी वाणी ब्रह्मज्ञान एवं ध्यान बतानें वाली है अथर्वेद की ही वाणी है। इस कलयुग में सार बतलाकर यह सहज पंथ चलाया है। यह ज्योति सम्भराथल पर जागृत हुई है और चुन-चुन कर हीरा-मोती लेने के लिये आये है।2।

हे मां! इस संसार में कुछ लोग तो निंदा भी करते है तथा उनसे वाद-विवाद तथा अहंकार भी करते है किन्तु इनसे विपरीत जो साधु सज्जन पुरूष है उन्होनें गुरु को पाया है। उस गुरु ने यहां आकर वैकुण्ठ लोक की ध्वजा फहरा दी है। सभी को अवसर प्रदान कर दिया है। यह अवसर प्रदान करके इस संसार में अनेकों दिव्यचरित्र भी किये है। यहां तक कि इस मरूभूमि के प्रत्येक खंड प्रखंड में गऊवें एवं बकरियां भी चराई है। इस संसार में निराहारी रहकर अनेकों चरित्र किया है, लौकिक व्यवहार को निभाया है। सुख-दुख में समान भाव से रहने की कला सिखाई है। हमारा भाग्य ही अच्छा था जो साक्षात् विष्णु से ही भेंट हुई है किन्तु अन्य संसारी लोग तो स्वभाव से ही निंदक है। उन्हें तत्व ज्ञान से क्या प्रयोजन है।3।

हे मेरे जीव! तुमनें इस जिन्दगी को तो जी लिया है अब बाकी क्या रह गया है, अब तो समय सचेत होनें का आ गया है। निंद्रा से जागने का समय हो चुका है। इस शरीर रूपी रथ को चलाने वाला मालिक स्वयं ही इसे जब

लेने के लिये आ गया है तो फिर चिंता किस बात की है। सरस धणी यानि स्वामी ही लेने के लिये आये है। ऐसे पहले भी कई बार आये है। वह विष्णु ही मच्छ, कच्छ, वाराह, नरसिंघ, वामन, परशुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध, गोरख के रूप में आये थे। अबकी बार इस समय जाम्भोजी के रूप में वे ही पुनः आये है। हे मेरी मां! पांच, सात, नव तो पार उतार चुके है अब बारह करोड़ पार उतारने की बारी है उसमें तूं और मैं भी शामिल है।4।

कवि अज्ञात-19 सोलहवीं शताब्दी

हजूरी इस साखी में कवि ने विशेष रूप से अपने ही मित्रों को सचेत करते हुए कहा है कि गुरु जम्भेश्वरजी ने संसार सागर से पार उतारने के लिये धर्म रूपी नौका उपस्थित कर दी है। जिसे भी पार उतारना है वह अवश्य ही सवार हो जाये अन्यथा चौरासी लाख जीयां योनी में डूब जायेगा।

साखी छन्दां की राग गवड़ी-22

आखिर आखिर लेखो मोमण मांगिये, घर घर फिरै नकीबा।
खेवट आयो जम्भराज नाव ले, चड़सी जां से नसीबा।
चड़े जांसे नसीब रे जीव, महल दूतर तारियां।
कवल महमद आय पूगा, उसताज वग्य हंकारिया।
पांच बखत निवाज रोजा, कवल काजी रंजिया।
इमान राखो सिदक चालो, आखिर लेखो मांगिया।
दुलम देश पिराणियां, अंबाराय सहेटा।
विसन सवारी लाडली, मुख मेलो जीव सहेटा।
मुख मेलो जीव सहेट, लाडी अष्ट धात सहरिय।
लेखो लेखै दोर प्रेसता, खत देख दुतर तारिय।
अमि अमृत भोग मनसा, जै हक साच पिछाणियां।
कबज कर ले चालो जीव कुं, दुलम देश पिराणियां।2।
चड़ि नै चोबार लाडली, गोखड़ी पहर पटंबर झूनां।
साथि म्हारा आवण कहि गया, कदि मिलसी बाग बिछुना।
बाग बिछुनां मिलै क्यों करि, क्रोड़ बारा जोड़णी।
कलि काल करण क्रिया, मोह माया तोड़णी।
जम्भगुरु देवा करूं सेवा, अतिपात सहारिय।
वैकुण्ठ साहा मन उमाहा, लाडी चड़ी-खड़ी चौबारियां।3।

खेत मुक्त घर जाइये, आवागवण न होई।
रतन काया सुरगे उजली, मनसा कर रस होई।
कर मनसा होय सब कुछ, हिरदै सागुण पेखिये।
तेतीस करोड़ देवता, तां मांहि सतगुरु पेखिये।
कजौ संभल चढ़ो बेड़े, हेत कर के ध्याइये।
आवागवण न होय रे जीव, खेत मुक्ति घर जाइये।4।

भावार्थ–हे मोमण! आखिर तो यानि मृत्यु के पश्चात् इस जीवन के पाप पुण्य का लेखा जोखा मांगा ही जायेगा और जब लेख सामने उपस्थित हो जायेगा तो कर्मों की गठड़ी खुल करके सामने आयेगी तब उसमें पाप के अतिरिक्त कुछ भी सामने नहीं आयेगा। पाप के कारण बन्दर रीछ बनाकर नाक में नाथ नकेब डालकर घर-घर मदारी घुमायेगा। इस समय तो खेवट राज जाम्भेश्वर जी नाव लेकर आ गये है परन्तु उस पर सवार तो कोई बड़े भाग्यशाली ही होगा। यदि कोई भाग्यशाली नाव पर चढ़ेगा तो उसे निश्चित ही भवसागर से पार उतार देंगे। यहां पर हिन्दू मुसलमान का सवाल ही नहीं है। ''ज्यों ज्यूं आवै सो त्यूं थरप्या'' मुसलमानों को उनकी राह बताते है, महमंद का हवाला देकर समझाते है कि पांच समय की नमाज पढ़ो और रोजा रखो, इमान रखना और सद्मार्ग पर चलना ही उनका धर्म अच्छा है। इसी प्रकार से काजी मुल्लों को भी संतुष्ट किया है।1।

हे प्राणी! इस देश शरीर को छोड़ने के पश्चात् आगे जिस देश में तुझे जाना है वह अति दूर है। बीच में घना जंगल एवं दुर्गम मार्ग है। विष्णु की दी गई सवारी अर्थात् नियम धर्म कर्म को साथ लेकर जाना अन्यथा मनमुखी होकर चलेगा तो चूक जायेगा। परमात्मा ने यह नियम धर्म रूपी नांव बड़े ही मनोयोग से बनायी है। यह नाव है जिस पर चढ़ कर तुम्हें जाना है वह अष्ट ध ातुओं की बनी हुई है। इसलिये बीच में आने वाले तूफानों से तुम्हारी रक्षा करेगी। जब धर्म की नौका पर सवार होकर आगे पहुंचेगा तो इस नौका को देखकर हिसाब-किताब पूछने वाले प्रेस्ता-दूत भी तुम्हें छोड़ देंगे और पार उतारने में सहायक ही होंगे। परमात्मा के वैकुण्ठ धाम को जब पहुंच जायेगा तो मन वांछित अमृत पान करेगा जिसे पीकर अजर अमर हो जायेगा। इसलिये हे प्राणी! इस जीव को सावधानी से जीवन जीने की विधि सिखाते हुए वापिस अपने घर को ले चलो, जहां से आया है वहीं वापिस पहुंचना है।

ध्यान रहे कि वह देश अति दूर तथा दुर्लभ है।2।

लाडली कन्या की भांति बुद्धि ही ऐसी जीवात्मा की सहयोगी मित्र है। जो जीवात्मा को पार उतारने के लिये अनेक उपाय रचती है। जिस प्रकार से लाडली कन्या अपने प्रिय जन की प्रतीक्षा करती है, चौबारे यानि महल की छत पर चढ़ जाती है और सभी तरह का श्रंगार कर लेती है और अपने प्रियतम की सेवा के लिये आतुर दिखाई देती है उसी प्रकार से संसार की मोह माया से उपर उठकर माया जाल को तोड़कर ज्ञान ध्यान से अलंकृत होकर अपने प्रियतम ज्ञान स्वरूप परमात्मा से मिलने की प्रतीक्षा करती है। बुद्धि कहती है कि हमारे साक्षी सतचित आनन्द स्वरूप परमात्मा है उनसे मिलना कब होगा। जब यह बाग सूख जायेगा तो वह भंवरा यहां आकर क्या करेगा? यदि वह विष्णुदेव मिले तो निश्चित ही मैं बारह करोड़ से जाकर जुड़ जाऊं। बिना प्रियतम के तो अपने आप इस कलयुग की मोह माया तोड़ना कठिन ही है। मोह टूटे बिना तो जम्भेश्वर देव की सेवा होना अति कठिन ही है। बुद्धि लाडली कन्या की भांति वैकुण्ठ लोक में जाने के लिये अति उत्साह से चौबारे पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही है।3।

इस संसार रूपी खेत में आकर कमाई करके स्वकीय प्रयास से मुक्त होकर वापिस अपने घर को पहुंचे। जिससे जन्म मरण का चक्कर छूट जाये। यह पंच भौतिक देह गिर जायेगी तो आगे प्रस्थान के लिये रतन सदृश दिव्य काया मिलेगी उस काया से इच्छित भोग्य रसों की प्राप्ति हो सकेगी। इसलिये मन से किया हुआ संकल्प अवश्य ही पूर्ण होता है। उसी परमात्मा को हृदय में अवश्य ही देखें वही आनन्द स्वरूप का दर्शन होगा। तेतीस करोड़ देवता में सतगुरु जाम्भोजी को ही देखें। इसलिये कमर कसकर तैयार हो जाओ। सतगुरु के बेड़े पर चढ़ जाओ क्योंकि बेड़ा संबल है। हे जीव! तेरा बार-बार जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना मिट जायेगा और सदा के लिये मुक्त हो जायेगा।4।

कवि अज्ञात-20 सोलहवीं शताब्दी

हजूरी इस साखी में कवि ने संसार को गोवलवास बताते हुए अपने सच्चे घर पहुंचने के लिये उपाय एवं विधी विधान बताया है। तथा सचेत भी किया है कि कहीं गोवलवास को ही सच्चा घर न मान बैठो।

साखी राग सोरठ छन्दां की-23

जुग मां जलम लियो मेरा जीयो, वसियो आय बसेरो।
कामण कोड करे मेरा जीयो, जम दल देला फेरो।
जमदल फेरो आण घेरयो, पुन री पाज बंधाइये।
नाम नाली ज्ञान गोली, धरम बांण चलाइये।
भरम भागो जोत जागी, कोल सतगुरु सूं कियो।
लाछ लछमी नांव तेरे, जीव जुग मां जलम लियो।1।
गोवलवास वस्यो मेरा जीयो, सुकरत करो कमाई।
कुटुम्ब कोड करे मेरा जीयो, बाजै बिड़द बधाई।
हुवै बधाई मंगल गावै, हरष मन आनन्द घणों।
भाट ब्राह्मण बिड़द बोलै, हुयो कुल मां चांदणों।
सुरगे सुख अनन्त इधक, साध संगति रलि मिलै।
साच शील संभाल रे जीव, वास वसियो गोवले।2।
पापा प्रीत तजौ मेरा जीयो, किरिया करौ कमाई।
जम की भीड़ पड़ै मेरा जीयो, तां दिन विसन सहाई।
विसन सहाई होय भाई, औघट घाट लंघावही।
जीव काजै दान दीजै, अंत आडो आवही।
आण को अपराध मेटो, जीव घात मत को करो।
दया विहुणां जांही दोजख, प्रीत पाप पर हरो।3।
संता री सेवा करो मेरा जीयो, भजन करो गुरु भाई।
उर मां ध्यान धरो मेरा जीयो, जाय मिलो सुरराई।
सुरराय मेलो हुवै जां दिन, हरख मन कांमण करै।
सिद्ध साध कुशल पूछै, वेद ब्रह्मा उच्चरै।
उपकार सार विचार रे जीव, जांण मन क्यों विसरो।
भजन भक्तां भेद लाभे, सेवा सतगुरु की करो।4।

भावार्थ-हे जीव! तुमनें इस जगत में आकर मानव शरीर धारण किया है और यहां पर रहने के लिये महल मकान आदि का साधन जुटा लिया है ऐसा लगता है कि यह वास सदा के लिये किया जा रहा है। इस घर में रह कर अनेक कामनाओं तथा वासनाओं में फंस गया है आगे पीछे कुछ भी नहीं सोचा है यह विचार नहीं किया कि यम दूतों नें भी घेरा डाल रखा है, न जाने

कब कहां से उठाकर ले जायेंगे। हे प्राणी! यह निश्चित ही है कि काल के दूतों ने आकर घेरा डाल दिया है इसलिये समय रहते हुए पुण्य की पाल बांधनी चाहिये। यह पाल ही रक्षा कर सकेगी। यमदूतों को भगाने के लिये परमात्मा विष्णु के नाम रूपी बन्दूक की नाली से ज्ञान रूपी गोला अवश्य ही चलाइये। यही धर्म के बाण जाकर आगे लक्ष्य का छेदन करेंगे तथा ज्ञान रूपी गोली से नाना प्रकार का भ्रम मिट जायेगा और परमात्मा की ज्योति जागृत हो जायेगी। सतगुरु से किये हुए वचनों को इस प्रकार से निभाया जा सकता है तथा सम्पूर्ण विश्व की धन सम्पति तुझे स्वयं ही मिल जायेगी। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये ही तो इस संसार में जन्म लिया है।1।

हे जीव! इस संसार में आकर गोवलवास की तरह रहना सीख, इस जगत को अपना सच्चा घर नहीं समझ, इसी भाव से रहेगा तो शुभ कार्य हो सकेगा अन्यथा मोह माया में फंस जायेगा। जब बालक संसार में आता है तो सभी कुटुम्बी जन प्रेम करते है, बधाईयां बांटते है, मंगल गीत गाते है, नृत्य करते है अनेक प्रकार की खुशियां प्रगट करते है, भाट ब्राह्मण आकर बिड़द गान करते है। यही बड़ाई करते हुए कहते है कि यह बालक तो तुम्हारे कुल का दीपक है इसके आने से प्रकाश हो गया है। इसी खुशी पर साधु सज्जन भी आकर मिलते है और स्वर्ग से भी बढ़कर सुख को देखते है किन्तु हे जीव! ये सभी कुछ दिखावा मात्र है, सच्चा सुख तथा अलंकार तो सत्य एवं शील ही है। इसलिये इसे ही संभालकर गोवलवास की भांति जीवन व्यतीत करें।2।

हे मेरे जीव! पापों से प्रीत छोड़कर शुभ क्रिया आचार विचार पर ध्यान दे। शुभ कमाई ही करें। जब यमदूतों की मार पड़ेगी तब एक मात्र विष्णु ही सहायता करनें वाले होंगे या विष्णु द्वारा बताया हुआ मार्ग सिद्धान्त। वह विष्णु ही तुम्हें दुर्गम बिहड़, जंगल से पार निकाल सकते है। इसलिये विष्णु की शरण ग्रहण अवश्य ही करें। जीव की भलाई के लिये सदा श्रद्धा सामर्थ्यानुसार दान देते रहना क्योंकि हाथ से सुपात्र को दिया हुआ दान भी परलोक में सहायक होगा दुर्गति से बचायेगा। आन देवता जैसे-खेचर, भूचर, चौसठ प्रकार की योगिनी, बावन भैरूं आदि की पूजा मत करो और न ही किसी जीव की हत्या ही करो। इस प्रकार से जीव दया हीन नर तो निश्चित ही दौरे नरक में पड़ेंगे। इसलिये हे प्राणियों! पापों से प्रीत का परिहार करो।3।

आगे कर्त्तव्य कर्म बतलाते हुए कहते है कि संत सज्जन पुरूषों की सेवा करो और विष्णु का भजन करो। हे गुरु भाइयों! क्योंकि गुरु जाम्भोजी नें विष्णु का ही जप करना बतलाया है। सदा ही धर्म में ही ध्यान रखो हमारा जो भी कार्य बनें वह धार्मिक ही होना चाहिये। इससे आप स्वयं ही देवाधिदेव भगवान विष्णु से अवश्य ही जाकर मिल जाओगे। जिस दिन भी आपकी परमात्मा से भेंट हो जायेगी उसी दिन मन प्रसन्न हो जायेगा। आपका वहां पर भव्य सत्कार होगा, सिद्ध साधुजन आकर कुशल समाचार पूछेंगे, ब्रह्माजी वेद का उच्चारण करेंगे। हे जीव! परोपकार के सार को समझ और इसी पर जीवन लगा दें। क्यों भूल जाता है कि गुरुदेव नें यही तो बतलाया है। भजन से ही भक्तों की पहचान होती है अथवा जो भजन सेवा करता है वही तो सच्चे अर्थो में भक्त कहलाता है। भक्त ही भगवान का अत्यन्त प्रिय जीव है।4।

कवि अज्ञात-21 सोलहवीं शताब्दी

हजूरी इस साखी में कवि ने बतलाया है कि जिस दिन इस शरीर से हंस उड़ जायेगा तो यह देह मृत यानि अन्धकारमय हो जायेगी इसलिये जब तक ज्योति अन्दर विद्यमान है तब तक कुछ किया जा सकता है। यह साखी प्राय: सोरठ राग में गायी जाती है।

साखी राग सोरठ छन्दां की-24

जां दिन हंस चलै मेरा जी हो, कुड़ी अंधियारो होई।
गढ़ वैराय फंद पड़ै मेरा जीहो, धीरी धरै न कोई।
धीरी धरै न कोय रे जीव, इत मित न भाइयां।
घर वास मन्दिर लाछ लछमी, तजै सैल सगाइयां।
लागा सो भागा तोड़ तागा, रहण नाही एक छिनां।
अंधियारी कुड़ी होय रे जीव, हंस चाल्यो जां दिनां।1।
वासो तो रैण को मेरा जी हो, माया मोह न मंडे।
तरवर पंछिड़ा मेरा जी हो, उड़ि गया किण खंडे।
उड़ि गया विहंगम गया किण खंडे, बहुड़ि न कियो फेर ही।
एक चिंता हमें है उनकी, तजियो मोह घणेर हो।
संसार मेल्हो बहुड़ि नाहि, साच नहीं सुपन्तरे।
उड़िया विहंगम गया किण खंडे, रैण वासो तरवरै।2।
साथीड़ा पार लंघ्या मेरा जी हो, हम विच भुंयजल भारी।

आज कै काल्हि छिना मेरा जी हो, तलबी ऊभा बारी।
तलबी तो ऊभा बारि ठाढ़ा, भरम मत कोई भूलियो।
संसार राता फिरै गाफल, अंत होय दुहेलियो।
जां दिन काया तजै माया, साथि न मिल है मांगियां।
हम विच भुंय जल अगम है भारी, म्हारा साथि पारि लांघियां।3।
विसन जी री सेवा करो मेरा जी हो, हिरदै हरि ना विसारी।
जन्म दुर्लभ है मेरा जी हो, औगुण गुन्हां निवारी।
औगुण गुन्हां किया घणेरा, चित चहुंदिश धावही।
नव पोल खूटे आयु टूटे, मरण नैड़ो आव ही।
मिनखा देही दुर्लभ रे जीव, पड़यो संकट भारियां।
पाप पराछत मेटि जम्भगुरु, हिरदै हरि न बिसारियां।4।

भावार्थ–जिस दिन भी इस शरीर को छोड़कर हंस रूपी जीव प्रयाण करेगा तो इस शरीर रूपी कुटिया अथवा झूठी मायावी देह में अंधकार ही छा जायेगा। शरीर में ज्योति स्वरूप जीव का ही तो प्रकाश है जब मृत्यु आयेगी तो गढ़ रूपी शरीर में जबरदस्ती प्रवेश कर जायेगी उसे रोकने का कोई उपाय नहीं है। कोई भी मृत्यु के सामने धैर्य धारण करके लड़ नहीं सकेगा आखिर हार तो निश्चित ही है। न तो उस समय स्वयं ही धैर्य धारण कर सकेगा और न ही परिवार के सदस्य भाई–बन्धु मित्र ही सहायता कर सकेंगे। घर, गांव, शहर, जमीन, जायदाद सभी कुछ छोड़कर जाना होगा। मृत्यु अथवा काल ने अपना प्रभाव डाल दिया है तो फिर यहां से भागना ही होगा। मोह माया का धागा तोड़ना ही पड़ता है एक क्षण भी नहीं ठहर सकता। रे जीव! जिस दिन तुम्हें यहां से निकलकर जाना होगा तब इस घर रूपी शरीर में अन्धकार छा जायेगा।1।

यह संसार घरबार तो एक रात्रि का ही वासा है इसलिये एक रात्रि के निवास के लिये उस भवन से मोह–माया तो नहीं होनी चाहिये। जिस प्रकार किसी तरवर पर पंछी आ बैठते है और रात्रि निवास करके प्रात: काल उड़ जाते है उन्हें किसी प्रकार का मोह नहीं होता है। न जाने वे पक्षी प्रात:काल उड़कर किस देश में जाकर बसेरा लेते है। वापिस लौटकर फिर उसी वृक्ष पर नहीं आते है उसी प्रकार से जीव भी तो इस शरीर रूपी वृक्ष को छोड़कर चला जाता है फिर लौटकर नहीं आता है। कवि कहता है कि मुझे एक ही

बात की चिंता है कि जो लोग इतने मोह-माया में डूबे हुए थे परन्तु उन्होनें भी मोह छोड़ दिया और संसार से मिलने के लिये वापिस मुड़कर नहीं आये। उन्होनें सच्चाई का मार्ग अपनाया स्वप्न में भी कभी मुड़कर नहीं देखा वे ही लोग धन्य है किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है फिर भी मोह ममता तोड़ नहीं पा रहे है। जबरदस्ती चिपके हुए है केवल छोड़ने का नाटक ही कर रहे है। चिन्ता तो उन लोगों की है। मोह-माया रहित जन तो पंछी की भांति निर्द्वन्द्व तथा मुक्त है संसार को एक वृक्ष ही समझते है।2।

हमारे साथी तो भवसागर से पार उतर गये है किन्तु हम लोग तो संसार सागर में डूब चुके है। बीच धारा में बहते जा रहे है। शरीर की स्थिरता का कुछ भी पता नहीं है आज कल करते हुए समय व्यतीत होता जा रहा है। जब आयु व्यतीत हो जायेगी तो यम के दूत हाथ में फांसी लिये तैयार खड़े है। इस भ्रम में कोई नहीं रहना कि कौन देखता है, तलबी जवाब पूछने वाले बाहर ही खिड़की पर खड़े प्रतीक्षा कर रहे है। गाफिल मूर्ख तो संसार के रंग में रचा हुआ घूम रहा है यह नहीं देख रहा है कि अन्त में दुर्गति हो जायेगी। जिस दिन काया के साथ ही माया को छोड़ेगा तो तुझे कोई भी साथी नहीं मिल पायेगा। अकेला ही तो जाना है,यही विचार रहना चाहिये कि हम तो भूंयजल समुद्र की तुफान में डूबे जा रहे है परन्तु हमारे साथी पार उतर गये है।3।

सदा ही भगवान विष्णु की ही सेवा करते रहना। ह्रदय से एक क्षण भी विष्णु विलग न हो पाये। यह मानव जीवन अति दुर्लभ है इसलिये अवगुणों को छोड़ देना, कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना। यह चित चारों दिशाओं की तरफ स्वाभाविक ही दौड़ता है ऐसा न हो कि कहीं किसी की बुराई कर बैठे। इस शरीर के नौ पोल यानि दरवाजे है ये कभी भी टूट जायेंगे। इसमें से जीवात्मा निकलकर चला जायेगा। आयु पूरी हो जायेगी तो मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। बार-बार यह दुर्लभ मानव देह नहीं मिलेगी इससे छूटने के बाद किसी भारी संकट में गिर जायेगा। इसलिये हे प्राणी! पापों का प्रायश्चित करो, जम्भगुरुजी तुम्हारी सहायता करेंगे। पापों को काट देंगे। ह्रदय में हरि विष्णु का स्मरण करो। एक पल भी ना भूलो।4।

ऊदोजी नैण कवि-22

जन्म विक्रम संवत 1505 तथा स्वर्गवास 1593। जाम्भाणी साहित्य में ऊदोजी नैण की कथा बड़ी रोचक एवं प्रेरणादायक है। पंथ में सम्मिलित

होने से पूर्व गोठमांगलोद में महमाई मन्दिर के पुजारी थे। बिश्नोइयों की जमात के साथ जाम्भोजी की महिमा सुनकर सम्भराथल पर आये थे। जमात सहित जाम्भोजी का दर्शन ऊदोजी ने भी किया था। और ज्ञान वार्ता का भी श्रवण किया था ऐसा माहौल तथा विचार ऊदे ने प्रथम बार ही देखा था। ऊदो अपराधी की भांति पीछे छुपकर बैठा था। गुरुदेव ने ऊदे के अन्दर झांककर देखा था। उसमें कवित्व शक्ति की संभावना थी। उसे उजागर करने के लिये स्वयं गुरुदेव ने ऊदे को सम्बोधन करते हुए कहा-ऊदा तूं दूर क्यों बैठा है जरा सामने तो आओ। ऊदा अपनी करणी पर लज्जित होता हुआ सामने गुरु के चरणों में हाथ जोड़कर बैठा तब गुरुदेव ने कहा-भाई! कुछ भजन साखी तो सुनाओ। ऊदा ने हाथ जोड़ दिया और क्षमा मांगते हुए कहा- यदि आप कहो तो महामाता का भजन तो सुना दूं। गुरुदेव ने कहा-नहीं भाई! कुछ पिता के भी सुनाओ। पिता के भजन ऊदा कुछ भी नहीं जानता था। समिपस्थ बैठे हुए लोग ऊदे की अज्ञानता पर हंसने लगे, ऊदे को भी अपनी अज्ञानता पर हंसी आयी। गुरुदेव ने ऊदे के सिर पर हाथ रखा, वरद हस्त का स्पर्श होते ही अनुभव जागृत हो गया और तत्काल ही ऊदे ने प्रथम साखी का उच्चारण किया। ओ गुरु आयो। ऊदा गुरुदेव का शिष्य बन गया। महमाई की पूजा छोड़कर विष्णु की उपासना करने लग गया तथा गुरुदेव की सेवा में ही रहने लगा।

ऊदे ने अपने जीवन काल में लगभग पन्द्रह साखियों की रचना की थी जो प्राय: जागरणों में गायी जाती है। तथा प्रसिद्ध चार आरतियों की रचना भी की थी जो नित्य प्रति गायी जाती है। इन रचनाओं के अतिरिक्त भी हरजस, सोहलौ, कूकड़ो, जखड़ी, छन्द, आख्यान कथाऐं आदि की रचना की थी। ऊदोजी तत्कालीन तथा अद्यपर्यन्त समाज के मान्य कवि है। इनकी रचनाऐं अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक है। साहित्य कला की दृष्टि से भी वे अपना महत्व रखती है। यहां पर उनकी साखियों एवं आरतियों की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है। ऊदोजी की यह प्रथम साखी।

साखी राग धनाश्री छन्दां की-25

ओ गुरु आयो झांभराज देव, निज हक साच पिछाणियो।
जां साधां नै देवे लो पार, मुख बोलै इमृत बाणियो।
इमरत बाणी गुरु मुख बोले, सुरग सुख लीला पती।

देवां को गुरु विसन जांभो, जतियां गुरु पुरो जती।
पार गिराये देवै वासो, जे हक साच पिछाणियो।
मिनख रूपी विसन आयो, मुख बोले इमरत बाणियो।1।
ओ गुरु आयो बागड़ देश, जगमां कियो बाबै चांदणों।
भगवत स भगवें भेस, बारां कोड़ी संमाहणौं।
बारां कोड़ी संमाहणौ नै, तेरा सेवक होय रलि आवणो।
तेतीस कोड़ी पारि पहुंचै, सुरगां हुवै बधावणों।
सुरां गुरु संसार आयो, रलि पूगी थारे मोमणों।
बागड़ देश आवाज तेरी, जग मां कियो बाबै चांदणो।2।
ओ गुरु आयो पूरो साह, विणज करो व्योपारियो।
थानैं हुवलौ इधिको लाभ, कारण किरिया मत हारियो।
कारण किरिया मत हारियो, भरम भूला ना रहियो।
कुलोभ अरू अहंकार तजियो, रतन काया यूं लहियो।
साधो अजर जरियो, मेर छोड़ो ताण थके हारियो।
साच सिदक म्हारे श्याम सेती, विणज करो व्योपारियो।
थारो तीरथ निज थल थान, सो गुरु आयो भालियो।
जिहिं गुरु का किरियां कोल, माथे बांध र पालियो।
किरिया अनहद वरत मानो, जाणि जीवन धावियो।
नुगरां सेती निंव खिंव चालो, पारि पहुंचो भावियो।
राव राणा भरम भूला, राज करंता मालिये।
गरीब रूपी पही पूरो, सो गुरु आयो भालिये।4।
थारी नव खंड हुई छै आवाज, सम्भराथल गुरु आवियो।
थारा साधां रा सारे लो काज, जे पुरो गुरु ध्यावियो।
जिण पुरो गुरु ध्यावियो नै, सो सुरगां पुर जायसी।
अपट पटोला सुरग हिंडोला, मानों चिंता पायसी।
काज संभलो चड़ो बेड़े, पारि पहुंचो भावियो।
नव खंड देश आवाज थारी, सम्भराथल गुरु आवियो।5।

भावार्थ–ये गुरुदेव जाम्भेश्वर जी आये है। अपने प्रिय सच्चे एवं इमानदार भक्तों की पहचान करते है ऊदोजी कहते है कि मैनें अपने सच्चे स्वामी को पहचान लिया है। ये गुरुदेव साधु भक्तों को संसार सागर से पार

उतार देंगे तथा अमृत ज्ञानमयी वाणी बोल रहे है। गुरुदेव स्वयं स्वर्ग की लीला के अधिपति है क्यों नहीं अमृत बाणी बोलेंगे। देवताओं के भी देवता गुरु जाम्भोजी विष्णु ही है तथा जतियों में भी पूर्ण यतीश्वर है। जो भी व्यक्ति इमानदारी से गुरु को पहचान लेगा उसे निश्चित ही संसार सागर से पार उतार देंगे। मानव रूप में स्वयं विष्णु ही आये है। यह बड़ा ही आश्चर्य एवं सौभाग्य है। मुख से अमृत वाणी बोल रहे है।1।

ये गुरु तो इस बागड़ देश की भूमि में आये है जहां पर अति कठिन जीवन जीना है। यहां पर आकर अज्ञान के अन्धकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश किया है। भगवान स्वयं इस बार भगवें वेश में आये है। इस बार तो बारह करोड़ प्रहलाद पंथी जीवों का उद्धार करना है। जो भी जहां भी प्रहलाद पंथी जीव है वे सभी मिलकर सेवक निश्चित ही आ जायेंगे। इक्कीस करोड़ तो इससे पूर्व पहुंच चुके है। अब आगे बारह करोड़ जाकर उनसे मिलेंगे तो पूरे तेतीस करोड़ हो जायेंगे। उनसे मिलकर अति आनन्द हो जायेगा। देवता के गुरु विष्णु ही इस संसार में आये है ऐसा जानकर मोमण जन मिलकर आपके दरबार पहुंचे है। हे देव! इस बागड़ देश में तो आपकी आवाज चहुं दिश फैल चुकी है और ज्ञान का प्रकाश हो चुका है।2।

ये गुरु तो पूर्ण सेठ साहूकार की भांति यहां पर व्यापार करने के लिये आये है। व्यापार में लेना-देना होगा। यदि पूर्ण साहू के पास जो भी आयेगा तथा अपना व्यापार लेन-देन करेगा तो अवश्य ही लाभ में रहेगा। इस लाभ को व्यर्थ में ही गंवा मत देना। तथा वस्तु धर्म नियम लेकर उसे क्रिया द्वारा करके दिखाना, कहीं हार मत जाना। कारण क्रिया हारकर भ्रम में भूल मत जाना। भ्रम तुम्हें कहीं विपरीत पथ का अनुगामी न बना दे। कुलोभ अहंकार ये सभी त्याज्य है। इनके विपरीत संतोष, निरभिमान ये गुण ग्राह्य है। रतन काया के ये अलंकार है। जिन्हें ग्रहण अवश्य ही करना। हे साधों! अजर सदा तुम्हें जलाने वाले काम क्रोधादि है इन्हें जला डालिये तथा मेरापन छोड़ दीजिये। जो कोई हो हो करता हुआ अग्नि सदृश आता है तो आप ठण्डे जल सदृश शीतल नम्र हो जाइये। ताकत रहते हुए भी क्षमा भाव रखिये। सच्चाई इमानदारी ये ही हमारे श्याम सुन्दर को प्रिय है। इसलिये यहां गुरुदेव आये है उन्हीं के साथ व्यापार अवश्य ही करें।3।

कवि ऊदो कहते है कि हे गुरुदेव! आपका तीर्थ तो यह सम्भराथल

ही है इस थल पर हरि कंकेहड़ी के नीचे विराजमान आप मुझे बड़े ही प्रिय लगते है, आपकी क्रियाएं मुझे पसन्द आयी है। ये आपके नियम धर्म मैनें सुने है और आपका जो जीवन है मैनें अपनी आंखों से देखा है। मैं इन नियमों को शिरोधार्य करता हूं। तथा इनका पालन करने का प्रयत्न अवश्य ही करूंगा। अनहद नाद रूपी क्रिया चल रही है ऐसा मैनें आपके पास आकर अनुभव किया है। मैं फिर पूर्व जीवन की भांति नहीं जीऊंगा। पहले की भांति अपने ही जीवन के साथ खिलवाड़ नहीं करूंगा। नुगरे लोग जो उद्दण्ड है उनसे मैं नम्र होकर क्षमा करते हुए बर्ताव करूंगा न कि उन्हें शाप दूंगा। मैं उन्हें भी सद्मार्ग का पथिक बनाऊंगा। वे भी तो मेरे ही भाई-बन्धु है दूसरों की क्या कहें, राजा, राणा तो राज-पाट के भरम में भूल चुके है उसी में मदमस्त हो चुके है। उन्हें धर्म-कर्म की याद नहीं है। हे देव! आप तो स्वयं गरीबी वेश में इस धरती पर पूर्ण रूपेण अवतार लेकर आये है वे बेचारे आपको क्या समझे किन्तु मुझे तो आप पसन्द आ गये है आप से प्रिय और मेरा कोई नहीं है।4।

हे गुरुदेव! आपकी आवाज यानि शब्दों की ध्वनि नव खंडों तक पहुंच चुकी है सभी देश देशान्तरों के लोग आ रहे है। आपके प्रिय साधु भक्त जनों का आप कार्य अवश्य ही करोगे जो भी पूर्ण रूपेण हृदय से गुरु का ध्यान करेगा कार्य तो उसका ही होगा। जिसने भी पूर्णतया जप ध्यान किया है वह तो भगवान के पास वैकुण्ठ धाम को पहुंच जायेगा। वहां पर पहुंच जाने पर फिर उन्हें किसी बात की चिंता नहीं रहेगी, सभी स्वर्गीय सुख सुलभ हो जायेंगे। मनोवांछित फल की प्राप्ति हो जायेगी। इसलिये हे भक्तों! शीघ्रता करो यदि कुछ कार्य करना अवशेष रह गया है तो उसे पूरा कर लो और गुरुदेव के बताये हुए धर्म रूपी बेड़े पर सवार हो जाइये, सतगुरु तुम्हें संसार सागर से पार उतार देंगे। यह कोई एक स्थान या थल विशेष की बात नहीं है। नव खंडों में गुरुदेव की आवाज पहुंच चुकी है। इसलिये सर्वोच्च शिखर सम्भराथल पर गुरु आये है।5।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-26

गुरु की कथनि जुल्या मेरा बाबा, जहां का हरिया भाग।
गढ़ वैकुण्ठ अलख लड़ी, चड़ी जोवै छै जी माघ।
सदरंग कामण माघ जोवै, कदि साधु मोमण आयसी।
नूर सतगुरु आस पूरवै, रतन काया पायसी।

आरतो ले मुंध आवै, सुरगे बाजै दुंदुंही।
अनन्त बधावा हुवै जां दिन, मंगल गावै मिल सही।1।
अलख लड़ी अरदास करै, मों पीव सूं कद मिले।
तिहुं जुगै इकवीस कोड़ी पहुंची, हींडे सहज हींडोली।
सहज हींडोलै तेरा साधु हींडै, दुख दालिद्र नां तहां।
जुग चोथे विसन मेलो, इकवीस कोड़ी बाराहां।
वैकुण्ठ बेड़ो विसन दीयो, सुचियारा साधां लेवसी।
पार गिराय पहुंचाय स्वामी, वास निहचल देवसी।2।
पार गिराय नित अजरा वर, गुरु साहिब सूं लिव लावणां।
मोमणां ने मनसा भोजन, अमि कचोल पीवणां।
अमि कचोल चीर पटोला, अखे खैणी बर कामणी।
तेतीस गढ़ तेरा सदा निहचल, देव समर्थ तूं धणी।
झणकार नेवर जोत रतना, कोड़ पायल पेखणां।
दीदार आभै सभा तेरी, देव दई नित देखणां।3।
धन्य हो म्हारा जीवड़ा रा राज, जो म्हानै सुरग मिलावै।
सोई दत देई हो म्हारा कायम राजा, जो थांरी गति भावै।
दत देई दाता मुकति मनसा, रतन काया पार दे।
देव सुरग मिलिया मोमण, सुर सभा दीदार दे।
अति पात अनेक अप्सरा, हेत बहुरंग भाव छै।
तेतीस कोड़ी मिले जानिल, बींद त्रिभुवन राव छै।4।

भावार्थ–हे मेरे बाबा! कोई कन्या अपने पिता श्री से कह रही है कि गुरु जाम्भोजी के कथनानुसार जिन्होंनें अपना जीवन जीना सीख लिया है, सभी मिलजुल कर चलने लगे है उनका तो बड़ा ही सौभाग्य है। इस संसार की मोह–माया में सार नहीं है ऐसा मानकर अपने सच्चे सुखमय घर वैकुण्ठ लोक में जाने के लिये प्रतीक्षा में खड़े है। ऐसा लगता है मानों वहां अलख के घर पर तो पंक्तिबद्ध खड़े लोग प्रतीक्षा कर रहे है। यहां संसार में भी संसार के मोह जाल से उपर उठकर उसी वैकुण्ठ का ही मार्ग देख रहे है। सच्चे रंग में ओत प्रोत युवती सदा ही मार्ग की तरफ देख रही है और प्रतीक्षा कर रही है। कोई भगवान का भक्त साधुजन आवे तो उससे मैं ज्ञान ग्रहण करूं। सतगुरु से किया हुआ प्रेम–स्नेह व्यर्थ में नहीं जायेगा। हमारी परम इच्छा जो मुक्ति की है

वह पूर्ण होगी, यह काया छूट जायेगी तो कोई बात नहीं, वहां वैकुण्ठ पहुंचने के लिये तो दिव्य रतन काया मिलेगी जब वह रतन काया रूपी जीव वहां पहुंचेगा तो स्वागत के लिये अप्सराऐं आरती लेकर आयेगी तथा स्वर्ग में दुंदुंभी बजाकर स्वागत करेंगे। उस दिन अनन्त बधावा गीत गाये जायेंगे, बधाइयां बांटी जायेगी।1।

साधना में लगी हुई जीवात्मा अपने पति परमेश्वर से प्रार्थना कर रही है कि हे देव! हे स्वामी! आपसे मिलना कब होगा। आपके प्रिय भक्त जन तीनों लोकों में इकवीस करोड़ तो आपके पास पहुंच गये है। वहां पर स्वर्गीय सुख भोग रहे है। सहज में ही आनन्द के हींडोले पर लहरा रहे है। वहां पर तुम्हारे साधु सज्जनों को दुख नहीं है और न ही किसी वस्तु का अभाव ही है। इस चौथे कलयुग में विष्णु से भेंट हुई है तो अवश्य ही उन इकवीस से बारह को मिला देंगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। वैकुण्ठ में ले जाने के लिये इस ज्ञान ध्यान रूपी नाव को इस बार स्वयं विष्णु ने ही चलाई है, स्वयं खेवट बनकर भार उठाने का प्रण किया है, यह कार्य अवश्य ही पूर्ण करेंगे। यदि चलती नौका पर कोई सवार नहीं हो सका, पीछे रह गया तो फिर सदा के लिये ही रह जायेगा। स्वामी स्वयं पार पहुंचा देंगे और आगे भी सदा के लिये वैकुण्ठ में भी निवास देंगे इससे जन्म मरण का चक्कर छूट जायेगा।2।

वहां पर पहुंच जाने पर तो सदा अजर अमर हो जायेगा। वहां सदा गुरु स्वामी से प्रेम बढ़ेगा। वहां पर भक्तों को मनसा भोजन अमृत पान होगा। अमृत से बढ़कर और कोई संसार में या वैकुण्ठ में पदार्थ नहीं है। वहां सभी पदार्थों की पराकाष्ठा है तथा ओढ़नें पहनने के लिये चीर मिलेगा जो दिव्य होगा। वहां पर स्वागत सत्कार सेवा के लिये सदा अजर अमर एक रस रहने वाली अप्सराऐं होगी। हे देव! यह तुम्हारा वैकुण्ठ गढ़ देव निवास सदा निश्चल रहने वाला है क्योंकि आप तो सर्व समर्थ सभी के स्वामी हो, आपके आसन के सामने सदा अप्सराओं द्वारा नृत्यगान, पायलों की झनकार, करोड़ों की संख्या में देखी जा सकती है। प्रेम स्नेह से भरी हुई तुम्हारी सभा सदा ही देखने योग्य है और देखने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो सकेगा।3।

हे कायम राजा! आप सभी के स्वामी धन्य है, आप यहां आये है तो हम भी धन्य हो गये है। आप हमें स्वर्ग में ले जाने के लिये आये है। इससे बढ़कर हमारे लिये और क्या कार्य हो सकता है। हे सांई राजा! आप हमें वही गति देना

जो आपको अच्छी लगती है। वहां देव स्वर्ग में मिलेंगे, देव सभा का दर्शन होगा तो हम धन्य हो जायेंगे। अत्यधिक संख्या में वहां पर देव, अप्सराएं बहुत प्रकार से आनन्द के दाता है। वहां पर तेतीस करोड़ देवता ही बाराती है और दुल्हा स्वयं भगवान त्रिभुवन नाथ है। इस प्रकार से सदा ही उत्सव मनाया जाता है। आनन्द का आरपार ही नहीं है। हे देव! आप हमें वहीं पहुंचा दें।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-27

मैं तो म्हारो श्याम सपीहर, सिंवरीयो।टेर।
जुगत सूं जाणण जोग,नाम तेरा मन भावणां।
म्हानें सुर तेतीसां सूं मेल, जां मिलिया अनंत बधावणां।
बधावणां स्वामी नाम तेरे, सदा जीवड़ो हरखिये।
दोष दालद दुरत नासै, कंवल ज्यूं मन विगसिये।
सदा वरती श्याम सिंवरो, मोमणां रो धन्य जीयो।
सुरां सेती मेल सतगुरु, जीवां काजै जपियो।1।
सतगुरु विन मुकति न होय, गुरु विन पंथ न पाइये।
सुगरां मोमणां विन गोष्ठि न होय, मिलिया एकान्तिये।
मिलिया मोमण दिल चोखा, ज्ञान गुरु को बोलिये।
झूठ पर हर जीव मेरा, सांच रतियां तोलिये।
आप शंभू सीख देवे, सहल उतम जोविये।
साच विन को पार लीधै, गुरु विन मुक्ति न होविये।
जिहिं गुरु परसादे पारि पहुंचा, सो गुरु एक मन जाणिये।
जुगां-जुगां को तारण जंभराज, जे हक साच पिछाणिये।
हक साच जिहिं पिछाण्यो, जुगे-जुगे जरणां जरी।
पांच सात नव कोड़ि बारा, वास देवे अमरापुरी।
पांच सात नव कोड़ी बारा, विखम भूंयजल लांघणां।
तेरा नांव लिये दुख दुरति नासै, सिंवरो साहब आपणां।3।
था विन अवर न कोय, थे दिरावो थे दिवो।
पिता कुटुम्ब परिवार, हलति पलति तुम्हीं शरणै।
शरण शम्भु सृष्टि करता, सहल उमति जोवियो।
विखम भवजल भवन चवदह, मुक्ति खेत उतारियो।
आस म्हारी करो पूरी, मांग मत घातो खाता।

भणै ऊदौ शरण थांरी, तूंहि दाता तूंहि पिता।4।

भावार्थ-मेरा और तुम्हारा तो स्वामी सर्वस्व मुरारी है वही स्मरण करने योग्य है। वह श्याम सुन्दर मनोहर युक्ति से जानने के योग्य है उसी का ही नाम मन भावन है। इसी नाम का सहारा लेकर तेतीस करोड़ देवताओं से मिलना होगा। जब देवों के साथ मिलन होगा तब अत्यन्त बधाइयां बंटेगी। हे स्वामी! तुम्हारे नाम की अनन्त बधाइयां बंटेगी तभी यह जीव हर्षित हो सकेगा। मन की प्रसन्नता ही दुख दरिद्र द्वितीय भाव का नाश करने वाली है। ऐसी प्रसन्नता में मन कमल की भांति खिल उठेगा, विकसित हो जायेगा। सदा ही नियम से श्याम सुन्दर श्री विष्णु का स्मरण करो, जो ऐसा करता है जीवन तो उसी का ही धन्य है। विष्णु का जप किसलिये? आगे बतला रहे है कि प्रथम तो देवताओं से मिलन तथा जीव की भलाई के लिये अवश्य ही स्मरण कीजिये।1।

सतगुरु बिना मुक्ति नहीं मिलती एवं पंथ भी नहीं मिल पाता, बिना मार्ग तो सदा के लिये भटक जायेगा। भले ही कितने मिलते रहो तथा बिछुड़ते रहो, बिना सुगुरु-सुगरा तथा भक्त बिना ज्ञान गोष्ठि तो नहीं हो पाती, यदि गोष्ठि चाहते है तो अवश्य ही एकान्त में मिलकर ज्ञान वार्ता तथा गुरु की वाणी पर ही विचार करें अन्यथा व्यर्थ की बातें तो डुबो ही देगी। हे मेरा जीव! झूठ बोलना छोड़ दे और सत्य को रतियों से तोलकर उसे बहुमुल्य समझकर धारण करें। आप स्वंभू भगवान ही उपदेश दे रहे है। सतसंगति उतम पुरूष के साथ ही करें। सच्चे स्वामी की शरण ग्रहण किये बिना कौन मुक्ति को प्राप्त हो सका है? यह निश्चित अटल सिद्धान्त है कि गुरु बिना मुक्ति नहीं हो सकती।2।

जिस गुरु देव की अपार कृपा से अनन्त लोग पार पहुंच चुके है उसको एक मन एक दिल से अवश्य ही जानना चाहिये। युगों-युगों का योगी जाम्भोजी आये है यदि इसमें वास्तव में सच्चाई है तो अवश्य ही शरण ग्रहण करनी चाहिये। जिसने भी हक साच की पहचान की है उन्होनें युगों-युगों तक जरणा रखी है "जरणां जोगी" वह वास्तव में योगी है। पांच सात नव की तरह देव अन्य बारह करोड़ों को भी अमरापुर के वासी बना ही देंगे, अब अवसर आ चुका है। ये इकवीस करोड़ तथा बारह करोड़ अति दुर्गम भाव से पार उतरे है। हे देव! आपका तो नाम लेने से ही दुविध्या दोषादि नष्ट हो जाते है

ऐसे श्याम सुन्दर का हम नित्य ही स्मरण भजन करें।3।

हे देव! आपके बिना इस सृष्टि में हमारा निजी और कोई नहीं है। जैसा आप करोगे वैसा ही होगा। आप ही तो दिलाने वाले है और आप ही देने वाले है। अन्य सांसारिक माता-पिता, कुटुम्ब-परिवार सभी कुछ है तो सही किन्तु जब तक शरीर चलता है, उठता है, बैठता है तब तक है इसके बाद में कोई किसी का साथी नहीं है इसलिये हमने तो आपकी शरण ग्रहण की है सृष्टि कर्ता स्वयंभू की हम तो शरण में हैं। परमात्मा के संग में ही अपनी उमंग कार्य कलाप होता देख रहा हूं। चवद भवनों में तथा सभी जगहों पर फंसने का भय बना ही रहता है संसार तो एक सागर की ही भांति है। हे गुरुदेव! आप ही हमें अपार संसार से पार उतारिये। हमारी बस यही आशा है अवश्य ही पूर्ण करो। हमारी इस पवित्र मांग में विघ्न नहीं डाल देना, कहीं लालच में चल कर भूला दिया तो हम डूब जायेंगे। ऊदोजी कहते है कि अब तो आपकी ही शरण है। हमारे तो आप ही दाता है और आप ही पिता सर्वस्व है।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-28

गुरु पूरो दातार, म्हे छां थारा मंगता।
बंदा देई पार, आस करां आस गतां।
आस थारी करां देवजी, जीव काजै ध्याइयो।
आप शम्भू थलां ऊपरि, भाग म्हारो आइयो।
ज्ञान निज पोह विष्णु, चाल्यो ब्रह्म क्रिया सार जे।
पार गिराये रतन काया, देव तूं दातार जे।1।
इकवीसां सूं मेल, जम्भराय तूठै होयसी।
गुरु ठेल्या काठ पखाण, पढ़िया पंडित जोयसी।
जोयसी तो पंडित भरम भूला, निकट चौथे वेद नै।
कलि मांहि कायम क्रोड़ी तारै, दैत कालिंग छेदनै।
हींडोलै हींडण पलंग पोढ़ण, रजि मनसा कैलने।
क्रोड़ी बारा करो पूरे, इकवीस सूं मेलनें।2।
उतर दखिण देश, पूर्व पश्चिम निवावियां।
पहलाद सूं कोल, वाचा पालण आवियां।
वाचा तो पालण विसन, मिले बारां करोड़ियां।
तीन जुगां में रही बाकी, ठांय पूरे जोड़ियां।

प्रभु सेती साच चालो, रंग गुरु के राचियो।
कृत जुग में कोल कियो, वाच थारी साचियो।3।
वाच थारी साच, थे जागो जुग सब सोवे।
गढ़ तेतीसां वास, जम्भराज तूठे से होवे।
तेतीसां गढ़ तेरा सदा निश्चल, पार गिराय बसेर हो।
एक मन होय विसन ध्यावो, बहुड़ि हुवै न फेर हो।
सुरग तो सुख अनूप अधिक, गोष्ठि सुरगां सूं होवे।
वाचा तो थारी साच देवजी, थे जागो जुग सब सोवे।4।
काजी मूला आय, पढ़िया पंडित जोयसी।
केवल ज्ञानी देव, धणी तूं सर्व संतोषी
सर्व संतोषी सही पूरो, ज्ञान तिहिं पर जोइये।
मुक्ति खेती पार लाभै, खाक जीवत होइये।
पांच सात नव क्रोड़ी बारां, बहुरी फेर न होयसी।
काजी तो मुल्ला आय देवजी, पढ़िया पंडित जोयसी।5।

भावार्थ- हमारे सतगुरु देव ही पूर्ण दाता है। सभी के लिये दे रहे है और हम प्रजागण उनसे मांगने वाले है, सदा ही मांगते रहते है। कभी किसी से भी मांगने से मूंह नहीं मोड़ा। मांगने के लिये तो संसार में बहुत सी अमूल्य वस्तुएं है परन्तु कवि कहता है कि हे देव! हमें तो आप संसार सागर से पार उतार देना यही मांग करते है। यही आशाऐं लगाये हुए आपका ध्यान कर रहे है। जीव की भलाई के लिये ही तो मांगना उतम है और वह भी अपने ही स्वामी से। आप तो स्वयंभू है और इस सम्भराथल पर आये है यही हमारा बड़ा ही सौभाग्य है। आपनें ज्ञान बताया है और मार्ग विष्णु का ही प्रसिद्ध किया है तथा क्रियाएं उच्चकोटि की ब्राह्मण जैसी बतलाई है। यही तो सार रूप है। इन्हीं आपके बताये हुए नियमों को धारण करने से यह रतन सदृश काया पार पहुंच जायेगी। हे देव! आप ही गति दाता, जीवन दाता महान हो।1। इकवीस करोड़ जो तीन युगों में पार पहुंच चुके है उनसे मिलन भी तभी हो सकेगा जब जाम्भेश्वर जी कृपा करेंगे। गुरु ने परंपरा से चली आ रही काष्ठ-पत्थरों की पूजा तथा ब्राह्मण ज्योतिषियों का चक्कर काट दिया है। वे भला क्या दूसरों को निकाल पायेंगे वे तो स्वयं अपने ही भ्रम में भूले हुए है। जो स्वयं ही फंस गया है वह दूसरों को क्या निकालेगा। पंडित को वेद पढ़ना

चाहिये था किन्तु नहीं पढ़ता। इस कलयुग में तो स्वयं प्रत्यक्ष भगवान विष्णु ही यहां आकर उपस्थित होकर अपने वचनों को निभाते हुए करोड़ों जीवों का उद्धार करेंगे। कलयुग का छेदन करके सतयुग की राह चलायेंगे तथा बता रहे है। हे देव! इकवीस करोड़ से मिलन करवाने के लिये तथा वहां स्वर्गीय सुख के लिये शीघ्र ही संख्या पूरी करो।2।

उतर, दक्षिण, पूर्व तथा पश्चिम आदि देशों में आपने चेताया है। जो उद्दण्ड थे उन्हें झुकाया, प्रहलाद से किये हुए कोल को निभाने के लिये आये है। निश्चित ही वचनों का निर्वाह करने के लिये विष्णु आये है। बारह करोड़ से अवश्य ही मिलेंगे और उन्हें पार उतारेंगे। तीन युगों में कुछ अवशेष कार्य रह गया है उन्हें अब पूरा करेंगे। प्रभु के संग सच्चाई एवं इमानदारी से चलो और गुरु के रंग में रच जाओ। जैसी गुरुदेव आज्ञा देते है उसे शिरोधार्य करो। सतयुग में की हुई प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिये आये है क्योंकि उनके वचन सत्य होते है भगवान सत्य प्रतिज्ञ है, जैसा कहते है उसे वे पूरा करते है।3।

हे देव! आपके वचन सत्य है। आप सदा ही जागृत रहते है किन्तु यह जगत सो जाता है, सदा ही अचेत अवस्था में रहता है। वैकुण्ठ लोक में उन देवताओं के साथ निवास तो सतयुग की प्रसन्नता पर ही निर्भर करता है। हे देव! आपका तो वह धाम सदा ही अडिग अचल रहने वाला है, वहां पर तो जो इस संसार को छेदन करके जाता है वही वहां पर सदा के लिये निवास करता है। एक मन एक दिल होकर भगवान विष्णु का स्मरण करें ताकि वहां पहुंच सके और वापिस लौटना पड़े। स्वर्ग या वैकुण्ठ धाम में सुख की तो महिमा अतुलनीय है। किससे बराबरी की जावे, वहां पर स्वर्गीय जनों से संगोष्ठि होती है। हे देव! आपकी ही वाचा सत्य सनातन है आप तो सदा ही जागृत रहते है परन्तु यह जगत सोता है।4।

इस देश में पढ़े लिखे पंडित, काजी, मुल्ला, ज्योतिषी आदि सभी है और अपनी-अपनी मति अनुसार कर्म-धर्म बतलाते भी है परन्तु हे देव! आप हमारे लिये तो सच्चे ज्ञानी एवं संतोषी सतगुरु है। 'गुरु आप संतोषी अवरा पोखी' आप तो स्वयं गुरु संतोषी है ओरों का पालन पोषण करने वाले है। सतगुरु में जो लक्षण होने चाहिये वे सभी लक्षण आप में घटित हो रहे है। जीते जी मरना सीखें, मुक्ति को प्राप्त होवें, वे लोग जो पार पहुंचे है वे इसी तरह जरणा रखते हुए ही धर्म कमाया है। फिर लौटकर संसार के दुख में नहीं फंसे

है। हे देवजी! हमनें तो सभी को छोड़कर केवल आपका ही सहारा लिया है और इस समय भी मुक्ति का ही वरदान मांग रहे है।5।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-29

बाजै बाजै रे मादलियां सरलै साध नै, स्वामीजी रा सबद सुहावणां।
दिल भीतर मोमणों पुरैली चौकनै, हिरदै साल्हियां बुलाऊंली मोमणां।
थूल प्रचंड परहरो मोमण चोखा, जास हरि हम रल्या।
कृतयुग पहलाद सीधो, पांच करोड़ी ले तिरयो।
पाणी मांहि राख लियो, नांही हो हूं पर न जल्यो।
तोइ विष्णु को नाम न छाड़्यो, दैत दावण झूरियो।
भेर भोगल शंख बाजै, चौक चंदन पूरियो।1।
जुग तेता रे मोमण, हरिचंद नै जिग रचावियो।
सत संजम रे मोमणा, धर्म आचार नै निज फल पावियो।
निज फल जिग पावियो, जिण एकान्त मन कियो।
जीव काजै नारी परची, शाह घर पाणी छल्यो।
सत न छाड्यो धर्म न हारयो, हुवो दणियर साखियो।
सातां क्रोड़ां को मुखी हुवो, जुग त्रेता हरिचन्द तारियो।2।
जुग द्वापर रे मोमणो, पांचो वीर नै संग द्रोपदी।
सतवादण रे मोमणो, कूंता दे मांय नै गति ले तरी।
सत वादण रे मांय नै, कूंता तिरी गति नै तारनै।
सत हुंवता चड़िया बेड़े, लंघिया भवजल पार नै।
सतवादी धर्म धीरा, करणी साच सधीरणां।
नवां करोड़ां रा मुखी हुवा, जुग दवापुर पांचूं वीरणा।3।
कलिजुग रे मोमणो, करणी कमाणो ऊदो यूं भणै।
जुल चालो रे साचे साहिब के पंथ नै, जीव काजै आपणै।
जीव काजै भलो कीजै, है है बूरो न कीजिये।
आये सुभ्यागत सेवा कीजै, पगे निवण कीजिये।
आयो सुभ्यागत गुरु कर मानों, करियो वांहरी सेव जी।
अनंत करोड़ा को मुखी आयो, कल्य जुग जम्भराज देवजी।4।

भावार्थ-गुरुदेव द्वारा बतायी हुई सरल साधना से नाद ध्वनि बजने लगती है। ''ओम शब्द गुरु सुरति चेला'' यही साधना तथा सिद्ध मंत्र है। इस

साधना से नाद ध्वनि सहज में ही श्रवण होने लगती है। जिस प्रकार से शरीर पर पहने हुए अलंकार मादलिया आदि गहने परस्पर संयोग से स्वाभाविक ही बजने लगते है। ऐसी प्रिय ध्वनि जो स्वामी परमात्मा की है वह सुनने में बड़ी ही सुहावनी लगती है। हे मोमणों! मैं हृदय रूपी हवेली में ही उस इष्टदेव को चौक बनाकर बिठाऊंगी। और उसी हृदय में ही साल्हिया सुलझे हुए भक्तों को बुलाकर बिठाऊंगी। वहीं पर ही श्रीदेवजी से दिव्य सत्संग होगी। वहीं पर दिव्य शब्द का श्रवण सहज ही में होगा। ऐसा बुद्धि का कथन है। अच्छे-अच्छे मोमण भक्तों को बुलाकर मैं उनकी सेवा करूंगी किन्तु जो स्थूल बुद्धि वाले कठोर, निर्दयी एवं क्रोधी है उन्हें मैं त्याग दूंगी। ऐसे हरि के भक्तों का संग हरि से मिलाने वाला है। आगे परम भक्तों का परिचय देते हुए कवि बतला रहे है कि सतयुग में प्रहलाद भक्त ने अपने साथ पांच करोड़ को लेकर पार उतर गये। प्रहलाद को अनेकों कष्ट दिये गये, जल में डुबाया गया, अग्नि में जलाने का प्रयत्न किया गया परन्तु हरि ने वहां पर रक्षा की थी। अनेक विपदाएं प्रहलाद ने सहन की थी परन्तु हरि का नाम नहीं छोड़ा। आखिर दैत्य हिरण्यकश्यपू का विनाश श्री हरि ने ही किया था। उसी समय ही अनेक भेरी शंख नगाड़े बज उठे थे और चंदन की चौकी पर बिठाकर प्रहलाद की पूजा की थी।1।

त्रेतायुग में सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने यज्ञ रचाया था। स्वयं सत्य, संयम, धर्म का आचरण किया था और उसका फल भी प्राप्त किया था। हे मोमण! फल तो वही पायेगा जो मन लगाकर धर्म का आचरण करेगा। स्वयं हरिश्चन्द्र ने अपना तन तथा अपनी प्रिया तारादे को भी बेच दिया था। स्वयं ने नीच कार्य किया और देवी तारा ने भी पर सेवा करके अपने धर्म को नहीं छोड़ा, धर्म से विमुख नहीं हुए इस बात का यह सूर्य देव साक्षी है। इस प्रकार से हरिश्चन्द्र ने त्रेता में अपना तथा अपने ही सात करोड़ अपनी प्रजा का भी उद्धार किया था।2।

द्वापर युग में पांचों पाण्डव जो वीर थे उनके साथ में उनकी भार्या द्रोपदी तथा माता कुन्ती थी इन्ही सभी ने मिलकर सत्य के मार्ग को अपनाया था। सामुहिक धर्म को निभाने वाले ये संसार सागर से पार उतर गये। ये सत्यवादी धर्म, धैर्य, कर्त्तव्य कर्म करने वाले थे इसलिये द्वापर युग में अपने साथ नौ करोड़ को लेकर पार पहुंचे थे। इस प्रकार से ये द्वापर युग के धर्मवीर थे।3।

ऊदोजी कहते है कि हे भक्तों! इस कलयुग में कर्त्तव्य कर्म करो। सभी मिलकर सच्चे साहिब के पंथ पर चलो। अपने जीव की भलाई के लिये कुछ करो। यदि कुछ करना है तो जीव की भलाई के लिये अन्यथा हे मानव! जान बूझकर किसी का बुरा मत करे। घर पर आये हुए सुभ्यागत की सेवा करो और आदर सहित मीठी बाणी से स्वागत एवं नमन प्रणाम करो। सुभ्यागत देव स्वरूप ही होता है उसकी सेवा ही देव सेवा है। इस कलयुग में जाम्भेश्वर जी आये है जो युगों-युगों के योगी है और अनन्त करोड़ भक्तों को पार उतारेंगे।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-30

काया तो मोमण रतन सरीखी, पहरे लो मोमण कोई।
सतगुरु तो मोमणों सहजे मिलियो, पूरब लिखियो सोई।
पूरब लिखियो कोड़ि बारां, जम्भगुरु परचावियो।
बरते अनहद अवल किरिया, गुरुजी ज्ञान सुणावियो।
मुकति खेती अपार लाभै, कहयो गुरु को कीजिये।
जीवत मरिये अजर जरिये, रतन काया पहरिये।1।
सतगुरु तो मोमणों सीख देवे, सांभलियो मेरा भाई।
कूड़ कपट जीवड़ा नै भारी, पंथ मां करे ठगाई।
करो ठगाई पिंड पोखो, सांच सिदक नहीं जोय हो।
हिये भीतर घड़े घाटी, कांही बाहर धोय हो।
कपट कर कर पिण्ड पोखो, अन्त धरती मांही रहे।
दुख दुकरत जीव सहसी, सीख दिया सतगुरु कहै।2।
कांय मोमणों थे साध कहावो, करतब करां अधूरा।
हरिचंद तो कोटि सात ले तरयो, जिण करम कमाया पूरा।
जिन्ह करतब किया पूरा, सोई जुगे जुग उधरियां।
पहलाद हरिचंद पांच पाण्डू, सूरां सेती रत्न मिल्या।
बांका सिदक जोवो माघ खोजो, कपट देख मत राचियो।
झूठ बोलो किरिया ओछी, कांय काया पोखो काचियो।3।
माया तो मोमण मेर करावै, लिछमी आय बिडाणी।
काचो पिण्ड जिवड़ै रे साथ चालै, सुकरत संचो पिराणी।
सुकरत संचो जीव पिराणी, जिण संग दुस्तर तिरै।

चांद सूरज पवन पाणी, साख सतगुरु आदरै।
संसार सलियर कवल कूड़ो, कलिकाल कण लीयो।
गुरु के वचने मेर छोड़ो, जिन्हां सुक्रत संचि लियो।4।
सतगुरु सिंवरो एक मन ध्यावो, दीन कथो जाम्भाणो।
गुरु के वचने निव खिव चालो, साच सही कर जाणो।
साच सही कर जांण रे जीव, छाड़ो मन दुभांतिया।
सुरां सेती मिल्या नांही, पंथ मांही भ्रांतियां।
लबधी मेलो माघ खोजो, अजर जरो जीवत मरो।
कह ऊदो पार पहुंचो, सेवा सतगुरु की करो।5।

भावार्थ-यह मानव शरीर तो दिव्य रतन सदृश अमूल्य है। इस काया को तो कोई विरल मोमण ही धारण करना जानता है। इसका महत्व समझता है इस काया के द्वारा सभी कुछ किया जा सकता है सतगुरु भी इस समय सहज रूप से प्राप्त हो चुके है। यह तो हमारा ही कोई पूर्व जन्म का किया हुआ सुक्रत है। हमें ही नहीं हमारे साथ अन्य बारह करोड़ जनों को भी सतगुरु मिले है और उन्हें भी उपदेश देकर परचाया है। इस समय चारों ओर अनहद नाद रूपी बाजे बज रहे है, उत्सव मनाया जा रहा है, सर्वोच्च आचार-विचार क्रिया का पालन किया जा रहा है। गुरुजी स्वयं उन्हें ज्ञान सुना रहे है तथा सुनाया भी है। संसार की मोह माया से मुक्त होकर परम धाम को प्राप्त कर रहे है क्योंकि उन्होनें गुरु का कहना माना है। गुरुजी का तो यही कथन है कि अजर काम क्रोधादि की जरणा करो तथा जीवत ही मरे हुए के सदृश हो जाओ। अर्थात् अहंकार को छोड़ दो तुम्हें रतन काया की प्राप्ति हो सकेगी जिसे लेकर परम धाम तक पहुंचा जा सकता है।1।

हे मोमणों! सतगुरु तो शिक्षा देते हुए कहते है कि सम्भल जाओ, सचेत होकर जग जाओ, गफलत में समय मत खोवो। इस समय यदि झूठ कपट करते हो तो यह जीव के लिये भारी पड़ जायेगा। तथा इस पवित्र पन्थ में रहकर किसी के साथ धोखाधड़ी न करो। आपना पेट पालने के लिये ठगाई करते हो किन्तु सत्य धर्म को नहीं देख रहे हो। हृदय के अन्दर झूठ कपट की वासनाएं उत्पन्न कर रहे हो तो बाहर शरीर वस्त्र धोकर उज्ज्वल दिखने से क्या होगा। कपट करके स्वयं शरीर का तथा परिवार का पालन-पोषण करते हो और धन संचय करते हो, अन्त में तो इकट्ठा किया हुआ धरती में ही

मिल जायेगा। इन किये हुए कर्मों का फल रूप दुख को जीव ही सहन करेगा। ऐसी शिक्षा देते हुए सतगुरु कहते है।2।

हे मोमणों! आप लोग अपने को साधु भी कहते हो और कर्म भी अधूरे ही करते हो। साधु वाले कर्म नहीं करते हो तो अपने को साधु ही क्यों कहते हो। साधु तो हरिश्चन्द्र कहलाते थे जिन्होनें पूर्ण कार्य किया। स्वयं का तो उद्धार किया ही साथ में अन्य अपने प्रियजन सात करोड़ को लेकर पार पहुंचा और अन्य युगों में भी ऐसा ही होता आया है। प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, पांचू पाण्डव ये सभी शूरवीर थे और देवताओं से जाकर मिले थे। उन्हीं लोगों का कर्म देखो और अपना मार्ग खोजो यही साधना है। किसी कपटी के फंदे में फंसकर वैसा आचरण कभी न करें। ये कपटी जन झूठ बोलते है उनकी क्रियाएं अशुद्ध होती है ऐसी ओछी क्रिया करके अपना पेट भरते है ऐसा काची काया के लिये न जानें क्यों करते है।3।

हे मोमण! जो माया के वशीभूत हो जाता है वह तो मेरा-तेरा में ही फंस जाता है, माया तो माया ही है न कोई मेरी है और न कोई तेरी है। वहां कलह कंगाली आ जाती है। लक्ष्मी का वासा नहीं रहता। माया और लक्ष्मी साथ में नहीं रहती। जिस पिण्ड के लिये यह सभी कुछ किया जाता है वह तो साथ में नहीं जायेगा। क्योंकि कच्चे शरीर को साथ में ले जाने की अनुमति नहीं है। इसलिये हे प्राणी! सुक्रत पुण्य कर्मों का ही संचय करें वे ही साथ जायेंगे और वैतरणी से पार उतार देंगे। यहां पर मानव के कर्त्तव्य कर्म का या पाप कर्म को देखने वाले तथा आगे साक्षी देने वाले सूर्य, चन्द्रमा, पवन, पानी आदि सर्वत्र मौजूद है। यहां संसार में आकर मानव शरीर से ही चिपक जाता है अपनी ही की हुई प्रतिज्ञा को ही भुला देता है। इस कलयुग में आकर अपने वचनों को किसने निभाया कवि स्वयं ही उतर देते हुए कहता है कि जिसने भी गुरु वचनों को श्रवण करके मेर माया छोड़ दी और पुण्य कारक कर्म किया है उसी ने ही अपने वचनों को निभाया है।4।

हे मोमणों! सतगुरु का स्मरण करो और अनन्य भाव से भगवान की भक्ति एवं ध्यान करो तथा जाम्भोजी महाराज के द्वारा बताया हुआ श्रेष्ठ धर्म का पालन करो। उसी का ही कथन करो। गुरु के वचनों में श्रद्धा करके अवश्य ही स्वीकार करो। उन्हें सत्य, हितकारी वेद वाक्य समझो। रे जीव! यह सत्य जानकर मन की भ्रान्तियों को मिटा दो। जब तक पंथ के विषय में

भ्रान्तियां रहेगी तब तक देव से मिलन नहीं हो सकेगा। लोभी कुलालची आदि संसारिक जीवों को छोड़कर अपने मार्ग की खोज करो तथा जीवन की विधि ा अजर जरणां करके खोजो। संसार में रहकर प्रत्येक के साथ नम्रता का व्यवहार करो। ऊदोजी कहते है कि अवश्य ही जन्म-मरण के चक्कर के बन्धन से छूट जाओगे, यदि सतगुरु की सेवा करके उनसे कुछ हासिल करके जीवन में धारण करोगे।5।

साखी छन्दां की-31

नारायण नांव अनन्तो, अनन्त अवतार ज्यूं ध्याइये।
कीर्ति अनन्त अपार, प्रेम प्रीत सूं गाइये।
प्रेम प्रीत सूं गाइये नै, राख उर प्रतीत।
लोक लाज सब पर हरो नै, छाड़े कुल की रीत।
तन मन दीजै प्रीत कीजै, सिंवरिये भगवंत।
महिमा श्री महाराज की, यो नारायण नाम अनन्त।
अनंत अवतार जूं ध्याइये।1।
साधो धर धर रूप अनेक, संता रा कारज सारियां।
मच्छ कच्छ वाराह व्यास, नरसिंह बावन धारिया।
नरसिंह बावन धरे अनन्त, हंस हयग्रीव जान।
बदरीपति दत कपिलमुनि, सनकादिक पृथु मान।
राम ऋषभ परशु कन्हड़, बुद्ध निकलंकी देख।
जग्य ध्रुव अर हरि प्रगटे, धर धर रूप अनेक।
संता रा कारज सारिया।2।
केशो किसन करतार, गोविन्द गिरधर गाइये।
कमल नैण कृपाल, चरण चतुर्भुज ध्याइये।
चरण चतुर्भुज ध्याइये नै, मोहन मन में धार।
गोपाल दामोदर मुकुन्द माधव, सिंवरो सिरजणहार।
नाम नरहरि अन्तर्यामि, हिरदै विसन रहाय।
अलख अयोनि ब्रह्म शंभू, केशो किसन करतार।
गोविन्द गिरधर गाइये।3।
अनंत कला सूं आप, पूर्ण ब्रह्म पधारियां।
अंस कला अवतार, बहुविध कारज सारियां।

बहुविध कारज सारिया नै, नेम नित अवतार।
आप जम्भगुरु आविया, पहलाद वाचा धार।
कह ऊदो सुणों साधो, जपो हरि को जाप।
भक्त वत्सल भगवंत खेले, अनंत कला सूं आप।
पूर्ण ब्रह्म पधारिया।4।

भावार्थ–नार–आयन अर्थात् जल में शयन करने वाले भगवान विष्णु के अनन्त नाम तथा अवतार हुए है। इसी भावना से ही विष्णु का ध्यान स्मरण करें। भगवान विष्णु की कीर्ति यश सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ है जिसका कोई पार नहीं पा सकता। ऐसे देवता का यश गुणगान प्रेम पूर्वक करना चाहिये। क्योंकि जैसा हम स्मरण मनन करेंगे वैसा ही हमारा स्वभाव हो जायेगा। प्रेम पूर्वक परमात्मा के गुणों का गान करें किन्तु हृदय की शुद्ध भावना से ही करें। विष्णु के कीर्तन भजन गाने में किसी प्रकार की लज्जा या कुल परिवार संसार के लोगों की परवाह न करें। परंपरा से चली आ रही कुरीतियों को भी छोड़ना होगा। भगवान नारायण की उपासना तन–मन–धन अर्पण करते हुए प्रेम पूर्वक करें। श्री देव की महिमा गुण अनन्त है जिनका पार नहीं पाया जा सकता।1।

हे साधों! भगवान विष्णु ने ही समय–समय पर अनेक रूप धारण किया है और संत सज्जन महापुरूषों का कार्य किया है। उन अवतारों में सर्वप्रथम–मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, बावन, हंस, हयग्रीव, नर नारायण, दतात्रेय, कपिलमुनि, सनकादिक,पृथु, व्यास, राम ऋषभ, परशुराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, यज्ञ, ध्रुव और हरि अवतार समय–समय पर प्रगट हुए है। संत सज्जनों का कार्य बनाया है।

वही नारायण ही द्वापर युग में केशव, कृष्ण, कर्ता गोविन्द, गिरधर नाम से गाये जाते थे। कमल नयन, कृपालु, दयालु, चतुर्भुज रूप से उसी प्रभु का ही ध्यान करें। चतुर्भुज धारी विष्णु के महान रूप का ध्यान अवश्य ही आनन्द दाता होगा। वही कृष्ण ही गोपाल, मुकुन्द, माधव, सर्व सृष्टि कर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए ऐसे देव को सदा ही स्मरण करें। अनेक नाम रूप गुण से सम्पन्न नर मानव का स्वामी सभी के हृदय की बात को जानने वाले विष्णु को हृदय में धारण करें। उन्हीं का ध्यान करें। वही विष्णु ही अलख, अयोनी, ब्रह्म, स्वयंभू है सर्व व्यापक है, उन्हें ही द्वापर युग में कृष्ण नाम से कहा गया

है ऐसे दिव्य रूप गुणवान का सदा ही स्मरण करें, ध्यान करें।3।

कलयुग में मरूभूमि पींपासर में भी वही कृष्ण गोविन्द नारायण पधारे है तथा अपनी सम्पूर्ण कलाओं को लेकर पूर्ण ब्रह्म आये है। लेकिन वहां पर सम्पूर्ण कलाओं का उपयोग नहीं करेंगे। यहां तो अपनी कलाओं के एक अंश से ही कार्य कर देंगे। क्योंकि यहां पर नियम धर्म की पाल बांधी जा रही है। जो सदा ही स्थिर रहने वाली धर्म की कड़ी होगी। जिस पर चलकर मानव युगों-युगों तक अपने जीवन का कल्याण कर सकेंगे। इस समय तो स्वयं विष्णु ही सतगुरु जाम्भोजी के रूप में आ गये है क्योंकि प्रहलाद के वचनों को धारण किया है ऊदोजी कहते है कि हे साधों! आप तो अन्य देवी-देवताओं, भूत प्रेतों के जप को छोड़कर विष्णु का ही जप करो। यहां तो भक्तों के वत्सल स्नेह मूर्ति भगवान स्वयं आ गये है। मरूभूमि को धन्य करने के लिये खेल खेल रहे है। अपनी लीला का विस्तार कर रहे है। वे तो अनन्त कलाओं से सम्पन्न विष्णु परमात्मा है।4।

साखी कणां की राग सुहब-32

जुमलै जुलिकै जाइये, जो दिल जुमलै होय।1।
ज्ञान सरोवर न्हाइये, दिल का कषमल खोय।2।
जुमलै सोहै साल्हिया, काबरियां जुमलै कांय।3।
काबरियां जुमलै आवियां, जो आया तो कांय।4।
जो आया तो कांय ही कहै, लीया बाद विराम।5।
काबरियां जुमलै ना आवही, रैस्यां जागरि जांहवै।6।
फीडा घातै गाफल पायचा, ठए ठए पांव ठहाय।7।
खांघी बांधै गाफल पागड़ी, निरखत चालै छांय।8।
घात कुसटि मां गेंडियो, वै बड़ी नखरि कराय।9।
मोमिण देखे आवंता, श्वान ज्यूं घुरराय।10।
जे कोई बोले सांम हो, दाझी रहै मन मांहि।11।
दीन्ही सीख न मांन ही, कावल ही मांना हि।12।
कांयरे गाफिल पांतरियो, तूं सबद गुरु का मान।13।
गुरु का सबद न मांन ही, अंतरा दोरै जाय।14।
गुरु का कहियो जे करै, सुपहा सुरग लहाय।15।
निंव चालो खिंव बोलणो, एकण मरण मराय।16।

देवजी थारै नांव नै, जिंद करूं कुरवांण।17।
पहलै हिंदू सिरजियां, पीछे मुसलमान।18।
मुसलमानां हिंदवां, रोजी देह रहमाण।19।
हिन्दू बाचै पोथियां, मुसलमान कुराण।20।
नारिसिंघ नर देवता, ढ़ोयो सुरग विवांण।21।
जिहिं चढ़ि मोमिण लांघियां, भुंयजल सो असमांणि।22।
पटो अमर लिखावियो, देव तणै दीवाणि।23।
मोमिण सुरगे नावड़या, करि पूरो परवाणि।24।
मरौ न जरो न तेज रो, चुकौ आवाजांणि।25।
सुख अनेरा भोगवे, दुखी न सुणियो कोय।26।
ऊदौ बोलै बीणती, सुरां मिलावौ मोहि।27।

भावार्थ-जुमलै जागरण या सत्संग में मिलकर अवश्य ही जाना चाहिये। सत्संग के प्रति प्रेम श्रद्धा हो तभी प्रेम पूर्वक जायें और ध्यान लगाकर बैठें और श्रवण करो तभी जाने का फल है।1। वहां पर जाकर ज्ञान रूपी तालाब में स्नान कीजिये और मन वचन एवं शरीर से पापों को धो डालिये।2। जागरण में आये हुए साल्हिया यानि सुलझे हुए सज्जन व्यक्ति ही शोभायमान होते है। काबरियां अर्थात जो अधूरे जिन्होनें कुछ बातें तो याद कर ली है किन्तु अब तक उन्हें अधूरा ज्ञान है। नास्तिक विचारधारा के लोग आकर भी तो क्या करेंगे।3। ऐसे काबरियां ज्ञान के अग्राही अहंकारी लोग भी आ जायेंगे तो भी सत्संग में विघ्न ही डालेंगे, व्यर्थ का कुतर्क करेंगे, तथा कौवे की भांति कांय-कांय ही करेंगे।4। वैसे ऐसे व्यक्ति सत्संग में आते ही नहीं है फिर भी आ भी जायेंगे तो व्यर्थ का वाद-विवाद ही करेंगे।5। काबरियां लोग जुमलै में नहीं निभ सकते, उन्हें जुमलै से क्या लेना-देना है, वे तो जहां पर नाच गान अश्लील हरकतें होगी वहीं पर ही जायेंगे।6। उस समय की प्रचलित रहन-सहन की विकृति पर कवि कटाक्ष करते हुए कहते है कि जूतों को फीडा-मरोड़ करके पहनते है फिर बड़े ही अहंकार के साथ गर्व पूर्वक एक-एक पैर आगे उठाकर रखते है। ऐसा जताते है कि हमारे समान सुन्दर चलने वाला ओर कोई नहीं है।7। पगड़ी को टेढ़ी करके बांधते है यानि एक तरफ झुकाकर बांधना अपनी शान समझते है और फिर अपनी ही छाया स्वयं देखते हुए चलते है।8। कुछट में चुंटिया दबाकर यानि बेंत बगल में

दबाकर वे लोग बड़े ही नखरे के साथ चलते है और बड़ी ही क्रोध भरी नजरों से दूसरों को देखते है।9। यदि उनके सामने कोई सज्जन भक्त आता हुआ दिखाई दे जाता है तो कुते की भांति घुरराता है। काटने को दौड़ पड़ता है।10। यदि कोई उन्हें अच्छी शिक्षा देता है, शांति की वार्ता कहता है तो मन ही मन जल उठता है। आग लग जाती है।11। सतगुरु की दी हुई शिक्षा तो मानेगा नहीं उल्टा ही चलेगा और विपरीत कार्य ही करेगा।12। रे गाफिल! तूं क्यों भूल गया, गुरु का शब्द क्यों नहीं मानता।13। यदि गुरु का शब्द नहीं मानेगा तो अन्त में दौरे नरक में गिरेगा।14। यदि गुरु का कहना मानेगा तो सुमार्ग में चलकर अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति करेगा।15। इसलिये हे मानव! नम्रता पूर्वक व्यवहार करते हुए अपना जीवन यापन करो।16। समर्पण भाव से सभी कुछ परमात्मा के ही अर्पित करके अपने जिद को, मन के हठ की कुर्बानी दे दीजिये।17। परमात्मा के लिये तो सभी समान है। सृष्टि आदि में प्रथम हिन्दू की ही सृजना हुई थी, तथा बाद में मुसलमान की रचना भी उसी परमात्मा ने की थी।18। चाहे मुसलमान हो या हिन्दू सभी का पालन पोषण करने वाले तो वही विष्णु ही है।19। हिन्दू वेद शास्त्र आदि पोथी पढ़ते है और मुसलमान कुराण पढ़ते है।20। वही विष्णु ही कभी नृसिंह रूप धारण करते है वे नरों के देवता है। उन्होनें ही इस बार ज्ञान ध्यान नियम धर्म रूपी बेड़ा भेजा है ये स्वयं लेकर आये है।21। जो भी इस बेड़े पर सवार हो जायेगा वह तो संसार सागर से पार उतर जायेगा और वैकुण्ठ लोक का निवासी होगा।22। वहां पर तो अमर पट्टा लिखा जायेगा। वहां से कभी भी वापिस आना नहीं होगा, सदा के लिये वहीं पर निवास हो जायेगा।23। जो भक्त लोग थे वे तो स्वर्ग में पहुंच चुके है क्योंकि उन्होनें यहां से धर्म-कर्म को प्रमाण रूप से साथ लिया था।24। वहां पर न तो मृत्यु ही है, न ही बुढ़ापा है और न ही व्याधि आदि कष्ट भी है। जन्म मृत्यु के चक्कर से सदा के लिये छूट जायेगा।25। वहां वैकुण्ठ धाम में अनुपम सुख भोग मिलेगा। वहां पर किसी को दुखी न तो देखा गया और न ही सुना गया है।26। ऊदोजी विनती करते हुए कहते है कि हे प्रभु! मुझे भी आप कृपा करके देवताओं से मिला दीजिये। जहां पर जाने से सभी कुछ सुलभ हो जायेगा।27।

साखी कणां की-33

दीने जागो दीने जागो, ओ गुरु परगट आयो।1।

संभराथलि सतगुरु प्रकाश्यो,चोचक आण फिरायो।2।
गाफल भूल रहया भूलावे, करणी साध चेतायो।3।
गाफल थूल अभेद मूरखा, क्यूं परचे परचायो।4।
गुरु न चीन्हो पंथ न पायो, अहलो जलम गुमायो।5।
करणी हीन कुचील कुबधी, मिनखां रतन गुमायो।6।
रहे निरंतर नर निरहारी, भल तीर्थ निज बाणी।7।
खुद्यिया तिसना निन्द्रा नाही, न पीवै गोरस अन्न पाणी।8।
सुरगा पुर का माघ बतावै, इसड़ा लहो रे बिनाणी।9।
सतगुरु निंदे देवल बिंदे, धोके काठ पखाणी।10।
तीरथ न्हावै पिंड छलावै, जोय जोय नीर निवाणी।11।
सुरगां पुर का माघ न जाणै, भूला भुंवै इवाणी।12।
अश्वपति गजपति जातां दीठा, कोटां रा सिरदारा।13।
ते राजिन्दर जातां दीठा, चिण चिण बंक दवारा।14।
जांरी आण दुहाई फिरती, छतर सिर छतर धारा।15।
धंधो करंता जुवरै मूवां, पड़िया रहया पसारा।16।
सुर तेतीसूं कर मिलावो, म्हारे उमाहो गुरु अपारा।17।
वीनतड़ी ऊदो बोले, सेवक विसन तुम्हारा।18।

भावार्थ–हे सज्जनों! अब जग जाओ! सूर्योदय हो चुका है, अब दिन हो गया है रात्रि का अन्धकार अब नहीं रहा क्योंकि स्वयं विष्णु ही गुरु के रूप में प्रगट हो चुके है।1। सम्भराथल पर सतगुरु ने ज्ञान का प्रकाश किया है और यही ज्ञान चारों तरफ फैल चुका है, इस जम्बूद्वीप में मर्यादा बांधी जा रही है किन्तु आप लोग अब तक सो रहे है। गाफिल मूर्ख लोग तो सद्मार्ग को भूल चुके है और दूसरों को भी भुलावे में डालकर धर्म से विमुख कर रहे है। सतगुरु ने आकर कर्त्तव्य कर्म का पाठ पढ़ाकर सचेत किया है। साधु जन तो सावधान हो चुके है।3। शैतान की तो कुबध्या ही खेती है वे लोग तो स्थूलता, मूर्खता, भेदभावपना ही अपना धर्म कर्म मान बैठे है उन्हें कैसौ मार्ग में लाया जा सकता है। ये लोग अपना स्वभाव छोड़ने के लिये तैयार नहीं है।4। इन लोगों ने तो न ही गुरु को ही पहचाना और न ही पंथ को ही अपनाया व्यर्थ में जन्म खो दिया।5। कर्त्तव्य हीन कुचील कुबध करने वाले ऐसे लोग तो इस संसार में आकर हानि को ही प्राप्त हुए है। क्योंकि मानव जन्म रूपी रत्न को

इन्होनें खो दिया।6। यहां सम्भराथल पर सतगुरु आये है निरंतर यहीं पर ही निवास करते है किन्तु निराहारी है। सांसारिक भोग्य वस्तुओं की आवश्यकता उन्हें नहीं है। उनके यहां पर निवास करने से अच्छा तीर्थ बन चुका है। उनकी वाणी भी अपनी निजी अनुभूति है इसलिये निराली ही है।7। भूख, प्यास, निन्द्रा आदि उन्हें नहीं सताती इसलिये भोजन आदि ग्रहण नहीं करते। वे तो सदा अमृत रस का ही पान करते है।8। स्वर्ग तथा वैकुण्ठ जाने का रास्ता बता रहे है। हे प्राणी! ऐसे सतगुरु की शरण ग्रहण करो। जो जन्म मृत्यु के चक्कर से छुड़ा दे।9। कुछ लोग सतगुरु के सिद्धान्त को नहीं अपनाते किन्तु सतगुरु की निंदा करते है और पत्थर आदि की बनी हुई मूर्तियों के आगे जाकर सिर पटकते है। चेतनमय ज्योति, जागती ज्योति को छोड़कर पत्थर पूजा कहां तक उचित है।10। तथा अन्य कुछ लोग तीर्थों में जाकर या अपने घरों में ही बैठे हुए धोक लगाते है पूजा करते है। गयादि में जाकर पिण्ड भराते है। मृतक को अन्न जल देते है। ये लोग तो जल की भांति निरंतर नीचे ही गिरते जा रहे है।11। स्वर्ग पूरी का मार्ग तो जानते ही नहीं परन्तु इस लोक में ही भूले हुए भटक रहे है। ऐसे लोगों का जीवन व्यर्थ है। खाली ही रह गये कुछ भी प्राप्त नहीं कर सके।12। इस संसार में अब तक कौन स्थिर रहा है, अनेकों हाथी घोड़ों के मालिक भी अपनी संपति को छोड़कर जाते हुए देखे गये है तथा बड़े-बड़े कोट किलों के मालिक भी चले गये।13। वे राजेन्द्र भी जाते देखे है जिन्होनें अपने रहने के लिये बड़ी-बड़ी हवेलियां, किले बनाये थे। सुरक्षा का प्रबन्ध युक्ति से किया था। परन्तु उनकी सुरक्षा नहीं हो सकी।14। जिन राजाओं का संसार में आदेश अन्य राजा लोग माना करते थे उनके भय से लोग डर जाया करते थे, वे सम्राट थे, जिनके सिर पर दिव्य छत्र मुकुट रखा जाता था वे भी चले गये।15। अनेकों ध न्धा करके धन जोड़ा जाता था किन्तु काल ने उनको नहीं छोड़ा। उनका किया हुआ पसारा यहीं रह गया और साथ लेकर कुछ भी नहीं गये।16। हे देव! हमें तो तेतीस करोड़ देवताओं से मिला दो। हमें तो उनसे मिलने की बड़ी उम्मीद एवं उमंग है। ऊदोजी विनती करते हुए कहते है हे विष्णु! मैं तो आपका ही सेवक हूं। मुझे अन्य किसी से कोई आशा नहीं है।18।

साखी कणां की-34

हम परदेसियां हो जी, ओ देसड़लो बिडाणौं।1।
साथी म्हारा पार चल्या, हमें रहयो पछताणौ।2।

किणरा माता पिता बहण र भाई, किणरा पख परवारा।3।
किणरी मंडप मेड़िया, किणरा ए घरबारा।
माया जग की मोहवणी, भूला जड़ संसारा।5।
सांई की मंडप मेड़ियां, अलख तणां घर बारा।6।
म्हे तो छोड़ रि चालियां, एही देह घरबारा।7।
म्हे तो बहुड़ी न आवस्यां, एह खोटे संसारा।8।
जग मां मद फली घणी, ना जंपै करतारा।9।
अंति का कलि पछतावसी, करता गरब गिंवारा।10।
आगे आगे जीवड़ो चालै, पाछे जमदारा।11।
आगे तिलकणी पड़ियां, सांई का पंथ करारा।12।
सांई लेखो मांगसी, जीवड़ो ओ डराणो।13।
लेखो देणो सहज छै, जे करणी कमाणों।14।
आपै धर्म राज होयसी, आपै ही सुरराणो।15।
आपै ही आप वांचसी, शास्त्र वेद पुराणो।16।
आडो भूंय जल भारियां, करे पार को पयाणो।17।
तेतीसां सूं मेल होयसी, चूकै आवाजाणो।18।
ऊदो बोले विणती, सेवक सत्य जाम्भाणो।19।

भावार्थ-हम सभी तो यहां पर परदेश में ही निवास कर रहे है। क्योंकि यह हमारा सच्चा घर नहीं है। जिससे एक दिन अवश्य ही जाना होगा।1। हमारे दूसरे साथी तो इस देश को छोड़कर पार चले गये है किन्तु हमें पीछे छोड़ गये है। अब हमें तो पछतावा हो रहा है कि उनके साथ ही हम भी क्यों नहीं जा सके। हमारे कर्म ही कुछ ऐसे है इसलिये ही पछतावा हो रहा है।2। इस लोक में हम सम्बन्ध तो जोड़ लेते है परन्तु यह सच्चा नहीं है कौन किसका माता-पिता, बहन-भाई एवं परिवार है अर्थात् कोई किसी का भी नहीं है।3। किसकी तो मंडप, मेड़ी, मठ, मन्दिर, किला है और किसका यह घरबार जमीन जायदाद है? अर्थात् कोई किसी का नहीं है।4। यह जगत की माया मोहनी है जिसने सम्पूर्ण संसार को मोहित किया है। लोग जड़ वस्तुएं एवं संसार में जो कुछ दृष्टिगोचर होता है महल मन्दिर आदि ये तो सभी सांई परमात्मा के ही है। उसी अलख निरंजन का ही सम्पूर्ण संसार घर है। परायी वस्तु अपनी मानना ही भूल है।6। हमनें तो मोह-माया के जाल को काट

डाला है जिससे घरबार की आशक्ति क्षीण हो गई है, इन्हें छोड़कर जा रहे है।7। हम तो लौटकर इस खोटे यानि झूठे संसार में नहीं आयेंगे। क्योंकि इसमें तत्व नाम की कोई वस्तु नहीं है।8। इस संसार में रहने वाले लोग अत्यधिक आसक्त हो गये है, यह मेरा है, यह पराया है इस प्रकार के मद में मस्त हो गये है। ये लोग जगत कर्त्ता भगवान विष्णु का जप नहीं करते है।9। अहंकारी व्यक्ति इस लोक में जीवन जीते हुए दुखी रहता है उसी प्रकार अन्त समय में भी पछतायेगा क्योंकि उसने गर्व के सिवाय ओर तो कुछ भी नहीं किया।10। आगे-आगे जीव चलेगा और पीछे-पीछे मार मारते हुए यम के दूत चलेंगे तब सम्पूर्ण गर्व गिर जायेगा।11। आगे बढ़ेगा तो मार्ग अति दुर्गम आ जायेगा। रास्ते में फिसलन आ जायेगी। फिर चलना भी कठिन हो जायेगा। सांई का मार्ग बड़ा ही कठोर है। वहां किसी प्रकार की छूट नहीं है।12। आगे जब वहां धर्मराय के पहुंचेगा तो सम्पूर्ण जीवन के कर्मों का हिसाब-किताब पूछा जायेगा तब वह जीव कुछ भी जवाब नहीं दे सकेगा, भयभीत हो जायेगा।13। यदि कर्त्तव्य कर्म करेगा तो वहां पर हिसाब देना सहज ही होगा। क्योंकि धर्म का बल साथ होगा तो भयभीत नहीं होगा।14। मनुष्य धर्म-कर्म करने का अधिकारी स्वयं ही है, वह चाहे तो देवता भी बन सकता है और चाहे तो धर्मराज भी बन सकता है।15। स्वयं ही शास्त्र वेद पुराण पढ़ सकता है ज्ञान ग्रहण कर सकता है। गुरु तो निमित मात्र ही होता है।16। अपनी स्वकीय शक्ति के आधार पर कोई मनमुखी होकर परम गति की प्राप्ति का प्रयत्न करता है तो वह परिश्रम व्यर्थ ही है क्योंकि आगे बहुत ज्यादा जल भरा हुआ है उसमें डूबने का खतरा भारी है इसलिये गुरु मुखी होकर चलना होगा।17। तेतीस करोड़ देवताओं से जब मिलन होगा तभी मृत्यु का चक्कर छूट सकेगा।18। ऊदोजी विनती करते हुए कहते है कि हे गुरुदेव! मैं आपका ही जाम्भाणी सेवक हूं यह बात मैं सच्ची भावना से कह रहा हूं।19।

साखी कणां की-35

अहरण नांहि हथोड़ा नांहि, पाणि सूं खालक राजा पिण्ड घड़े रे।1।
नाके सांस लेवो मुख बोलो, श्रवणे सांभलो ज्यूं सुरति पड़े रे।2।
नेण चलण रतनागर दीनां, कौण स दाता देव बड़ो रे।3।
विस्नु-विस्नु तूं जप रे जीवड़ा, अबके आयो तेरो जनम रूड़े रे।4।

ले माला हरि जाप न कीयो, जपंता री थारी कांई जीभ अड़े रे।5।
पापां रे पसायो दौरे जैला, उतकण अफरी तेरे मार पड़े रे।6।
गाडरियो हुवैलो कीच में पड़ेलो, झाट कणांरी थारे झूर पड़े रे।7।
करहलियो हुवैलो फिरैलो कतारे, भार उठावै लड़े छड़े रे।8।
दसां मणां री थारे गूण पड़ैली, ऊपर ओठी कूद चड़े रे।9।
हाली के घर धोरी हुवैलो, आर सहेलो तिखी गड़े रे।10।
ओडां के घर पोहणियो हुवेलो, ले ले बोरी पाल चढ़े रे।11।
सूवरियो हुवैलो सहरे फिरैलो, ठरड़क ठरड़क तेरी नास करे रे।12।
कूकरियो हुवैलो गलियां में फिरैलो, आवै बटाऊ झबक लड़े रे।13।
कंवलियो हुवैलो गिगन भूंवैलो, कुरंग ऊपर तेरी चांच पड़े रे।14।
जब लग जीवड़ा तै सुकरत न कीयो, ज्यूं-ज्यूं नान्ही जूण पड़े रे।15।
ऊदो भणे जंपो निज नामी, देव नहीं कोई जंभ धड़े रे।16।

भावार्थ-सम्पूर्ण जगत चराचर सृष्टि के स्वामी ने बिना अहरण और हथोड़े के ही ये शरीर केवल जल की बूंद को लेकर बनाये है रज-वीर्य रूपी जल ही तो शरीर का उत्पादन कारण है।1। उस परमात्मा ने हमें श्वांस लेने के लिये नाक, बोलने के लिये तथा खाने के लिये मुंह, सुनने के लिये कान और स्मरण करने के लिये सुरति दी है। स्मरण शक्ति द्वारा तो हम बीती हुई बातों को याद रखते है।2। देखने के लिये नैन और कार्य करने के लिये हाथ दिये है। कवि कहता है कि ऐसा महान दाता कौन होगा।3। स्वयं कहते है कि वह दाता तो विष्णु ही है। इसलिये हे प्राणी! तूं उस विष्णु का नाम जप बार-बार कर। यही उस दाता के लिये उऋण होने का उपाय है। यदि ऐसा नहीं किया तो आगे आने वाला जन्म मानव का न होकर छोटी मोटी जीव योनियों में ही जायेगा। तूं सभी कुछ खो देगा।4। माला हाथ में लेकर जब विष्णु का जप करने बैठा तब जप क्यों नहीं किया। क्या तेरी जप करने से जिभ्या अटक रही थी।5। आल-बाल झूठ बोलने में यदि जिभ्या नहीं अटकती तो फिर जप करने से क्यों अटक गयी।5। हे प्राणी! तूनें पाप कर्म का ही फैलाव किया तो आगे यह जीव बहुत ही दु:खों को सहन करेगा। वहां पर पहुंचेगा तो भयंकर मार पड़ेगी। जीवन बड़ा ही कष्टमय हो जायेगा।6। आगे बता रहे है-विष्णु परमात्मा का यदि जप नहीं किया तो आगे आने वाला जीवन अर्थात् मृत्यु के पश्चात् कहां-कहां, किस-किस योनि में भटकना

पड़ेगा। यदि विष्णु का जप नहीं किया तो भेड़ योनि में जाना पड़ेगा और उसे धोने के लिये गंदे कीचड़ में डालेंगे और बाहर निकालकर सूखने पर ऊन साफ करने के लिये बेंत से मार मारेंगे। वे तुझे सहन करनी पड़ेगी।7। यदि विष्णु का जप नहीं किया तो ऊंट होना पड़ेगा तथा दूर देश से अन्न आदि पीठ पर लादकर लायेगा। सदा ही इस कार्य में ही चलेगा भार उठायेगा और जब लड़ेगा तो मालिक से मार खायेगा।8। दस मण का भार पीठ पर डाला जायेगा, और स्वयं मालिक भी उपर कूदकर चढ़ जायेगा तुझे इतना बोझ उठाकर सैकड़ों मील जाना पड़ेगा।9। किसान के घर पर बैल हो जायेगा तो हल तथा गाड़ी चलाना होगा यदि नहीं चलेगा तो तीखी आर से मालिक मारेगा, शरीर में चुभाये जायेंगे कष्ट सहन करने होंगे।10। ओड जाति के घर पर गधा बनकर चला गया तो वहां पर पीठ पर मिट्टी की लदी हुई बोरी को लेकर सीधा पाल उपर चढ़ना होगा।11। सूवर हो जायेगा तो शहरों में घूमेगा वही गंदगी ही भोजन होगा और नासिका से ठरड़क-ठरड़क करता हुआ दु:खी होगा।12। गलियों में घूमने वाला कुत्ता यदि हो गया तो एक गली से दूसरी गली में भूखे पेट ही भटकेगा। यदि कोई बटाऊ-मेहमान आ जायेगा तो उसे भोंकेगा, लड़ पड़ेगा।13। गीध हो जायेगा तो भोजन की तलाश में आकाश में उड़ना पड़ेगा और जहां भी मरा हुआ पशु दिखाई देगा वहीं उतरकर आ जायेगा। सदा ही अस्पृश्य ही भोजन होगा।14। हे जीव! जब तक तूं सुक्रत नहीं करेगा तो तुझे छोटी-छोटी जीव योनियों में जाना ही पड़ेगा। ऊदोजी कहते है कि अपने ही स्वरूप श्री विष्णु का जप करो क्योंकि विष्णु ही श्री जाम्भोजी है और जाम्भोजी जैसा ओर कोई देव नहीं है। धड़े का अर्थ तुल्य यानि बराबर और कोई नहीं है।16।

साखी राग राम गिरी-36

जागो मोमणों नां सोवो, न करो नींद पियार।
जैसा सुपना रैण का, ऐसा ओ संसार।1।
कहीं सुभागी आम्बो रोपियो, भगवत के दरबार।
पींघ पड़ेला आम्बो सोहणो, हींडे कैई सुचियार।2।
एकणि डाली हूं चढ़ी, दूजे मोमण बीर।
जिण तो डाले हूं चढ़ी, तिणी घणेरी भीड़।3।
हाथांरो मूंदड़ों गिर पड़यो, कांना री नव रंग बीण।

काज पराया ना सरै, जांह दूखे तांह पीड़।4।
एकण डांडे जुग गयो, राजा रंक फकीर।
एह जुग अपणों कोई नहीं, संग न चले शरीर।5।
जो उपज्या सोई विणसणो, करणी जांणो तीर।
एक सुखासणि चड़ि चल्या, एक बंध्यो जाय जंजीर।6।
दुर्लभ देशां गरजीयो, बूठो घटि-घटि मांहि।
बाहर थाते उबरिया, भीगा मन्दिर ये रे मांहि।7।
छान पुराणी छज नूंवो, चुय-चुय पड़ै मजीठ।
लाखों इण पर चेतिया, जाय बसिया बैकुण्ठ।8।
नांव देरावो देवजी, जांसै उतरां पार।
उदोजी बोले बीणती, म्हारी आवागवण निवार।9।

भावार्थ-हे मोमण भक्तों! जागो! नींद से प्रेम मत करो। जन्म जन्मान्तरों से अज्ञान रूपी निन्द्रा में सोते ही आ रहे हो। इस समय जागृत होकर कुछ करने का समय आ चुका है। जिस प्रकार से रात्रि में सोने पर निंद्रावस्था में स्वप्न आते है। जब तक निंद्रा रहती है तब तक स्वप्न भी सत्य रहता है परन्तु जागने पर स्वप्न तिरोहित हो जाता है ठीक उसी प्रकार से ही यह संसार है, जब तक अज्ञानता रहती है तभी तक संसार है और जब अज्ञानता मिट जाती है तो स्वप्नवत संसार भी भान नहीं होता है।1।

कभी किसी सौभाग्यशाली साधक ने भगवान की भक्ति प्रारम्भ की है अर्थात् आम के वृक्ष को रोपा है, अभी लगाया ही है। आम रोपने का लक्ष्य भी फूलना-फलना है उसी प्रकार से साधना का लक्ष्य भी भगवान के दरबार में पहुंचना ही है। आम बड़ा होगा उस पर झूला लगाया जायेगा, उस पर कोई-कोई पवित्रात्मा झूलेंगे भी। उसी प्रकार से भक्ति में दृढ़ता आयेगी तो कोई कोई भक्तजन ह्रदय में उठने वाली आनन्द की लहरों में झूलेगा।2।

एक डाली पर झूलने के लिये मैं अर्थात् बुद्धि चढ़ी हुई है। तथा दूसरी डाली पर मोह और मन चढ़े हुए है। जिस डाली पर सद्बुद्धि चढ़ी हुई है अर्थात् सतकार्य में प्रेरित करती है उस मन की तरफ तो अनेक विघ्न बाध ााऐं आकर खड़ी हो जाती है, इस व्यर्थ के विघ्न बाधाओं की तो भीड़ लगी रहती है बुद्धि को आगे बढ़ने तथा आनन्द के हिलोरे लेने का समय ही नहीं मिल पाता तथा जिस तरफ मोह और मन चढ़े हुए है उस तरफ कोई भीड़ नहीं

है। मोह मन अपना कार्य बड़ी ही सरलता से कर लेते है। जल सदा ही नीचे स्वभाव से ही बहता है उसी प्रकार मन तथा मोह की भी गति है।3।

इस प्रकार से संघर्ष करते-करते वृद्धावस्था आ जाती है। हाथ कार्य करने से रह जाते है यानि मूंदड़ा गिर पड़ता है कान सुनने से रह जाते है अर्थात् नवरंग वीण सुनायी नहीं देती है। साधना में सफलता नहीं मिल पाती। यह संघर्ष सभी के लिये चलता ही रहता है। पराया कार्य कोई नहीं कर सकेगा अपना कार्य तो स्वयं को ही करना पड़ेगा क्योंकि पीड़ा तो वही होगी जहां पर दर्द होगा। दूसरों को क्या किसी के कार्य से लेना-देना है। सभी अपने ही स्वार्थ के लिये ही करते है। इसलिये अपना कार्य दूसरों पर न छोड़ें, स्वयं ही करें।4।

मृत्यु सभी की निश्चित है और मरने का तरीका भी सभी का एक ही है, चाहे वह राजा हो या रंक, इस जगत में अपना कोई नहीं है, साथ में तो यह शरीर भी नहीं जाता है जिसको अपना कहता था।5।

जो पैदा हुआ है वह निश्चित ही मरेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है परन्तु यहां से जाने के पश्चात् आगे मार्ग भिन्न-भिन्न है। जो शुभ कर्त्तव्य कर्म करके जायेगा वह तो निश्चित ही संसार सागर से पार उतर जायेगा। जिसको पार होना है वह तो निश्चित ही संसार सागर से पार उतर जायेगा। जिसको पार होना है वह तो सिंहासन पर बैठकर जायेगा। जिन्हें नरक में जाकर चौरासी लाख जीव योनियों में भटकना है वह जंजीरों में बंधा हुआ जायेगा।6।

आगे तीसरा मार्ग भी बताते है जिस पर चलकर योगी लोग जीवन मुक्त होकर आनन्द का अनुभव करते है। दूर देश में प्रथम गर्जना होती है, जब साधक ध्यान में बैठता है तो सर्व प्रथम दूर देश अर्थात् दसवें द्वार में नाद ध्वनि की गर्जना सुनायी देती है। जब गर्जना होगी तो वर्षा भी होगी, बिजली भी चमकेगी ही उसी प्रकार से जब योगी नाद ध्वनि को श्रवण करता है तो अमृत की वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। यह प्रत्येक मानव के हृदय में होती है परन्तु जिनकी वृति बाह्य है एकाग्र नहीं है वह तो उस अमृत से वंचित रह जाता है परन्तु जिस योगी की वृति अन्तर है वह अमृत से भीग जाता है। अमृत पान करके कृत्य-कृत्य हो जाता है। यह हृदय रूपी मन्दिर ही अमृत प्राप्ति का केन्द्र है उस अमृत की झलक हृदय में ही होती है।7।

यह शरीर रूपी छत तो नया है और आत्मा रूपी छान पुरानी है क्योंकि आत्मा तो अजर अमर अविनाशी है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी

आत्मा नष्ट नहीं होती। किन्तु शरीर रूपी छत नया है जैसे ही पुराना होगा उसे बदल दिया जायेगा। ऐसे इस झोंपड़े रूपी शरीर से ही अमृत वर्षा की बूंदें टपक टपक कर गिर रही है जो सचेत है वे तो प्राप्त कर लेते है तथा अन्य निंद्रा में सोये हुए लोग खाली ही रह जाते है, कवि कहता है कि लाखों व्यक्ति इस बात पर सचेत हुए है, साधना की है और उन्होनें वैकुण्ठ में वास किया है। जन्म-मरण के चक्कर से सदा के लिये निवृत हो गये है।8।

श्रीदेवजी जाम्भेश्वर जी ने जो नाम बताया है, मार्ग बताया है, विष्णु के नाम का जप एवं साधना बतलाई है। उसी मार्ग को पकड़कर पार उतर सकते है। ऊदो जी परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते है कि हे प्रभु! हमें तो आप किसी भी प्रकार से जन्म-मरण के चक्र से बाहर निकाल दीजिये हमें ओर कुछ नहीं चाहिये।9।

साखी कणां की-(रंगीलो) 37

एक मिलंता दोय मिलै, दोय मिलंता तीन।1।
तीन मिलंता च्यार मिलै, पांचै गुरु पहलाद।2।
पांच मिलंता छव मिलै, साते हरिचंद राव।3।
सात मिलंता आठ मिलै, नवै दहुठल राव।4।
नव मिलंता दस मिलै, दस अवतार मिलाप।5।
दस मिलंता ग्यारह मिलै, बारह जम्भराज आप।6।
पांच सात नव बारहां, हुवो ल्हालर साथ।7।
वीर बटाऊ भाइयो, म्हानै पीहर पंथ बताय।8।
डावी डांडी पर हरो, जीवणी सुरगां पुर जाय।9।
भुंयजल अथघ अथाहणो, किण विध उतरां पार।10।
कर सुकरत की नांवड़ी, लंघिये भवजल पार।11।
क्रोड़ तेतीस सुहावणां, उत मोमण मीत सुजाण।12।
पार गिराये वे गया, जित जुंवर न लहसी जांण।13।
अमी कचोला पीवणां, सहजै सहज हिंडाय।14।
ऊदो बोलै वीणती, आवागवण चुकाय।15।

भावार्थ-एक मिलने से दो का मिलान हो जाता है एक यानि एक सतगुरु से प्रथम भेंट हो जाये तो फिर जीव और ईश्वर का मिलान योग हो जाता है। जब ईश्वर और जीव ये दोनों मिल जाते है तो तीसरी श्री

लक्ष्मी-आनन्द की प्राप्ति हो जाती है।1। जब जीव, ईश्वर,और लक्ष्मी तीनों का संगम हो जाता है तो चौथा स्वर्ग सुख अथवा देव गुरु बृहस्पति मिल जाते है। बृहस्पति अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति ही चौथा मिलन है। इन चारों के मिलन के पश्चात् पांचवां मिलन गुरु प्रहलाद से हो जाता है। प्रहलाद यानि भक्ति की प्राप्ति पांचवें पर हो जाती है। प्रहलाद भक्ति का प्रतीक है।2। पांच मिलने के बाद में छठे पर ध्रुव मिल जाता है अर्थात् ज्ञान भक्ति में दृढ़ता-अटलता आ जाती है, ध्रुव अडिग सत्यता का प्रतीक है। जब ज्ञान भक्ति में स्थिरता आ जाती है तो सातवीं अवस्था में हरिश्चन्द्र से मिलन हो जाता है अर्थात् सत्य से साक्षात्कार होना ही हरिश्चन्द्र से मिलना है। हरिश्चन्द्र स्वयं सत्य के प्रतीक है।3। सात मिलने के पश्चात् आठवें श्री कृष्ण मिल जाते है, कृष्ण का अर्थ है कि जो सर्वगुण सम्पन्न लीला धारी हो जाता है, इस प्रकार से सर्वगुण सम्पन्नता ही उल्लास आनन्द देने वाली है आठवें कृष्ण के पश्चात् नवें युधिष्ठिर से मिलान हो जाता है। युधिष्ठिर स्वयं धर्म के प्रतीक है अर्थात् धर्म से साक्षात्कार हो जाता है।4। जब नौ का मिलन हो जाता है तो फिर दस अवतारों का साक्षात्कार हो जाता है।5। दस अवतारों का अभिप्राय: है कि विभिन्न शक्ति तथा कलाओं से सम्पन्न हो जाता है। जब अनेक शक्तियों से मिलन हो जाता है तो आगे ग्यारहवीं शक्ति गोरख नाम से आती है। जो पूर्णतया अवधूत है, पापों को जिन्होनें कंपायमान कर दिया है, सदा ही निश्चल निर्द्वन्द्व रूप से विचरण करते है ऐसी अवधू अवस्था हो जाती है तथा बारहवें में आकर जाम्भोजी से मिलन हो जाता है जो ऊपर की सभी ग्यारह शक्तियों का सार रूप है। सत्य, ज्ञान, भक्ति, ध्रुव, लीलाधारी तथा अवधूत आदि सभी कुछ जाम्भोजी में समाहित हो जाते है। इस प्रकार से प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर आदि के साथ मिलन हो सकेगा।7।

कोई जीवात्मा किसी पथिक से यानि साधक से पूछ रही है कि हे बटाऊ वीर! तूं हमारे सच्चे घर जहां से हम आये है यानि हमारे पीहर का मार्ग बता दे। वहां पर हमें वापिस जाना है।8। ऐसी प्रार्थना श्रवण करके वह कहता है कि हे देवी! बायां मार्ग छोड़कर दांया मार्ग पकड़ लो वही सीधा तुम्हारे घर अर्थात् स्वर्ग पुरी को सीधा जायेगा। कुकर्म रूपी मार्ग छोड़कर सुकर्म रूपी दाहिना मार्ग ही ग्रहण करे।9। यह संसार ही अथाह सागर की भांति गहरा एवं विशाल है इससे पार कैसे उतरा जा सकता है।10। कवि कहता है कि सुकर्म

रूपी नौका बनाकर, उस पर बैठकर संसार सागर से पार उतरा जा सकता है।11। वहां आगे तेतीस करोड़ देवता तथा भक्त जन शोभायमान हो रहे है। वहां पर सभी मित्र सुजान साधु ही रहते है। ऐसा घर सुख दायक है।12। वे लोग तो पार उतर गये फिर कभी संसार सागर में डूबने का खतरा उन्हें नहीं है वहां पर मृत्यु की पहुंच नहीं है। इसलिये अजर-अमर अविनाशी है।13। वहां पर अमृत के प्याले भर-भर के पिलाये जाते है और सहज ही में आनन्द की लहरों में झूला झुलाया जाता है, यह अवस्था सहज ही में प्राप्त है। ऐसा वह दिव्य पीहर है जहां पर सभी को जाना चाहिये। सभी दुखों का एक मात्र समाधान भी वही है।14। ऊदोजी प्रार्थना करते हुए कहते है कि हे देव! मेरा जरा-मरण मिटा दीजिये और इस पथ का पथिक बना दीजिये ताकि मैं भी अपने घर को पहुंच सकूं।15।

साखी राग रामगिरि-38

पायल घड़दे रे सुघड़ सुनारा, भांजण घड़ण संवारण हारा।1।
भांजै घड़े संवारे सोई, अलख विनाणी लखै न कोई।2।
पायल पहरै कोई शुचियारा, दोजखि जौ पापी हतियारा।3।
पायल सोहे भगतां पाए, ज्यों ठमकै तो स्वर्ग सिधाए।4।
आसण मार बैठो रहमांणी, जीमै अन्न न पीवै पाणी।5।
जुगां-जुगां की कहै कहाणी, जम्भदेव जुगां परवाणी।6।
वासग नेतो मेर मथाणी, समंद विरोल्यो ढ़ोए पाणी।7।
मध कीचक मारयो घात्यो घाणी, मीठे ते कियो खारो पाणी।8।
रावण मारयो तोड़ ज बांणी, लीवी लंका सीता घर आणी।9।
विधवा कीवी मंदोदर राणी, जागो मोमणो रैण बिहाणी।10।
ऊदो बोलै इमृत बाणी, सिंवरो मनवा सारंग पाणी।11।

भावार्थ-इस जीवात्मा का शरीर ही एक अलंकार पायल जैसा ही है। किन्तु यह शरीर सुसंस्कृत नहीं है। वैसे भी संसार में पैदा होते ही कोई सुसंस्कृत नहीं होता उसे सभ्य तो संस्कारों द्वारा बनाया जाता है। इसी बात की ओर संकेत करते हुए कवि कहता है कि हे सुघड़ सुनार! अर्थात् हे जगत के निर्माण कर्त्ता परमेश्वर गुरुदेव! आप इस मेरी पायल यानि मन बुद्धि आदि को अच्छा बना दो क्योंकि आप तो स्वयं ही उत्पति स्थिति और संहार कर्त्ता भी है।1। आप स्वयं सृष्टि कर्त्ता शरीर रूपी पायल के भी कर्त्ता हो आपकी गति

को कौन जान सकता है क्योंकि आप तो अलख, अजर, अमर, अविनाशी हो।2। क्योंकि आप की बनायी हुई पायल अर्थात् नियम धर्म रूपी संहिता को कोई विरला पवित्र आत्मा ही धारण करेगा, पहनेगा। इनसे विपरीत जो पापी हत्यारे है वे तो नरक में ही गिरने लायक है वे इस पायल से क्या करेंगे।3। आपके द्वारा बनायी हुई पायल नियम धर्म तो कोई आपका भक्त जन ही पहनेगा उन्हीं के पैरों में शोभायमान होगी। ज्योंहि पहनकर चलेंगे और जहां पर भी पैर रखेंगे वहीं पर ही मधुर ध्वनि सुनायी पड़ेगी अर्थात् आपके भक्त जहां पर भी जिस देश में भी जायेंगे वहीं पर ही स्वर्ग हो जायेगा, आनन्द की लहरें उठने लगेगी।4। हे देव! आप तो सम्भराथल पर आसन लगाकर बैठे है सभी के ऊपर दया करने वाले दयालु हो। यहां पर निवास करते हुए भी न तो संसार के लोगों की भांति अन्न जल ही ग्रहण करते, सर्वथा निराहारी हो।5। आप तो इस मरूभूमि में आकर युगों-युगों की बातें बतला रहे है। स्वयं श्री जाम्भेश्वर जी ही प्रमाण है अन्य शास्त्र प्रमाणों की आवश्यकता ही नहीं है।6। हे देव! आप ही ने तो समुद्र मन्थन किया था तब नाग की तो रस्सी बनायी थी। मेरू पर्वत की मथानी बनायी थी और देव दानव के रूप में आप ही ने तो समुद्र मंथन किया था। उसके हृदय में छुपे हुए चौदह रत्न निकाले थे।7। आप ही ने तो मधु कीचक आदि राक्षसों को मारा था। उस समय अनेक दैत्यों का विनाश किया था और राम रूप धारण करके समुद्र के गर्व को मिटाया था, उसे मीठे से खारा होना पड़ा था। गर्व को चूर-चूर करना ही मीठे से खारा करना है।8। लंका में जाकर रावण को मारा तथा उसकी भी जवानी के मद को चूर-चूर किया। लंका अपने हस्तगत करके सीता को वापिस लाये।9। उसी समय ही मन्दोदरी को विधवा करके ऐसा चरित्र दिखाया था। कवि कहता है कि हे मोमणों! जागो, अब तो रात्रि व्यतीत हो गयी है वही प्रकाश कर्त्ता भगवान विष्णु स्वयं आ चुके है।10। ऊदोजी इस प्रकार की अमृत बाणी बोलते हुए कहते है कि सारंगपाणी भगवान विष्णु का ही सहारा प्राप्त करो। हे मनवा! क्यों इधर-उधर भटक रहा है।11।

साखी-39

सींवरो सतगुर सांम्य, आदि विसनै संभु सही।
संता कारण देव, संभराथल्य जाग्यो दई।
संभरथल्य सांम्य जाग्यौ, जोग जुगति पीछाणीयां।

परमोध्य रूपी मील्यो कल्यमा, व्रंभ ग्यान वखाणियां।
मोमिणां आणंद हुवौ, हेत करि मांनी कही।
परमै गुरु संसारि सांचौ, आदि विसन संभु सही।1।
भगतां का धन्य भाग, जिह हरि नांवै उचारीयो।
मेल्हो मन री भ्रान्त, सांसौ सकल विसारियो।
सकल सांसौ विसारि सतगुरु, संसार सोग निवारिया।
कूड़ कपट कुबाण्य परहरि, छैद्या करम अपारा।
सुपह पंथ पिछाण्य पारा, प्रीत करि निरहारा।
मेहर करि गुर पार देसी, भगता का धन्य भाग।
जो हरे नांव उचारियो, भगता को धन्य भाग।2।
जांहरे नांव नुंय-नुंय लागे पाय, परगास्या पुरा धणी।
नर निकलंक नरेस, करि आया कीरपा घणी।
घणी कीरपा करे आयो, सधर गुर सुख दिणा।
माया करि मन मेहर मोटी, कोड़ि बारा लीण।
च्यारय चक आवाज हुई, इला उपरि यो सुणी।
दुनि कुं दीदार दीयो, परस्यो पुरौ धणी।3।
भजन करो नरनारी, जलम सुफल करि लीजिये।
जीव जीवन्तो जाण्य, दत भाव भल सुं दीजिये।
भाव भल सूं दीजियै, जगत गुर धाइये।
दया दान विचार करणी, किसन किरत्य गाइये।
छाड़ि माया जाल कल्यका, जलम सुफल करि लीजिये।
विसन भजो निसदिनै, जलम सुफल करि लीजिये।4।
पुरौ सतगुरु आस, आवा गुवण्य चुकाइये।
रसणा राखि मुरारय, साधा संग्य निबाहीयै।
साधा संग्य नीबाहीय जै, वैकुण्ठ वासो सोय।
कंत कामैण्य करै केला, सुख घैणां सुर लोय।
कोटि जोति उजास नीहचल, सभ सहज्य सुहाय।
दास उधो कह करणी, आवागुवण्य चुकाय।5।

भावार्थ-आदि सतगुरु स्वयंभू विष्णु स्वामी का स्मरण जप करें। संत भक्तों हेतु वही विष्णु सम्भराथल पर प्रगट हुए है। सम्भराथल पर स्वामी

जागृत होकर योग युक्ति की पहचान बताई है। इस कलयुग में ज्ञान दाता जागृत कर्त्ता के रूप में ब्रह्मज्ञान दे रहे है। जो मोहमाया से परे है ऐसे भक्त जनों के हृदय में आनन्द की प्राप्ति हुई है उस आनन्द की अवस्था में ब्रह्म ज्ञान को सादर हृदय में धारण किया है। परमगुरु संसार में सच्चे है वही आदि विष्णु ही है।1।

उन भक्तों का भाग्य सराहनीय है जिन्होनें हरि का नाम सप्रेम उच्चारण किया है। मन की भ्रान्ति मिटाकर सभी प्रकार का संशय मिटा दिया है, भ्रम मिट जाने से सांसारिक रोग-शोक की निवृति हो गई। झूठ, कपट, बुरी आदत छोड़कर अनेकों पाप कर्मो का छेदन कर दिया है। सुपथ की पहचान करके प्रीतम परमात्मा निराहारी से सम्बन्ध जोड़ लिया है। भक्तों का धन्य भाग है जो सतगुरु देव ने मेहर की है और संसार सागर से पार उतार देंगे। भक्तों का धन्य भाग है जो उन सर्वव्यापी परमेश्वर का नाम उच्चारण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।2।

पूरा मालिक इस संसार में प्रगट होने पर उनके चरणों में बारंबार नमस्कार कर रहे है, नर रूप में निष्कलंक निराकार निर्लेप स्वयं कृपा करके आये है। सधैर्यवान गुरु सुख देने के लिये कृपा करके इस धरणी पर आये है। बारह करोड़ जीवों का उद्धार करने हेतु अपने जनों को पार उतारने के लिये सर्व समर्थ ईश्वर यहां पर आये है। चारों दिशाओं में संदेश पहुंचा और धरती पर लोगों ने आवाज सुनी। दुनिया को प्रेम दिया और प्रसन्न होकर दर्शन स्पर्श का अवसर प्रदान किया है।3।

हे नर-नारी सुबुद्ध जनों, उस परमपिता पमात्मा का भजन ध्यान-सेवा करो। अपना जनम सफल बना लीजिये यही अवसर है। इस जीवन को जीते हुए समय रहते हुए कार्य करते हुए भाव भक्ति से समर्पण हो जाइये। भाव भक्ति से समर्पण होते हुए जगत गुरु की तरफ अपने कदम बढ़ाइये। दया-भाव, दान देने की प्रवृति, शुद्ध विचार भावना, कर्त्तव्य कर्म करते हुए कृष्ण विष्णु के गुणों का गान कीजिये। इसी से ही उद्धार संभव है। कलियुग का मायाजाल छोड़कर अपने जन्म को सफल कर लीजिये यह सुअवसर प्राप्त है।4।

मात्र एक परमात्मा पूर्ण गुरु की आस रखे और अपना जीवन सफल कर लीजिये। वही गुरु ही जन्म मृत्यु के चक्कर से छुड़ायेगा। अपनी रसना को निद्रा से हटाकर हरि गुण गाने में लगाये और साधु सज्जन पुरूषों

की संगति का निर्वहन करें। इसी से ही वैकुण्ठ में वास हो सकेगा, सदा-सदा के लिये दु:ख से निवृत हो सकेगी। यहां मृत्यु लोक में किसी प्रकार के सुख की कामना करना व्यर्थ है वहां स्वर्ग लोक में सभी प्रकार के सुखों का खजाना खुलेगा जो स्थिरता लिये हुए सदा के लिये एक रस होगा। वहां पर करोड़ों ज्योतियों के समान प्रकाश सदा ही रहता है जो सहज रूप से रहता है। बिना किसी प्रयास के स्वत: ही वह लोक प्रकाशित है। ध्यानावस्था में समाधिस्थ जन उस परम प्रकाश एवं आनंद की अनुभूति करता है यह संभव है। सभी के लिये सुलभ तथा उपस्थित है उदोजी कहते है कि इस प्रकार की पहुंच हो जाने से सदा के लिये जन्म-मरण के दुख से निवृत हो जाता है।5।

कवि रायचन्द सुथार-23, जन्म 1525-1610

इनके बारे में जम्भसार में परिचय मिलता है। ये हजूरी कवि थे। जाम्भोजी के साथ में रहते थे। भजन गायन करते थे। इनके द्वारा रचित छ: साखियां प्राप्त है। सभी महत्वपूर्ण एवं गेय है। प्रथम साखी यह जाम्भोलाव तालाब की है।-

साखी छन्दां की-40

कलयुग तीर्थ थापियो, भाग परापति पावियो।
देश फलोदी मंझ थप्यो, पाप न रहसी परसियां।
जाय परसो विसन तीर्थ, सिर सूं माटी काढ़ियो।
तेरा हुवै पहला पाप खंडत, सुरग में सुख लाडियो।
कह रायचन्द सत्य जांणो, पाप न रहसी प्राणियां।
अवतार जम्भ नरेश नै, कलि मंझ तीर्थ थापियां।1।
जिस भूमि पाण्डवां जिग रच्यो, तहां सूत फिराइये।
जहां सहदेव जी तीर्थ थाप्यो, जीवड़ा काजै न्हाइये।
जीव काजै काढ़ माटी, पाल पै परवाहिये।
तेरा हुवै आवागवण खंडत, मुक्ति निहचय पाविये।
कह रायचंद सत्य जाणों, उस तीर्थ में जाइये।
जिस भूमि पाण्डवां जिग रच्यो, जहां सूत फिराइये।2।
सो पुनि अड़सठ तीर्थ थाप्यो, विसन तालाब सत जाणिये।
जिस द्वारिका किसन रहे, मुक्ति हुवै गुरु बाणियें।
गुरु वचने मुक्ति लाभे, उस तीर्थ में जाइये।

काशी बदरी और हर की पैड़ी, जाणि गंगा न्हाइये।
कह रायचन्द सत्य जांणो, कांय भूला मन हठे।
विसन तालाब तुम सत्य जांणो, और तीर्थ अड़सठे।3।
कलियुग परचो हाल लहो, कबूलो माटी निसारणी।
अंधा लोयण मिले सही, इच्छा करै मन बांझड़ी।
बांझ इच्छा विसन पुरै, उस तीर्थ निश्चय जाइये।
निसार माटी करो पूजा, निवत साधु जिमाइये।
साथरी गुरु को इसो तीर्थ, जाय कंध निवाइये।
कर जोड़ि रायचंद कहै, विनती हाल परचो पाइये।4।

भावार्थ–गुरु जाम्भेश्वर जी ने कलयुग में आकर दिव्य तीर्थ जाम्भोलाव की स्थापना की है। यह इस देश के लोगों के लिये गंगा के समान ही है परन्तु कोई भाग्यशाली ही इस तीर्थ की महिमा को समझेगा तथा स्नान स्पर्श करेगा। यह तीर्थ फलोदी देश की भूमि में थरपा गया है जो भी स्पर्श करेगा उसके सभी पाप निवृत हो जायेंगे। इसलिये हे भक्तों! ऐसे तीर्थ में अवश्य ही पहुंचो तथा दर्शन स्पर्श करो एवं तालाब की मिट्टी सिर पर रखकर निकालो। तुम्हारे पिछले जन्मों के पाप खण्डित हो जायेंगे तथा स्वर्ग में सुख प्राप्त कर सकोगे। रायचन्द कहते है कि यह सिद्धान्त सत्य मानों कि पापी जनों के पाप नहीं रह सकेंगे। जाम्भेश्वर जी इस समय मानवों के स्वामी है। उन्होनें ही अवतार लेकर इस फलोदी देश में तीर्थ की स्थापना की है।1।

इस भमि पर पाण्डवों ने वनवास काल में निवास किया था और अनेकों यज्ञ की रचना की थी। उन्होनें इस भूमि की पवित्रता को जाना था। आप भी जानिये और यहां आकर सूत फिराइये। अर्थात् कपड़ा तालाब के चारों तरफ बिछाकर दान कर दीजिये यही यहां का महात्म्य है यहां पर प्रदान किया हुआ वस्त्र दान अनन्त गुणा फल देता है। ऐसा द्रोपदी ने यहां वस्त्र दान दिया था। जिससे द्रोपदी का चीर अनन्त गुणां बढ़ गया था। यहां पर सहदेव जी ने अपनी विद्या के बल से पता लगाया था और इस तीर्थ की स्थापना की थी। ऐसे तीर्थ में अवश्य ही स्नान कीजिये। इस जीव की भलाई के लिये तालाब से मिट्टी निकालें और ले जाकर पाल पर डालें। तुम्हारे सभी अवगुण खण्डित हो जायेंगे तथा मुक्ति की प्राप्ति होगी। रायचन्द जी कहते है कि यह सत्य वार्ता है अवश्य ही समझो और ऐसे तीर्थ में जाओ। जिस भूमि में

पाण्डवों ने यज्ञ रचा था वही जाकर सूत फिरावे, वस्त्र दान दे।2।

वही जाम्भोलाव अड़सठ तीर्थों का फल देने वाला है। जिसकी स्थापना कलयुग में स्वयं विष्णु ने की है ऐसा अवश्य ही जानें। जिस द्वारिका में कृष्ण रहे थे जिससे वह तीर्थ बन गया उसी प्रकार जाम्भोलाव पर भी स्वयं भगवान विष्णु ने निवास किया था। इसलिये यह भी द्वारिका की भांति तीर्थधाम है। यहां पर गुरुवाणी का श्रवण होगा जो मुक्ति देने वाली है। गुरु के वचनों का पालन करने से मुक्ति मिलती है ऐसे दिव्य तीर्थ में अवश्य ही जाना चाहिये। काशी, बद्रीनाथ, हरि की पैड़ी की भांति ही यहां पर भी इसे गंगा मानकर स्नान करें। रायचंद जी कहते है कि इस बात को सत्य मानों। क्यों मनहठ के वशीभूत होकर भूल गये हो। इस जाम्भोलाव को विष्णु का ही तालाब मानकर स्नान कीजिये अड़सठ तीर्थों का फल मिलेगा।3।

इस कलयुग में तो साक्षात् परचा देने वाला यह तालाब है। पहले मिट्टी निकालने की प्रतिज्ञा करो। आपका संकल्प पक्का होगा तो निश्चय ही आपकी इच्छापूर्ति होगी। आपके दुखों की निवृति हो सकेगी क्योंकि यहां पर आकर संकल्प से मिट्टी निकालने से अन्धों को आंखें मिली है और बांझड़ी को पुत्र की प्राप्ति हुई है। इस प्रकार से अनेक इच्छाओं की पूर्ति करने वाले इस तीर्थ में अवश्य ही आइये। तालाब की मिट्टी निकालिये। विष्णु मन्दिर में पूजा हवन कीजिये तथा साधु संतों को निमन्त्रण देकर भोजन कराइये। यह गुरु की साथरी है इसकी लीला अपरंपार है। यहां अवश्य ही नम्रता से सिर झुकाइये। हाथ जोड़कर रायचंद जी कहते है कि इस समय यहां पर अनेक दिव्य चमत्कार हो रहे है।4।

साखी कणां की-41

गुरु जांभेश्वर अवतार लियो, सब धर्मा करि निवासा।1।
जिण सप्त पताले थंभिया, थंभिया धरणी आकासा।2।
चार चक परमोधियां, उजल नगर के वासा।3।
कै भीगा कै कोरा रहिया, सब पाणी की आसा।4।
खरां ले अर्थ लगावियां, काम न आवै खोटा।5।
ते क्यूं चढ़इयां, वै नफा न जाणै तोटा।6।
जीभ लपट दिल वायसीयां, वै कारण किरिया खोटा।7।
राह गुरु की वै मानैं नाही, वै फिरै कांधै का मोटा।8।

राह गुरु की मांनियो थे, गिणियो विसन सगाई।9।
जंवरै जीवड़ा जाण सी वा, तेरा खपर रूधेला आई।10।
साखण न सैण न बहण न भाई, ना उत पिता न माई।11।
भगवत लेखो मांगसी वा, क्रिया विण अपणां नाई।12।
ना कुछ कारण ना कछू किरिया, अहलौ जलम गमाई।13।
गुरु जाम्भेश्वर विसन ही, जिण आ सुरगे बाट बताई।14।
बाटे भूल्या पड़िया उजड़, बसती कहूं न पाई।15।
बसती बारां इकवीसां मिलै, हमारे गुरु भाई।16।
दुनिया रोलै भोलै पड़िया, आगे क्यूं हथाई।17।
कह रायचन्द आपो परमोधो, क्यूं परचै दुनि सवाई।18।

भावार्थ–गुरु जाम्भेश्वर जी ही विष्णु के अवतार है। संसार के जितने भी धर्म है वे सभी उन्हीं में ही निवास करते है अर्थात् सभी धर्मो का समूह है।1। उस परमेश्वर ने सप्त पाताल, धरती, आकाश आदि सभी को अपनी सता से अधर कर रखा है, रोक रखा है इनकी स्थिरता परमात्मा की सता से ही हो रही है।2। चार चक यानि चारों तरफ बसने वाले लोगों को जागृत किया है। उन्हें सचेत करके प्रकाशमय लोक में ले जाने के लिये तैयार है।3। सभी लोग जल की आशा लगाये हुए बैठे है अर्थात् जल ही जीव है। जीवन जीने की आशा से जीवन जी रहे है। किन्तु इनमें कोई तो भीग चुका है तथा कोई सूखा ही है। अर्थात् कुछ लोग तो जीवन जीने की विधि प्राप्त कर चुके है। तथा कुछ लोग अब तक न तो जीवन जीने की कला ही सीख सके है और न ही कुछ प्राप्त ही कर सके है।4। जो व्यक्ति खरी कमाई करता है वह कमाई ही उसे फल देगी। खोटी कमाई उसके लिये सहायक सिद्ध नहीं होगी।5। वे लोग धन–व्यापार में क्यों लगते है जो हानि लाभ के बारे में कुछ भी नहीं जानते अर्थात् वे जन क्यों अपना जीवन व्यर्थ के कार्य में झोंक देते है यदि उन्हें शुभ या अशुभ का कुछ ज्ञान नहीं है। ऐसे लोगों का परिश्रम व्यर्थ ही जाता है।6। वे लोग जो अपने जीवन के मूल्यों को नहीं समझते ऐसे लोगों की जिभ्या लम्पट अर्थात् बकवादी है। बिना विचारे बोलते है तथा उनका दिल कौवे की भांति चंचल तथा काला कुमार्गी है। ऐसे लोग जो भी करेंगे वह कार्य खोटा यानि पाप पूर्ण धोखा वाला ही होगा।7। वे लोग गुरु का बताया हुआ मार्ग तो नहीं मानेंगे किन्तु अखाद्य भोजन खाकर के शरीर तथा कन्धा स्थूल मोटा कर

लेते है। ऐसे ही स्थूल शरीर को ढ़ोते हुए भटकते है।8। हे लोगों! आप लोग गुरु का बताया हुआ पंथ स्वीकार करो तथा सदा ही विष्णु के साथ ही अपना सम्बन्ध तन-मन-धन से जोड़ो।9। यम के दूत तुम्हें अवश्य ही पहचान लेंगे और तुम्हारा सिर फोड़ कर तुम्हें ले जायेंगे।10। आगे वहां पहुंचेगा तो तुम्हारे सहायक माता-पिता, बहन-भाई आदि कोई नहीं होंगे।11। वहां पर जब तुम्हारे से हिसाब मांगा जायेगा तो बिना शुभ कर्म किये कुछ भी नहीं बता सकेगा। केवल शुभ कर्म ही गवाही के लिये साथ में जाते है। वही अपना निजि धन है।12। हे प्राणी! तुमनें यहां संसार में आकर न तो कुछ शुभ कर्म ही किये है और न ही धार्मिक अनुष्ठान पूजा पाठ ध्यान उपासना आदि ही किये तो यह जन्म व्यर्थ में ही खो दिया।13। गुरु जाम्भोजी तो साक्षात् विष्णु ही है। जिन्होनें स्वर्ग में जाने के लिये बिश्नोई पन्थ रूपी कला-मार्ग बताया है।14। यदि कोई मार्ग भूल जाये और उजड़ ही चलता रहे तो वह कभी भी अपने गन्तव्य स्थान बस्ती में नहीं पहुंच सकता उसी प्रकार से गुरुदेव के बताये हुए मार्ग को जिन्होनें छोड़ दिया वह कभी भी अपने सच्चे घर बैकुण्ठ धाम को नहीं पहुंच सकेगा।15। वहां वस्ती स्वर्ग में तो हमारे गुरुभाई इक्कीस करोड़ पहुंच चुके है। तीन युगों में प्रहलाद,हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर के साथ वे हमारे गुरु भाई है उनसे हमें भी मिलना है। दुनिया तो बावली हो चुकी है। अपना कर्त्तव्य कर्म भूल चुकी है। उसके तो सामने सदा ही एक हथाई अर्थात् व्यर्थ की बातें ही रहती है उनसे ही फुरसत नहीं है।17। रायचन्द जी कहते है कि तुम्हें दुनिया के लोगों से क्या लेना देना है। अपना सुधार स्वयं ही करो। यह दुनिया तो अपने से सवाई है अर्थात् दो कदम आगे है हमारी बात क्यों सुनने वाली है।18।

साखी कणां की-42

मेरे कानां आवाज हुई, अवतार लियो संसारा।1।
सम्भराथल गुडी उछली, आयो किसन मुरारा।2।
करणी क्रिया फरमाई, जांतै लंघियो पारो।3।
क्षमा दया अरू भक्ति करो, केवल नांव उचारो।4।
पराई निंदा कभु न करो, मत बांधो सिर भारों।5।
चोरी जारी न कभी करो, परहरियो अहंकारो।6।
चोह जुग बिछड़िया मिले, विसन को अवतारो।7।

रायचंद बोले बीणती, साधां संग पार उतारो।8।

भावार्थ–कवि कहते है कि मेरे कानों में आवाज संदेश आया है कि विष्णु ने इस मरूभूमि में अवतार लिया है।1। सम्भराथल पर धर्म रूपी पतंग उड़ रही है क्योंकि स्वयं ही कृष्ण मुरारी आये है।2। यहां पर आकर विशेष रूप से कर्त्तव्य कर्म तथा शुद्ध क्रियाऐं बतलाई है इन्हें जो भी अपनायेगा वह संसार सागर से पार उतर जायेगा।3। क्षमा दया भक्ति करने का आदेश दिया है तथा केवल विष्णु का ही स्मरण करना बतलाया है।4। परायी निंदा न करो क्योंकि परायी निंदा करना अपने सिर पर व्यर्थ का बोझ उठाना है क्यों सिर पर भार उठाये फिरते हो।5। चोरी जारी कभी मत करो, तथा अहंकार का भी परित्याग करके परमात्मा के समर्पित हो जाओ।6। चारों जुगों के बिछुड़े हुए हम लोगों को अब विष्णु के अवतार जाम्भोजी से भेंट हो सकेगी।7। रायचंद जी विनती करते हुए कहते है कि साधु की संगति से ही पार उतर सकते हो। कवि का ऐसा कथन है कि ऐसी आवाज मेरे कानों में आयी है इसलिये मैं सतर्क हो गया हूं तथा आप भी हो जाइये।8।

साखी छन्दां की-43

श्याम सिधारे चिलत कियो, पंनरासै अरू तिराणियो।
गण गन्धर्व साथ चाल्या, परगट खेल पसारियो।
परगट खेल म्हारे श्याम पसारयो, साथ चाल्या मोमणां।
क्यूं रहूं तेरे बिना दर्शन, गोवल सूनो देव तुम विना।
साथरी गुरु की वणी सम्भराथल, जहां हरि खेल पसारियो।
तिराणवै सांध पूगी देव, देकर सीख सिधारियो।1।
क्या गुण वरणूं देव तेरा, ज्ञाने हिन्दू तुरक चेताविया।
ऊजड़ देही वसता किया, कथ कथ ज्ञान सुणावियो।
कथ्यो ज्ञान म्हारे ब्रह्मज्ञानी, अबूझ कोई नहीं जीतियां।
काजी कतेबा वेद ब्रह्मा, जुगत जोगी चेतियां।
ज्ञान खड़गा जीत वसुधा, उर में न राखी मेर हो।
जहां देखूं तहां तूंही, क्या गुण वरण करूं देव तेर हो।2।
देव तुम चाल्या संसार मेल्या, कही कही हेले जाणियां।
छूटी गुरु पीरी करणी तजी, मुखां कुभाषा ठाणियां।
ठाणी कुभाषा दुनि मिलियां, थूलां सुं संग जोड़िया।

देव थे कही सब बात छूटी, क्यों करि मिलसी किरोड़ियां।
बाद अरू अहंकार बधियो, नांही दिसै साल्हियां।
जप तप किरिया भक्ति छूटी, देव सब तुम संग चालियां।3।
थे जमाती देव रहम करो, जोति न खींचो आपणी।
नफर बिगड़े स्वामी लाजै, बात घणी देव तुम तणी।
बात घणी देव तुम तणी नै, मुक्ति तुम सूं पाइये।
जीवत तिरिये अजर जरिये, रतन काया पहिरिये।
सैतान झोलो परे परिहरो, हरि राह तेरो है खरो।
कर जोड़ी रायचंद करै विणती, थेई जमाती देव रहम करो।4।

भावार्थ–श्याम भगवान श्री जाम्भेश्वर जी यहां से पुनः अपने लोक को विक्रम संवत् 1593 मिंगसर वदि नवमी को पधारे। उन्होनें अपने समय में अनेकों चरित्र दिखलाये। उनके साथ में उनके प्रिय भक्त जन मुनि जन साथ में ही चले गये। उन्होनें यहां आकर प्रत्यक्ष रूप से खेल रचा था वह खेल पूर्ण हो गया। मोमण भक्त जन साथ में ही खेल खेलते रहे और साथ ही चले गये। देवजी के बिना उनके संग साथी यहां कैसे रह सकते है। क्योंकि इस गोवलवास को सूना कर दिया। अब तो गुरु की साथरी सम्भराथल बन चुकी है। जिस भूमि पर स्वयं हरि ने खेल खेला था। तिरानवे का संवत् आया था तभी देव ने सभी को उतम शिक्षा प्रदान करके लालासर पहुंचे थे। उतम मार्गशीर्ष के महिने में अपनी ज्योति श्री देव ने वापिस समेट ली थी।1।

कवि कहता है कि हे देव! तुम्हारे गुणों का मैं क्या वर्णन कर सकता हूं मेरे में इतनी शक्ति बुद्धि कहां है। आपने तो हिन्दू मुसलमान आदि सभी वर्गों को चेताया था। इस संसार के लोगों की दशा दयनीय थी। जीवन नशा तथा व्यसनों से नष्ट हो रहा था। आपनें पुनः जीवन को बसाया, यानि जीवन की युक्ति बतलाई। शब्दवाणी रूपी ज्ञान कथकर के सुनाया। हमारे ब्रह्मज्ञानी ने ऐसा दिव्य ज्ञान सुनाया जिससे उनसे कोई जीत करके नहीं गया। किताब पढ़ने वाले काजी, वेद पढ़ने वाले पण्डित, योग करने वाले योगी सभी सचेत हुए। ज्ञान रूपी खड़ग द्वारा पृथ्वी पर फैले हुए पाखण्ड को जीता। सम्पूर्ण पृथ्वी के लोगों को बसाया फिर भी किसी से मेर नहीं की, अपना कार्य पूर्ण करके चले गये। जहां तक मेरी दृष्टि जाती है वहां तक हे देव! आप ही आप दिखाई दे रहे हो, मैं आपके गुणों का वर्णन कैसे करूं।2।

हे देव! आप तो इस शरीर को त्यागर चले गये। पीछे सांसारिक लोगों ने आपके बताये हुए नियम-धर्म छोड़ना प्रारम्भ कर दिये है। कहीं-कहीं पर ही आवाज लगाने या जगाने पर ही जागृत हो पाते है। गुरु की आज्ञा छूटती हुई नजर आ रही है। कर्त्तव्य कर्मों को छोड़ने के लिये लोग तैयार हो रहे है। (ऐसा कवि को आभास हो रहा है वह सच्चाई ही साखी के द्वारा कह रहे है) मुख से कुवचन बोलने लगे है। किसी को अच्छी बात कहते है तो कुभाषा बोलकर दुनिया के लोगों के साथ मिलकर वही प्राचीन परंपरा अपना रहे है। हे देव! आपनें जो बात कही थी, मर्यादा बांधी थी वे सभी छूट रही है। यदि इस प्रकार छूटती चली गई तो फिर उन तेतीस करोड़ से मिलान कैसे हो सकेगा? जहां पर देखो वहीं पर ही वाद-विवाद एवं अहंकार बढ़ चुका है, कहीं पर भी साल्हिया-सज्जन पुरूष दिखाई नहीं दे रहे है। जप-तप-क्रिया एवं भक्ति भाव भी छूट गया है। वे तो तुम्हारे साथ ही चले गये है।3।

हे देव! आप तो हमारे जमात के इष्ट देव हो। अपनी ज्योति न खींचो, आपका शरीर भले ही न रहे किन्तु आप ज्योति स्वरूप से यहीं पर ही विद्यमान रहो। यदि आपके ही भक्तजन पुनः बिगड़ जायेंगे तो लज्जा तो आपको ही लगेगी। संसार में आपका ही अपमान होगा। हे देव! बहुत सारी बातें आपके रहने से ही बन पायेगी। आपके रहने से ही मुक्ति प्राप्ति संभव है। आगे कवि जनता जनार्दन को सम्बोधित करते हुए कहते है कि अजर जरो और जीवत मरो इसी सिद्धान्त को अपनाकर रत्न काया को धारण करो। सैतान की संगति को छोड़ो और हरि का बताया हुआ मार्ग ही सत्य है। हाथ जोड़कर रायचंद जी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! आप ही इस जमात पर कृपा करो ताकि यह जमात सही सलामत मानव बनकर जीवन में युक्ति-मुक्ति प्राप्त कर सके। कवि ने यहां पर जाम्भोजी के अन्तर्धान होने के पश्चात् की स्थिति का वर्णन किया है।4। यह साखी वील्होजी के आगमन से पूर्व में कही गई है।

राग जतश्री साखी-44

मन मेरो सोदागर, विणजत नेहड़ा कीजै जी।
जीण्य जीव पिंड संवारियो, रसना रसिवस्य जपीजै जी।
जपौ रसना विसन बोह विध्य, जांते लंघीय पारीया।
संसार या राता मदमाता, जां रतन जलम जहारिया।

काया कफ रूधी आप न संभाल्य, फंद पड़या जम नेहड़ा।
कह रायचंद तिस नांव तरीया, कीजै वीणजत नेहड़ा।1।
मन मेरा विणजारला, तुं देखि आपा संल्यबे।
आप अकेला आवीया, नाहि तुं संद नाल वे।
नाहि तूं संद नाल पेराणी, चला आप अकेलवौ।
सुरगे जाय तौ आप सुहेलौ, आप अगति दहेलवौ।
जो आया सो रहता न कोई, सभ भइ वस्य कालवै।
कह रायचंद संसार अनेहा, देखि आपा संभालवै।2।
संसार भला मेरा जीव, जो कुछ चालै साथवे।
आग्य बलत झुंपड़ मेरा जीव, सार चड़ सोह थावै।
जो कुछय चाल साथ्य जीव का, रहंदा काम न आवही।
नां कछु गन हाथ्य पंजीहा, उरहा कौन बुलावही।
धरम नैम सत संजम हरि चीत, इतना आव अरथ्यवे।
कह रायचंद संसार भलाह, जो कुछ चाल साथ्यवे।3।
जीण्य हरि सुं चीत लाया मेरा जीव, पापा नै लैहा भारवो।
गुर अपणां अपणाय लेसो, आप लंघावै पारवै।
आप भुंयजल पारे लंघावै, जे एक मन्य धीयाइयौ।
पाप पुन्य दोय संग्य होयस्यै, बोहड़िन इस कुड़ि आवीयो।
जांम वीणस वीणस जांम, एहा औ संसार वो।
कह रायचंद तै हलका जायस्यै, पाप नै लैदा भारवे।4।

भावार्थ–रायचंद कहते है कि यह मेरा मन सौदागर है जो व्यापार करके लाभ लेना चाहता है। प्रत्येक भाव को लाभ की दृष्टि से देखता है जिस परमात्मा ने इस जीव को शरीर में पालन पोषण करके बड़ा किया है। उसी विष्णु को रसना से नहीं जपता है। विष्णु के नाम का जप करें तभी संसार सागर से पार उतर सकता है। संसार के रंग में ही रचा हुआ मदमस्त हो रहा है। यहां संसार में रत्न सदृश अमूल्य जीवन को कौड़ि बदले बेच रहा है। जब यह शरीर वृद्ध हो जायेगा। इस शरीर में वात–पित–कफ अनेकों प्रकार की बीमारियां हावी हो जायेगी और यमदूत गल फंद लिये आ जायेंगे। रायचंद जी कहते है कि समय रहते ही विष्णु नाम स्मरण रूपी हीरों का व्यापार करें जिससे यमदूत नजदीक नहीं आये।

हे मेरा व्यापारी मन! तूं अपने नजदीक आयी हुई मृत्यु को क्यों नहीं देखता। आप अकेला ही आया है और अकेला ही वापिस जायेगा। तुम्हारे साथ जाने वाला कोई नहीं होगा। स्वर्ग भी चला जायेगा तो भी '' ते तं भुक्त्वा स्वर्ग लोकं विशालम्, क्षीणे पुण्ये मृत्युलोकं विशंति'' 'गीता'। स्वर्ग का सुख भोगने के पश्चात् वापिस आना होगा। जो भी यहां आया है वह स्थिर नहीं रह सका है काल के मुख में चला गया है। रायचंद जी कहते है कि यह संसार किसी से हेत प्यार करने वाला नहीं है जो आना-जाना यहां निरंतर रहता ही है।2। इस संसार में रहकर सुकृत करें यही साथ जायेगा। यहां संसार में तो लोग सोये हुए है। जब झूंपड़े में आग लग जाती है तब कूवा खोदना प्रारम्भ करते है। जब बुढ़ापा में मृत्यु की शय्या पर पहुंच जाते है तब उपाय करते है उससे कुछ होने वाला नहीं है। आग लगने से पूर्व ही कूवा खोद लेना चाहिये। जो कुछ भी सुकर्म पुण्य किया है वही साथ जायेगा। यह पुण्य कार्य युवा अवस्था में ही किया जा सकता है। बुढ़ापे में पराधीन हो जाने से कुछ भी नहीं हो सकेगा। वहां आगे अपने हाथ में कुछ नहीं होगा। वहां आपको आदर सहित कौन बुलावा देगा। इस जीवन से धर्म-नियम, सत्य, संयम, हरि-चित इत्यादि शुभ किया जायेगा वही साथ में चलेगा।3।

जिसने भी हरि से चित लगाया है उसे पाप प्रभावित नहीं कर सकता। पाप का भार सिर पर चढ़कर नहीं बोलेगा। सतगुरु की शरण में जाने से अपने लोगों को अपना बना लेंगे और उन्हें संसार सागर से पार उतार देंगे। एक मन चित से ध्यान लगाने से गुरु संसार सागर से पार उतार देंगे। यहां से अन्तिम प्रस्थान करते समय पाप पुण्य ही साथ जायेंगे। पुण्य के प्रताप से फिर से यह जीव जन्म मरण के चक्कर में नहीं आयेगा। इस संसार में तो बारंबार जन्म-मरण का चक्कर चलता ही रहेगा। यह पाप कर्म का फल होगा। रायचंद जी कहते है कि वे पुण्य आत्मा पापों की गठड़ी को यहीं छोड़कर हलका होकर वापिस अपने स्थायी घर वैकुण्ठ धाम में पहुंचेंगे।4।

साखी-45 (रायचन्द जी द्वारा रचित)

कांय सखी तेरो मेलड़ो वेस्य, कांय सखीरी आमैण दुमैणी।
श्री रंग किसन वदेस, तास कारण्य सखी मैं दुंमणी।
दुमैणी सखी कीसन कारण्य, क्यूं रहौ अकेलिया।
नीत खींव बीजल गीणौ तार, विरह करत दुहेलिया।

उधौ संदेशा कहो हरि सूं, मोर विण्य सुनी वणी।
बिछुड़े सीरी रंग मीले नांही, तास कारण्य दुंमणी।1।
सखी मोहि निस नै आव नींद, पीव-पीव करत पपीहड़ौ।
श्री रंग किसन वदेस, क्यौं रस हारू सखी महीयड़ौ।
हीयड़ौ सखी क्यौं संहारया, कीसन मधवन छाइयौ।
आप सोव नहीं देह सोवण, कांम कंटक संताइयौ।
आवौ श्री रंग ले चैलौ हम कुं, इधक नर सजीवड़ौ।
दाधां उपरि लूंण लाव, पीव पीव करत पपीहड़ौ।2।
सखी मोहि रैण्य न आव नींद, पास्य नै देखुं चुंचल कान्हवो।
इण्य रंग्य कोई हुवौ नै होय, खेलत आव श्री रंग गीदवौ।
गीदव खेलत कीसन आवै, देखि हीयड़ौ सीयलौ।
बाझत दरसैण्य तरसै, वरण होइ पीवलौ।
खड़ी मारण्य द्यो संदेसा, किसन कोय बताव ही।
खड़ी डीणी बाझत दरसण्य, रैण नींद न आव ही।3।
धीरज करि हे गुवाल्य, आव लौ किसन गुवालीयौ।
गढ़ मुथरा कंसासुर दैत, छल बुध्य कन्हड़ कंस पछाड़ियौ।
छल बुध्य कन्हड़ कंस टाल्यौ, हरि सखी वधाइयौ।
कंस मारयौ इछा पुगी, करौ सखी उछाहीयौ।
कवि रायचंद हरि ध्याय लीजै, अंति चीत रही जीयो।
हीवड़ सहारण कीसन मीलियौ, मुंध धीरज कीजियो।4।

भावार्थ-बाल कृष्ण जब गोकुल से मथुरा में कंस को मारने के अक्रूर जी के साथ में रथ में बैठकर मथुरा को चले गये। वहां जाकर कंस को मारा अपने नाना उग्रसेन को राज तिलक दिया और अपने माता-पिता वसुदेव देवकी को जेल से छुड़ाया। सभी कार्य किये किन्तु वापिस बृज भूमि में लौटकर नहीं आये। अपना संदेशा देकर अपने मित्र उद्धव को जरूर भेजा। गोपियां ग्वाल बालों को धीरज देने के लिये किन्तु उद्धव भी असफल हो गया। यहां पर इस साखी में गोपियां उद्धव के संदेश को सुनकर अति दुखी होकर कृष्ण की याद में उद्धव को उलहाना दे रही है। एक सखी दूसरी सखी से पूछ रही है कि हे सखी! तूं आज इतनी उदास, मैला वस्त्र पहने हुए किसके वियोग में दुखी हो रही है। वह सखी उतर देती हुई कहती है कि हे सखी! मेरे

प्राण प्यारे कन्हैया आज यहां नहीं है। विदेश में है। इस कारण मैं दुखी हूं। मैं कैसे उनके बिना अकेली रह सकती हूं। देख सखी इस वर्षा ऋतु में नित्य प्रति बिजलियां चमक रही है। गर्जना हो रही है इस डरावने मौसम में मैं उन प्यारे कृष्ण के बिना अकेली कैसे रह सकती हूं। उद्धव ने जब से आकर संदेशा दिया है तब से तो मैं उस मोरनी के जैसी हो गई हूं। बिना मोर के वन सूना हो गया है। बिछुड़े हुए श्री रंग कृष्ण मिले नहीं इसलिये मैं दुःखी हूं।1।

हे सखी मुझे रात्रि में नींद नहीं आती है। क्योंकि यह पपीहा भी मेरे वियोग को पीव-पीव करके जगा देता है। मेरे प्राण प्रिय कन्हैया विदेश में है तो बताओ सखी मैं दही बिलौना मक्खन निकालना किसके लिये करूं। तथा शृंगार भी किसके लिये? यह मेरा दुर्बल हृदय कैसे मान सकता है। जहां भी मधुवन में देखती हूं प्रकृति को देखती हूं तो सभी जगह कृष्ण ही दिखाई दे रहे है। यह मिलन की प्रबल इच्छा न तो आप सोती है ओर न ही मुझे सोने देती है। हे श्री रंग आप आ जाओ और मेरे को अपने साथ ले चलो। आप उद्धव आदि किसी संदेशवाहक को भेजें क्योंकि वे तो जले पर नमक छिड़कने का ही कार्य करेंगे।2।

हे सखी! मुझे रात्रि में नींद नहीं आती है जब भी कन्हैया का स्मरण करती हूं तो उनके पास न देखकर नींद उड़ जाती है। यह चंचल कन्हैया तो दुनिया में एक ही अपने जैसा हुआ है। जब भी मैं स्वप्न में देखती हूं तो गेंद खेलता हुआ मुझे दिखाई देता है। गेंद खेलते हुए जब भी मैं आते हुए देखती हूं तो मेरा हृदय ठंडा हो जाता है। जब मेरे नयनों से दूर चला जाता है तो नयन दर्शन हेतु तरस जाते है। मेरा रंग पीला पड़ जाता है। मैं मार्ग पर खड़ी होकर बटाऊ को संदेशा देती हूं। कोई ऐसा बटाऊ बीर होगा जो मेरी गति कृष्ण से जाकर बता दे। बिना नींद के खड़ी प्रतीक्षा करती हूं। मेरे नयनों में नींद नहीं आती।3। सखी कहती है हे ग्वालिन! धैर्य धारण करो वह गुवालिया कन्हैया अवश्य ही आयेंगा। तुम्हें पता होना चाहिये कि मथुरा नगरी में दैत्य कंस वहां का आततायी राजा रहता है। उसे छल बल से कन्हैया ने पछाड़कर मार डाला है। इसलिये तो वहां अपने भाई बलराम जी के साथ गये है। हे सखी! मथुरा में इस समय बधाइयां बांटी जा रही है। कंस को मार डाला है। मथुरा वृजवासियों की इच्छा पूरी हो चुकी है। हे सखी! तुम हम भी बधाइयां बांटें उत्सव मनाऐं। कवि रायचंद कहते है कि हरि का ध्यान कीजिये। हे गोपियों!

हृदय में हरि को विराजमान करो। हृदय हरि सिंवरीलौ। तभी कन्हैया सदा तुम्हारे पास ही रहेगा। हरि का वास तो हृदय में ही स्थायी होता है वही ध्यान के द्वारा देखें। ''हृदय जो हवेली मांही, रहो प्रभु रात दिन'' 'साहब' हे भोली गोपियों! हृदय के सहारे कृष्ण मिलेंगे। धैर्य धारण करें। ''दिल साबत कन्हैया नैड़ो''।

साखी-46 (अज्ञात कवि)

सत्य सुपन्तर दीठड़ा, सखी मेरे मन्य उपज्यौ सतभाव।
जाणौ रीणजीड़ा विसन दले, तेहु भण्य-भण्य त्रभवण राव।
रावो वां वस ही सूं आयौ, सुरनर लायो जोड़ करै।
दुल-दुल घोड़ो खड़ग तिधारौ, मेघाडंबर छत्र सिरै।
घर हरै घटा बिजली झीलोरा, चीणम चीण पइठो।
कह दुलम दे सुण्य हो काल्यंग, सत सुपन्तर दीठो।1।
उदीया परबत पोल्य ढ़ही, साख्यत करौ सुवारी।
नव वेर हारीयड़ो, कंवल सरे उत्पुत्य कहुं तुहारी।
उति पुत्य कहुं तुहारी काल्यंग, राय विसन सूं बाद किसौ।
च्यारय चक नव दीप नुवाया, लख चोवरासी जीव सीरयौ।
जुरा मरण भौ भांज झांभराय, मेर चुकाव तांस सही।
धर धुज असमांण थरहर, उदीया परबत पोल्य ढ़ही।2।
घणहर गाजी पड़ो, वरस्य करे यो पाणी रहयौ।
नीवाणै उन्हौ ठाढ़े यहो जोग मील्यौ, अंति तुटै खुरसांणी।
अंति तुटै खुरसांणी सही सु, पोह विहूणी थाकी।
अंति गरब गइ कंल्य तोटा, मल बर हीने वाकी।
कटक खंधीर जुड़ गढ़ दीलड़ी, लसकर हुइ आवाज।
पछै मतै घंण ओल्हरी आयौ, वरस्य करै घंण गाज्या।3।
पारै गिराय हुवौ सुखी, अभखल तजौ पुंवारी।
अह जुग्य चौथे पड़यौ, कल्य जीवड़ा की बारी।
अमी कचोलड़ हींड हींडोलड़ा, पाट पटंबर भारी।
चीर पटोलड़ा भोग वह वर नारी, भोगवता वर नारी सदासु।
पुजी जीव जगाति सीरे, दसवंध दीनु हजरत्य लीखीयो।
नीरमल हुव सुपात करो, मन्यसा सुवां सदारंग उपजै।

छह रूति बारा मास सुखी।

पांच सात नव खड़ी उडीकै, पार गिराय हुवौ मुखी।4।

भावार्थ–हे सखी! सत्य सुपात्र को देखकर मेरे मन में सत्य भाव प्रगट हुआ है। मैं ऐसा समझती हूं कि मानों विष्णु के उपासक साधना रूपी खेती करने हेतु, विष्णु की उपासना करने हेतु, मन से संग्राम करने के लिये उद्यत है। जहां हरि की भक्ति भजन संकीर्तन होता है वहां भगवान स्वयं ही भक्तों के वशीभूत होकर आ जाते है। उन भक्तों की रक्षा हेतु भगवान रणभूमि में सर्वोच्च सवारी के उपर सवार होकर आते है भक्तों को आने वाली विघ्न बाधाओं को दूर हटाते है। जब साधक ध्यान समाधि के केन्द्र में पहुंच जाते है तब वहां पर बिजलियां चमकती है, गर्जना होती है और अमृत की वर्षा होती है। शुन्य में प्रवेश हो जाने से उस दुर्लभ देश में प्रवेश करके सत्य का साक्षात्कार सहज ही में हो जाता है।1।

पर्वत सदृश ज्ञान की उत्पति हो जाती है तो पोल पाखण्ड सभी कुछ ढ़ह पड़ता है। उस प्रत्यक्ष दृष्टा साधक के अतिरिक्त वहां कोई और साक्षी नहीं बन पाता है। हृदय कमल खिल जाता है। वहीं से आनन्द की उत्पति होती है। जिसकी अनुभूति साधक ध्यानावस्था में करता है। जैसा विष्णु कहते है वैसा ही करें उनसे वाद विवाद कैसे करोगे। जिस अवतार धारण कर्त्ता विष्णु ने चार चक नव दीप को कंपा दिया है। चौरासी लाख जीव योनियों का सृजन किया है। साधक के जरा मरण का भय विष्णु मिटा देते है। सांसारिक पदार्थों में मेर चुकावो और परमात्मा से मेर जोड़ो। धरती धूजेगी आसमान थरहर कंपायमान हो जायेगा। उदीयमान पर्वत ढ़ह पड़ेंगे अर्थात् विष्णु की एक नजर से असंभव का भी संभव हो जायेगा।2।

साधक साधना में बैठेगा तब दसवें द्वार में मधुर गंभीर गर्जना होती है और अमृत रूपी वर्षा होती है। जहां नाभि, कुण्डली निवाण है वहां ऊर्जा शक्ति रूकेगी और वह पाताल का पाणी आकास को चढ़ेगा। तब उस परमात्मा गुरु का दर्शन साक्षात्कार हो सकेगा। खुरसाण पत्थर जिस प्रकार से लोहे के जंग को काट देता है उसी प्रकार से पाप रूपी जंग जीव के मेल को साधना में अनुभूति काट देगी। काम, क्रोध, लोभ, मोह की सेना हमला करने के लिये पीछे से आयेगी। वह साधक को पथ भ्रष्ट कर देगी किन्तु सतगुरु परमात्मा जाम्भोजी सहायक होंगे तिधारा खड़ग लिये हुए साधक की रक्षा

करेंगे। पीछे से आने वाली विघ्न बाधाओं को नष्ट तुम्हारी साधना करेगी।3।

जब तक संसार तथा सांसारिक भोग्य पदार्थों में ही अटके रहोगे तो कभी सुखी नहीं हो सकते। पाखंड को छोड़ो सत्यमार्ग अपनाओ तभी होने वाली अमृत वर्षा से सींचित हो सकोगे। भोग विलास हेतु ही यह जीवन आदरणीय नहीं है। इससे आगे भी अभि बहुत कुछ है जिन्हें प्राप्त करना है। अपना जो कुछ भी है वह परमात्मा के समर्पण करो। वह उसी का ही है उसी के समर्पण करते हुए तुम्हें कष्ट नहीं होना चाहिये। समर्पण भाव से ही निर्मलता होगी। सुपात्र बनोगे। उसी सुपात्र में ज्ञान ठहरेगा। मानसिक शान्ति सदा बनी रहेगी। आपके लिये स्वर्ग में पहुंच चुके पांच सात और नव करोड़ प्रतीक्षा कर रहे है। यह पार पहुंचने का सुअवसर प्राप्त है इसे व्यर्थ में खोना नहीं। सचेत होकर जीवन यापन करो। सदा तुम्हारी रक्षा सम्भराथल स्वामी जम्भदेव जी करेंगे।4।

साखी-47 (अज्ञात कवि)

आग्यम जी अग्यान क्रत जुग रोप करे, सेंसकला सरबंगी।
हरे के मोनीयरौ जी, रतन वीराणो लेर छिपो।
मंछ फीरत न संगी, हरि के मोनीयरो।
मंछ रूप संखासीर मारयौ, कीया उजाल वीराणौं।
कोरंभ रूप मध कीचक मारयौ, वारा रूप मुरदाणो।
नारिस्यंघ रूप हीरणाक हरक मीनीयर, आग्यम कृत जुग रोप करो।1।
मैणायर मणी हार बनारस खेत जुड़ै, सुरता सहज करो हरक मोनीयारो।
जीव देखै हरिचंद वाट सही, कब घुल्य घुल्य मीलै पीयारौ हरके मुनियारो।
मीलै पीयारो प्रीतम म्हारौ, प्रबस्य बंध्या खेवके।
जीवड़ा के काजे करणी झागी, गुरु मुख्य ठाढ़े पंथ सीरे।
बावन परसराम हेलमह राव, राम लछमण लंक जुड़ै।
सात कोड़ि जुग्य त्रेता पुंहती, यो र वनारस खेते जुड़े।2।
जीव करै अतीपति मन रली, जीवन सह दुख भारी।
कई-कई सीक चहोड़ करे, कई-कई फिरै जुहारी हरि के मोनीयरो।
फीरै जुहमी वड वौपारी, अपस जीव ले अंतर तरे।
कन्हड़ होय करि गउव चराई, पहल गोवल्य खेल खीलो।
बुध रूप खाफर खां मार्‌यौ, कंस केस संग्राम कीयो।

नव क्रोड़ी जुग दवापुर पुंहता, करै अतीपानो रलीए।3।
भैण्य त्रभुंवण राव सही, कल्य दसवै अवतारौ हरि के मोनियरो।
छोड़ो माया जाल सही, मन हीयड़ सोच विचार करे।
कल्यमां सुरनर आप प्रगास्यौ, मोख मुगति समझाय करै।
हरजी हरि परि लीव लेखो, बार कोड़ि संमाहया दई।
कल्यमा काल्यंग कुं हरि विसमल करिसी, कल्य दसवै अवतारि सहि।4।

भावार्थ-सर्वत्र व्यापक सहस्र कला से सम्पन्न अवतार धारी भगवान विष्णु सत्ययुग में धम्र की स्थापना की थी। हरि के प्रिय भक्तों हेतु अनेक अवतार धारण करते है जब संखासुर ने चौदह रत्न छुपा दिये थे जिस पर उनका कोई अधिकार नहीं था। दुनिया को अपने अधिकार से वंचित कर दिया था। तब भगवान ने मत्स्य अवतार धारण करके संखासुर दैत्य का विनाश किया था। समुद्रीय रत्न आदि सभी के लिये सुलभ कर दिये थे। भगवान ने कछुवे का रूप धारण करके मधु कीचक दैत्य का संघार किया था। ब्रह्माजी को वेद वापिस उपलब्ध करवाये थे। भगवान ने वाराह रूप धारण करके हीरणाक्ष को मारा था। जल में डूबी हुई धरती का पुनः उद्धार किया था। भगवान ने ही नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकशिपू को मारा था। इस प्रकार से सत्ययुग में आगम वेद ज्ञान की स्थापना की और अज्ञानता रूपी दैत्यों का संहार किया था। सतयुग में धर्म की स्थापना स्वामी नारायण विष्णु ने की थी।1। वाराणसी की पवित्र भूमि को भगवान शंकर ने अपनी तपस्या योग से पवित्र किया था। वहां अनेकों ऋषियों तपस्वियों का सम्मेलन हुआ था। सहज रूप से सुरति निरति करके योगाभ्यास द्वारा दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और अब भी हो रही है। जहां पर सत्यवादी राजा हरिचंद अपने धर्म की रक्षा हेतु बिक गये थे और सत्य का मार्ग अपनाया तथा अन्य आने वाले लोगों को प्रेरणा प्रदान की थी। अपने जीव की भलाई तथा अन्य साधक जनों के लिये त्रेता में पंथ की स्थापना हरिचंद तारादे रोहितास ने की थी। गुरुमुखी शिरोमणी पंथ की स्थापना की थी। त्रेतायुग में ही बावन, परसराम, महाराजा, राम-लक्ष्मण आदि के रूप में अवतार धारण किया और राम-लक्ष्मण लंका में रावण से जाकर युद्ध किया और असुरों का विनाश किया। सम्पूर्ण त्रेतायुग में सात करोड़ जन वैकुण्ठ पहुंचे थे। यह सभी कुछ भगवान विष्णु का ही प्रताप था जो इन आदरणीय राजा महाराजाओं के रूप में आकर अपने भक्तों

को सचेत किया था।2।

द्वापर युग में जीव मनमानी करने लगे थे अपने सुपंथ को भूल चुके थे। बड़े-बड़े धर्म के धुरन्धर धर्म का व्यापार करने में अपनी ही मनमानी करने लगे थे। इसी अपने कुमार्ग से नरकों में जाने का मार्ग अपना लिया था। उसी समय ही कृष्ण रूप में भगवान विष्णु आये और बंसी बजाई, गऊ चराई, धरती छेदी, काली नाथ्यो, असुर मार किया बेगारी।सबद। नौ करोड़ द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर के साथ कृष्ण चरित्र से पार पहुंच गये थे।3।

कलयुग में बुद्ध रूप में अवतार धारण करके भगवान विष्णु ही गया जी में रहे, जो काफिर हो गये थे उन्हें आस्तिक बनाया। पंथ चलायो, मार्ग बताया, यज्ञ को दुषित करने वाले याज्ञिकों को परास्त किया। कलयुग में ही दसवां अवतार कलयुग के अन्त में आयेगा। किन्तु नौ अवतारों से कार्य पूर्ण नहीं हो सका अवशिष्ट कार्य को सम्पूर्ण करने हेतु 'शेष जंभराय आप अपरंपर, अवल दिन से कहिये'' ''जाम्भा गोरख गुरु अपारा'' अपार गुरु के रूप में गोरख एवं जाम्भा कलयुग के मध्य में आये है। किन्तु ''काजी मुल्ला पढ़िया पंडित निंदा करै गिंवारा, दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो तो कहिया करो हमारा''।सबद। बारह करोड़ प्राणियों का कलयुग में उद्धार हेतु बुद्ध, गोरख एवं जाम्भा आये है। कलयुग पूर्ण होते-होते यह कार्य सम्पन्न हो जायेगा। सतपंथ बता दिया है। भ्रम मिटा दिया है। ''गुरु का सबद मानिलो तो लंघिबा भवजल पारूं''।सबद।

साखी-48 (समसदीन)

अलमेरो मन खरौ उमाहीयड़ौ, साम्य मीलैण दिदारौ।
हम विणजारड़ीया।टेक।
हम विणजारा पुर साह का, विणज करण वौपारौ।2।
खोटा-खोटा विणज नै वोहरा, माण्यका दा वौहारौ।3।
इह जुग्य पहल मोमिण, हुय चालो हंस यारो।4।
इह जुगय दुज मोमिणौ, मत बसौ पड़िहारौ।5।
इह जुग्य तीज मोमिणौ, जीवड़ा चेति संभालौ।6।
इह जुग्य चौथ मोमिणौ, अब जीवड़ो की बारौ।7।
पुरष पचा धो आवलौ, बाली परण हारो।8।
मेघा डंबर छत्र धरा, दुल दुल होय असवारो।9।

हाथि तिधारो खड़्ग लीया, दाणवां करै सिंघारौ।10।
धरण्य तांबै की हुवली, ठंणकी बजावैण हारो।11।
हंस रमै टोली रव, लंघीय भुयजल पारो।12।
पार गिराए वै गया, चूक आवण्य केरो।13।
अमी कचोला वै पीवै, सहजै सहज हींडायौ।14।
संमस पोत बोलीयो, कल्य दसव अवतारौ।15।

भावार्थ–सर्व जगत के स्वामी आलम से मिलने की उमंग समसदीन कहते है कि मुझे हो रही है। हम तो व्यापारी है। यही सच्चा व्यापार करने आये है। हम तो व्यापारी सच्चे है सच्चाई धर्म का व्यापार कर रहे है। हम खरा सच्चा व्यापार करते है। खोटा झूठा व्यापार नहीं करते। ''माणिक पायो फेर लुकायो''।सबद। हम तो हीरे माणिक्य का उतम वस्तु का व्यापार करते है जिससे उतम फल मुक्ति युक्ति प्राप्त कर सके। हे मोमिणों! प्रथम युग सतयुग में जीव हंस रूप में विवेक से संसार सागर से पार उतर जाते थे। तीसरे युग में जीव ज्ञान विज्ञान से सचेत होकर अपना उद्धार कर लेता था। दूसरे युग में वैराग्य ज्ञान भक्ति से अपना कल्याण कर लेता था। अब कलयुग में इस जीव के उद्धार का मार्ग भी शुचि, दान, दया, जरणा युक्ति से होगा। यह सभी कुछ बताने हेतु संत रूप में विष्णु का अवतार जाम्भोजी के रूप में हो रहा है। इनसे पूर्व भी बुद्ध गोरख आदि दिव्य अलौकिक सद्गुरु के रूप में अवतार हुआ है। कलयुग के अन्त में कल्कि दसवां अवतार होगा। जब धरती पर पाप पंक छा जायेगा। चारों और अज्ञानान्धकार का साम्राज्य होगा कुछ भी पाप पुण्य कर्म सुकर्म दुष्कर्म दिखाई नहीं देगा। त्रयगुण, सत्व, रजो और तमो गुण वाला खड़्ग हाथ में लेकर यथा युक्ति विनाश पालन तथा उत्पति कर्त्ता के रूप में कल्कि भगवान आयेंगे तभी यह धरती पुन: पाप से मुक्त होकर शुद्ध पवित्र ताम्र वर्ण की हो जायेगी। दानवों का विनाश होगा। परमहंस भक्त जन आनन्दित होकर रमण करेंगे। अवशिष्ट बचे हुए कलयुग के बारह करोड़ों में से सभी कलयुग के अन्त में पार उतर जायेंगे। सतयुग में भगवान विष्णु ने प्रहलाद को वचन दिया था। तेतीस करोड़ के उद्धार का वह चार युगों में पूर्ण हो जायेगा। भक्त जन प्रहलाद पंथी अमृत की प्राप्ति करेंगे। ऐसा समसदीन विनती करते हुए कहते है।

साखी-49 (अज्ञात कवि)

मुंधै मुख दस मास, ओदर मांय रहयौ।
प्यंड दुख पायो रे, दुख संगठ सहयौ।
सहयौ संगठ ओदर असौ, चित हुं चिंता घनी।
अवर अबकी बार कबहु, भग्यत्य साधौ हरि तनी।
ओदरि आतर बोल बोल्या, बौह हरि जग्य जामन भयौ।
संसार का जब पुवन लाग्या, मूढ़ सभ वीसरि गयौ।1।
बालक वैकल भयौ, चेत न संभाल्यौ।
ना रह्यौ अन्तर भाखी, राल मुखि बल चुयौ।
पड़यौ लोट धरनी उपरि, रोय करि असथान पीयौ।
मूत विष्टा रह्यौ बैठो, सुकरतन कीयौ कोयबो।
भुलौ तुं भुदु भगति हरि की, बालापण्य यौ खोयबो।2।
व्रथा जोबन वीसारीयौ, जो मद मातो चौह दिस फीरै।
परधन पर त्रीया देख जोबन रे, मन रवै परधन देखि त्रीया।
चीत ठोर नै राखिया, अमी तज्य करि पीव विष हरि।
विषय विष सुं राचीया, काम माया मोह माता।
पार ब्रह्म वीसारीयां, काम माया मोह माता।
ब्रथा जोबन वीसारीया।3।
भो सागर दुतर तरो, जुरा बुढ़ापा रे प्राणी आइया।
सुध्य बुध्य वीसरी रे, तब पछताइया।
पछताय जब सुध्य बुध्य वीसरी, श्रवन सबद नै बुझइ।
जीव कारेण्य कर लालच, जीन जगत नै सुझई।
भणै छीतम सुणौ रे नर, भरम भुला क्यों रहो।
कीजै भाव सेती भगति हरि की, भौ सागर दुतर तीरौ।4।

भावार्थ–हे प्राणी! गर्भवास में नीचे मुख तथा उपर पैर करके दस मास तक रहा था। उस समय शरीर से दुख पाया था। अनेकों संकटों को सहन किया था। गर्भ में अचेत अवस्था में रहा था। अपने परिजनों को चिंता रहती थी कि न जाने क्या होगा। गर्भ में कवल किया था कि अबकी बार जन्म लेते ही हरि की भक्ति में अपना जीवन लगा दूंगा। फिर से इस घोर अन्धकार नरक में नहीं आऊंगा। गर्भवास की पुकार हरि ने सुनी तब बालक का जन्म

सुख पूर्वक हुआ। बाहर आते ही संसार की हवा लगी तब वहां की बात वहीं रह गई। मूढ़ सभी कुछ भूल गया। बालक अवस्था विकल बैचेन हो गया। सचेत होकर अपने आप को संभाल नहीं सका।1।

जैसी गर्भवास में अरदास की थी वैसी बाहर जन्म लेकर नहीं कर रहा सभी कुछ वहीं भूल गया। बाल्यावस्था के खेल ही खेल में सभी कुछ भूल गया। जब भूख लगती तो रो लेता माता पीने को दे देती। बालक अवस्था में किसी प्रकार की खाने-पीने, नहाने आदि की शुद्धता नहीं थी। शुद्धता-अशुद्धता का अन्तर करने की क्षमता नहीं थी तब हरि भजन की क्षमता तो कैसे हो सकती है। इस प्रकार अज्ञानी रहकर हरि की भक्ति बाल्यावस्था में भूल ही गया।2।

बाल्यावस्था के पश्चात् युवा अवस्था आ गई। जवानी की मस्ती में चहुं और मदमस्त होकर भटकने लगा। पराया धन और पर त्रिया देखकर उसकी प्राप्ति की कोशिश करने लगा। न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, नीति-अनीति का कुछ भी ख्याल नहीं किया। दिन-रात विषय वासना में रत रहने से अपने आप के बारे में कुछ भी सोच नहीं सका। अमृत को छोड़कर विषय विष में रचपच गया। काम क्रोध माया मोह ममता के अन्दर उलझकर परब्रह्म परमात्मा को भूला दिया।3।

इस दुस्तर भवसागर से तिरने के लिये तैरना सीखना था वह तो नहीं सीखा किन्तु डूबने का मार्ग अपना लिया। इस जीवन के परिवर्तनशील होने से युवा से बुढ़ापा आ गया। सुध बुध चेता सभी कुछ भूल गया। बुढ़ापे में पराये वशीभूत होकर पड़ा रहा। अब कुछ भी नहीं हो सकता था। पीछे कुछ किया नहीं उसी के लिये पछतावा करने लगा। अब न तो आंखें देख रही है। और न ही कानों से शब्द श्रवण हो रहा है। इस जीव के कारण लालच किया था किन्तु वह धन संपति कुछ भी काम नहीं आयी। परिवार के लोगों ने उस पर कब्जा कर लिया। हे नर! भ्रम में भूला हुआ क्यों घूमता रहा। इस जीव की भलाई के लिये हरि की भक्ति धर्म कर्म करना चाहिये था वह किया नहीं तो भवसागर से पार कैसे उतर सकेगा। यही जीवन की छोटी सी कहानी है। सभी के लिये लागू होती है। जानते भी है फिर भी समझते नहीं है यही आश्चर्य है।

साखी-50 (अज्ञात कवि)

लाडे गोरी वर सांवलौ, सीध व्याह संजोया।
चौह चकि आण फीराय, लगन लिख्या घण सोच्या।
घणां सोचि क जदि लगन लीखीया, दिन महुरत ठांणीयो।
जगराय जग मंडण आप नीरंजण, कर आपो जाणीया।
थारौ बोल कवल न टल ज्युग-ज्युग, भंवर भारथ मोहेला।
जगत जागीद वीधाता, लाडे गोरी वर सांवलौ।1।
ल्याइ आरतड़ा मंडप जगै जोती, वीर पचा धीड़ा।
झबहि मिलै सुरनर गोती, मिलै गोती विसन जोती।
मिलै गोती विसन जोती, सकल्य कल्यमां मोहेला।
गुर व्रसपति वेद बाचै, तेतीस क घरि सोहिला।
सतगुर ऐ वाहण चड़यौ झांभराय, साम्य संत बुलाइयां।
चांद सुरेज राखा मसो, आरतो ले आइया।2।
सोह सहरड़ो श्री रंग, साच गुंथ मालण्य ल्याई।
वाजीयड़ा पांच सबदां, मील्य करत बधाई।
करत बधाई मति आई, पति संभु भेजीया।
खलक माल्यक तजत बैठो, नव वेर दांणौ छेदीया।
परमोध्य जप तप हुवा पुरा, ग्यान त्रभुवण मोहवे।
तरण तारण छत्र मसत्यके, सेहरौ सीर सोहवै।3।
साम्य काज वडेरवा, साह खुन्यवता।
अबकै ल्यौह संमाहि, वारै कोड़ि न चीता।
बारा कोड़ि न चीत कहीयै, रतन सांच ढ़ालिया।
संघण घण ज्यौ घोर बुठौ, वीसन जी के फेरवां।
जुलफे कार ले चड़यौ दुल दुल, साम्य काज वडेरवां।4।

भावार्थ- इस साखी में प्रकृति और पुरूष के विवाह का गीत गाया है। प्रकृति यह पांच तत्व यानि आकाश, वायु, तेज, जल और धरणी तथा मन बुद्धि अहंकार ये आठों प्रकृति कहलाते है। प्रकृति की समता रूप से ही सृष्टि की रचना होती है। इस प्रकृति के ही तीन गुण- सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण है। पुरूष परमात्मा और प्रकृति का सम्मिलन होने से ही उत्पति होती है। यह सांख्य दर्शन रचयिता कपिल मुनि का अभिमत है।

यहां इस साखी में प्रतीक रूप में संसार में पति पत्नी को लिया है। वर-वधु जिस प्रकार से विवाहित होते है। मंगल गीत गाये जाते है। विवाह संस्कार मूहुर्त देखकर किया जाता है। हवन, यज्ञ किया जाता है। पण्डित वेद मंत्रों का उच्चारण करते है। प्राय: कन्या गोरे वर्ण की ही होती है। अर्थात् सात्विक शुद्ध सौम्य उसी प्रकार यहां पर भी प्रकृति को कन्या मानकर गौर वर्ण कहा है। वर कृष्ण वर्ण का कहा है। वैसा ही भगवान कृष्ण तथा विष्णु चित्र में प्रदर्शित किये है। प्रकृति पुरूष ही स्त्री पुरूष है वही दोनों ही साम्यावस्था ऋतुकाल में बालक का जन्म देने के कारण बनते है। उसी प्रकार से प्रकृति पुरूष से भी ऋतु आने पर पेड़ पौधे जीव जन्तु मानव आदि उत्पन्न होते है। यही विवाह है।

इस कलयुग में प्रकृति में विकृति आना निश्चित है। यह प्राय: इस समय देखने को मिल रहा है। जिसे आज की भाषा में पर्यावरण का दुषित होना कहा जाता है। सभी लोग इस समस्या से चिंतित भी है और प्रदुषण को बढ़ाये भी जा रहे है। इस प्रकार का प्रदुषण फैलता रहेगा तो वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति सभी कुछ देने से मना कर देगी। यह वसुधा कंपायमान हो जायेगी। इस धरती से मानव समाप्त हो जायेगा। ऐसा दिन शीघ्र ही कुछ वर्षों में देखने को मिल सकता है।

ऐसी भयावह दशा में सभी मानव सृजित विकास नष्ट भ्रष्ट हो जायेगा तो पुन: भगवान ही दसवें अवतार कल्कि के रूप में आयेंगे और इस प्रदुषित उसर भूमि का पुन: उद्धार करेंगे। इस धरती को पुन: हरि-भरी खुशहाल करेंगे। इसलिये इस साखी में कहा है कि पुन: भगवान कल्कि इस कंवारी धरती से विवाह रचायेंगे और पुन: उत्पति प्रक्रिया प्रारम्भ करेंगे।

जाम्भाणी साखियों में भविष्य के बारे में बहुत कुछ बताया है। आगे दसवां अवतार कल्कि होगा ऐसा अनेक बार वर्णन हुआ है। यह साखी भी उसी बात को दोहराती है। जाम्भाणी कवियों ने जाम्भोजी को अवतार रूप प्रगट किया है किन्तु नव अवतारों द्वारा जो कार्य नहीं हो सका था अर्थात् बारह करोड़ जीवों का उद्धार इसलिये जाम्भोजी का अवतार बतलाया है। बिश्नोई पंथ पर चलकर कलि के अन्त तक बारह करोड़ प्राणियों का उद्धार निश्चित किया है। इस समय आप और हम भी उसी पंथ के पथिक है अवश्य ही पन्थ को पकड़ें और अपने गन्तव्य स्थान तक पहुंच जायें।

साखी-51 (दीप कृत)

कांगणा मेरे बाले श्री रंग, अंति रूसनाइयां।
बलीयड़ा तेरी बांहण सोहेदरा, देव ज सो मति माइया।
बुलाय पटवा वल्या कांगण, और लाल गुंवालीया।
स्याही सपेदी ओर रंग रची, नखे नख दीव लाइया।
करंग चीकी इधक सोभा, जात्य वरणी न जाइया।
दीप जप नांव हरि को, कांगैण रूसनाइयां।1।
तेरो कांगणौ बाला चत्रभुज, रतन जड़ाइया।
हीर मुकताहल, मोती मोल्य मंगाइयां।
मोल्य मंगाए माय हितकारी, सुणौ पियारे जग धणी।
महल्य मंगलचार गाव, रूप शोभा अंति घणी।
ओपमा इधकार ओप, नगे नग मीलाइया।
दीप जप नांव हरि कौ, कांगण रतन जड़ाइया।2।
तेरी खोलगी ग्रहण्य चत्रभुज, अंति रंग घोलिया।
तेरी खोलगी राज्य दुलारी, जीस मन्य रलीया।
राज्य दुलहन्य हसी दीलमां, रूप चत्रभुज मोहीया।
कान्य कंठी कपोल कुमल, नैन काजल सोहीया।
दांत दाड़यौ तीलगर गीया, कांमणी रतना लीया।
दीप जपै नांव हरि कौ, डोरियां अंति घोलीया।3।
कीसन जी जीतौ जी करि हांसी, वसदेव को नंदन कहीय।
मथुरा को वासी किसन कहीय, नीकट जमनां जल वह।
कान्ह होयक गऊ चराई, कीसन होय परसिध रह।
असर सिधारै कारज सरै, प्रीतम सु प्रीतियां।
दीप जप नांव हरि कौ, कीसन जी हरि जीतिया।4।

भावार्थ- बाल कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन दीप कवि ने इस साखी में किया है। हाथों में कंगन हमारे बाल कृष्ण के शोभायमान हो रहे है। बलराम तुम्हारा भाई और सहोदरा तुम्हारी बहन तथा देवकी तुम्हारी माता वसुदेव तुम्हारे पिता ये सभी तुम्हारे परिवार बहुत अच्छे है। इनके साथ ही जसोदा नन्द बाबा ग्वाल बाल गोपियां गायें बछड़े यमुना का किनारा वृन्दावन गोकुल आदि शोभायमान हो रहे है। कृष्ण को कंगन अपने अपने घर बुलाकर गोपियां बहन

भाई सहोदरा आदि पहनते है। नखों में हाथ में मेंहदी रची गयी है जो अति शोभायमान हो रही है। दीप कहते है कि इस प्रकार के श्रृंगार से सुसज्जित बाल गोपाल का नाम जपो आनन्द मंगल होगा।1।

चतुर्भुज कृष्ण के हाथों में कंगन रत्नों से जड़े हुए पहनाये गये है। उन कंगन में हीरा मोती आदि रत्न मंगवाये गये और जग मालिक को शोभायमान किया गया। ग्राम की महिलाऐं मंगल गीत गा रही है। गीतों में कृष्ण के दिव्य रूप की शोभा का वर्णन कर रही है। अनेक उपमाएं देकर कृष्ण के दिव्य रूप को प्रगट करने का प्रयास कर रही है। शरीर पर कंगन आदि पहनाकर अनेक नगों से शरीर में प्रकाश द्विगुणित हो रहा है।2।

वस्त्र सुन्दर पहनाया था जो भगवान के दिव्य रूप से अलंकृत हो रहे थे। जैसी राजदुलारी रूक्मणी को श्रृंगार से सुसज्जित किया था उससे ही कहीं अधिक कन्हैया भी विवाह के समय शोभायमान हो रहे थे। राज दुलारी त्रिभुवन स्वामी के रूप को देखकर मोहित हो रही थी। मंद मंद मुस्कराकर यह भाव प्रगट कर रही थी। उसी प्रकार दुल्हा बने कृष्ण भी अपने हाव भाव से अपनी भावना प्रगट कर रहे थे। गले में स्वर्ण कंठी कानों में कुण्डल नयनों में काजल शोभायमान हो रहा था। कन्हैया के दांत दाड़िम जैसे तेल वर्ण की अंगरखी युवतियां ऐसे सौम्य रूप को देखकर बारंबार बलिहार जाती है। दीप कहते है कि ऐसे दिव्य अलौकिक रूप गुण सम्पन्न श्री चतुर्भुज धारी श्री कृष्ण का भजन जप करें।3।

वर वधु के गृह प्रवेश के शुभ खेल में सखियां कहने लगी कृष्ण जी आपको ही जीतना है। कहीं हार गये तो फिर सदा के लिये हारते ही जाओगे, आपकी हंसी होगी। आप वसुदेवजी के पुत्र कहलाते हो और मथुरा के वासी हो। आपके निकट यमुना जी बहती है। आपने कन्हैया बनकर गऊवें चराई है। इस समय द्वारिकाधीश किसन होकर प्रसिद्ध है। आपने बड़े-बड़े असुरों का संहार किया है। अनेकानेक लोगों का कार्य पूर्ण किया है। प्रिय जनों के आप प्रीतम हो, दुष्टों के आप खैंकाल भी हो। आप सर्व समर्थ होते हुए इस रूक्मणी कृष्ण के विवाह खेल में हार गये तो हंसी के पात्र बन जाओगे। कवि दीप कहते है कि ऐसे भगवान श्री कृष्ण के नाम का जप करे जिस प्रकार से कृष्णजी खेल में जीत गये। उसी प्रकार से आप भी जगत के खेल में जीत जाओगे।

साखी-52 (पदम द्वारा रचित)

घरि क्यों न आवौ प्रभु मेरे जादवां, तंम विन्य नैन दुराने।
घर तो हम कु वन भया, तारे गीनत वीहाने।
गीनू तारे रीन सारे, इधक अंन न भाव ही।
सुघन्य उभी माघ जोवां, मीदरी काग उडावही।
उडि जाहे वायस लेह भोजन, वीलस्य सो मन्य भावही।
पदम के प्रभु नंद नंदन, जादवां कदि आवही।1।
लेखा चंदण के कारण, कुबज्या भइ पियारी।
बहुरी मधुवन रम रहै, छोड़ी चित हमारी।
चित हमारी उन छाड़ी, छाय मधवन छाइया।
कंवण अवगण्य तजी उधौ, सो संदेसा नै आइया।
जाय कहीयो किसन सेती, इधक गीन्य क बचाइया।
रिख चंदण के कारण, कुबज्या भई पियारीया।2।
गोकल मधवन्य अंतर घना, वीच वह जमना वरणी।
घरि क्यों न आवौ प्रभु मेरे कोकिला, तंमै विन्य झंप्या न जाय।
जांहि झंप्या न जाय तुम विन्य, कहो किस विध्य आइयां।
झंप लेके पड़ु जमना, अहलै जलंम गुमाइयां।
वसुदेव सुत तुम डरो नाही, विरह वेदन्य अंत्य घणी।
पदम के प्रभु नंद नंदन, वीच वहै जमना वरणी।3।
घरि क्यों न आवौ प्रभु मेरे कंवल तीन, औगण तजो हमारो।
जो हम औगण लख कीया, तो गुणदास तुम्हारौ।
गुणदास थांरी नंद स्वामी, तुमै चातर मुथरा धंनी।
हम अधम जात्य अहीर गुजर, तम ज नागर बोह गुनी।
बोह गुणी तुम नंद स्वामी, हम भइ कु पीयारीया।
पदम के प्रभु नंद नंदन, मीलौ वेग्य मुरारीया।4।

भावार्थ-उद्धव गोपी संवाद सभी कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया है। यहां पर भी पदम कवि ने गोपियों की विरह व्यथा इस साखी द्वारा इस प्रकार से प्रगट की है। हे प्रभु यादव कृष्ण! आप हमारे घर पर क्यों नहीं आते। आपके देखे बिना ये अंखियां दु:खी हो रही है। हमारे घर अब घर नहीं रहे है उजड़कर वन हो गये है। अब हमारी दशा अत्यन्त दयनीय

हो गई है। रात्रि में निंद्रा नहीं आती है। पूरी रात्रि तारे गिनते हुए व्यतीत की जाती है। आपके बिना अब भूख भी नहीं लगती है। हम एकान्त शून्य में एकटक दृष्टि से आपके आने का मार्ग देखती रहती है। हमारे घरों पर जब कौवा आकर बैठता है तो उसे उड़ा देती है और आपका संदेशा लाकर देने के लिये कहती है। हे कौवा! उड़ जावो! हमारे से अपना प्रिय भोजन ग्रहण करो। आपका विलास मेरे मन को अच्छा लगता है। पदम कहते है कि गोपियां कह रही है कि हमारे नंद नंदन प्यारे आने का समाचार कब कोई सुनायेगा।1।

हे नन्द नन्दन! आप मथुरा में चले गये है, वहां पर चन्दन का लेप लगाने वाली कुबजा आप को बहुत प्यारी हो गई है। इसलिये आप वापिस मधुवन में लौटकर नहीं आये है। आपको हमारी चिंता बिल्कुल ही नहीं है। हमारी चिंता उन कन्हैया ने छोड़कर मधुवन में तो केवल अब आप यादगार रूप में ही रह गये है। हे उधो! हमने कौनसा अवगुण किया था जिस कारण से हमें यहां पर छोड़ दिया है। ऐसा कोई संदेशा अब तक आया क्यों नहीं। हे उधो! अब आप वापिस जाकर कन्हैया से हमारा संदेशा भी कह देना कि आगे कब तक आप इसी प्रकार से तड़पाते रहोगे। आपके दर्शनों से वंचित रखोगे। वहां केवल कुब्जा ने चंदन का लेप ही तो लगाया था इसी कारण से ही उनके वशीभूत हो गये।2।

हे उधव! यहां हम गोकुल में रहती है और मथुरा में जाने के लिये बीच में काफी फैसला है। बीच में यमुना जी बहती है। आप ही हमारे घर पर वापिस लौटकर क्यों नहीं आ जाते। तुम्हारे बिना हमें चैन नहीं पड़ता। एक क्षण भी तुम्हारे बिना हम रह नहीं सकती। अब आप ही बताइये कि आप किस प्रकार विधि से हमारे यहां मधुवन में वापिस आ सकते है। हम तो कुछ भी जानती नहीं है। अब हम भी क्या कर सकती है। आपसे मिलने के लिये यमुना में छलांग लगाये तो डूब जायेंगी। यह जीवन ही व्यर्थ चला जायेगा। क्या तुम अपने पिता वसुदेव जी से डरते हो। ऐसा डरते हो तो हम कहती है कभी डरना नहीं वे तुम्हें यहां आने से रोकेंगे नहीं। यदि ऐसी बात हो तो हमारी वेदना उनसे कह सुनाना वे बड़े दयालु है। हमारी दशा समझते है। पदम कहते है कि प्रभु नंद नंदन गोपाल से मिलना नहीं हो रहा है बीच में यमुना बहती है।4।

हे कमल नयन! आप हमारे घर क्यों नहीं आ रहे है। यदि हमने कुछ

अवगुण किया है तो हम क्षमा मांग रही है। भूल जाइये। यदि हमने लाखों अवगुण, अपराध तुम्हारे प्रति किये है तो भी हम तुम्हारे दास है। हे मथुरा के स्वामी! आप हमारे किये हुए अपराधों को क्षमा भी तो कर सकते है। हम तो अधम जात गुजर है। आप श्रेष्ठ नागर राजा हो बहुत गुणों के धनी हो। हो सकता है आप बहुगुणों के धनी हो हम नीच है। आपकी बराबरी करने में असमर्थ है इसलिये आप हमें छोड़कर चले गये हो। किन्तु याद रखो स्वामी अपने सेवक के अवगुणों की तरफ ध्यान नहीं देते। जबकि हम आपके तन-मन-धन से समर्पित हो चुकी है। पदम कहते है कि गोपियां प्रार्थना कर रही है कि हे नन्द नन्दन आप अतिशीघ्र आकर मिलो यही हमारी आशाऐं है पूर्ण करो।

साखी कणां की-53 (सुरंदी रचित)

दिल चंगा मन्य चांदिया, चांदिणा ते मोमिण संसार जी। गुरु कायमा टेर।
साहेब मेरा वांणीया, सहज करे वोपार जी।2।
वीण डांडी विण्य पालड़ा, तोल्या सब संसार जी।3।
मैं कुता तेरे नांव का, मोतियो मेरा नांव जी।4।
गल हमार रासड़ी, जां खांच जां जांव जी।5।
किसका माई बाप है, किसका पख परवार जी।6।
किसकी मंडप मेड़िया, किसका ए घर बार जी।7।
सांई की मंडप मेड़ियां, अलख तणां घर बार जी।8।
भुंयजल अथघ अद्यावणौं, किस विध उतरा पारी जी।9।
करे सुकरत की नांवड़ी, जिसे उतारो पारी जी।10।
बोल दीन सुरंदी, अलप जीवण संसारय जी।11।

भावार्थ-हे गुरु कायम! अर्थात् प्रत्यक्ष रूपेण उपस्थित हम आपसे विनती कर रहे है। दिल साफ सुथरा कपट रहित होगा तभी मन में ज्ञान प्रकाश हो सकेगा। जिसके मन में प्रकाश हुआ है वही सच्चा मोमण भक्त इस संसार में होगा।1। मेरा साहिब परमात्मा मेरा सेठ साहुकार है। वह तो सहज रूप से ही सम्पूर्ण सृष्टि का पालन पोषण करने वाला है।2। उसके पास न तो किसी प्रकार की तराजू है और न ही नापने का कोई साधन है वह तो सभी को यथा युक्ति उनके कर्म भाग्यानुसार बराबर देता है।3। हे देव जी! मैं तो आपका कुत्ता हूं। मोतीयो मेरा नाम है। मेरे गले में आपने रस्सी डाल रखी है।

जहां आप खींचकर ले जायेंगे वहीं मैं बड़ी खुशी से चला जाऊंगा। मैं तो अपने मालिक का सेवक हूं। मालिक की आज्ञा ही मेरे शिरोधार्य है।5। इस संसार में कौन किसका है। माता-पिता, भाई-बहन, परिवार आदि केवल यहां इस लोक तक ही सीमित है। यहां से प्रस्थान करने पर कोई किसी का साथ देने वाला नहीं है। यहां से तो अकेले ही प्रस्थान करना होगा। ''सुकृत साथ सगाई चालै''।सबद। सुकृत पुण्य किया हुआ ही साथ चलेगा। यही गुरुदेव आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। यह संसार बड़ा ही विकट है। इससे पार उतरना भी बहुत ही कठिन है। बिना आपकी शरण ग्रहण किये किस प्रकार से पार उतर सकते है।9। यही उपाय गुरुदेव आपने बताया है कि सुकर्म की नाव बनाकर ही उस पर बैठकर संसार सागर से पार उतर सकता है। कवि सुंरंदी कहते है कि यह जीवन थोड़े समय के लिये ही मिला हुआ है। ध्यान रहे कभी भी जा सकता है। कहा भी है ''बिजुली झबुकै मोती पोव है तो पोयले'' बस इतना ही क्षणिक जीवन है इसी क्षणिक अवसर में यदि मोती पोना है तो पोयले। नहीं तो अन्धकार होना निश्चित है सावधान रहे। ''जुग जागो जुग जाग पिराणी, कांय जागंता सोवो''।सबद।

साखी राग हंसो-54 (केशोजी द्वारा रचित)

सतगुरु जी साहेब सीरजण हार, थल्य सीर आयो जी दुख मेटण दातार।1।
कोड़्या बारां क काज जी, गुर झंभ लीयो अवतार।2।
म्हान देवजी मीलिया जी, कल्य दसवै अवतारय।3।
हम लोभी लबधी जी, त्रीकम तारण हार।4।
हम खुनी थारा जी, तुं बाबल बकसण हार।5।
चौ खैणी फिरीयाया जी, जंभ न छाड़ लार।6।
सेख सदो नीवाज्यो जी, खीयै सुखाल्यक जी।7।
कीवी महर मुरारी जी, बोह पापी तारया जी।8।
नर नारी बोह नारीजी, दोय रावण गोयंद जी।9।
साम्य कीया सुचीयारा जी।10।
दीन केसो बोल जी, म्हारी आवागुवैण्य नीवारोजी।11।

भावार्थ- दुख मिटाने वाले, सर्व सृष्टि की सृजना करने वाले, सतगुरु साहिब दाता सम्भराथल पर आये है।1। बारह करोड़ जीवों के उद्धार हेतु गुरु जाम्भोजी ने अवतार लिया है।2। देव स्वरूप सतगुरु ने हमको दसवें

अवतार कल्कि से मिलाया है।3। हम तो लोभी लब्धी कुलालची है हमें तो त्रिकम त्रिमूर्तिधारी भगवान विष्णु ही पार उतारने वाले यहां पर कृपा करके आये है।4। हम तो आपके अपराधी है बहुत से अपराध जन्मों-जन्मों में करते आये है। किन्तु आप तो हमारे पिता हो हमारे गुन्है माफ कर दोगे।5। हम तो चारों खैण में अनेक प्रकार की जीव योनियों में भटकते हुए आये है। बार-बार यमदूतों के फंदे में फंसे है अब तो आप ही छुड़ाने वाले है।6। हे गुरुदेव आप ही ने तो शेख सदो को झुकाया था। मरती गऊवें छुड़वायी थी। उन्हें नमन करना, जीवों पर दया करना सिखलाया था।7। हे मुरारी! आपने मेहर करके अनेकों पापियों को पार उतारा है।8। अनेकों नर-नारी, छोटे-बड़े पापी-पुण्यवान जनों को कृपा करके संसार सागर से पार उतारा है। रावण गोयंद जो पशु चोर थे उन्हें भी आपने चोरे हुंता साधु किया था।10। गरीब केशो बोल रहा है, आपसे विनती कर रहा है कि हमारा भी जन्म मरण के चक्कर से पीछा छोड़ा दीजिये जी। यही शुभ कामना है। स्वीकार करें जी।

साखी अज्ञात-55

जुल्य चालो मेरो भाइड़ा, इण्य पंथड़ल पीयार।
जुग्य आयो जांभेसर राजा, कल्य दसवै अवतार।
कल्य दसवै अवतारि संभरथल्य, जांस परापति पायौ।
घण नर गंद्रफ बेली, साच सबद सुणायौ।
उतर दिखण पुरब पछयम, बागड़ देस सुहावौ।
सुर तेतीसां हुवै मीलावौ, जुल चालो पंथ पियारो।1।
मोख दीय झांभेसुर राजा, विसन जंपौ मन्य साधौ।
मोह कह मेरी आंगल्य मन्यसा, हीयड़ बंधण गाढ़ो।
हीयड़ बंधण गाढ़ौ गहि करि, ओह मन रीधौ ग्यानै।
गुरु अचंभौ सुरनर बेली, हरे सुं जलमै नीधाने।
ग्रभवास कवल कीयो थो, वीसन नांव जे कहीय।
अब होय कस्ट महा दुख भारी, मोख मुगति घरि जाइय।2।
बारां नै पुंहचाव सतगुर, झंभ सही सुं वुठौ।
अलख चत्रगुंण आसण्य बठौ, हंसि मुखि बोल मीठौ।
बोल मीठौ थल बइठौ, जंबु दीप मंझारी।
आप सुसाहेब कवले रावल, आपे कीसन मुरारी।

एकल वाई थल सीरय आयौ, बागड़ देस सुहाव।
कोड़ि इकवीस वैकुण्ठय पहुंती, बारा नै पुंहचाव।3।
पार गिराय वसेरो कहीया, नर निरहारी आयौ।
च्यारि चहुंचकि फीर दुहाई, नींद झबकि जगायो।
नींद झबकि जगायो मोमिण, न्हांणौ न्हांणे करंता।
एक मन्य एक चित करे बंदगी, कंवला ज्यौ विगसंता।
मुख माण्यक अलीयो मत भाखौ, बोहड़े न होई फेरौ।
जलम जलम का पछतावा, चुक द्यौ गिराय बसेरौ।4।

भावार्थ–हे भाई लोगों! इस जाम्भोजी द्वारा बताये हुए बिश्नोई पंथ पर सभी लोग साथ मिलकर चलें और इस पंथ से प्रेम रखें। इस कलयुग में दसवां अवतार जो अंत में बताया था वह अभी जम्भेश्वर जी के रूप में आये है। जिसका भाग्य–सुभाग्य होगा वही प्राप्त कर सकेगा। अनेक लोगों को तथा गन्द्रफ, सुर–नर आदि सभी को श्रीवायक सुसबद सुनाया है। चारों दिशाओं में विशेष रूप से बागड़ देश में शोभायमान हो रहे है। तेतीस करोड़ देवताओं से इस देश के लोगों को मिलाने के लिये यहां पर आना हुआ है। इसलिये आपके लिये यह सुपथ बताया है। इस पर मिलकर चलें तो आप ही उन तेतीस कोटि देवताओं से मिल जाओगे।1।

विष्णु का जप करो प्यारों यही जप बताया है उसी जप से जम्भेश्वर राजा मोक्ष मुक्ति प्रदान करेंगे। आगामी पार उतरने की शुभेच्छा से गुरु देव की शरण ग्रहण करो। हृदय रूपी हवेली में भगवान को बैठाओ और आरती करो वही तुम्हें भवसागर से पार उतार देंगे। सतगुरु अचंभे के रूप में आये है। सुरनर सभी जिनकी कीर्ति गाते है वे हरि यहां अवतार लेकर आये है। गर्भ में हरि से कवल किया था उस कवल को अवश्य ही पूरा करो भूलते क्यों हो। इस दोजक जन्म मरण संसार के दुख से मुक्त होकर अपने सच्चे घर मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कीजिये। इस समय यह सुअवसर प्राप्त हुआ है।2।

बारह करोड़ जीवों को पार पहुंचाने के लिये यहां सम्भराथल पर आकर सतगुरु के रूप में विराजमान हो रहे है। वही निराकार अलख चतुर्भुज सर्व गुण सम्पन्न यहां पर आसन लगाकर बैठे है। यहां पर जिज्ञासु जनों की शंकाओं का समाधान अपनी नीजी मधुरवाणी से कर रहे है। थल सिर पर बैठकर मधुर सत्य प्रिय हितकारिणी वाणी बोल रहे है। इस जम्बुद्वीप भरतखण्ड

बागड़ देश में यह अलौकिक चरित्र हो रहा है। आप ही साहिब पूजनीय कमलापति विष्णु आप ही राजा, आप ही कृष्ण मुरारी के रूप में आये है। इस बागड़ देश को शोभायमान करने के लिये इस बार अकेले ही आये है। लक्ष्मी आदि को साथ लेकर नहीं आये है।3।

तीनों युगों में प्रहलाद के बिछुड़े हुए इकवीस करोड़ तो अब तक वापिस अपने घर विष्णु के लोक में पहुंच गये है किन्तु बारह करोड़ अब भी नहीं पहुंच पाये है उन्हें पहुंचाने के लिये नर होते हुए भी निरहारी के रूप में यहां सम्भराथल पर बागड़ देश में आये है। चारों दिशाओं में दुहाई जय जयकार होने लगी है। गहरी नींद में सोये हुए को झटिति जगाया है। एका एक जागृत होकर नींद टूटने पर चारों तरफ दौड़ने लगे है। समय पर पहुंचने की लालसा जागृत हुई है। एक मन एक चित होकर भगवान विष्णु जाम्भोजी की वन्दना करने लगे है संध्यादिक शुभ कर्म करने लगे है। इस प्रकार से वन्दना करने से सूर्योदय होने पर जिस प्रकार से कमल विकसित होता है। उसी प्रकार से प्रफुल्लित हो रहे है। हे मानव! इस प्रकार के परम देव यहां पर आये है उनके प्रति मुख से निद्या के वचन नहीं कहो। यह अवसर बार बार मिलने वाला नहीं है। अनेक जन्मों में भटकते हुए यहां तक पहुंचे है पीछे कुकर्म सुकर्म जो भी हुआ उस पर पछतावा करके आगे का नवीन जीवन प्रारम्भ करे। अवश्य ही पिछले पाप निवृत हो जायेंगे। गुरुदेव तुम्हें सद्गति प्रदान करेंगें।

साखी-56 (नानिग दास द्वारा रचित)

जीवला जी धन्य महुरत्य धैन्य सु बेला, गुरु झांभेसर आयौ।
दोय पख निरमला दील दायमा, विषम पंथ चलायौ।1।
एतड़ा पापी दोजक नै जायस्यै, आयो विसन ध्यायौ।
आसति करि करि नासति करिस्यै, जां सीरि गुन्हौ लीखायौ।2।
पुल्हण साह पड़ति क काज्य, ठय पुजौ परणायौ।
जीवला जी पुल्हण साह अधारा दीन्ही, रामदास वग्य वधाया।3।
नागौर सु रामदास चड़ीयो, व्रगवन हड़े आयौ।
काढ़य तेग गर दोन्य वाही, जीव उतारया भुंय थायो।4।
आ खाड़ग आपे खातरी, आपे आप सीझायो।
हिंदू तुरक ह कंप हुवा, देख्यौ क्या जुलम कुमायौ।5।
धन्य तेरी मात-पिता धन्य तेरौ, धन्य औ रामदास जायौ।

वकुंठ की पोल्य उघाड़ी, धैन्य ओ रामदास आयौ।6।
सुरगे कांमैण्य खड़ी उडीकै, रामदास वग्य वधावौ।
पांच सात नव खड़ी उडीकै, बारहां साथ उमाह्यौ।7।
देव वीसन म्हे सेवग थारा, जिण्य रतन भुंवण बतायौ।
गुरु परसादे नानिग बोल, मीठो दीन सुणायौ।8।

भावार्थ-हे जीव! वह धन्य घड़ी धन्य मुहूर्त सुबेला जिसमें गुरु जाम्भेश्वर आये है। दोनों पक्ष हिन्दू मुसलमान को निर्मल किया। दिल में दयालु भाव सिखाया। ऐसा विषम विशेष पंथ चलाया जिसमें दोनों पक्ष एक भाव से स्वीकार करे। मानव मात्र की उन्नति हेतु यह बिश्नोई पंथ चलाया है। इतने पापी दौरे नरक में नहीं जायेंगे जिसने विष्णु का ध्यान जप किया है जिन्होनें अपने नास्तिक भाव से गुन्है किये है जिनके सिर पर पाप की पोटली धरी थी उसे नीचे उतरवा दी। इस बात का एक उदाहरण यहां पर दिया गया है। जिसमें रामदास जो नागौर से चढ़कर जीव रक्षा हेतु अपना सिर समर्पण कर दिया था। सामने किसी शिकारी ने तलवार चलायी थी इधर रामदास ने अपने प्राण देकर भी जीव रक्षा धर्म का पालन किया था। जिसे देखकर हिन्दू मुसलमान दोनों पक्षों ने वाह-वाह कहते हुए रामदास को धन्यवाद दिया था कि इस धरती पर जीव रक्षा करने के लिये अपने प्राण भी दे सकते है। ऐसा कभी हुआ नहीं है ऐसा पहली बार बिश्नोई पंथ के पथिक द्वारा देख रहे है। जीव हिंसक ने जुलम किया है ऐसा जुलम आगे फिर से नहीं होने दिया जायेगा। कहा भी है-''साल्हिया हुवा मरण भय भागा, गाफिल मरणा घणां डरै।।सबद।।'' धन्य है रामदास धन्य है तेरे माता-पिता गुरुदेव को जो धर्म की रक्षार्थ प्राण दिये है। आगामी आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरणा के स्त्रोत बने है। आपके लिये स्वर्ग का द्वार खुल गया है। आगे अप्सराऐं आपकी प्रतीक्षा कर रही है। पांच, सात, नव करोड़ देव रूप में स्थित तीन युगों के भक्त आपकी प्रतीक्षा कर रहे है। कलयुग के बारह करोड़ के साथ भी तुम्हें उमंग प्राप्त होगा। कवि नानिग कहते है कि हे देव विष्णु! हम आपकी शरण में है। आप ही ने स्वर्ग मोक्ष का मार्ग हमें दिखाया है। यह मधुर धर्म पंथ आप ही ने बताया है।

कवि संख्या-24

कूलचंद राय अग्रवाल सं. 1505-1593 जन्म एवं अन्त अनुमानित है। ये उतर प्रदेश के अग्रवाल बिश्नोई थे। प्रत्येक वर्ष दो बार सम्भराथल पर

देव दर्शनार्थ आया करते थे। शब्दवाणी प्रसंगों में तथा जम्भसार में इनका उल्लेख विस्तार से मिलता है। इन्होनें गुरुदेव के चरणों में दो साखियां रूपी पुष्प अर्पित किये है। जिससे उनकी भक्ति भावना एव कवित्व का भाव उजागर होता है।

साखी छन्दां की राग उडारथा-57

जागो जागो जंबूदीप हुई छै आवाज, सही सौदागर जांभराज आवियो।
आय नै संभराथल लियो छै मेहलाण, विणज करो मेरा भाइयो।
विणज तो विचार कीजै, कपट बाण न कीजिये।
काच कथिर भगार पर हरि, मन दे हीरा लीजिये।
रत्न लाल भण्डार मुक्ता, जोय मांगै सो दिये।
ऐसो समरथ साह आयो, चेतकर जीव जागिये।1।
विणजो विणजो मोमण चतुर सुजान, हीरा पिछाण ही।
मुरखा मन हठ बिणज न होय, परख नहीं जांण ही।
जांणी पारख पंथ पायो, परच पाखण्ड छाड़िये।
संसार ममता छोड़ी प्राणी, अमर आसा मांडिये।
साह सतगुरु नांव नीवी, प्रीत साटै हम लियो।
छाड़ि छन्दां भ्रान्ति परहर, साध मोमण विणजियो।2।
किसन चरित हरि माघ, देवजी रा कुण लहै।
आज म्हारो साहिब राजा, उदास सोहबती सा बहै।
सा बही सोबति सुपह क्रिया, चार चौचक सांभली।
कांप्या कायर हीण करणी, मोमणा रे मन रली।
साम सरसो सासथ कीजै, मीन जल बिन क्यों रहै।
वैकुण्ठ महल मेल्हाण देवजी रा, चरित हरि का कुण लहै।3।
धन्य-धन्य सो दिन महूरत, बार बारां इकवीसां मिलै।
लंघिया छै भवजल दूतर पार, भव सर भी पलै।
पाल भवसर पार जाइये, सरब सांसो भाजही।
उत मिलै मोमण दिलो चोखा, अधिक प्रीति उपजावही।
श्याम को दीदार दीसै, पाइये मन वांछा मनि।
सुरां सुरपति हुवै मेलो, दिहाड़ो सोई धनि।4।

भावार्थ-जम्बू द्वीप में गुरु जाम्भेश्वर जी आये है और धर्म की नाद

बजायी है। यत्र-तत्र आवाज सुनायी दे रही है। हे भक्तों! जागो और सचेत होकर दिव्य शब्द को श्रवण करो। हे मेरे भाइयों! अवश्य ही विणज व्यापार करो। उनसे संपर्क स्थापित करके कुछ लेन-देन करो। यदि विणज व्यापार उनसे करना ही है तो विचार पूर्वक करो अन्यथा वहां कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकोगे। वहां पर कपट का व्यापार नहीं चलेगा। अपने मन में जन्म-जन्मान्तरों से बिठाये हुए कथिर जो नष्ट होने वाले है उन्हें त्याग करके गुरु देव से हीरा लीजिये। अर्थात् सांसारिक नाशवान वस्तुएं परित्याग करके हीरा सदृश ज्ञान लीजिये। वहां पर गुरु की शरण में जाओगे तो रत्न लाल मुक्तामणि का भण्डार मिलेगा जो आप मांगेगें वही मिलेगा। जीवन युक्ति मुक्ति दोनों ही वहां पर संभव है। ऐसा सर्व समर्थ व्यापारी जम्बूदीप में सम्भराथल पर आये है। सचेत होकर अवश्य ही वहां पर जायें।1।

हे चतुर सुजान! अवश्य ही हरी की पहचान करके उनसे ज्ञान ध्यान की प्राप्ति करो। मूर्ख दुष्ट जन परख नहीं सकता। प्रथम परीक्षा करें फिर जानकर के पन्थ को पकड़ें और पाखण्ड को छोड़ दें। संसार से मोह ममता को छोड़कर सदा ही अजर-अमर होने की आसा करें। साहूं सतगुरु यहां व्यापार करने के लिये आये है। नाम जप का विधान दे रहे है और बदले में प्रेम ले रहे है। कवि कहता है कि ऐसा व्यापार हमनें किया है। छन्द अर्थात् व्यर्थ के किसी के गुणगान कर तथा भ्रान्ति को छोड़कर हे साधों मोमणों! अवश्य ही उतम व्यापार करो।2।

देवजी ने यहां आकर कृष्ण चरित्र किया है और हरि विष्णु का अनादि मार्ग बताया है परन्तु उसे धारण करने वाला कोई विरला ही सौभाग्यशाली होगा। इसलिये आज हमारे साहिब राजा उदास है क्योंकि देने पर भी संसार के लोग लेने के लिये तैयार नहीं है। इस समय प्रेम से घिरे हुए है जो भी उनके पास आता है उसे प्रेम से ओत-प्रोत कर देते है। प्रथम प्रेम से आनन्दित करके फिर उसे सुमार्ग क्रिया-कर्म के बारे में चौकस करते हुए दिखाई दे रहे है। चारों तरफ प्रेम का वातावरण दिखाई दे रहा है, लोग संभल रहे है। जो शुभ कर्महीन व्यक्ति है वे कंपायमान हो रहे है कि हमारी पाप की पोटली भी कहीं उतरवाकर फेंक दी जावे तो फिर क्या होगा। भक्त जनों के मन में आनन्द की लहर दौड़ रही है। भक्त जन तो सरस होकर श्याम श्री विष्णु का साथ कर रहे है। मछली जल के बिना कैसे रह सकती है। इस समय भक्तों के जीवन के

आधार देवजी उपलब्ध है। देवजी का निवास स्थान तो वैकुण्ठ के महल है अर्थात् जन-जन का हृदय कमल है। ऐसे हरि के चरित्र को कौन लेगा। कोई भाग्यशाली ही ले सकेगा।3।

वह दिन वार मूहुर्त धन्य है जिस दिन समय में बारह करोड़ का इकवीस करोड़ से मिलान होगा। जब ऐसा हो जायेगा तो सदा के लिये भवसागर से पार उतर जायेंगे पुनः इस संसार में नहीं आयेंगे। संसार सागर को मेटकर अवश्य ही पार जाना चाहिये वहां जानें पर सभी प्रकार का संशय मिट जायेगा। वहां पर अच्छे भक्त मोमण मिलेंगे वे लोग अत्यधिक प्रेम करेंगे, प्रेम का विस्तार होगा। वहां पर तो सभी कुछ श्याम का ही पसारा दिखाई देगा। मन वांछित फल की प्राप्ति वहां पर होगी। वहां परम देवता तथा देवाधिपति इन्द्र बृहस्पति आदि से भी मिलन होगा। वह दिन वार नक्षत्र ही धन्य है जिस दिन यह कार्य होगा।4।

साखी छन्दां की राग मारू-58

सांभलि-सांभलि हे म्हारी पदमण माय, सम्भराथल रली बधावणां।
गुरु आयो छै जाम्भेश्वर देव, कलि मां काज उतावला।
कलि में तो काज उतावला नै, हरखि ज कृष्ण आवियो।
बारां करोड़ी मिलिया जानी, इकविसां रे मन भावियो।
चार चौक रची चंवरी, मया करि पहुंचाय नै।
वैकुण्ठ साहो मने उमाहो, सांभलि पदमण माय नै।1।
मेलो मेलो करि करतार, साधां मोमण रे मन रली।
साह बूठो छै पच्छिम रे देश, खिवै सवाई कुल्यचंद बीजली।
खिवै बीजली झिलो मिलाती, घटा ऊजल संचही।
कर धारी अचल आरतो, लाडी खड़ी पंथ उडीक ही।
तेरी रतन काया स्वर्ग सोहे, छाड जीव संसार नै।
हंसि मिलो मोमण करो इकायंत, मिलसी करतार नै।2।
संभरथल मोमणां जागी पीठ, विसाहित जंभराज आवियो।
मेरो मन रातो बिन मजीठ, मोमण होय वीरा विणजियो।
विणजो मोमण धर्म बहुविध, छोड़ मन कुबाणिया।
वरत अनहद मोख मुक्ता, साच सिदक पिछाणियां।
छाडि मायाजाल चाल्यो, जास हिवड़ो निर्मला।

जिकर सुणि सुणि थूल परच्या, पीठ जागी सम्भराथले।3।
कलयुग मोमण सुरगा आश, जम्भराय धर्म थापियो।
पापां री पाल छोड़ जीवड़ा, मुक्ति काजै गुरु जापियो।
जंपो सतगुरु जीव काजै, हर विवाण पठाइयो।
गौठि ओसर मिल्यो नांही, ढ़िग चूका भाइयो।
सत दे किरतार दिल में, साध मोमण के पगे।
सुशील छिव नै खता नाही, पार पहुंचो कलियुगे।4।

भावार्थ-अपनी माता को सम्बोधन करते हुए कोई व्यक्ति कह रहा है-हे पदम सदृश मेरी मां! सचेत हो जाओ। सम्भराथल पर बधाइयां बंट रही है वहां पर अपार भक्तों का समूह जुड़ा हुआ है। गुरुदेव जाम्भोजी आये है क्योंकि कलयुग में अतिशीघ्र ही अपना कार्य पूरा करके जायेंगे ज्यादा दिन नहीं ठहरेंगे। कलयुग में अकस्मात ही कार्य हेतु स्वयं कृष्ण ही पधारे है। बड़ा ही प्रसन्नता का माहोल हो रहा है। स्वयं जाम्भोजी आप तो दुल्हा बनकर आये है और अपने साथ में बारह करोड़ बराती बना कर ले जायेंगे। आगे इकीस करोड़ से ले जाकर मिलायेंगे। स्वयं दूल्हा ने यहां पर चार चक में चंवरी विवाह मण्डप बना दिया है। सभी को सूचित कर दिया है। यह सभी कुछ अपनी माया के द्वारा ही कर रहे है। वैकुण्ठ में अपने भक्तों को लेकर जायेंगे। भक्तों के मन में उमंग उठ रही है। हे मेरी पदमनी मां! तूं क्यों सो रही है। अब तो जाग जाओ।1।

हे मां! साधु मोमणों के साथ में मिलकर भगवान जाम्भोजी से जाकर अवश्य ही भेंट करो। कूलचन्द जी कहते है कि अबकी बार स्वयं परमात्मा पश्चिम देश मरूभूमि पर अत्यधिक प्रसन्न हो गये है जो उदारता से ज्ञानामृत की वर्षा कर रहे है। जहां-तहां ज्ञान की ज्योति बिजली सदृश चमकती हुई दिखाई दे रही है। उज्ज्वल घटा उमड़ करके आ रही है और झिलमिल करके विद्युत चमक रही है अर्थात् क्रिया कर्म धर्म द्वारा उज्जवल आचार-विचार से मानव को पवित्र बना दिया है। जहां-तहां शुभ्र वेश गुण धर्म द्वारा भक्त अलग ही दिखाई दे रहे है। ऐसे महापुरूष अवश्य ही स्वर्ग में पहुंचेंगे। वहां पर स्वागत के लिये अप्सराएं सामने आयेगी और आरती उतारेगी। ऐसे भक्तों की परीक्षा स्वर्ग में होती है। तुम्हारी रतन काया स्वर्ग में शोभायमान होगी। इस शरीर को त्याग करके जब यह जीव जायेगा। इसलिये मोमण भक्तों से प्रेम

पूर्वक मिलो तथा एकान्त में बैठकर सत्संग की वार्ता करो तथा ध्यान करो तो अवश्य ही कर्त्ता पुरूष परमात्मा से मिलान होगा।2।

हे भक्तों! इस समय सम्भराथल पर ज्ञान पीठ की स्थापना हो चुकी है इसलिये हे भाई! भक्त बनकर वहां श्रीदेवजी के पास अवश्य ही जाइये तथा हीरों का व्यापार कीजिये। जाम्भोजी स्वयं व्यापार करने के लिये तथा देनें के लिये तैयार है केवल आपको ग्राहक बनकर जाने की ही जरूरत है। कवि कहता है कि मेरा मन तो रंग चुका है। किन्तु ज्ञान प्रेम के रंग में रंजित हुआ है न कि मजीठ के रंग से। इसलिये मोमण बनकर ज्ञान ग्रहण करो। अनेक प्रकार के नियम धर्म को ग्रहण करो तथा कुबाण कुलक्षण कटुवचन आदि को छोड़ दो। अनहद नाद बज रही है उससे आपको परिचय करायेंगे तथा जीवन मुक्त तथा मोक्ष की प्राप्ति का उपाय बतलायेंगे। वहां पर पहुंचकर सच्चाई इमानदारी की पहचान हो सकेगी। जिसने भी मोह माया को छोड़ दिया है और गुरु की शरण में चल पड़ा है उसी का ही मन निर्मल है। गुरुदेव के शब्दों को सुन करके स्थूल मूर्ख लोग भी परच गये है। ज्ञानी बन गये है। ऐसी पीठ सम्भराथल पर स्थापित हुई है।3। हे मोमण! इस भयंकर कलयुग में दुखी जीव तो स्वर्ग की ही आशा करते है, केवल सुख ही चाहते है। उस सुख तक पहुंचाने की स्थापना जाम्भोजी ने की है। पापों की पाल यानि पाप मार्ग को छोड़ करके मुक्ति के लिये गुरु के पास अवश्य ही पहुंचे। इस जीव की भलाई के लिये गुरु के बताये हुए मन्त्र का जप करें। आगे हरि स्वयं ही वैकुण्ठ में जाने वाले विमान में बिठाकर आगे भेज देंगे। यदि तुम्हें गुरु के साथ संगोष्ठि करने का सुअवसर नहीं मिला है तो यह बहुत ही बड़ी चूक हुई है। पालन पोषण कर्ता विष्णु तुम्हें सत शक्ति प्रदान करेंगे किन्तु वह शक्ति तो तभी मिलेगी जब साधु मोमणां के बनाये हुए मार्ग पर चलेगा अर्थात् उनकी तरह आचरण करेगा। जो जीव सुशील सुजान है उन्हें तो किसी भी प्रकार का भय नहीं है। वह तो इस कलयुग में अवश्य ही पार पहुंच जायेगा।4।

कवि संख्या-25 रेड़ोजी

जन्म संवत् 1530-1620 तक अनुमानित है। ये हजूरी साधु थे। जाम्भोजी के पश्चात् रेड़ोजी की ही शिष्य परंपरा चली है। रेड़ोजी के शिष्य नाथोजी थे और नाथोजी के शिष्य वील्होजी थे। इस प्रकार से साधु परंपरा अब तक चली आ रही है। शब्दवाणी जो वर्तमान में प्रचलित है यह भी

नाथोजी के कण्ठस्थ थी। नाथोजी ने ही आगे अपने शिष्य वील्होजी को सुनायी थी। वील्होजी एवं उनके शिष्य केशोजी एवं सुरजन जी ने लीपिबद्ध की एवं प्रचार-प्रसार किया। रेड़ोजी की एक साखी उपलब्ध है।

साखी कणां की-59

जीवला रे जम्भ अचंभो आयो, अपरंपर हेत कियै हरि ध्यावो।1।
जीवला रे अजर जरो मनकी मेर चुकाओ, तो अमरा पुर पावो।2।
जीवला रे सूई के नाकै धागो पोवौ, हरि हिरदै यो जोवो।3।
जीवला रे यहां चेता दूं पाटे जो मनकी, गांठी गुंढ़ी सह खोवो।4।
जीवला रे एकर मरीके बहोड़ी न मरिस्यौ, दिल दरियाव सुं धोवो।5।
जीवला रे गर्भवास में कवल किया था, जिण रो कांसूं हुवो।6।
जीवला रे वाचा देकर पालो नांही, थे आपे आक नै बोवो।7।
जीवला रे देवजी को दसबंध खरचो नांही, राखो विसन बिसावो।8।
जीवला रे खरच्यै लाहो राख्यै तोटो, विवरसी विवरसी जोवो।9।
जीवला रे ताता थंभा रे गल दी जोली, थे तो करो अस रोवो।10।
जीवला रे साच विसन न दोष न दीजै, कारण किरिया न जोवो।11।
जीवला रे लाहै कारणै कांय धर जुवो, छैहै कांध अमोवो।12।
जीवला रै चेहैवा ज मिल ही लाहो, थे विवरस रस जोवो।13।
जीवला रे आज ज मीठो लभ कर लीजै, तिणरो भलकी विगोवो।14।
जीवला रे मीठे कारण कांय जुल आवै, खारे हाथ संगोवो।15।
जीवला रे जाट सगोकर जीमण वेसेला, जिणरो मलकर थिगोवो।16।
जीवला रे पुरूष कदिसो कलिमां आयो, थे कांय जागंता सोवो।17।
जीवला रे को कहसी सांभलियो नाहि, कान्य न पड़ियो चोवो।18।
जीवला रे सीख दिया सतगुरु समझावै, जम्बू दीप खड़ेवो।19।
जीवला रे गुरु प्रसादे रेड़ो बोले, हरि चरणां चित लावो।20।

भावार्थ-जाम्भोजी यहां पर आये है यह महान आश्चर्य जनक घटना है। स्वयं जाम्भोजी तथा उनके कार्य आश्चर्य युक्त है। उस अद्‌भुत दिव्य अचम्भे से युक्त हरि से प्रेम करो तथा उन्हीं का ध्यान करो। काम क्रोधादि की जरणा करो तथा भावना तेरा मेरा भाव को मिटा दो तो सीधे अमरापुरी वैकुण्ठ धाम पहुंच जाओगे।2। जिस प्रकार से सूई के नाके में धागा पिरोते है तो मन की एकाग्रता हो जाती है यदि मन चूक जाता है तो धागा नहीं पिरो सकते उसी

प्रकार से हरि को भी हृदय में एकटक दृष्टि तथा मन से देखो तो वहां पर दर्शन होंगे।3। यदि मन को सचेत कर दिया जाये कि चंचलता को छोड़कर एकाग्रता की तरफ बढ़ तथा मानसिक दुर्भावनाऐं कपट की गांठ एवं इर्ष्या की गुंढ़ी आदि सभी मिटा देतो सदा सदा के लिये जन्म मरण मिट जायेगा। इस प्रकार से शुद्ध भावना रूपी समुद्र में दिल को धोकर शुद्ध पवित्र हो जाओगे तो वहां हरि का दर्शन संभव हो सकेगा।5। गर्भवास में तुमनें यह वायदा किया था कि मैं बाहर जाकर शुद्ध हृदय से हरि का भजन किया करूंगा उस वचन का क्या हुआ।6। आप लोग पहले तो वचन दे देते हो फिर उन वचनों को पूरा करने के लिये कुछ भी प्रयत्न नहीं करते तो स्वयं ही अपने हाथों से आम को काट कर आक क्यों बोते हो।7। अपनी कमाई से दसवां हिस्सा देवजी के नाम से दान क्यों नहीं करते हो तथा घर में छुपा कर रखने की कोशिश करते हो क्या विष्णु से छिपा सकते हो ? कदापि नहीं।8। दसवां भाग खरच करने में लाभ है तथा जमा करने में नुकसान है, इस सिद्धान्त को बार–बार विचार करके देखो।9। यहां से जब आगे पहुंचोगे तो गर्म गर्म खंभों से बांधे जाओगे वहां पर हाय तोबा करोगे तथा रोओगे इससे अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर सकते।10। विष्णु तो सत्य सनातन है उन्हें दोष मत दो, यदि आपको दुख आया है तो यह तो आपके कर्मों का ही फल है। अपनी स्वयं की ही कारण क्रिया धर्म देखो।11। थोड़े से लाभ के लिये क्यों धर्म छोड़ रहे हो ? यही तो लोभ है। इस प्रकार से लोभ से कमाया हुआ धन तो यहीं रह जायेगा तो क्यों व्यर्थ का परिश्रम करते हो।12। आप जिस वस्तु से लाभ चाहते हो उसमें लाभ कभी कभी ही मिल पाता है यदि मिलता भी है तो वह क्षणिक ही सुख देने वाला होता है इसलिये आप लोग विचार करके रसानन्द देखो कि कहां मिलेगा जो स्थायी हो तथा शाश्वत भी रह सके।13। आज ही कर्म किया और उसका मीठा फल तुरंत ही मिल गया किन्तु यह टिकाऊ नहीं है, एक क्षण के लिये ही था दूसरे क्षण में विलीन हो जायेगा।14। मीठे क्षणिक फल के लिये क्यों सभी मिलकर आ रहे है और कष्टदायी खारा परन्तु आगामी परिणाम में अमृतमय फल की तरफ से हाथ क्यों खींच रहे है।15। बड़े प्रयत्न से फल की प्राप्ति हुई फिर जाट लोग मिलकर खाने के लिये बैठते है किन्तु तब तक तो वह खारा हो चुका होता है। प्रथम मुंह में रखते है फिर थूक देते है। यह तो केवल छलावा ही था।16। ऐसे पुरूष कलयुग में कब आये है जो कड़वे तथा

मीठे का निर्णय बताते है। ऐसे अवसर पर भी आप सो रहे हो यानि सभी कुछ जानते हुए भी अनजान बन रहे हो।17। तुम्हें संभलने के लिये कौन कहेगा। कानों में कोई शब्द की ध्वनि डालने वाला नहीं है।18। सतगुरु शिक्षा देकर समझा रहे है और इस जम्बूदीप में आकर उपस्थित हुए है।19। गुरुजी की कृपा से रेड़ोजी कहते है कि हरि के चरणों में चित लगाओ।20।

कवि सं. - 26

वाजिद जी का जन्म सं. 1530-1600 में था। इनकी यह एक साखी उपलब्ध हुई है। ये हजूरी कवि थे। साखी में इन्होनें संसार की असारता के बारे में बतलाया है।

साखी कणां की राग जैतश्री-60

सदा न संग सहेलियां, सदा न राजा देश वै।
सदा न जग मां जीवणां, सदा न काला केश वै।
सदा न काला केश जगतपति, सोच सांमि मुक्ति भया।
जीवन अंजरी नीर जैसे, मिलौ माधो करि मया।
मया कीजै दरश दीजै, पीजै प्रेम अघाय वै।
आनन्द उपजे निस दिना, पीव पडूं तेरे पांय वै।
पडूं तेरे पांय प्यारे, जो आया सो खेलिया।
वाजिद कह विचार स्वामी, सदा न संग सहेलियां।1।
मृग तिसना संसार है, पुर पाटण क्या हाटवे।
पार पोहती नाव ज्यों, होग्या बांरा बाटवे।
होग्या बारां बाट हरि विन, सुपन्तर नहीं मेल वै।
आठूं पहरि अवटणी, ज्यों कड़ाही तेलवै।
तेल अवट अगन सेती, मैं ऐसी अजरी करूं।
जामें प्रवीण प्राण प्यारे, कहारे अब कैसी करूं।
करूं कैसी जामैं ऐसी, तज्या भूख अहार वै।
वाजिंद कहै विचार स्वामी, मृग तिसना संसार वै।2।
तन तरवर मन पंछियां, लिया बसेरा आय वै।
भोर भया जब उड चल्या, योह जग झूठो जानवै।
जग झूठा नांह रूठा, दोय दुख कैसे सहूं।
रैन अकेला विना बोल्या, विरह शील तामैं बहूं।

विरह शील तामैं बहुं वोरि, पास न देख्यो पीव वै।
लोहुं पानी हो गया, ताला बेली जीव वै।
जीव तरसे गिगन बरसे, पीव दिखावो अंखियां।
वाजिंद कह विचार स्वामी, तन तरवर मन पंछियां।3।
योह विरियां बोहरयो नांही, हो हो हो बलि कंटवे।
वांरी फेरी बलि गई, अंत न लीजै अंत वै।
अंत न लीजै दरस दीजै, जीव न दीजै दुख वै।
च्यारो दिशा झिकोरियां, झुरै अकेला रूंख वै।
रेन अकेला रूंख निस दिन, किसे सुणाऊ रोय वै।
शीत ओस सिर पे सहूं, संग न साथी कोय वै।
संग न साथी काम हाथी, कृष्ण करि अपणी गही।
वाजिद कही विचार स्वामी, यो तिरियां बहुरि नहीं।4।
वेगा विलंब न कीजिये, जीव किस दिस लागि वै।
बोहत गयी थोड़ी रही, असीम ज घटाय वै।
जुरा आगे जम पाछै, पिसंण पहुंता आय वै।
पिसंण पहुंता आय इसकूं, कीजै चित सवेरियां।
काम रूप कुलछणी, पीव तोऊ साध ज तेरियां।
साध तेरी आण्य घेरी, दाद इसकी दीजियै।
वाजिद कहै विचार स्वामी, वेगा विलंब न कीजिये।5।

भावार्थ–समय परिवर्तनशील है सदा एक रस सभी वस्तुऐं नहीं रहती है। जैसे मित्र सहेलियां सदा ही साथ में नहीं रह पाते है। एक ही राजा सदा ही देश का राज्य नहीं कर पाता है। इस जगत में सदा के लिये जीवन भी नहीं रह पाता है। केश भी काले सदा ही नहीं रह पाते है इसलिये यह बात विचारणीय है कि मैं भी तो सदा ही स्वामी नहीं रह सकूंगा। एक दिन तो मेरी भी यही दशा हो जायेगी। यह जीवन अंजलि के जल की भांति व्यतीत हो रहा है इसलिये अपना सर्वस्व माधव ही है ऐसा मानकर मिलने का प्रयत्न करें। प्रभु एक ही मेरा है इस प्रकार की भावना से प्रभु का दर्शन करें तो प्रेम रस की प्राप्ति हो जायेगी। वह रस आतृप्ति पर्यन्त प्राप्त करें। उस आनन्द ने ही आपके जीवन में परिवर्तन किया है वाजिद जी विचार करके कहते है कि हे स्वामी! यह संसार की मोह–माया तो सदा साथ नहीं देगी।1।

यह सम्पूर्ण संसार तथा सांसारिक हाट, पुर, किले आदि तो सभी नाशवान है। इसमें सुख दिखाई देने वाला तो मृग तृष्णा का जल ही है। जो वास्तव में होता नहीं है केवल दिखाई ही देता है। जिस प्रकार से नौका में बैठकर नदी से पार उतरा जाता है। उसी प्रकार से आपके पंथ को पकड़कर बारह करोड़ पार उतर चुके है। हरि के बिना अन्य दूसरा पार उतारने वाला कौन हो सकता है। यहां पर तो कलयुगी जीव आठों प्रहर दुख में डुबे हुए उबल रहे है जिस प्रकार से कड़ाई में तेल उबल रहा हो। नीचे अग्नि बराबर जल रही है। इस प्रकार की जरना जो जर रहे है सभी कुछ सहन कर ही रहे है। इस प्रकार के दुख में डूबे हुए हे प्राण प्यारे! हम कैसे सुखी हो सकते है। आप ही कहिये अब मैं क्या करूं। दुख की अवस्था में अन्न आहार का भी परित्याग कर दिया है। वाजिंद जी विचार करके कह रहे है कि हे स्वामी! यह संसार तो मृग तृष्णा का जल है।2।

यह शरीर तो तरू है और मन ही पंछी है। इस वृक्ष पर आकर मन पंछी ने रात्रि में विश्राम कर लिया है। प्रातः काल होते ही उड़कर चला जायेगा। कुछ दिनों के लिये ही इस जीव ने इस शरीर में निवास किया है जब भोर हो जायेगी अर्थात् मृत्यु आ जायेगी तो इस शरीर को छोड़कर चला जायेगा। यह संसार तो झूठा है, झूठे जगत से यदि नाता नहीं तोड़ा तो मैं दो दुखों को सहन कैसे करूंगा। प्रथम तो पति परमेश्वर स्वामी के वियोग में निपट अकेला हो जाऊंगा तो रात्रि कैसे व्यतीत होगी। दूसरा दुख वियोग रूपी शील में कैसे जीवन यापन करूंगा। वहां तो स्वभाव विरही हो जायेगा क्योंकि पति परमेश्वर पास नहीं है। वहां तो संसार से नाता सम्बन्ध है दोनों सम्बन्ध एक साथ नहीं चलते। विरह की आग में जलते हुए जीव लोहे के समान पिघलकर पानी सदृश हो चुका है आंसुओं की धारा बह रही है। कोई ऐसा सज्जन हो जो जीव को आंखों से अपने प्रिय परमेश्वर को दिखादे तो शांत हो सकता हूं। वाजिद जी विचार करके कहते है कि हे स्वामी! यह शरीर तो एक तरू की भांति है और जीव ही इस पर बैठा हुआ पंछी है।3।

यह अवसर बार-बार नहीं आयेगा। बड़ा ही आश्चर्य एवं चिंता का विषय है कि यह बारी भी व्यतीत होती जा रही है। दुबारा आने वाला अवसर चला गया है। इस अन्तिम बेला में भी उस अनन्त परमात्मा की प्राप्ति अवश्य ही करें। हे देव! अब तो बहुत हो चुका है, और आगे अन्त न लेवो। परीक्षा

मत करो। अवश्य ही दर्शन दीजिये। जीव को अब अधिक न तड़पाओ। चारों दिशाओं में भयंकर तुफान आ चुका है कहीं कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। मैं निपट अकेला हो चुका हूं। रूंख की भांति अकेला ही विलाप कर रहा हूं। अपना रोना किसे सुनाऊं। प्राकृतिक आने वाली आपदाऐं सर्दी गर्मी आदि सिर पर सहन कर रहा हूं। मेरा साथी आपके सिवाय और कोई नहीं है। कोई संग साथी सत्संग नहीं है परन्तु हाथों में कार्य है जो कृषि कर अपना जीवन निर्वाह कर लेता हूं। वाजिंद जी विचार करके कहते है कि हे स्वामी! यह अवसर बार-बार नहीं मिलेगा।4।

जिस कार्य में भी आप लगे है उसे अति शीघ्रता से पूरा करें। क्योंकि आयु बहुत तो चली गयी है और थोड़ी ही रह गयी है। जब भी समय मिले जागृत हो जाये और देखें। कवि कहता है कि मैं जागृत हूं और देखता हूं कि जो भी बची हुई आयु है वह भी दिनों दिन करके घट रही है। बुढ़ापा आ रहा है। मृत्यु ने बुढ़ापे का पीछा कर रखा है, भयंकर यम के दूत तो आ ही पहुंचे है। यम के दूत पहुंच चुके है ऐसा जानकर चित को प्रातःकाल ही परमात्मा की तरफ लगा दें। यह जीव कामनाओं से भरा हुआ तथा कुलक्षण वाला है। परन्तु इस जीव का स्वामी तो साधु सज्जन है। तुझे भी उस साधु से मिलने के लिये साधु ही बनना होगा। जब यम के दूत तुझे आकर के घेर लेंगे तो तूं उन्हें अपने साधुपने की दाद अर्थात् गवाह या शक्ति बता देगा तो उन क्रूर हाथों से छूट जायेगा। जहां पर हरि की भक्ति होगी वहां पर यम के दूतों का वश नहीं चलेगा। वाजिंद जी विचार करके कहते है कि हे स्वामी!शीघ्र करें अब अधिक विलंब न करें, मुझे अपने पास ही बुला ले। मेरे दुख को तो आप जान ही गये है।5।

कवि संख्या-27

लखमण जी गोदारा जन्म संवत् 1530-1593 अनुमानित। इनके द्वारा रचित साखी पांच छन्दों की प्राप्ति हुई है। ये हजूरी शिष्यों में थे। इनको जाम्भोजी ने जैसलमेर के राज्य में राजदरबार में बसाया था। कुछ दिनों तक वहां रहने के पश्चात् खरीगां गांव में रहने लगे थे। इस कथा को विस्तार से जम्भसार में पढ़ें।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-61

संभरि आयो श्याम, शुचियारा सांचो धणी।

एकल वाई आप श्री, जांभेश्वर जीवां धणी।
जाम्भेश्वर जीवां धणी नै, आवियो हरि आप।
भगवै बानै विसन आयो, जंपो स्वयंभू जाप।
बखत दोय रू करो संध्या, निवण कर लो नाम।
शुचियारा साचो धणी, संभरि आयो श्याम।1।
सार हुई संसार में, जाम्भेश्वर जुग आवियो।
पूरबले परताप, विसन भक्तां पावियो।
विसन भक्तां पावियो नै, प्रीत परसां पांव।
दुनि आय दीदार देखे, अन्तर अधिक उमाव।
दिल मांहि भ्रान्ति मेटी, साधां देशी पार।
जाम्भेश्वर जुग आवियो, सुणियो चौचक सार।2।
सुरग बोले अति दीन, महिमा अंत मेले मिली।
जमाती रा झूल साखी, सबद सुर संभली।
सबद सुर संभलौनै, परचिया मन पात।
उतर दखिण पूर्व पश्चिम, आवे जुड़े जमात।
भाव कर मन भेंट धर ही, चौतरे कर चीन्ह।
महिमा अति मेले मिली, सुरग बोले दीन।3।
संता हुवो सहाय, धन्य साधा परस्यो धणी।
घृत गूगल महकार, ज्ञान गोष्ठि कीजै घणी।
ज्ञान गोष्ठि कीजै घणी नै, सदा शील संतोष।
एक मन सूं एक सतगुरु, दीये साधां मोख।
दीन तो दीदार परसै, परस लागै पांय।
नित्य साधां परस्यो धणी, सतगुरु करै सहाय।4।
अब लीज्यो अपणाय, इण टाणै सूं मत टालियो।
क्षमा करो सुरराय, पत बानें की पालियो।
पत बानै की पालियो नै, खिमा करो सुरराय।
दावण पकड़यो आप को, निरहारी तोहि नांम।
दास लिछमण आस थारी, भूधर आयो भाय।
जम जोखो सूं टालियो, सतगुरु करै सहाय।5।

भावार्थ–पवित्र सच्चा मालिक श्री श्याम कृष्ण ही सम्भराथल पर

आये है। अबकी बार तो अकेले ही आये है। साथ में अनेकों रानियां एवं अर्जुन आदि नहीं है। इस बार कृष्ण जाम्भेश्वर नाम से यहां पर जीवों के मालिक आये है। स्वयं मालिक स्वामी ही आये है। विष्णु ही भगवां वस्त्र ध ारण करके आये है और स्वयं ही स्वयं का जप भी कर रहे है। और विष्णु का जप करना बतला भी रहे है। दोनों समय प्रात:काल एवं सांयकाल में संध्या करना भी बतला रहे है। ऐसे पवित्र आत्मा श्री कृष्ण ही सम्भराथल पर आये है।1।

अबकी बार इस मरूधर की सुध ली है जिसके फलस्वरूप यहां पर जाम्भेश्वर जी आ गये है। पूर्व जन्मों के प्रताप से ही भक्तों ने विष्णु को प्राप्त किया है। ऐसा भक्तों का सौभाग्य ही कहा जायेगा। जिससे प्रेम पूर्वक चरणों का स्पर्श कर रहे है। दुनियां आती है और प्रेम भाव देख रही है। जिससे उनके भी मन में प्रेम भाव जागृत हो जाता है। अनेक लोगों के मन में बैठी हुई भ्रान्ति को मिटा दिया है। साधु सज्जनों को पार उतार देंगे। इस प्रकार से जाम्भेश्वर जी जगत में आ गये है, यह बात चारों दिशाओं में फैल गयी है।2।

गुरुदेव ने यहां आकर स्वर्ग मुक्ति देने वाली वाणी कही है। जो भी आकर मिलता है वह महिमा मण्डित हो जाता है। जमाती लोग अनेकों टोलियां बनाकर आ रहे है। यहां आकर साखी शब्द के स्वरों को सुनकर संभल जाते है कृत्य कृत्य हो जाते है। इस प्रकार से साखी शब्दों को श्रवण करके पंथ की तरफ आकर्षित हो जाते है। पूर्व पश्चिम उतर दक्षिण चारों दिशाओं से जमाती लोग आ रहे है और एकत्रित होकर प्रेम पूर्वक अपनी अपनी भेंट चढ़ा रहे है। चबूतरे-चौकी अर्थात् अपने हृदय रूपी चौकी पर गुरुदेव के चरणों की छाप धारण कर रहे है। सम्भराथल पहुंचने से अति महिमा हो रही है। गुरुदेव स्वर्ग का मार्ग बता रहे है।3।

संत सज्जनों के सहायक हुए है। धन्य है वे साधु जन जो अपने मालिक के चरण स्पर्श कर रहे है। वहां पर घी, गूगल से होम कर रहे है। अत्यधिक महकार सुगन्धि से वातावरण सुगन्धमय हो चुका है। ज्ञान गोष्ठि भी बहुत हो रही है। ज्ञान गोष्ठि में शील संतोष आदि गुणों के धारण करने की चर्चा होती है। जिन्होनें भी एक मन यानि अनन्य भाव से सतगुरु की शरण ली है उन सज्जनों को मोक्ष की प्राप्ति हुई है। अहंकार भाव का त्याग करके अपने दीदार मालिक का चरण स्पर्श कर रहे है। ऐसे साधु जन धन्य है जो स्वामी के संग रहते है। उनकी सतगुरु सहायता करते है। हे देव! अब मुझे भी अपना

बना लीजिये अर्थात् लिछमण को जेसलमेर भेज दिया था इसलिये साखी द्वारा प्रार्थना कर रहे है कि आपनें मुझे ही अपने चरणों से दूर क्यों भेजा। अब तो अपने पास बुला लीजिये। यह जेसलमेर के राज महल में रहने का तो बहाना मात्र ही है। यह सुख सुविधा देकर आप मुझे अपने से अलग क्यों कर रहे है। हे देव! मुझसे कोई गलती हो गई है तो क्षमा करें। आप अपने वचनों का पालन करने आये है और मैं उन्हीं वचनों के अनुसार बारह करोड़ के अन्तर्गत ही हूं। फिर आप मेरे लिये परहेज क्यों कर रहे है। भूल के लिये मैं क्षमा याचना कर रहा हूं। हे निरहारी! मैनें तो आपका ही पल्ला पकड़ रखा है आपके सिवाय मेरा कोई नहीं है। लिछमणदास कहते है कि अब तो केवल आप की ही आसा है। मुझे तो इस धरती पर आप ही सबसे प्यारे लगते है। इसलिये मृत्यु के भय से बचाइये, सतगुरु मेरी सहायता कीजिये।5।

कवि सं.-28

आलमजी का जन्म सं. 1530-1610 में अनुमानित है। ये हजुरी कवि थे। जम्भसार में आलमजी की कथा विस्तार से वर्णित की है। इन्होनें अपने जीवन काल में अनेकों रचनाऐं की है। तथा गायन विद्या में बड़े ही निपुण थे। इनके द्वारा रचित 8 साखियां एवं 12 हरजस प्राप्त है। प्रथम जुमलै की साखी इनकी यह प्रचलित है।

साखी कणां की राग सुहब-62

आवो मिलो साधो मोमणो, रलि करि जमूं रचाय।1।
साध सिदक मिलि जोविये, विसन विसन भणाय।2।
विसन जंपा सुख सांप जे, जम गंजण तै छुटाय।3।
जे बायो सोई लुण्यो, विन बाहया पछिताय।4।
लूणों चुणों साधो मोमणों, संभल गांठ की जायं।5।
काज संभलो बैड़े चढ़ो, भुंयजल ज्यूं लंघाय।6।
भुंयजल लंघै सो उबरै, पहुंचे पार गिराय।7।
पार गिराय सुख भोगवै, हरि दीदार मिलाय।8।
फूलो हलवी पाटो कूंचवी, बीजल इधिक खिंवाय।9।
जां संतां नै नफो हुवै, जीवत जे मर जाय।10।
जीवत मरै सो उबरै, पहुंचै पार गिराय।11।
रतन काया सांचै ढ़ली, ओ ऐह आपा पहराय।12।

रतन काया पण पहर कै, हींडोले पण वैसाय।13।
हींडोलै पण वैस कै, सहज ही सुरत लगाय।14।
छल्या कचौला अमि का, सुगुरु प्रसाद पिवाय।15।
अति प्रेम सूं विसन जपो, भृकुटि सुरत लगाय।16।
जांभजीरो सेवक बोले आलमो, इणि विधि जमो रचाय।17।

भावार्थ–हे साधों मोमणों! जागरण में आओ और मिलकर बैठो, सभी मिलजुल जागरण जमो करो। सुनो तथा दूसरों को भी सुनाओ।1। साधु एवं सिद्धजन मिलकर विचार करके देखो तथा विष्णु का जप करो और दूसरों को भी ऐसी ही प्रेरणा दो। कहा भी है– सिद्ध साधक को एक मतो। विष्णु का जप करने से ही सुख शांति आयेगी तथा यमदूतों की मार से विष्णु ही बचायेगा।3। जिसनें भी ज्ञान ध्यान साधना रूपी खेती की है फल भी तो वही प्राप्त करेगा। जिसनें खेती की ही नहीं तो वह क्या फल प्राप्त करेगा उसे तो केवल पछतावा ही रहेगा।4। हे साधों मोमणों! जहां पर भी ज्ञान के कण बिखरते हो वहीं से लुण–चुण करके एकत्रित करो, ज्ञान तो उतम ही होता है उससे परहेज मत करो, कहीं ऐसा न हो कि पास में आयी हुई ज्ञान की गांठ न खुल जाये और जो कुछ भी अर्जित किया था वह भी खिसक न जाये।5। पीछे कुछ करना अवशेष रह गया है तो अति शीघ्रता से पूर्ण कर लो और गुरुदेव ने यह नियम धर्म रूपी नौका दे रखी है इसी पर सवार होकर संसार सागर से पार उतरना है। गुरु स्वयं यहां पर खेवट उपस्थित है।6। जो भी भवसागर से पार उतर जायेगा वही तो अजर अमर हो जायेगा। उसी का ही मानव जीवन सफल है।7। वहां परमात्मा के परम धाम पहुंच जायेगा तो अनन्त सुख की प्राप्ति हो जायेगी। हरि का प्रेम वहां पर सुलभ होगा।8।

सदा ही चंचल रहने वाला मन जिसे हलवी कहा गया है। यह मन जब भी साधना द्वारा हृदय रूपी पाटे पर जाकर बैठेगा, वहां पर संकुचित हो जायेगा। चंचलता मिटाकर एकाग्र हो जायेगा तो वह हृदय में प्रफुल्लित कमल फूल पर मन रूपी भंवरा गुंजार करेगा वही गुंजार ही नाद ध्वनि के रूप में सुनायी देगी। उसे ही बादलों की गर्जना कहा गया है और जब नाद ध्वनि की गर्जना सुनायी देगी तो दूसरे ही क्षण बिजली की चमक भी दसवें द्वार में दिखाई देगी। यही सभी कुछ जब मन की हृदय कमल में स्थिरता होगी तभी संभव है। बादल में बिजली की चमक एवं गर्जना भी बादलों की स्थिरता पर

ही निर्भर करती है। कहा भी है-''ह्रदय नाम विष्णु को जंपो हाथे करो टवाई'' ''ईश्वर सर्व भूतांना ह्रद देशे अर्जुन तिष्ठति'' जीवन का लाभ तो उन्हीं संतों को होता है जो इस प्रकार की साधना करके अपने अहंकार को मिटा देते है। उनकी दृष्टि में सर्वत्र हरि ही हरि रह जाता है। मैं पना मिट जाता है।10। जो इस प्रकार की साधना करता है वही बच पाता है अन्य तो सभी डूबते हुए नजर आ रहे है। मोह माया से निकल नहीं पाते है।11। यह दिव्य काया परमात्मा ने हमें प्रदान की है। प्रत्येक शरीर की आकृति स्वभाव भिन्न-भिन्न है ऐसा अहसास होता है कि प्रत्येक काया के लिये अलग-अलग सांचे बनाये है उसमें सुन्दर काया ढ़ाली गई है। उस काया को इस जीवात्मा ने पहन रखा है।12। किन्तु इस रतन सदृश अमूल्य काया को प्राप्त करके भी यदि हींडोले अर्थात् ह्रदय से उठी हुई आनन्द की लहरों उमंगों से परिचित न हो सके तो जीवन व्यर्थ ही चला गया। यदि उस उमंगों की लहर पर बैठ जाये तो सहज ही सुरति परमात्मा से लग जायेगी।16। अमृत के कटोरे भरे हुए है तथा वह भी अपने पास अति निकट ही है किन्तु उनकी प्राप्ति तो गुरु कृपा से ही हो सकेगी। सतगुरु ही युक्ति से अमृत पान करवा सकते है। हे साधो मोमणों! अत्यधिक प्रेम भाव से भृकुटि में ध्यान लगाकर विष्णु मंत्र का जप करो।17। जाम्भोजी का सेवक आलम कहते है कि इस प्रकार से जमो जागरण रचाओ अर्थात् सत्संगति करो जो अमृत फल देने वाली है।18।

साखी छन्दां की राग मारू-63

कलि मां कलम फिरी, अब छोड़ो मेरा
आलमै सिंवरियो, जुग चौथे फेरा।
जुग चौथे विष्णु मिलियो, हाथ जप माला जपै।
खांध पूगी लेवो लेखो, हुकम हांसल रवि तपै।
छेद कालंग चढ़े दुल-दुल, गिणै मेर न तेरियां।
अलख लखो गुरु जम्भ पिछाणों, कलि मां कलम फेरियां।1।
गाफल भूल रहया, गुरु म्हारे साध चेताया।
सुर तेतीसां मिलिया, शुभ सहज समाया।
सहज सुर तेतीसां मिलिया, जोर जरब वसेखियां।
एक एकूं कर ध्यावो, सरब पुन बसेखियां।
खरा खोटा परख लेसी, खलक तुल विन तोलिया।

पोह विन क्यों रंग राचो, मोख गाफिल भूलिये।2।
हंस राजा मोख लहै, सुकरत क्यों न करियो।
मन में संतोष करो, कुछ अजर भी जरियो।
अजर जरियो जीव काजै, पंथ होय सुहेल हो।
संसार राता फिरै गाफिल, अन्त होय दुहेल हो।
काया मसीती मन मुल्लाणों, सीदक एक ध्याइयो।
पठ किताब कुरांण करणी, मोक्ष हंसा पाइयो।3।
काया तो रतन सरीखी, पहरे तो मोमण कोई।
पहर जिण करणी कियो, गुरु म्हारा दाता सोई।
दाता सोई पोह पुरो, सुर सभा पहुंचाविये।
मानस रूपी फिरै कलिमां, भेद विरला पाविये।
दीन और दुनिया को साहिब, विसन करै सो होय सी।
पार गिराय पहुंचाय जम्भराय, रतन काया देयसी।4।
घर चालो मोमणों, कलि कोयल आई।
कलियर कोट तजो, पार पहुंचो भाई।
पहुंचो भाई पोह पूरा, छोड़ो मन की दुभांतियां।
चौसल के अम्बाराय, कई खड़ी वैकुण्ठियां।
देखो दाता देऊ संदेशा, खड़ी दरगे मोमणां।
उरबार निहचल कोय नांही, पार चलो मोमणां।5।
पार गिराय बसो, जित म्हारो सारंग पाणी।
खेवट आप हरी, नरसिंह रूप विवाणी।
नरसिंह रूप विवाण वस, देख जीवड़ो परहरै।
जीव जुगति पद सुध पूजा, साध मोमणां उधरै।
पांच सात नव कोड़ बारा, बोहड़ी नाही फेरवी।
अजर अमर करै जम्भराय, पार गिराय बसेरबो।6।

भावार्थ–आलम जी कहते है कि कलयुग में गुरु जाम्भोजी ने मर्यादा की पाल बांध दी है। सभी को सचेत कर दिया है। इस समय अहंकार को परित्याग करो। इस चोथे युग में फिर से प्रभु का आना हुआ है। स्मरण कीजिये इस चौथे युग में विष्णु से मिलन हुआ है। स्वयं विष्णु ही हाथ में माला लेकर जप करते हुए दिखाई दे रहे है। यही शिक्षा अन्य सभी को दे रहे

है। यही विष्णु ही मृत्यु के बाद में हिसाब पूछेंगे। इन्हीं की आज्ञा से सूर्य समय पर उगता है और तपता है। कलयुग का छेदन करके स्वयं सूर्य की भांति अन्धकार रूपी अज्ञान का नाश करने के लिये सर्वत्र रथ पर सवार होकर भ्रमण कर रहे है। उनके लिये अपना पराया कोई नहीं है। जो भी प्रेम भाव से स्मरण करता है उसके वे हो जाते है। उस अलख अगम्य देव रूपी जाम्भोजी को पहचानों। जिन्होनें कलयुग में आकर विजय पताका फहरा दी है।1। इस समय भी जो गाफिल मूर्ख बैचेन लोग है वे तो भूल रहे है। हमारे सतगुरु ने साधु संतों को सचेत कर दिया है। तेतीस करोड़ देवताओं से मिलन हो गया है। यह कार्य सहज भाव से ही हो गया है। सतगुरु तो सहज ही में सुरों से मिलान करवा देते है परन्तु वे अपने को शेख सिद्ध कहने वाले जोर जबरदस्ती भी करते है। इस समय वे ही सेणियां भूत प्रेत उपासक पुनः एक ईश्वर को मानकर ध्यान करने लगे है। वे विष्णु तो खरे तथा खोटे की खबर लेने वाले है सच्चे पारखी है। सम्पूर्ण संसार को बिना तराजू तोलने वाले सच्चे न्यायकारी है। बिना सद्मार्ग का अनुसरण किये क्यों किसी कुमार्ग में चलते हो वहां उस मार्ग से मोक्ष कहां मिलेगा।2। हंस राजा निश्चय ही मोक्ष को प्राप्त करेगा। उस परम गति के लिये सुक्रत क्यों नहीं करते। मन में संतोष रखते हुए अजर काम क्रोधादि को क्यों नहीं जला देते हो। इस जीव की भलाई के लिये अवश्य ही जरणा करो। इससे तुम्हारा मार्ग सुख कर हो जायेगा। मूर्ख लोग तो संसार के रंग में रचे हुए ही घूम रहे है। यह क्रिया अन्त में दुखदायी होगी। यह काया ही मस्जिद है और इस काया में रहने वाला मन ही मुल्ला है। सच्चे मन से ध्यान करो। पुस्तक वेद शास्त्र कुराण आदि पढ़कर कर्त्तव्य कर्म करोगे तो यह जीव मोक्ष को प्राप्त करेगा।3। यह दिव्य रत्न सदृश काया मिली है। परन्तु इसको कोई विरला भक्त ही पहचान जानता है। इसका सदुपयोग करता है, इस काया को धारण करके जिन्होनें शुभ कर्म किये है, उन्हें गुरु दाता पुनः काया प्रदान करते है वही काया धारण करके सुपात्र बनता है। उसे अवश्य ही देव सभा में पहुंचा दिया जायेगा। वह इस कलयुग में देव स्वरूप ही है किन्तु मनुष्य का रूप धारण करके भ्रमण करता है। उन्हें पहचानने वाला कोई विरला संत जन ही होगा। वह देव मानव बाहर से दिखने में तो दीन ही होगा किन्तु आत्मा से दुनियां का स्वामी होता है। जैसा विष्णु करेंगे वैसा ही तो होगा। गुरु जाम्भेश्वर जी यहां पर पार उतारने के लिये आये

है। हमें रत्न सदृश दिव्य शरीर प्रदान करेंगे।4। हे भक्तों! अब वापिस अपने सच्चे घर को चलो। कलयुग में कोयल सदृश मधुर वाणी बोलने वाले हमारे स्वामी हमें लेने के लिये आये है। यहां पर जो कुछ भी हमारे पास धन महल है उन्हें त्यागकर संसार सागर से पार पहुंच जाओ। हे भाई! अवश्य ही पार पहुंचो क्योंकि इस समय पूर्ण सत्य मार्ग मिल चुका है। मन की भ्रान्तियां दोय मन दोय दिल भाव छोड़ दो। हे देव! चारों ओर यहां आसपास बाग बगीचों में जहां तहां कुछ जमात और भी खड़ी है जो आपके धाम पहुंचने के लिये व्याकुल है तथा अधिकारी भी है। आप हमें आज्ञा प्रदान करो और उनके लिये संदेशा देवो तो मैं जाकर उन्हें सुनाऊंगा। वे आपके दरवाजे पर ही खड़े है। यहां इस जगह तो अडिग स्थिर कुछ भी नहीं है सभी कुछ परिवर्तन शील है इसलिये हे मोमणों! यहां से पार सच्चे घर को जाना है।5। संसार सागर से पार उतर कर वहां पर निवास करना है जहां पर हमारे सारंगपाणी भगवान विष्णु का आवास निवास है। हे देव! आप खेवट बनकर हमारी नैया को ले चलो जिस प्रकार से नृसिंह रूप धारण करके प्रहलाद को अपने मित्रों सहित लेकर चले थे। नृसिंह रूप खेवट को देखकर जीव थर-थर कांपने लग जाता है किन्तु आपका भक्त साधु जो आपकी भक्ति करता है आपके चरणों की सेवा करता है वह युक्ति जानता है। वह अवश्य ही नैया पर सवार हो जायेगा और पार उतर जायेगा। ऐसे जाम्भेश्वर जी अमर अजर करने वाले है। जीव को पार उतार कर सदा के लिये ही वहां पर बसेरा देने वाले है।6।

हरजस राग धनाश्री-64

पतवो लिख दो जी हो बांभणां, कह ऊधो समझाय।
तुम बिन दूभर जीहो देसड़ो, हरि विन रहयो न जाय।1।
कह ऊधोजन गोविन्द कब मिले, वृन्दावन रो राव।
रंग रो विनइयो नंदलाल, जांणोजी श्री रंग मिलाव।2।
ऊधो माधोजी सूं यो कह, ऐसी कछु हमें न सुहाय।
बिठला बहुदिन जीहो लावियां, रहयो द्वारिका छाय।3।
मोहनी मूरत जीहो माधवां, चतुर्भुज बसियो म्हारे चित।
देखो भाई नागर नंद रो कान्हवो, सगुण श्याम सूं प्रीत।4।
सो संभर सो मथुरा द्वारिका, सब रंग जम्भ अचंभ।
कामण गारो छै जीहो कान्हवो, पियो म्हारो पारब्रह्म।5।

देखो भाई नागर नंद रो कान्हवो, चंचल चतुर सुजान।
मेरो मन लागो हरिजी श्याम सूं, जाको हर मुरली सूं ध्यान।6।
हरिजी रा मीठा मीठा बोलणां, ओ छै म्हारे जीवड़े रो मूल।
तन मन भक्तां सेती रम रहयो, भेद न जाणै मूरखो थूल।7।
गोकुल केरो जीहो ग्वालियो, ओ छै म्हारे जीवड़े रो आधार।
सोला सहस्र गोपियां में, रहयो छै बालमियो ब्रह्मचार।8।
मेलो कीजै मन रा माधवा, तेरा जन कोड कराय।
बां मिलियां हम जीवै, विन मिलियां मर जाय।9।
बाल सनेही म्हारो साहिबो, अति ही पियारो पीव।
हरि मुख देखण के कारणै, तलफत छै म्हारो जीव।10।
देखो भाई नागर नंद रो कान्हवो, पियो मेरो परम दयाल।
आलम प्रभुजी रो लाडलो, गिरधर लाल गंवाल।11।

भावार्थ–भगवान श्री कृष्ण गोकुल मथुरा छोड़कर द्वारिका में जाकर स्वर्णमयी नगरी बनाकर वहीं रहने लगे थे। कृष्ण के परम भक्त उद्धवजी वियोग में अति दुखी हुए और ब्राह्मण को बुलाकर श्री कृष्ण को पत्र लिखवाते हुए समझा रहे है कि तुम्हें कृष्ण को पत्र में क्या-क्या लिखना है वही आलम जी अपने पतवे में वर्णन करते है। इस प्रकार का पत्र उद्धवजी ने कृष्ण को लिखा था जिसका भावार्थ यहां पर दिया जा रहा है।

हे ब्राह्मण! श्री कृष्ण जी को पत्र में यह लिख दे कि तुम्हारे बिना तो इस देश में जीवन जीना दूभर हो गया है। हरि के बिना तो अब एक क्षण भी नहीं रहा जाता।1। उद्धवजी कहते है कि श्री कृष्ण से पत्र द्वारा यह पूछा जाये कि आप वृन्दावन का राजा गोपालक कृष्ण फिर कब मिलेंगे। लीला के नायक नन्दलाल सदा ही अपने रंग में दूसरों को रंजित करने वाले थे। मैं जानता हूं आपकी लीला को एवं आप भी तो हमें जानते है फिर उस मूरली, ध्वनि, नृत्य, गायन के रंग से हमें वंचित क्यों किया।2। उद्धवजी माधव कृष्ण से कह रहे है कि इस प्रकार का खेल खेलकर अकस्मात हमें छोड़कर चले जाना यह हमें तो अच्छा नहीं लगता। वे बीते हुए दिन भी क्या वापिस लौटकर आयेंगे? स्वयं आप यहां आ जाओ तो वे दिन भी लौटकर आ सकते है। किन्तु आप तो द्वारिका में ही छा गये है उन लोगों के ही पूजनीय हो गये है।3। माधव श्री कृष्ण की मोहनी मूरती हमारे चित में बसी हुई है। वही

चतुर्भुज भगवान श्री विष्णु की मूर्ति है। उसे हम हृदय से बाहर कैसे निकाल सकते है। हे भाई देखो! वही निर्गुण निराकार विष्णु ही नंद का बालक बनकर सगुण श्याम रूप में आये है।4। वही वृन्दावन है तथा वही द्वारिका, मथुरा है। इन तीनों में कुछ भी अन्तर नहीं है तथा जो रास लीला वहां वृन्दावन मथुरा में दिखाई वही तो इस समय जाम्भेश्वरजी के रूप में, अचम्भे के रूप में यहां दिखा रहे है। क्योंकि हमारे कृष्ण बड़े ही लीला धारी है। वे न जाने कब क्या करेंगे। यही चरित्र दिखाने के लिये यहां सम्भराथल पर आ गये है। हमारे पति परमेश्वर तो पारब्रह्म ही है।5। हे भाई! देखो नन्द का बालक श्री कृष्ण बड़ा ही चंचल और चतुर सुजान भी है। मेरा मन तो हरिजी से लगा हुआ है और उनका मन मुरली से लगा हुआ है। जिसका मैं ध्यान करता हूं वह नटखट मेरी तरफ न देखकर मुरली की तरफ ध्यान लगा रहा है।6। हरिजी श्री कृष्ण मीठे-मीठे बोल बोलते है मैं उनकी बोली पर न्यौछावर होता हूं। यही तो मेरे जीवन का मूल आधार है। वह कृष्ण तो तन मन से अपने भक्तों के साथ रमण कर रहे है। परन्तु यह मेरा मन बुद्धि तो मूर्ख स्थूल है भेद नहीं जान पाते है मैं कैसे इनको मनाऊं।7। गोकुल में गाय चराने वाले ग्वाल बाल श्री कृष्ण ही मेरे जीवन के आधार है। सोलह हजार गोपियों में रमण करने वाले कृष्ण स्वयं बाल ब्रह्मचारी है कहा भी है-कन्हड़ बालो जती ब्रह्मचारी है। हे माधव! एक बार आकर अवश्य ही दर्शन दीजिये। हम तेरे अपने प्रियजन है हम तुम्हारे से प्रेम करते है। आप मिलोगे तो हम जीवन धारण कर सकेंगे और आप नहीं मिलेंगे तो वे सभी आप के प्रेमी मर जायेंगे।9। हमारा तो बाल सनेही साहब है, अत्यधिक प्रिय है क्योंकि हमारा स्वामी भी है। ऐसे प्रेम से भरे हुए हरि का मुख देखने के लिये हमारा जीव तड़प रहा है।10। हे भाई देखो! हमारा परम प्रिय कृष्ण बड़ा ही दयालु है। आलमजी कहते है कि उद्धव जैसे प्रिय भक्त भगवान के लाडले है। ऐसे कृष्ण लाल गोपाल को संदेशा पत्र द्वारा भिजवाया था। जिसको आलमजी ने छन्दोबद्ध किया है।11।

हरजस साखी राग सुहब-65

अब चलिये जारे म्हारा पंथियां, पंथड़े मत लाय बार।
सनेसो म्हारो श्री रंग नै, कहियो जाय अबार।1।
पंथी दोय सुलखणां, सकल कला चंद सूर।
ऐह पटंतर देह नै, हरि नैड़ा बसै की दूर।2।

कोई बतावो हरि आप तो, सांई हमारो पांथलियां।
आरती बूठा मेह ज्यों, पूसै मन रलिया।3।
निरधनियां धन बाल्हमो, आरती आरती याह।
यो हरि हम को बाल्हमो, ज्यूं चंद कमोदनि याह।4।
जां देशां फल ना घटे, आवै श्याम दिसाह।
जीऊ तो प्यारो मिलै, पछम रो पातिशाह।5।
सेत दीप ऐराक खाण्ड, बसै पछम रै देश।
सो जन पग पाहल लेऊ, ल्यावै बहु सन्देश।6।
दुल दुल घोड़ी साखती, आयो श्याम नरेश।
त्रिलोका रो पेखणों, सुरनर सकल नरेश।7।
आलम जोति झिग मिगै, मेघाडंबर छाति।
कोड़ी तेतीसां रो पेखणो, परसां निकलंक पाति।8।

भावार्थ–हे धर्म मार्ग के पथिक! अब तुम्हें सतपंथ मिल गया है, इस पर चलने में देर मत करें। हमारे श्री रंगजी का संदेशा भक्तों को जाकर अति शीघ्र ही सुनाओ।1। संसार में दो सुलक्षणों वाले पथिक सूर्य और चन्द्रमा है जो सदा ही अपने पथ पर चलते हुए अपनी सम्पूर्ण कलाओं से अपने स्वामी को संदेश दे रहे है। हरि चाहे नजदीक बसता हो चाहे दूर ये सूर्य और चन्द्रमा ही शरीर धारी पटु संदेश वाहक हरि के सेवक है।2। हमारा सुपथिक तो वही है जो हरि के आने का संदेशा हमें बतला दें। उस समय हमारी प्रसन्नता का कोई ठिकाना ही नहीं रहता जिस प्रकार से वर्षा की प्रतीक्षा करने वाले प्यासे लोगों के लिये वर्षा का आगमन हो जाता है तो आनन्द का आर–पार नहीं रहता।3। निर्धनी गरीब को जिस प्रकार से धन प्यारा होता है। वियोग में दुखी व्यक्ति के लिये प्रिय मिलन सुखदायक होता है तथा जिस प्रकार से कुमोदनी कमलनी चन्द्रमा को देखकर प्रफुलित हो जाती है ठीक उसी प्रकार से हरि का मिलन हमें अति प्रिय तथा आल्हाद जनक है।4। उस देश में रहने से कोई हानि नहीं है जिस देश में श्याम के दर्शन सुलभ हो सके। उस देश में रहकर जीवन यापन करेंगे तो परम प्रिय का मिलन होगा। इसलिये इस पश्चिम देश मरूभूमि में रहना युक्त ही है।5। यह देश ही नहीं श्वेत द्वीप, इराक खण्ड आदि पश्चिम देशों में भी हमारे श्याम सुन्दर श्री जाम्भेश्वर जी भ्रमण करते है। जो भी व्यक्ति उनकी शरण ग्रहण करके चरणामृत–पाहल लेते है वे ही

आकर हमें संदेश दे रहे है।6। स्वयं श्याम श्री कृष्ण ही इस बार धर्म नियम रूपी घोड़े पर सवार होकर तथा ज्ञान रूपी खड़ग लेकर आये है। यहां आकर तीनों लोकों को देख रहे है अर्थात् ईश्वर सर्वज्ञ है जो तीनों लोकों को हाथ में रखे हुए आंवले की तरह देख रहे है। ऐसे दिव्य शरीर धारी जो देव मानव का मिला जुला रूप नरेश है।7। आलमजी कहते है कि परमात्मा की महिमा दिव्य है। ऊपर मेघ सदृश हरि दिव्य कंकेहड़ी का वृक्ष है और नीचे विराजमान स्वयं देवजी ज्योति स्वरूप होनें से झिगमिग हो रही है मानों आकाश में बिजली चमक रही है। ऐसे तेतीस करोड़ देवताओं के दृष्टा श्री गुरुदेव के दर्शन करें। जो निष्कलंक तथा अति पवित्र है।8।

साखी (मधुकर)-66

अब चलो रे लालजी, मधकर नहि छै रहंण को जोग।
जासूं तेरो रीझबो, ओह बिराणों लोग।1।
कूड़ भरोसो कुटुम्ब को, कांची तूं न कमाय।
जब जम की फांसी पड़े, काहूं तै सरै न काय।2।
जहां जम पहरा दिया, मूरखां पकड़ वैसाय।
कूवे केरे कुम्भ ज्यूं, गल बंध्यो आवै जाय।3।
लाल सुरंगी बाड़िया, सुफल फली फलियां।
जिनके बीच निपनीयां, अति अल बेलड़ियां।4।
पान फल फूल सुगन्धियां, एह गुण बेलड़ियां।
चल मधुकर उन देसड़े, मन माने रलियां।5।
इण कुमलाण पोह पसारी, बैठो देखे मांहि।
सत सुकरत पोह पसारयो, कुंवल कुंवल विगसाहि।6।
लाल सुरंग गोरियां, सजण लियो उर लाय।
विसन भगत मन भावना, भंवर रहया रंग लाय।7।
सहज मण्डल जित धमकही, भाजै भरम भीलियां।
अमी कचोला वै पीवै, भाव सूं फल फलियां।8।
केल करे काम केदला, कंवल वइन विगसाय।
अनहद रिमझिम करै, भंवर भगत भणकाय।9।
होद सरोवर तट छल्यो, हंस करै रे किलोल।
चल मधकर उण देसड़े, भाजे मन री भोल।10।

मधुकर अब संभल तूं, सुकरत पांखड़ियां।
सोई दर्शन म्हारै श्याम को, दीसै आंखड़ियां।11।
मधुकर अब सांभल्य तूं, काट चल्या जम फंद।
आपणै प्यारा कै कारणै, ज्यों मिल करां आंणद।12।
चल मधु कर वहां देसड़े, जहां अपणो नहीं कोय।
जिण खंड सूर नहीं ऊगवै, मूवां न सुणियो कोय।13।
अच इमृत अति नाद रस, मन मधुकर होय सुरंग।
उड आलम मधुकर भंवर, मिल्यो गुरु जम्भ अचंभ।14।

भावार्थ–यहां पर साखी में कवि ने अपने ही जीवन को मधुकर भंवरा कहा है। और अपने जीव रूपी भंवरे को समझाते हुए कहते है कि हे मधुकर! अब तो यहां से चलो, यहां रहने योग्य यह देश नहीं है तथा समय भी आ चुका है। यहां से आगे अपने घर पहुंचेगा तभी तेरी तृप्ति हो सकेगी। यहां तो सभी पराये हो चुके है।1। अपने कुटुम्ब परिवार के लिये झूठ कपट का सहारा लेकर पाप कमाई न करें। जब यमदूत गले में फांसी डालकर ले जायेंगे तो तुम्हें छुड़ाने वाला कोई नहीं होगा।2। वहां ले जाकर यम के दूत पहरा देंगे। मूरख को पकड़ करके बैठा देंगे सभी प्रकार की आजादी छीन जायेगी। जिस प्रकार से घड़े के मूंह में रस्सी बांधकर कूवे में लटकाकर जल निकालते है तब बार–बार अन्दर जाना बाहर आना लगा रहता है उसी प्रकार से इस जीवात्मा को भी बार–बार जन्म–मरण का नारकीय दुख दिया जायेगा।3। हे भंवरा! यहां सूखे देश में क्या कर रहा है, यहां से आगे कदम रखेगा तो लाल सुरंग वाली अनेक फूलों की बगीचियां है उन बागों में अच्छे फल फूल एवं फलियां पुष्प खिले हुए है। तथा उन्हीं बागों के बीच में अनेकों नयी कोपल वाली बैलें लगी हुई है।4। वहां उन बेलों पर पत्र पुष्प फल बड़े ही सुगन्धि वाले लगे हुए है सभी लताऐं गुणों वाली है। हे मधुकर! उस देश में चलो और आनन्द मनाओ।5। इन मुरझाये हुए फूलों में क्या रखा है। यहां का तो ऐसा ही नियम है कि जो पुष्पित होगा वह अति शीघ्र ही कुम्हलानें का मार्ग पकड़ लेता है। यहां पर बैठ गया तो फिर मुरझाये हुए फूलों के मध्य बैठा ही रह जायेगा। इसलिये सत्य सुकर्म करके आगे जाने का मार्ग पकड़ वहां पर खिले हुए अनेक कमल के फूल तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है। जो सदा ही खिले हुए रहते है।6। आगे स्वर्ग लोक में तो अनेक अप्सराऐं देवगण सुन्दर

सौम्य वेश में आपके स्वागत के लिये तैयार खड़े है, जाते ही हृदय से लगा लेते है, वहां पर विष्णु भक्त भी बहुत ही प्यारे है वहीं पर भंवरा आनन्द से खुशी मनाओ।7। सहज में ही दसवें द्वार की अनहद नाद एवं ज्योति वहां प्रगट हो जाती है। बिजली का चमत्कार एवं नाद ध्वनि की गर्जना स्पष्ट सुनायी एवं दिखाई देनें लगती है। ऐसी स्थिति में साक्षात्कार हो जाने पर भ्रम एवं भेदभाव रूपी कालुष्यता मिट जाती है। वहां पर अमृत के प्याले लोग पीते है। गर्जना के बाद अमृत वर्षा होती है। इसलिये यह फल तो शुद्धभाव से ही फलीभूत होता है।8। वहां पर इच्छाओं का समुदाय भी पूर्ण हो जाता है। उस पूर्णता की पराकाष्ठा में आनन्द से क्रीड़ा करते है अर्थात् इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। जब सभी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है तभी मुख कमल विकसित हो पाता है। अनहद नाद ध्वनि का श्रवण तथा अमृत वर्षा की रिमझिम होती है। वहीं पर भंवरा भी अपनी गुंजन प्रगट करता हुआ खुशी प्रगट करता है।9। वहीं पर होद तथा सरोवर पूर्णतया भरे हुए है और हंस उनमें मोती चुगते है, किलोल करते है। हे मधुकर! उस देश में चलो, जहां मन की सम्पूर्ण भ्रान्तियां मिट जाती है।10। हे मधुकर! अब तूं संभल जा और अपनी सुकर्म रूपी आंखों को अच्छी प्रकार से विकसित कर, तुझे अपने श्याम के दर्शन इन्हीं आंखों से करना है इसलिये प्रयत्नशील हो जा।11। हे मधुकर! अब तूं संभल जा यम दूतों के फंद यानि मोहमाया को काटकर आगे चले। यही सभी कुछ अपने प्यारे स्वामी के लिये करना होगा। यहां पर पहुंचने पर दुखों से छुटकारा मिलेगा तथा आनन्द की प्राप्ति हो सकेगी।12। हे मधुकर! उस देश में चलो जहां पर अपना कोई नहीं है अर्थात् जहां पर अहंभाव, मेरा, तेरा आदि मोहमाया नहीं है। वह ऐसा अखंड लोक है जहां सूर्य अस्त एवं उदय नहीं होता है, वहां तो परमात्मा की स्वयं ज्योति का ही प्रकाश है। और न ही वहां कभी मृत्यु ही आती है।13। अति पवित्र नित्य अमृत तो परमात्मा का नाम ही है वह रसीला भी है। जिसे लेकर के, स्मरण करके, मन रूपी भंवरा सुरंग आनन्दित हो जाता है। आलमजी कहते है कि हे भंवरा! अब तो यहां से उडकर आगे बढ़, तुझे तो सतगुरुदेव जाम्भोजी मिले है जो कि साक्षात् अचंभा ही है इसलिये आगे बढ़।14।

कवि संख्या-29 'रेदास (रविदास) धतरवाल'

जन्म वि. सं. 1530-1600 के मध्य अनुमानित है। ये गृहस्थ बिश्नोई

जाम्भोजी के शिष्य थे। सत्संग सुनने और सुनाने के प्रेमी थे। यत्र-तत्र भ्रमणशील भी थे। इनके द्वारा रचित तीन हरजस एवं एक साखी है। इनकी यह प्रसिद्ध साखी विणजारियां दी जा रही है। इस साखी से ही इनका आचार-विचार एवं कवित्व का पता चलता है।

साखी छन्दां की (विणजारिया)-67

पहलै पहरै रैणि का विणजारियां, तै जलम लियो संसार वै।
वाचा चूको आपणी विणजारिया, तेरी बालक बुद्धि गंवार वै।
बालक बुद्धि गंवार न चेत्यो, चूको माया जाल वै।
अब पीछे क्या होय पछिताया, जल पहिले न बांधी पालवै।
बीस बरस को भयो अयांणों, थंभ न सक्यो भार वै।
जन रविदास कहै विणजारा, तैं जलम लियो संसार वै।1।
दूजै पहरै रैणिका विणजारियां, तूं निरखत चाल्यो छांव वै।
बंदे साहिब न जाण्यो विणजारिया, तूं लेय न सक्यो नांव वै।
नांव न लीयो ओगण कीयो, इह जीवण के ताण वै।
अपणी परायी गिणी न काई, बांधी अबल कुबाण वै।
साहिब लेखो लेसी तूं छलि देसी, भीड़ पड़े तुझे तांहवै।
जन रविदास कहै विणजारा, तै जलम लियो संसार वै।2।
तीजै पहरै रैणिका विणजारियां, तेरा ढ़ीला पड़्या प्राण वै।
काया इवांणी क्या करै विणजारियां, गढ़ भीतर बसै अजाण वै।
वसै अजाण काया गढ़ भीतर, अहलो जलम गमायो वै।
अब की बेर न सुकरत कियो, बहोड़ी न यह तन पायबै।
छीनी देह काया कुमलानी, तूटण लागा तेरा ताण वै।
जन रविदास कहै विणजारा, तेरा ढ़ीला पड़्या प्राण वै।3।
चौथे पहरै रैणिका विणजारिया, तेरी थरहर कांपी देह वै।
आयो हंकारो श्याम को विणजारियां, छोड़ी पुराणी थेह वै।
छोड़ी पुराणी हुयो अयांणों, बालद लाद सवेरियां।
जम के आये पकड़ चलाये, बारी पूगी तेरियां।
चाल्या अकेला पंथ दुहेला, कांसूं करै सनेह वै।
जन रविदास कहै विणजारा, तेरी थरहर कांपी देह वै।4।

भावार्थ-मानव यहां संसार में व्यापार करने के लिये आया है।

इसलिये यहां पर कवि ने व्यापारी,विणजारा शब्द से संबोधन किया है तथा यदि सचेत न हो सका तो समझो उसके लिये रात्रि ही है जिस प्रकार से रात्रि के प्रहर व्यतीत होते है। उसी प्रकार आयु भी व्यतीत होती जा रही है। इसलिये यहां पर कवि ने रैणिका शब्द का प्रयोग किया है। बालक का जन्म होता है तो वह जीवन का प्रथम प्रहर है हे व्यापारी! तुमनें प्रथम अवस्था में तो प्रभु का स्मरण किया नहीं क्योंकि तेरी बालक बुद्धि थी। वहीं से ही तुमनें अपने किये हुए वचनों को तोड़ना प्रारम्भ कर दिया। क्योंकि ना समझ होनें से माया जाल में भटक गया, अब वृद्धावस्था में यदि सचेत होकर पछतावा कर रहा है तो उससे क्या होगा? जल की बाढ़ आनें से पूर्वही उसे रोकने के लिये पाल-बंधा बांधना चाहिये था। जब बाल्यावस्था से युवावस्था में पहुंच गया था जब बीस वर्ष का युवा हो गया था तब तो मस्त हो गया अपना भार भी नहीं संभाल सका, अपना पराया का कुछ भी नहीं रहा। रविदास जी कहते है कि तुमनें संसार में जन्म कुछ कमाई करने के लिये ही लिया है। इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिये था।1। अब आगे दूसरे प्रहर में युवावस्था प्रारम्भ हुई तब भी तुमनें सच्चा व्यापार नहीं किया किन्तु अहंकार के वशीभूत होकर अपनी ही छाया को देखते हुए मरोड़ में चलता रहा था। हे व्यापारी! न तो तुमनें साहिब परमात्मा को ही पहचाना और न ही तुमनें परमात्मा का स्मरण ही किया। परमात्मा का नाम तो लिया नहीं परन्तु अवगुण-पाप कर्म ही किये थे और वे भी अपनी जवानी के बलबूते पर ही किये थे। न तो तुमनें अपनी वस्तु को समझा ओर न ही परायी को परायी समझा प्रथम दर्जे की बुराई अपने में तुमनें डाल ली। उस समय तुमनें यह नहीं सोचा कि साहिब हिसाब पूछेंगे तब छला जायेगा, तेरे उपर भी कभी आपत्ति आयेगी तब उसका जवाब देना कठिन हो जायेगा। रविदास कहते है कि रे जीव! तूं अब युवावस्था में तो अपनी छाया देखता हुआ चल रहा है।2।

आगे जीव का तीसरा प्रहर प्रारम्भ हो जाता है वह भी रात्रि की तरह ही है। तीसरे प्रहर में जवानी चली जाती है तो शरीर का अंग प्रत्यंग ढ़ीला पड़ जाता है। काया विचारी क्या करें। इसे तो समय अनुसार बदलना ही है। परन्तु इस काया में बसने वाला जीव व्यर्थ में ही इस मानव शरीर से हाथ धो बैठता है। अबकी बार यदि सुक्रत नहीं किया तो दुबारा तो यह शरीर नहीं मिलेगा। वृद्ध हो जाने पर काया क्षीण हो जाती है, तेरी शक्ति दिनों दिन

समाप्त होती जाती है। रविदास कहते है कि हे विणजारा! तेरे प्राण दिनोंदिन ढ़ीले पड़ते जा रहे है।3।

अब आगे अन्तिम चौथा प्रहर आ गया तब तेरी देह थर-थर कांपने लगी। एक दिन हंकारो-मृत्यु आयेगी और इस जीव को पकड़कर ले जायेगी और यह शरीर प्राचीन देह की भांति पड़ी रहेगी। पुरानी देह को छोड़कर अकेला ही खाली हाथ चला जायेगा। जिस प्रकार से व्यापारी अपनी वस्तु का व्यापार करके चला जाता है। यम के दूत आ जाते है वे पकड़ कर ले जाते है क्योंकि अबकी बार बारी आयी हुई थी कौन बचा पाता। यहां से अकेला ही चल पड़ता है आगे मार्ग भी बहुत ही कठिन दुखदायी होता है, उसे पार करना ही पड़ता है। अब आगे प्रेम भी तो किससे करें। रविदासजी कहते है कि इस प्रकार से व्यापारी की काया कांपने लगती है कुछ भी व्यापार नहीं कर पाता।4।

कवि संख्या-30 'भींवराज'

जन्म 1530-1600 मध्य अनुमानित है। इनका दूसरा नाम भींया है इनको ही जाम्भेश्वर जी ने सोवनी नगरी दिखाई थी। चितौड़ की कथा में भीमराज का नाम आता है। ये काशी में पढ़े हुए शास्त्रज्ञ थे। गुरु जाम्भोजी के शरण में आकर बिश्नोई पंथ में सम्मिलित हुए थे। इनके द्वारा रचित दो साखियां उपलब्ध है।

साखी छन्दां की-68

रे विणजारा न करि पसारा, तांडै हुई तियारी।
बारां काज समाहण मनवां, नायक नर निरहारी।
नायक नर निरहारी मनवां, खालक खेवण हारा।
किरिया ले किरियाणो नाणो, पारि उतर विणजारा।1।
रे व्योपारी कर दिल इकतारी, वाचा वीर संभाली।
ओदरि कोल कियो मन मेरा, उदग्यो दसबंध टाली।
दसबंध टाली खरतर चाली, निपज्यो नर निरहारी।
इणि विध लाभ हुवै मन मेरा, पारि उतरि व्योपारी।2।
रे मन चंगा तजी कुसंगा, साध संगति मिल चाली।
अजर जरो भवसागर तिरियो, जिभिया झूठ जे पाली।
तन का तसकर बस कर मनवां, नित उठ न्हाई गंगा।

आंण देव अभिमान परिहरि, तो जाणी मन चंगा।3।
रे मसवासी जप अविनासी, ध्यान धणी सूं लाई।
ओलखी अलख अमर गढ़ चालो, जुरा न झंपे कांई।
जुरा न झंपे जन की गम नाही, सुरां सुरपति निवासी।
भीवराज विसन के शरणै, मन हो गयो मेवासी।4।

भावार्थ–रे व्यापारी! अब अधिक पसारा–फैलाव मत कर तुझे तो अति शीघ्र ही आगे जाना है। बिल्कुल तैयारियां चल रही है। बारह करोड़ जीवों को पार करने के लिये स्वयं विष्णु ही नर का रूप धारण करके निरहारी बनकर आये है। ये सभी के स्वामी है। इसलिये हे मन! तूं क्यों संसार के विषयों में उलझ रहा है। संसार के अधिपति इस बार स्वयं ही नौका के खेने वाले केवट बनकर आये है। हे मानव! तूं गुरु के समीप जाकर उनके द्वारा बतायी हुई क्रियाएं धारण कर। जिससे पुनः संसार सागर में आना ही न पड़े, अब पार उतरने का समय आ गया है।1।

हे व्यापारी! अपने मन को हृदय में स्थिर आत्मा परमात्मा से एकाकार कर दे। गुरु के वचनों को स्मरण करके धारण कर। जब तूं गर्भवास में था तो कवल किये थे कि मैं बाहर आकर शुभ कर्म करूंगा। किन्तु यहां आकर अपनी कमाई का दसवां भाग देने में क्यों आनाकानी करता है। यदि दसवां भाग दान करेगा तो तेरी खेती अधिक ही निपजेगी, स्वयं भगवान तेरे सहायक होंगे। इस प्रकार से तेरे को अधिक लाभ ही होगा। ऐसा लाभ लेकर संसार सागर से पार उतर जा।2।

हे मन तूं तो बहुत ही अच्छा है परन्तु कुसंगति के कारण बुराई ग्रहण कर लेता है इसलिये कुसंगति को त्याग दें। साधु संतों के साथ मिलजुल कर चलना। काम क्रोध को जला दो और भवसागर से पार उतर जाओ। जीभ्या से कभी झूठ न बोलो। इस शरीर में यह मन चोरी करने वाला चोर है इस चंचल चोर का ध्यान रखो। यह कहीं आपकी कमाई चुरा तो नहीं रहा है। नित्य प्रति जागृत होकर ज्ञान गंगा में स्नान करो। आन देवता भूत प्रेतादिक का परित्याग कर दो। केवल एक विष्णु परमात्मा का ही स्मरण करो। तभी मानों कि मन अच्छा है।3।

हे श्मशान में निवास करने वाले मानव! क्योंकि मृत्यु का कुछ भी पता नहीं है। हम सभी लोग यही मानकर चलो कि श्मशान में पहुंच चुके है

इसलिये हे मेवासी ! तूं अविनाशी परमात्मा का जप कर। उस अलख परमात्मा को पहचान करके परमात्मा के परम धाम अलख गढ़ में जाना है वहां पर बुढ़ापा आदि रोग दोष नहीं आते है। न तो वहां बुढ़ापा आता और न ही किसी प्रकार का मानसिक दुख ही आ पाता है। क्योंकि वहां तो देवाधिदेव विष्णु का निवास है। भीमराजजी कहते है कि मैं तो विष्णु के शरण हूं। मेरा मन तो अब मेवासी वैरागी बन चुका है।4।

साखी छन्दां की-69

रे मन रांति तेरी पांति, ओगण आयो भाई।
जिण तिण सेती मांडयो मोरचो, कूदर कांग रचाई।
कांग रचाई सिर मां खाई, भूंडो दीख्यो भ्रांति।
बार-बार समझाऊं रे तेने, विसन सिंवर मन रांति।1।
रे मन बूसर क्यों रह्यो रूसर, साहब सेती सान्यां।
माया देख भयो मतवालो, यह तेरे मन मान्या।
माया है अंजलि को पाणी, कर सूं जासी निसर।
बार-बार समझाऊं रे तेने, विसन सिंवर मन बूसर।2।
रे मन कूड़ा तेरे मुख धूड़ा, कूड़ी साख न दीजै।
सांचा नै हरावै ओ मन, पत झूठा की दीजै।
पखा पखी को न्याव चुकावै, चोवटियां में चोड़ा।
बार-बार समझाऊं रे तेने, विसन सिंवर मन कूड़ा।3।
रे मन सांचा पाली वाचा, वाचा चूक न होई।
ओदर कवल किया था हरि से, निसदिन सिंवरूं तोई।
देवतणी दसबंध नहीं राखूं, यूं कर आयो वाचा।
भींवराज विसन के शरणै, विसन सिंवर मन साचा।4।

भावार्थ-रे मन ! तूं सदा ही सांसारिक विषय भोगों में ही रचा पचा रहा है। जिस कारण से मोह माया में लिप्त हो जाने से जो अवगुण आ चुके है। उनमें तेरा भी हिस्सा है अर्थात् उन अवगुणों को लाने में तेरा ही हाथ है। जहां पर भी जिस किसी के साथ व्यवहार किया वहीं पर तूं बीच में ही कूद पड़ा और अपना खेल वहीं दिखाया अर्थात् मनमानी की। इस प्रकार जोर जबरदस्ती का कार्य किया तो सिर में खानी पड़ी, लोगों ने तुझे आहत किया तथा संसार के लोगों के सामने तेरा अपमान हुआ इसलिये हे मन ! मैं तुझे बार-बार समझा

रहा हूं। तूं विष्णु का स्मरण कर तथा संगति भी विष्णु की ही कर।1।

रे मन! तूं मूर्ख है। क्योंकि परमात्मा से रूठ गया है। यह तेरा रूठना क्या परमात्मा से छुपा हुआ है? तूं माया को देखकर मतवाला हो रहा है। यह तो तेरी ही मनमानी हो रही है। किन्तु यह धन माया तो अंजलि के भरे हुए जल की भांति धीरे-धीरे निकल जाने वाला है। मैं तुझे बार-बार समझा रहा हूं। मूर्ख मन तूं विष्णु का स्मरण क्यों नहीं करता।2।

रे मन! तूं झूठा है। सदा ही झूठ का व्यवहार करता है, तेरे मुख में धूड़-रेत है क्यों तूं झूठी गवाही देता है। झूठी साख देकर किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिये। जो सच्चे मानव है उनको तो हरा देता है और झूठे व्यक्तियों को जीता देता है। जब तुम्हें न्याय करने के लिये नियुक्त करते है तो तूं सच्चा न्याय न करके किसी एक का पक्ष लेता है और सभी के सामने आकर बड़ा ही सज्जन सत्य न्यायवादी बन जाता है। हे मनवां! मैं तुझे बार-बार समझाता हूं कि तूं अन्य जंजाल को छोड़कर विष्णु का स्मरण कर।3।

रे मन! यदि तूं सच्चा है तो वचनों का पालन करना, वचन देकर मुकर मत जाना किन्तु तुमनें गर्भवास में कवल किया था कि मैं दिन-रात आपका ही स्मरण करूंगा। हे देव! मुझे यहां से बाहर निकालिये। उन वचनों को कैसे भूल गया। देवताओं की अपनी कमाई का दसवां भाग अर्पण करूंगा ऐसा वचन देकर आया था, उन वचनों को क्यों भूल गया। भीमराजजी कहते है कि मैं तो विष्णु की शरण में हूं किन्तु मन तूं बार-बार विष्णु का स्मरण कर।4।

कवि संख्या-31

गुणदास जी का जन्म 1560-1640 के मध्य अनुमानित है। इनके द्वारा रचित यह साखी मिली है यहां साखी में मिलजुल कर जीवन यापन करने का संदेश दिया है तथा जाम्भोजी की महिमा का वर्णन किया है।

साखी कणां की-70

जीहो मिलोहो जमाती अरू गुरुभाई, जां मिलियां दिल्ह खुल है।1।
खुल्है स खुल्है म्हारो सतगुरु बोले, दिल ताला दिल खुल्है।2।
टांके तोले देवजी रतिये मासो, तुल चड़ी आप कसावै।3।
बड़ सौदागर जांभराज लालड़ियो, हीरा लाल विसा है।4।

दसबंध खरचो गुरु का कवल संभालो, जो साहिब के मन भावै।5।
हूरक सूर मिलै मन मानी, उत पायल कोड़ रचावै।6।
सुर तेतीसां जांभराय मैले, नूरे नूर मिलावो।7।
हबद सरोवर को म्हारो इधक उमाहो, नित हबद सरोवर न्हावो।8।
रतन काया मिले नवरंगी, बोहड़ी न इण खंडि आवो।9।
गढ़ तेतीसां म्हारो वास करावो, पाटो अमर लिखावो।10।
संभरथलि सतगुरु परगास्यो, कथि केवल ज्ञान सुणायो।11।
हम गुनही गुरु म्हारो दाता, म्हारा गुन्हां माफ करावो।12।
गति परमोधे गुणदास बोले, आवागुवणी चुकावो।13।

भावार्थ–जमाती गुरु भाई सभी एक साथ मिलकर चलो। आपस में मिलने से दिल खुल जाता है। एक–दूसरे कें सुख–दुख में सम्मिलित होकर सहयोग की भावना उत्पन्न होती है।1। हमारे सतगुरु ने भी यही बताया है। बार–बार ऐसा ही आदेश दिया है कि हमारे दिलों में अहं और ममता का ताला लगा हुआ है जो दुराव पैदा करता है, वह ताला मिलने से खुल जाता है।2। सतगुरु ने जो बातें बतलाई है वे बहुत ही सटीक तथा यथार्थ है, मानों टांके–तुला पर रति मासे की तरह तोलकर कही गई है इनमें कुछ भी स्थूल नहीं है ''म्हे भूल न भाख्या थूलूं''।3। जाम्भोजी स्वयं बड़े व्यापारी है, जो हीरे लाल माणिक्य का व्यापार करने वाले लाल है। जिन्होनें हीरे लाल बेचने के लिये फैला रखे है। अर्थात् उच्चकोटि का ही नियम धर्म बतलाते है।4। यदि गुरु के प्रिय होना है तो अपने वचनों को निभाते हुए अपनी कमाई का दसवां भाग धर्म पुण्य में खर्च करें।5। इस प्रकार गुरु के वचनों पर चलोगे तो आगे देवता लोग अति प्यार से सामनें स्वागत करने के लिये आयेंगे और आदर सहित अपने लोक में ले जायेंगे। वहां पर सभी नृत्यगान करते हुए आनन्द मनायेंगे।6। तेतीस करोड़ देवताओं से जाम्भोजी मिलान करवा देंगे। नूर से नूर मिल जायेगा।7। यदि होद सरोवर में स्नान करने की उमंग है तो वहां हमारी इच्छा पूर्ण होगी। नित्य प्रति अमृत की प्राप्ति हो सकेगी।8। नवरंगी रत्नकाया की प्राप्ति होगी उसे लेकर स्वर्ग के सुखों को भोगोगे। पुन: इस दुखमय संसार में नहीं आयेंगे।9। हे गुरुदेव! तेतीस करोड़ देवता जहां बसते है, वहां पर हमें भी पहुंचाओ तथा वहां पर रहने के लिये अमर पट्टा लिखवादो ताकि फिर कभी वहां से वापिस न आना पड़े।10। सम्भराथल पर सतगुरु आकर प्रगट हुए है।

स्वयं ही कैवल्य ज्ञान कथन करके सुना रहे है।11। हम तो अवगुणों से भरे हुए है परन्तु हमारे सतगुरु तो दाता है इसलिये हमारे अवगुणों को अवश्य ही माफ करेंगे।12। गुणदास जी कहते है कि युग परिवर्तन करने वाले हे देव! हमारा जन्म मरण का चक्कर काट दीजिये। यही आपसे प्रार्थना है।13।

कवि संख्या-32

लाखाराम जन्म संवत् 1560-1650 अनुमान से ज्ञात हुआ है। ये मारवाड़ के हजूरी संत बिश्नोई थे। इनकी एक साखी प्राप्त हुई है जो आगम साखी के नाम से प्रचलित है। ऐसी प्रसिद्धि है कि आगे कल्कि अवतार होगा इस सम्बन्ध में कवि ने कल्पना की है कि वह होने वाला अवतार कैसा होगा, इसलिये इस साखी का महत्व है।

साखी आगम की 'राग सिन्धु' -71

जोड़ो कालंग साथि, विसनु रचावे लो।
उतपति धंधूकार, पुंवण चलावे लो।1।
दिल्ली अरू मुलतान, तखत रचावे लो।
धरण तांबे की होय, ठणक बजावे लो।2।
सहंसै किरणै सूर, फेर तपावे लो।
शरणै रहसी साध, असुरां दझावे लो।3।
मेघां डंबर छात, छांह करावे लो।
दुल-दुल होय असवार, तमक नचावे लो।4।
खड़ग तिधारो हाथ, विष्णु संभावे लो।
दल पंचाधा जोड़, निकलंक आवै लो।5।
जादव छपन करोड़, हलधर आवै लो।
क्रोड़ लिया संग पांच, पहलाद पधारे लो।6।
साते हरिचन्द राव, रोहितास आवै लो।
पांचूं पाण्डूं साथ, अहंमन आवै लो।7।
होय वृषभ असवार, महादेव आवै लो।
परम हंस चड़ि पेख्य, ब्रिहमा आवे लो।8।
होय गरूड़ असवार, विसन पधारे लो।
सहस अठियासी सिद्ध, नेमनाथ आवे लो।9।
पदम अठारह साथ, अंगद आवै लो।

चोह जुग का सिद्ध साध, गोरख आवै लो।10।
चोसठ जोगणी साथ, वीर बुलावे लो।
डग डग डेरू वाय, आण भिड़ावै लो।11।
सिर कालंग को तोड़, धरण डुलावै लो।
वसुधा कुवारी को ब्याह, परण ण आवे लो।12।
मेंहदी साह सलेम, हाथ रचावै लो।
एक लख असी हजार, महंमद आवै लो।13।
अथरवण वेद उच्चार, ब्याह बंधावै लो।
अणवर ईश जो इंद, सगति बुला वै लो।14।
करोड़ तेतीसूं जोड़, पहलाद वधावै लो।
आरती संवीरी हाथ, विसन करावै लो।15।
अनंत करोड़ि वैसाण, विवाण चलावै लो।
भूंयजल खेवणहार, नारिस्यंघ आवै लो।16।
पोहता पार गिराय, वैकुण्ठ बसावै लो।
बोल लाखं पात, आगम गावै लो।17।

भावार्थ–कलयुग में विष्णु फिर से युगानुसार आयेंगे। यहां आकर युग को साथ लेकर नयी रचना करेंगे। एक बार पुनः प्रलय होगा उसमें धन्धूकार की स्थिति हो जायेगी तथा चारों तरफ तुफानी हवाऐं चलेगी।1। दिल्ली तथा मुलतान में स्वयं कल्कि अवतार धारण करके विष्णु अपना आसन लगायेंगें। यह धरती सूर्य की गर्मी से ताम्र वर्ण की लाल हो जायेगी। उस समय वहां पर कल्कि आयेंगे और पके हुए बर्तन की भांति बजाकर देखेंगे अर्थात् यहां के लोगों की परीक्षा करेंगे।2। हजारों किरणों से सूर्य को तपने का आदेश देंगे जिससे यह सम्पूर्ण संसार ही झुलस जायेगा। जो साधु सज्जन होंगे परमात्मा की शरण ग्रहण करेंगे उनकी तो रक्षा हो सकेगी परन्तु जो दुष्ट प्रकृति के लोग वे कंपायमान होंगे।3। सूर्य तपने के बाद चारों ओर से बादल आकर सूर्य को ढ़क लेंगे तथा भयंकर वर्षा करेंगे जिससे जल ही जल हो जायेगा। उसी समय ही घोड़े पर सवार होकर घोड़े को नचाते हुए कल्कि आयेंगे।4। तीन धार वाला खड़ग हाथ में लेकर स्वयं विष्णु ही आयेंगे और सभी की खोज खबर लेंगे। श्रेष्ठ तथा बलवान पुरूषों का दल बनाकर निकलंक के रूप में विष्णु आयेंगे।5। तथा उनके साथ छप्पन करोड़ यादव

आयेंगे। तथा साथ में बलराम भी आयेंगे। पांच करोड़ को साथ लेकर प्रहलाद भी आयेंगे।6। सात करोड़ साथ में लेकर हरिश्चन्द्र तथा रोहताश्व भी आयेंगे। पांचों पाण्डव तथा अभिमन्यु भी साथ में आयेंगे।7। वृषभ पर सवारी करके महादेव शंकरजी भी आयेंगे।8। गरूड़ पर सवारी करके विष्णु भी आयेंगे। तथा हंस पर सवारी करके प्रजापिता ब्रह्माजी का भी आगमन होगा। अठ्यासी हजार सिद्ध तथा नेमिनाथ आदि भी आयेंगे।9। राम की सेना के अठारह पदम बंदर तथा अंगद भी आयेंगे।चार युगों के सिद्ध साधु गोरख का भी आगमन होगा। उनके साथ में चौसठ योगिनियां भी आयेगी।10। उस समय जब पाप की अभिवृद्धि हो जायेगी, कलयुग का प्रभाव बढ़ जायेगा तो स्वयं कल्कि ही डमरू बजाकर युद्ध करवायेंगे, एक-दूसरे को आपस में भिड़वा देंगे। जब युद्ध में पापी लोग मर जायेंगे तो पुनः धर्म की स्थापना हो सकेगी। इस प्रकार से कलयुग के सिर को तोड़कर पुनः सतयुग की स्थापना करेंगे, उस समय धरती डोलने लग जायेगी।11। धरती का स्वामी न होने से ही इस पर अनेक लोग अत्याचार करते थे। जब कल्कि अवतार होंगे तो इस कुमारी धरती के साथ विवाह रचायेंगे। यह धरती अपने स्वामी को प्राप्त करेगी मानों भगवान स्वयं धरती से विवाह करने के लिये आयेंगे यह धरती सनाथ हो जायेगी। स्वकीय यश, कीर्ति, लालिमा तथा लीला रूपी मेंहदी हाथ में रचायेंगे। एक लाख अस्सी हजार को साथ में लेकर महमंद भी इस विवाह में सम्मिलित होंगे।13। जब विवाह रचायेंगे तो अथर्वेद का उच्चारण किया जायेगा तथा इन्द्र, शंकर आदि अन्य देवता वहीं सभी मिलकर उपस्थित होंगे और विवाह देखेंगे।14। तेतीस करोड़ देवताओं को एकत्रित करके स्वयं प्रहलाद भी बधाई, गान स्वागत सहित आयेंगे। प्रहलाद स्वयं दिव्य आरती का थाल लेकर आरती करेंगे।15। अनन्त करोड़ भक्तों को साथ लेकर विवाण में बिठायेंगे और पार उतार देंगे, स्वयं नृसिंह ही पार उतारने के लिये पुनः आयेंगे।16। जो पार पहुंच जायेंगे उन्हें वहीं वैकुण्ठ में ही सदा ही रहने के लिये प्रदान करेंगे। साधु लाखाराम कहते है कि मैं आपको भविष्य में होने वाले कल्कि अवतार के बारे में बतला रहा हूं।17।

कवि संख्या-33

वील्होजी का जन्म विक्रम संवत् 1589 में हुआ था। निर्वाण संवत् 1673 निश्चित रूप से ज्ञात है। वील्होजी के सम्बन्ध में सुरजन जी, केशोजी,

परमानन्द जी, गोविन्दराम जी, तथा साहबराम जी आदि सभी ने लिखा है। संवत् 1601 में मुकाम मन्दिर में शब्दवाणी का सस्वर पाठ श्रवण करके वील्होजी छोटी आयु में आकर्षित हुए थे और नाथोजी के शिष्य बन गये थे। नाथोजी ने जाम्भोजी द्वारा दी हुई वस्तुऐं वील्होजी को सप्रेम भेंट दी थी। और पंथ का स्वामी यही होंगे यह पहचान कर ली थी। नाथोजी तथा उदोजी तापस से ज्ञान श्रवण किया और शब्दवाणी तथा साखियां नियम धर्म कण्ठस्थ करके पूर्णतया तैयार हो गये तब संवत् 1611 में विधिवत् साधु दीक्षा प्रदान की थी। साधु परंपरा वंशावली से ऐसा ही ज्ञात हुआ है। साधु दीक्षा लेकर समाज में भ्रमण प्रारम्भ किया। अनेक स्थानों में सत्संग करते थे। लोगों को समझाते थे, साखी शब्द गायन में बड़े ही निपुण थे। स्वयं भी साखियों की रचना करते थे। वील्होजी ने अनेक आख्यान कथाओं की भी रचना की है। तथा अनेकानेक हरजसों की रचना करके गा करके सुनाते थे और अपने शिष्यों को भी प्रेरित किया करते थे। साहित्य लेखन का कार्य वील्होजी ने ही प्रारम्भ किया था। अपने शिष्य सुरजन जी एवं केशोजी को नये साहित्य की रचना करने की प्रेरणा देते थे। वील्होजी मण्डली सहित धर्म प्रचारार्थ भ्रमण किया करते थे परन्तु लोग उनकी बातों पर ध्यान कम ही देते थे। तब वील्होजी जोधपुर के राजा सूरसिंह के राज दरबार में पहुंचे और राजा के कहने पर जेष्ठ के महीने में मरूभूमि में बाजरी का सिट्टा, काकड़ी एवं मतीरा अपनी सिद्धि के बल पर दिया था। जिससे प्रभावित होकर राजा ने वील्होजी की प्रार्थना पर सिपाही, खूंटा, कोरड़ा यानि दण्ड देने का अधिकार दिया था। वील्होजी गांव-गांव में पहुंचे और लोगों को साम, दाम, दण्ड भेद से समझाया और पंथ की टूटी हुई मर्यादा को पुनः जोड़ा। वील्होजी ने ही मुकाम का आसोजी मेला तथा चेत्र अमावस्या का जाम्भा मेला प्रारम्भ करवाया था। जब समाज में प्रथम बार आकर समिलित हुए थे तब उनके चक्षु खुल गये थे ये चर्म चक्षु तथा ज्ञान चक्षु भी यह उनके जीवन का प्रथम चमत्कार था। तभी वील्होजी ने अपने उद्धार की प्रार्थना इस साखी द्वारा बड़े ही कारूणिक रूप से की है यह प्रथम उनकी साखी नीचे दी जा रही है-

साखी कणां की राग गवड़ी-72

गुरुतार बाबा तूं पालक सर्वदुख भंजण, मैं अपराधी तेरा।1।
गुरुतार बाबा जीवड़ो लोभी अरू लब्धी, इण खूनी खून किया बहु तेरा।2।

गुरुतार बाबा मर-मर गयो जलम फिर आयो, इण मन न छोड़ी मेरा।3।
गुरुतार बाबा आवागवण सह्या दुख संकट, फिर्‌यो अनन्त ही फेरा।4।
गुरुतार बाबा स्वेदज अंडज जेरज उद्‌भिज, भुगति खैणी अनेरा।5।
गुरुतार बाबा लख चौरासी चौहचक भीतर, भरम्यो बहुली बेरा।6।
गुरुतार बाबा बहुदुख सह्या शरण विन गुरु की, कर-कर कर्म कुफेरा।7।
गुरुतार बाबा बैर किया बैरी उठि लागा, मैं शरणां ताक्यो तेरा।8।
गुरुतार बाबा मन परच्यो पूरो गुरु पायो, न भजूं आंन अनेरा।9।
गुरुतार बाबा अरज करूं साहिब जी के आगे, मोहि सांभलो अबकी बेरा।10।
गुरुतार बाबा वील्ह कह विनती गुरु आगे, द्यो पार गिराय बसेरा।11।

भावार्थ-हे बाबा जाम्भेश्वर जी! आप तो सभी के पालन पोषण कर्त्ता हो तथा सभी के दु:खों को दूर करने वाले हो किन्तु हम तो अपराधी है। हमनें बहुत सा अपराध किया है इसलिये हमें आप ही संसार सागर से पार उतार सकते हो।1। हे बाबा! यह जीव तो लोभी, लालची तथा हिंसक है इस खूनी ने अनेकों खून किये है न जाने कितने निरपराध लोगों को इसने सताया है, यह संसार सागर से पार उतरने के योग्य तो नहीं है फिर भी मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं आप मुझे पार उतार दें।2। हे बाबा! यह जीव न जानें कितनी बार मृत्यु को प्राप्त हुआ है और न जानें कितनी बार वापिस जन्म भी लिया है फिर भी इसने मेरापन नहीं छोड़ा है।3। हे बाबा! इस जीव ने बार-बार जन्म-मृत्यु को सहन किया है। अनन्त बार इसनें चक्कर काटे है। फिर भी यह भूल गया है। अबकी बार शरण ग्रहण की है मुझे आसा है कि अबकी बार आप मुझे अवश्य ही पार उतार देंगे।4। यह जीव स्वेदज, अण्डज, जेरज, उद्‌भिज इन चार प्रकार की योनियों में भटका है तथा वहां के दु:खों को भोगा है।5। चौरासी लाख योनियों में जन्म लेकर चारों तरफ भटका है। ऐसा एक दो बार नहीं अनेकों बार हुआ है फिर भी सचेत नहीं हो सका है।6। गुरु की शरण ग्रहण किये बिना बहुत ही दु:खों को भोगा है क्योंकि स्वयं ने ही तो कुकर्म किये थे तो दूसरा क्यों भोगता।7। मैनें इस जन्म या पूर्व जन्म में किसी से दुश्मनी की है इसलिये मेरे पीछे दुश्मन लग चुके है ये काम, क्रोध आदि ही तो मेरे दुश्मन है जो नरक में पहुंचा दे। इसलिये मैनें अबकी बार आपकी शरण ग्रहण की है। आप मेरी रक्षा अवश्य ही करें।8। हे बाबा! इस बार मेरा मन मान गया है यहां आकर ही मुझे संतोष हुआ है अब मैं आपको छोड़कर

अन्य किसी को भी नहीं भजूंगा।9। हे बाबा! मैं आपके आगे बार-बार विनती करता हूं क्योंकि आप ही तो मेरे सभी कुछ हो। अबकी बार मुझे संभाल लो अन्यथा मैं टूट जाऊंगा।10। इस प्रकार से वील्होजी गुरु जाम्भोजी के आगे विनती करते हुए कहते है कि अति शीघ्र ही मुझे संसार सागर से पार उतार दो।11।

साखी कणां की 'राग सुहब' - 73

भणों गुणों गुणवंतो देव, ज्यांरा गुणां न लाभै छेव।1।
ज्ञान मन राखे इकतार, पाप धर्म रा सुणों विचार।2।
ल्हे है अकोड़ करे अन्याव, चोरी चुगली सूं घणों हियाव।3।
बांनै परख र हांडै लार, ताता खंभा रे गल मार।4।
बहन भाणजियां रो लेवे भाड़ि, दौरै मांहि पड़ैलो धाड़ि।5।
वस्तु पराई पड़ी लहाय, दाबि रहै भला मन भाय।6।
पूछी न कहै दिल रा चोर, गुरजां तणीं सहैला ढ़ोर।7।
मुरड़ मजूरी राखै तांण, किरियां मांहिं पड़ैला हांण।8।
रूंखां तणीं न पालै दया, बाढ़ै बनी कुंभी भया।9।
अण छाण्यो पाणी बरताय, जीवा नै वे घातै जाय।10।
धां धां धूल रहै अचेत, तां पापां ने हुवै परेत।11।
सुभ्यागत न मेले तार, थूला सरसा हुवै खपार।12।
जाति जेण री करै न कांण, पापी पाप कमावै जांण।13।
घांसा मोस चालै घणों, ते दुख सहसी दौरे तणों।14।
धांधां धुल चालै घणों, रूड़ा नै टालै रूत आ भींटाणो।15।
रल खोटा रल्या पीछै छिड़ै, इण विध घर सगलो आ भिड़ै।16।
जूंवां लिखां करै सिंघार, नांगड़ दूत देवेला मार।17।
सीख दियां बोले कड़कड़ी, दौरै दुख सहसी बापड़ी।18।
सुणियो ज्ञान न करियो रीस, सतगुरु कहयो वीसवा वीस।19।
करो कमाई न करो ढ़ील, गुरु फरमाया परायो सील।20।
सबद विचार बोलै वील्हा, स्वर्गे जाय करो यह लीला।21।

भावार्थ-गुणवान देवता श्री जाम्भेश्वर जी को ही भजो और उनके गुणों को धारण करो।1। मन को ज्ञान में एकाग्र करके रखो तथा पाप एवं पुण्य का विचार सुनो।2। अहंकार में टेढ़ापन छोड़ करके सीधे सरल हो

जाओ, अन्याय न करो। तुम्हें अहंकार के कारण चोरी निंदा में ही ज्यादा लगाव हो गया है।3। इस प्रकार से अवगुणों से भरे हुए पापीजन के पीछे ही यम के दूत लगे रहते है। उन्हें पहचान करके ढूंढ़ लेते है। और ले जाकर तपे हुए लाल खंभे के बांध दिया जायेगा।4। बहन भानजियों का हक यदि छीन लेता है, उनके रूपये हरण कर लेते है तो दौरे नरक में गिरा दिया जायेगा।5। यदि पराई वस्तु पड़ी हुई मिल गई है उसे घर में ले जाकर छुपाकर रख दी है। वस्तु के मालिक ने आकर पूछा फिर भी नहीं बताई और न ही उसे वापिस लौटाई तो उस चोर को यम के दूत गुरजां की मार देकर ले जायेंगे, वहां दुख सहन करना होगा।7। किसी भी मजदूर से दिनभर मजदूरी करवा करके शाम को उसकी मजदूरी न दे करके बेचारे को जबरदस्ती भगा दिया तो उसकी क्रिया में महान हानि हो जायेगी, वह कभी भी पुण्यात्मा नहीं बन सकता।8। रूंखों पर दया भाव छोड़कर बेरहमी से काटता है तो वह कुंभी पाक नरक में गिराया जायेगा।9। बिना छाने हुए जल पीता है तो जलीय जीव बनकर एक दूसरे का भोजन बनता है।10। किसी के साथ धोखाबाजी करेगा, अन्दर कुछ ओर तथा बाहर से कुछ ओर ही आचरण करेगा तो इन पापों का फल होगा, भूत-प्रेत बनना।11। घर में आये हुए सुभ्यागत की सेवा प्रेम भाव से नहीं करेगा तो आगामी आने वाला शरीर इतना स्थूल होगा जो कितना भी खायेगा तो भी पेट नहीं भरेगा, सदा भूखा ही रहेगा।12। जिसकी जो जाति धर्म कर्म है उसी के अनुसार वह नहीं चलता किन्तु दूसरों की देखा देखी करता है वह तो जानकर ही पाप कर्म कमा रहा है।13। दूसरों को अपनी अकड़ दिखाते हुए बनावटी चाल से चलेगा तो निश्चित ही कठिन दुखों को सहन करना होगा।14। बिना किसी की परवाह किये मनमाने मार्ग से चलेगा तो वह अच्छा बुरा या सज्जन दुर्जन की पहचान नहीं कर पायेगा।15। खोटे व्यक्तियों की संगति करेगा तो उनसे दुष्टता सीखेगा। वही अपने परिवार को भी सिखायेगा। इस प्रकार से पूरा परिवार ही कुसंगति का शिकार हो जायेगा। फिर एक-दूसरे से टकराते है।16। जूं लिखां को सिर तथा कपड़ों से निकालकर मारते है तो उन्हें मारने वालों को भी नंगे यम के दूत उसी प्रकार से मारेंगे।17। अच्छी शिक्षा यदि कोई देता है तो सामने कठोर वाणी बोलती है वे बेचारी नरक में भारी दुखों को भोगेगी।18। किसी सज्जन के द्वारा ज्ञान श्रवण कर क्रोध यदि नहीं आता है तो वह सतगुरु का शिष्य शत प्रतिशत है।19। शुभ कमाई करो, इसमें

ढ़ील न करो ऐसा गुरु ने फरमाया है। शील व्रत का पालन करो।20।वील्होजी शब्द विचार करके कह रहे है कि शुभ कर्म करोगे तो निश्चित ही स्वर्ग में सुख पाओगे। यह परमात्मा की लीला है इसे समझें।21।

साखी छन्दां की, राग धनाश्री-74

बाबो सांभल जैसे बागड़ देश, पोहमी पितांबर आवियो।
कांय पुरबलै सै करमन रेख, राक रतन धन पावियो।
राक पान रतन जड़ियो, ऐसी सुणी जे सोय।
आप देव त्रिभुवण नायक, मिलियो प्रगट होय।
आलिंकारे ओलख्यो, गुरु गुदड़ियो सूं भेस।
संग साधो श्याम आयो, सांभलि जैसे बागड़ देश।
पोहमी पितांबर आवियो।1।
साधो चालो ज्यूं जोवण जाय, नैणे नारायण देखस्यां।
उत मिलसी मुनियर पात, मांहि मधुसूदन पेखस्यां।
पेखां कोड़ा तरण तारण, सुपह दाखण हार।
मोमणां मन हरष हुवो, भेटस्यां दीदार।
हीयो हरषे मन बिगसे, सांभलियो हरि नांव।
कीवी माया मोह ज्यूं छूटै, चालो ज्यूं जोवण जाय।
नैणे नारायण देखस्यां।2।
भक्तां पूगो पहली सहनाण, देव जाणीजै त्रिभुवण धणी।
यही अचंभी बात, जाट जीकारो यूं भणी।
जाट जीकारो यूं भणी नै, नर बोलता हुंकार।
सु सबद संतोष लेणां, पुरूष अथवा नार।
पालटि कुबध कुबाण मेर ही, हुवा संत सुजाण।
भाव सूं गुरु मिलियो भक्तां, पूगा पहली सहनाण।
देव जाणी जै त्रिभुवण धणी।3।
देवा ही अति देव, शारंग धर संभराथले।
जिन सतगुरु की सेव, कीजे मन सूधे मिले।
मन सूधे सेव कीजै, हुवै मंगलाचार।
पांच सात नव कोटि बांरा, आयो तारण हार।
आरती कीजै नांम लीजै, जीव काजै सेव।

संभरथल परगट बाबो, देवा ही अति देव।
शारंग धर संभराथले।4।
मोमणां के मन मोटी आस, साचा ने सतगुरु तारसी।
देशी अमरापुर वास, आवागवण निवारसी।
आवागवण निवारसी नै, जे मन सुधे ध्यावियो।
जीवत मूवा खाक हुआ, सो अमरा पुर पावियो।
सुध गुरु की आंण बहिसी, तांण थंद हारसी।
वील्ह जपै आस कीजै, आवागवण निवारसी।
साचा नै सतगुरु तारसी।5।

भावार्थ–सर्व श्रेष्ठ धाम अमरापुरी जैसा इस बागड़ देश को मानकर स्वयं पीत वस्त्र धारी यहां बाबे के वेश में आये है यहां के रहने वाले सज्जनों का ऐसा कोई सौभाग्य ही था जिस कारण से विष्णु यहां पर आये है। जिस प्रकार से गरीब को अकस्मात अपार धन की प्राप्ति हो जाये उसी प्रकार से यहां के लोग धनी हो गये है, हाथ में रत्न आ गया है ऐसा हमें सुनाई दे रहा है। आप स्वयं देव तीनों लोकों के स्वामी है। यहां प्रत्यक्ष रूप से आकर मिले है। कुछ ऐसे दिव्य चिन्ह देकर सहज ही में पहचान हो गयी अन्यथा बाह्य वेशभूषा देखकर तो पहचानना कठिन ही था क्योंकि गरीबी का वेश बना रखा था, कहा भी है–''म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियो'' हे साधो! आपके साथ में स्वयं श्याम पधारे थे। इस देश को अमर लोक मान करके आये थे, वे स्वयं विष्णु ही थे।1। हे साधों! चलो अब देखने चलते है। वहां पर इन्हीं आंखों से दर्शन करेंगे। वहां पर अनेक पवित्र मुनियों का दर्शन भी होगा तथा इस धरती पर मधुसूदन भगवान विष्णु को देखेंगे। दर्शन मात्र से ही हम उनकी कृपा के पात्र हो जायेंगे तो हमें भी उन बारह करोड़ में पार उतार देंगे। मोमण भक्तों का मिलन भी वहीं होगा, प्रेम का प्रवाह उमड़ पड़ेगा। हृदय हर्षित होगा, मन विकसित होगा, हरि नाम की संभाल होगी तथा ग्रहण किया जायेगा। वहां पर पहुंचने से ही मोह माया का भ्रम टूट जायेगा। इसलिये चलो वहां पर इन्हीं आंखों से नारायण को देखेंगे।2। भक्तों को तो पहले अवतारों के कार्यकलाप से पता चल गया कि ये तो त्रिभुवन के स्वामी विष्णु देव! यह अचंभे की बात है कि जाटों ने भी हांजी–हांजी कहकर बोलना प्रारम्भ कर दिया है। यह विष्णु चरित्र के अलावा और क्या हो सकता है इससे पूर्व तो जाट लोग हुंकार के

सहित बोला करते थे। उन्हें तो बोलने की भी सुधी नहीं थी। इस समय तो पुरूष अथवा नारी सुशब्द सुनने तथा कहने लगे है। शील संतोष आदि नियम भी धारण करने लगे है। धोखा-धड़ी करनी छोड़ दी है। कुमार्ग की आदत छोड़कर सभी संत बन चुके है, सभी सुजान हो चुके है। भाव से भक्तों को गुरु मिले है। यह कोई पूर्व जन्म के संस्कार से ही पहचान हुई है स्वयं जाम्भोजी को त्रिभुवन का स्वामी स्वीकार किया है।3। यहां सम्भराथल पर देवाधिदेव विष्णु सारंगधर आये है। उन सतगुरु की सेवा करो। तथा मन लगाकर पूजा पाठ द्वारा मेल करें। इस प्रकार मन लगाकर सेवा करने से मंगलाचार होगा। क्योंकि पांच, सात, नव करोड़ तो पार पहुंच चुके है। इस बार बारह करोड़ का उद्धार करने के लिये आये है। सदा ही आरत भाव से परमात्मा को पुकारें। नाम स्मरण करें। इस जीव की भलाई के लिये भक्ति करें। सम्भराथल पर प्रगट स्वामी देवाधिदेव है जो यहां पर आये है।4।

भक्तों को तो बहुत बड़ी आशा है। जो सच्चे लोग है उन्हें तो सतगुरु संसार सागर से पार उतार देंगे। उन्हें अमरापुरी में निवास देंगे। तथा सदा के लिये जन्म मरण के चक्कर से छुड़ा देंगे। यदि आवागवण मिटाना है तो मन के सहित ध्यान करें। अन्यथा दोय मन दोय दिल कार्य नहीं बनेगा। जो जीते हुए भी मरे हुए के समान हो चुके है अर्थात् उन्होनें दुर्गुणों को निकाल दिया है वही अमरापुरी को जाते है। गुरु की बतायी हुई शुद्ध मर्यादा पर चलता है वही अजरा जारले की भावना से पार पहुंच जाता है वील्होजी हरि का जप करते हुए कहते है कि हे प्रभु! अब तो आपकी ही आशा है। आप ही हमें जन्म मरण के चक्कर से छुड़ा दीजिये।5।

साखी छन्दां की-राग सिन्धु-75

पहलै मेले की मांड हुई, सोला सौ अड़ताले।
तेरा धरमी धरम करै, तीरथ कलि उजाले।
उजलो तीर्थ कीयो सतगुरु, पाप खण्डण कारणै।
कुफर भांज अरू राह कियो, काज भगतां तारणै।
साह गरीबी गुण विचारो, विगति नांहि ज्यूं जई।
चैत्र मासे पख पहलै, मांड मेले की हुई।1।
निज तीर्थ मेल हुई, भाव कियो भल सांई।
तेरा भक्त तो माघ खोजे, जीवड़ा के तांई।

जीव काजै काढ़ माटी, पाल पर वाहिये।
सबद गुरु का सांचिये, कण काजै कंकर गाहिये।
जप जाप निज जांभ को, जुगत मिलावा सत्य थे।
आस पियासा मिलै मोमण, मेल हुई निज तीरथे।2।
एक दोवड़ दुज हड़ी, सुख मां सोर उपायो।
नाहठो चोर पकड़ लियो, भाखर चोर छुड़ायो।
जोर कर राजपूत रूता, चोर बांसे घातियो।
धकम धका धानै न छोड़यो, सुरति मेलो साथियो।
लिखे कारण जोग जुड़ियो, मरण आय मेले दई।
सुख मां दुख उपनो, दुज हड़ी दोवड़ लई।3।
सोक बाजै सार बहै, बाजै धनुष कबाणां।
हथियारा हाथे पड़िया, भाखर अरू जाम्भाणां।
हथियारा हाथे पड़िया, सूरमां गह मांडियो।
हूब हुई अर मंडया कलह, कायरां पग छोड़ियो।
गुरु सुगरा सालि सूधा, सांकड़ै सुरां रहै।
चोर काजै कलह मांडि, सोक बाजै सर बहै।4।
भाखरसी क्यूं उबरै, जिहि ने लागो कालो।
चुखने उठयो कोप करके, जाणै सिंघ पंचालो।
पंचाल ज्यूं पड़ताल देतो, पाधरो भाखर गयो।
सिकर न होय तो सीस खेरे, तुरन्त भड़ पकड़ लियो।
लिखे बिन क्यों लोह लागे, मरणै तै मत को डरे।
चुखने की चोट आगे, भाखरो क्यों उबरै।5।
धानें मांडि खरतर खरी, बलवां मोहि खड़ावो।
गुरु आप मरणै कह्यो, वेगा बार न लावो।
वार न लावो मेल्हि दावो, धाने यूं कंध मांडियो।
तुवर बलवा तेग वाही, कंवल धड़ कुटका कियो।
रजपूत नाहठा मिट्यो भारत, रह्यो तागो भल सरी।
धानों पूनियो कंध मांडयो, सत सीधे खेली खरी।6।
धाना दान सूं मान करै, प्रभु मोटो सारियो।
गुरु आपो मरण कह्यो, गुरु मुख आपो मारियो।

आपा तो मार्यो प्रभु सार्यो, संवत समय अरू चौसठे।
चैत्र मासे पक्ष पहिले, लिखी कलम सो न घटै।
चवदस के दिन चाल्यो धानो, कह वील्ह विचारियो।
मुक्ति दान सन्मान ध्यान, प्रभु मोटो सारियो।7।

भावार्थ-जाम्भोलाव तालाब को जाम्भोजी ने खुदवाकर तीर्थ रूप में प्रगट किया था। वहां वील्होजी ने सर्वप्रथम वि. सं. 1648 में चेत्र की अमावस्या को मेला प्रारम्भ किया था। वहां पर मेले में तथा अन्य दिनों में भी धर्मी लोग धर्म पुण्य करते है। कलयुग में यह तीर्थ गुरुदेव ने प्रगट किया। पापों का खण्डन करने के लिये उज्जवल तीर्थ देवजी ने प्रगट किया। नास्तिकता को मिटाने वाला तथा मार्ग बताने वाला यह तीर्थ भक्तों के कार्य बनाने वाला पवित्र है। साहिब श्री देवजी ने तीर्थ के गुणों को समझा था। तथा वहां के लोगों को गंगा के समान पवित्र तीर्थ एवं स्नान बताया था। क्योंकि पूर्व में भी यह तीर्थ पवित्र था। जहां पर पाण्डवों ने यज्ञ किया था। इस प्रकार से चैत्र मास की अमावस्या को मेला प्रारम्भ हुआ।1।

अपने ही निकट पवित्र तीर्थ में मेला प्रारम्भ हुआ तो लोगों में बड़ा ही उत्साह था। बड़े ही प्रेम से मिलन हो रहा था। भक्त लोग आकर यहां एकत्रित होते तथा ज्ञान ध्यान की वार्ताऐं होती। यह सभी कुछ जीव की भलाई का कार्य था। इस जीव की भलाई के लिये तालाब से मिट्टी निकालकर पाल के ऊपर ले जाकर डालते। सतगुरु के शब्द को सत्य मानकर तालाब खुदवाई का कार्य भक्तजन करते रहे है वहां पर कंकर पत्थरों में नंगे पांव घूमते हुए मिट्टी निकालनें का कार्य हो रहा था। साथ ही साथ परमात्मा विष्णु जाम्भोजी का जप भी करते थे। युक्ति पूर्वक किया हुआ कार्य सत्य के निकट ले जाता है। परमात्मा मिलन की परम आसा से मोमण आकर मिलते है और अपने तीर्थ स्थल में दान, स्नान, मिट्टी निकाल कर कृत्य कृत्य होते थे।2।

आगे संवत् 1664 की चैत्र अमावस्या को मेला भरा था। उस समय भरे मेले में आये हुए बिश्नोई की दोवड़ दूज दोहरा कम्बल की चोरी किसी चोर ने कर ली। उसी समय ही शांत वातावरण में शोरगुल होने लगा। लोग चोर-चोर कहते हुए पीछे भागे और चोर को पकड़ लिया। उसी समय ही एक भाखर नाम के राजपूत ने चोर को छुड़वा दिया और अपने संरक्षण में उसे वहां से भगा दिया। वहां पर धक्का-मुक्की होने लगी। फिर भी भाखर ने वहां से

अपने को नहीं हटाया तथा अपने साथियों को बुलाने लगा। वहां की घटना कुछ ऐसी ही होनहार थी वह हो गई। उस मेले में मरना ही था। इस प्रकार से सुख में दुख अकस्मात् हुआ था। क्योंकि चोर ने दोवड़ की चोरी की थी।3।

दोनों ओर से सेना बनकर आ गई और धनुष कबाण और हथियार उठ गये। एक तरफ जाम्भाणी बिश्नोई थे और दूसरी तरफ भाखर के साथी राजपूत थे। कोई किसी से कम नहीं था। सुरमाओं ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। दोनों तरफ हुंकार होने लगी, युद्ध प्रारम्भ हो गया था। उनमें जो शूरवीर थे वे तो लड़ रहे थे तथा जो कायर थे वे पीछे हट गये थे। गुरु मुखी सुगरे सुलझे हुए बिश्नोई एक चित होकर एक साथ लड़ रहे थे। इस प्रकार से चोर को लेकर युद्ध प्रारम्भ हो गया था।4।

भाखर कैसे बच सकता था क्योंकि उन्होनें चोर का साथ देकर कलंक का दाग लगाया था। उसी युद्ध में चुखने को जोश आया और लोगों के समूह से बाहर निकल कर आया तथा सिंह की भांति गर्जना करते हुए ताल ठोकी। वह सीधा भाखर के पास पहुंच गया और कहने लगा– यदि तुम्हारे में सिंहपना शुरवीरता है तो आगे आओ और मेरा सिर काट दीजिये। उसी समय ही तुरन्त भाखर ने चुखना को पकड़ लिया और मारने की कोशिश करने लगा। परन्तु जिसे कोई बचाने वाला हो तो उसे कौन मार सकता है। लोहा कैसे लग सकता है। इसलिये मृत्यु से कोई नहीं डरे। जब चुखने नें चोट मारी तो भाखर कैसे बच सकता है क्योंकि उसकी तो मृत्यु आ चुकी थी।5।

जब भाखर मारा जा चुका तो युद्ध में ओर भी जोश आ गया था। सदा के लिये दो समूहों बैरभाव हो चुका था तब उस भयावह युद्ध की शांति के लिये धनों जी अपने शस्त्र फेंक कर दोनों के बीच में आ गये और अपना सिर आगे कर दिया कि पहले मुझे मारो फिर दूसरों को मारने का युद्ध करो। क्योंकि जाम्भोजी ने कहा है–''पहलै क्रिया आप कमाइये तो औरां न फरमाइये'' जीवत मरो रे जीवत मरो, जां जीवन की विधि जांणी। इसलिये मैं स्वयं को आपके सामने प्रस्तुत करता हूं। जल्दी मेरे को मारकर अपना दावा छोड़ दो। इस प्रकार से धनों ने अपना सिर आगे कर दिया। जब किसी की हिम्मत नहीं हुई तब युद्ध शांत करने के लिये धनूं ने स्वयं ही अपनी तलवार से अपना सिर काट डाला। इस आत्म बलिदान को देखकर राजपूत सभी भाग चुके थे। युद्ध समाप्त हो गया। इस प्रकार से धानूं पुनियां ने आत्म बलिदान देकर युद्ध

तथा वैर भाव शांत करवाया।6।

सभी लोगों ने मरणोपरांत धानूं का सम्मान किया। क्योंकि धानूं ने आत्म बलिदान देकर बहुत ही बड़ा कार्य किया था। जैसा गुरुदेव ने कहा था आप स्वयं मरने की बात वहीं करके दिखाया। यह घटना सं. 1664 की चैत्र वदि अमावस्या को घटी थी। चौदस के दिन धानूं स्वर्ग में गया। यह बात वील्होजी विचार करके कह रहे है। आत्म बलिदान से धानूं को मान सम्मान तथा मुक्ति सभी कुछ प्राप्त हो गई।7।

साखी छंदां की-राग आसा धाहड़ी-76

करमणी चलणों इण संसार, संभल कर कर चालिये।
जीवड़ा नै जोखो होय, सोई ओ डर पालिये।
पालिये सो डर चेत अवसर, राख मन अमरापुरी।
करो सारी गुरु फुरमाई, चेतकर करणी खरी।
मांन आंण पिछाण सतगुरु, पाप से मन पालिये।
चेतणां संसार करमणी, संभल कर कर चालिये।1।
करमणी जपै विसन को नाम, जगत गुरु मन में रहै।
भक्ति तणां न मेले आंण, हीणों वैण न कहै।
वैण हीणों न कहै करमा, रही सिर कंध मांडियो।
सांभरण संग्राम हुवो, मरणै को बीड़ो लियो।
मैल मायाजाल चाली, राखा तागो पंथ को।
सुरग सामै पांव परठे, जपै नांव विसन को।2।
करमणी चलती सिंवरियो, श्याम शरीर सत घणों।
करमणी गौरा लिवी बुलाय, ओ अवसर छै आपणों।
आपणों अवसर राम गौरा, लिखी कलम सो नहि मिटे।
जाय चौहटे शीश मांड्यो, लिखी स्याही ना मिटे।
बाहि तेग समांहि आसु, है है कारो बरतियो।
धन्य तेरो ध्यान कर्मा, सीझती साको कियो।3।
गुरु फरमाई खांडा धार, अवसर आपो सारियो।
आपण जीवड़ो कबूल कर, पर जीव यूं उबारियो।
उबारियो जीव अरू जीवा काजै, असुरां खोटो हियो।
रूंखां उपर मरण धार्‌यो,कीजै ज्यूं करणी कियो।

करणी पाल उजाल सतपंथ, प्रेम तत्व उपाइयो।
जीव काजै प्राण दीन्हे, कीयो गुरु फुरमाइयो।4।
करमां खड़ी छै खेजड़ियां काज, रैवासड़ी के चौहठे।
सम्मत सौला सौ संसार, समय मंझ अरू इकसठे।
इकसठे मंझ और जेठ मासे, किसन पख अरू थावर दिनें।
बीज के दिन कियो पयाणों, सरियो सूधों मनें।
निरवाही नाम न सीख, मोटी पांव दे बेड़े चड़ी।
गुरु परसादे वील्ह बोलै, करमां अरू गौरा खड़ी।5।

भावार्थ– जोधपुर जिले के अन्तर्गत रैवासड़ी बिश्नोइयों का गांव है। उसी ग्राम की रहने वाली करमां अरू गौरां के बलिदान की कथा इस साखी में वील्होजी ने वर्णित की है। एक दिन गौरां करमां के घर अकस्मात् पहुंची और करमां से कहने लगी–हे करमां! इस संसार में रहकर अपने को जीवन यापन करना है परन्तु बहुत ही संभलकर चलना होगा। जीव को प्रति क्षण खतरा बना ही रहता है इसलिये सावधानी पूर्वक ही चलना है। सदा दुर्गुणों बुराइयों से डरते हुए मन की इच्छा अमरापुर की तरफ होनी चाहिये। जैसा गुरु ने कहा है वैसा ही करें और सचेत होकर कर्त्तव्य कर्म करें। अभिमान को छोड़कर सतगुरु की पहचान करें। तथा पाप कर्मों से मन को हटा दें।इस संसार में सचेत होना है और संभलकर चलना है।1।

हे करमणी! विष्णु के नाम का स्मरण करो। जगत गुरु को मन में ही रखें अर्थात् उनका ही ध्यान करें। भक्ति का अहंकार न करें। तथा कटु असत्य वचन न बोलें। चुभती बात किसी से नहीं कहें। वहां जमात के लोग वृक्षों की रक्षा करने के लिये अपना सिर देने के लिये तैयार थे। दोनों ओर से भयंकर संग्राम होना निश्चित था। मरने मारने के लिये बीड़ा उठा लिया था। मैं तो मोह माया को छोड़कर चली आयी हूं। पंथ की रक्षा करना मेरा परम कर्त्तव्य है। मेरा तो स्वर्ग की तरफ पांव उठ चुका है और विष्णु का जप करते हुए यहां तक आ चुकी हूं।2।

हे करमां! मैनें घर से बाहर निकलते ही घनश्याम विष्णु का स्मरण किया था जिससे मेरे शरीर में शक्ति का संचार हुआ है। इस प्रकार से गौरा ने करमां को अपने पास बुला लिया और कहने लगी– इस समय अपना अवसर आ चुका है। यह अपना सौभाग्य है तथा जो कुछ भाग्य में स्याही से लिखा

गया है वह कभी मिटने वाला नहीं है। इस प्रकार से करमां और गौरां ने आकर दोनों दलों के बीच में अपना सिर झुका दिया। उधर वृक्ष काटने वालों ने राक्षसी वृति के कारण तलवार चलाई और कहा अब इसे संभालो। उसी समय ही चारों ओर हा-हाकार होनें लगा। कवि कहते है कि धन्य है गौरां और करमां जिन्होनें प्रत्यक्ष देखते ही देखते अपने प्राणों की बलि दे दी परन्तु वृक्ष नहीं कटने दिये।3।

गुरु ने जो मार्ग बताया था वह तो खांडे की धार जैसा तीखा है। अवसर आनें पर इन बहनों ने चलकर दिखाया। अपने आप को बलिदान देना स्वीकार किया परन्तु जीवों की रक्षा करने में वीरता दिखलाई इस प्रकार से परोपकार के लिये अपना शरीर समर्पण कर दिया किन्तु असुरों का हृदय तो कलुषित था, वे क्या जानें परोपकार के महत्त्व को। उन्होनें वृक्षों की रक्षा के लिये मरना सहर्ष स्वीकार किया। जैसा मानव का कर्त्तव्य होता है वैसा ही किया। कर्त्तव्य कर्मो की रक्षा करते हुए पंथ का नाम जगत में उज्जवल किया और प्रेम तत्व का पसारा किया। जीवों की भलाई के लिये प्राण दे दिये। जैसा गुरु ने कहा था वेसा ही करके दिखाया।4।

करमां और गौरां ने आत्म बलिदान दिया वह भी खेजड़ी वृक्षों की रक्षा के लिये तथा रैवासड़ी गांव के चौराहे पर सभी के सामने। यह घटना संवत् 1661 के जेष्ठ महीने कृष्ण पक्ष शनिवार को घटित हुई थी। उस दिन द्वितिया तिथि थी। उसी दिन गौरां करमां ने इस पंच भौतिक शरीर का परित्याग किया तथा स्वेच्छा से ही किया। परमात्मा के बताये हुए मार्ग का पूर्णतया निर्वाह किया और संसार में अपनी महानता का परिचय देकर स्वर्ग से आये हुए विमान पर बैठकर चली गई। गुरु जाम्भोजी की कृपा से वील्होजी कह रहे है कि इस प्रकार से करमां और गौरां का बलिदान हुआ।5।

साखी दोहा-77

विज्ञानी आतम थके, आलोच्यो मन मांय।
जां जां जुग में जीवणों, ते दिन दुख में जाय।1।
सिरे मतो खोखरी कियो, झड़े न जोई काय।
पंथ सतगुरु को लाजवै, जे कोई इणि परि थाय।2।
खिवणी धनि-धनि तोहि नूं, नेतू नैण सधीर।
राह कारण रूंखां ऊपरै, वां सूंपिया शरीर।3।

वन संघार्‌यो भाटियां, कुबधी कागा जोय।
जिण ऊपर मोटो खड़्यो, सुरगे पहुंतो सोय।4।
खोखर नै मोटो कहै, नहचै राखो चित।
तज काया जित जाइये, जहां सुख बना है नित।5।
पहलै नांव श्री विसन को, सिंवरूं सिरजण हार।
जिण ओ पंथ चलावियो, खरतर खंडा धार।6।
बिश्नोई बसे तिलवासणी, सतलोक सुर जांण।
राह चलावै सतगुरु तंणों, मानें गुरु की कांण।7।
जपै नांव विसन को, खरतर क्रिया सूर।
राखे रूंख सूंभाव सूं, नगरी इधको नूर।8।
खेजड़लै किरपो बसै, भाटी गोपालदास।
संक न मानै किरपो देवरी, बन रो करे विणास।9।
बाढ़े रूंख सुहावणां, किरपो करै सिंघार।
आई खबर जमात में, सुरपुर हुई जे सार।10।
जमाती आलोचिया, मरणों इण पर थाय।
इणि अवसर चुको मति, नेकी रहै न कांय।11।
पांचो पीथो परगट्यां, नगरी मां सिरदार।
चाल र खेजड़ले गया, भाटी के दरबार।12।
पोह फाटी पगड़ो हुयो, संता सारे न्हाण।
सूरबीर अब कर गहो, जल्दी बांण कुबांण।13।
पहली मूंही खिवणी खड़ी, सत सूं घणों करार।
विष्णु भक्त मोटो खड़्यो, गुरु सूं हेत पियार।14।
इहि उपर नेतू खड़ी, चाली जलम सुधार।
सुरगां बेड़ो उतरयो, जिण चढ़ि पहुंता पार।15।
हरख सूंदरी मन मोहवणी, सुरपुर साध सुजांण।
जामण मरण वहां नहीं, सुख अधिकेरो जांण।16।
जुगे जुगे ही अवतरयो, साध संत परमाण।
वील्है भणै गति सांभलो, साधां तणां बखाण।17।

भावार्थ–यह साखी तिलवासणी में बिश्नोई बन्धुओं द्वारा दिये गये आत्म बलिदान को उजागर करती है वे लोग वृक्षों की रक्षार्थ बलिदान हुए थे।

उसी घटना का विस्तार साखी द्वारा किया गया है। आत्म ज्ञानी महापुरूषों नें मिलकर विचार किया कि जब तक जगत में जीवन रहेगा तब तक दुख में ही समय व्यतीत हो जायेगा।1। सर्वप्रथम खोखर भक्त तैयार हुआ और भरी सभा में कहने लगा-यदि इस बार कोई आगे बढ़कर अपने प्राणों की बलि देकर वृक्षों की रक्षा करेगा तो सतगुरु का पंथ लज्जित नहीं होगा अन्यथा गुरु की मर्यादा टूट जायेगी।2। धन्य खिवणी तथा नेतू नैण को जिन्होनें धैर्य धारण करके रूंखों की रक्षा करने के लिये अपने प्राण सौंप दिये।3। कुबधी कुचाली कौवों जैसे भाटियों ने वन का संहार किया। उनसे वन को बचाने के लिये मोटे ने अपने प्राणों का बलिदान दिया और स्वर्ग में पहुंच गया।4।खोखर से मोटे ने कहा-कि मन चित को निश्चल एकाग्र करो। शरीर को छोड़कर आप जहां जाओगे वहीं नित्य सुख की प्राप्ति होगी।5। अब आगे इस घटना का सविस्तार से वर्णन करते हुए कवि प्रथम तो श्री विष्णु का स्मरण करते है। विष्णु ही सर्व सृष्टि का सृजनहार है। उन्हीं विष्णु ने ही जाम्भोजी के रूप में आकर बिश्नोई पंथ की स्थापना की है। यह पंथ खांडे की धार सदृश तीखा तेज है।6। बिश्नोई लोग तिलवासणी गांव में बसते है। ऐसा गांव है मानों सतलोक में देव निवास हो रहा है। वे लोग सतगुरु के बताये हुए मार्ग पर चलते है और गुरु की कांण मर्यादा का पालन जी जान से करते है।7। विष्णु का नाम जप करते है और खरी क्रियाऐं पालन करने में सूरवीर है। वे लोग बड़े ही प्रेम से रूंखों की रक्षा करते है। सभी ग्राम के लोगों में आपस में प्रेम भाव है। वैसा भी रूंखों के प्रति भी है।8। उधर खेजड़लै ग्राम में किरपो रहता था। गांव तिलवासणी और खेजड़ला भाटी गोपालदास के अधिकार में था। गोपालदास का अनुचर किरपो तिलवासणी जाकर वृक्ष काटने लगा। किरपे ने किसी भी नियम धर्म मर्यादा देव की शंका नहीं मानी और वन को काटना प्रारम्भ का दिया।9। सुहावने रूंखों को किरपो काटने लगा। ऐसा रूंख काटने की खबर बिश्नोई जमात में पहुंची तो मानों देव लोक में पहुंचने का संदेशा आया हो।10। जमात के बन्धुओं ने विचार किया कि इन रूंखों के बदले मरना निश्चित है। हे भाइयों! अब चूकना नहीं है यदि चूक गये तो ऐसे ही वृक्ष कटते रहेंगे, अपनी मान-मर्यादा सभी कुछ मिट जायेगी।11। उन जमात में पांचो और पीथो थे। ये दोनों गांव के सरदार मुख्य थे। ये दोनों आगे आये और तिलवासणी से चलकर खेजड़ले गांव भाटी गोपालदास के दरबार में

पहुंचे और घटना से अवगत कराया।12। वहां उनकी विनती को हठी गोपालदास ने नहीं सुनी। वे दोनों निरास होकर वापिस आ गये। उन्होनें जमात को एकत्रित करके सभी कुछ बतला दिया। प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व ही संत भक्तों ने स्नान और संध्या हवन करके वन रक्षार्थ शस्त्र लेकर जहां पर वन काटा जा रहा था वहीं पर पहुंच गये।13। वहां पर हिंसा खून खराबी टालने के लिये तथा वन की रक्षा के लिये सर्वप्रथम खिंवणी ने अपना सिर वृक्ष के लगा दिया और किरपे ने बिना कुछ दया दिखलाये झटिति सिर को काट डाला। सिर कट गया किन्तु वृक्ष नहीं कटने दिया। खिवणी पीछे नहीं हटी क्योंकि सत्य की शक्ति साथ में थी। सतगुरु से प्रेम रखने वाला मोटा भक्त दूसरी बार कुल्हाड़े के आगे सिर दे दिया और वहीं कट गया किन्तु वृक्ष नहीं कटने दिया।14। तीसरी बार नेतू ने अपना बलिदान दिया और अपना जन्म सुधार करके स्वर्ग में चली गई। इन तीनों के लिये ही स्वर्ग से विमान आया और उस पर चढ़कर स्वर्ग में पहुंच गये।15। आगे वहां स्वर्ग में सदा सुख ही सुख है। वहां के निवास अत्यन्त सुन्दर मनमोहक तथा प्रेम से भरे हुए है। ऐसे सज्जनों के समीप रहने का आनन्द ही आनन्द है। वहां पर जन्म-मरण का चक्कर भी नहीं है।16। वह परमात्मा ही इस प्रकार से युगों-युगों में अवतार लेता है। इसमें साधु संत ही प्रमाण है। वील्होजी कहते है कि समय व्यतीत हो रहा है इस समय को, जीवन को समझो और सचेत हो जाओ। यही साधु सज्जनों का कथन है।17।

साखी राग धनाश्री दोहा-78

दोय तरवर इह बाग मां, एक खारो इक मीठो।
नुगरां नजर न आव ही, सुगरां सन्मुख दीठो।1।
एकै अमृत च्यार फल, दूजै विष फल च्यार।
जो बाह्यो ते भोगवै, सुरतां लेह विचार।2।
अमृत पी अमर हुवा, विष पी मरे मर जाय।
ऐ फल सतगुरु दाखवै, बिरला कूं बूंझाय।3।
क्रोध मांण माया अरु लोभ, ए चारो विष फल जाय।
यांही अवगुण उपजै, जीवनै दोरै होय।4।
दान शील तप भावना, ए अमृत फल च्यार।
वील्ह कहै गुण उपजै, जीवड़ा पहुंचै पार।5।

भावार्थ–इस संसार रूपी बगीचे में दो वृक्ष है अर्थात् सुकर्म और दुष्कर्म यही दो वृक्ष है। सुकर्म का फल मधुर है और दुष्कर्म का फल कड़वा है। नुगरे मनमुखी लोग तो इन सुमधुर फलदार वृक्ष के पास ही नहीं आते। किन्तु सुगुरु गुरुमुखी लोग सन्मुख होकर सुकर्म करते है।1। एक वृक्ष के चार अमृतमय फल लगते है तथा दूसरे वृक्ष के भी चार विषमय फल लगते है। ये चारों फल आगे बता रहे है–जैसा बीज बोया है वैसा ही तो फल मिलेगा। हे सुरति! विचार करके देख ले तुझे कौनसा फल चाहिये।2। जिसने अमृतपान नहीं किया है वह रोज ही मरता है। आगे ये फल सतगुरु बतला रहे है किन्तु कोई विरला ही समझ पाता है।3। क्रोध, अहंकार, माया तथा लोभ ये चार विष फल जानना चाहिये जो कड़वे वृक्ष के लगते है यानि दुष्कर्मों के फल है। इन्हीं चार विष फलों से अवगुण उत्पन्न होता है। ये ही जीवन को दुख में डाल देते है।4। दान शील तप तथा शुद्ध भावना ये चार अमृत फल है। अर्थात् सुकर्म से उत्पन्न होते है। वील्होजी कहते है कि इनसे सुगुण उत्पन्न होते है। जीव को संसार सागर से सद्गुण पार उतार देते है।5।

साखी राग आसा–79

जन्म हारिबे दीन विगूता।टेर।
करि कृपण कहिये बिश्नोई, धर्म नेम तां बूत न होई।
धर्म जुहै नै चालै जूता।
जीव कारण जमैं न आवै, आप भूला ओर भुलावै।
गुरु का ज्ञान न जागे सूता।
घुर हर करै धरणी रूखालै, केटक गुरु की कौल न पालै।
दीसन्ता नर लखणें कूता।
आपण खारा करै खुंवारी, कहै बात न लहै बारी।
माया मेल्ह गर्व मां सूता।
जो संतानै सदा घटि जुकै, काग कलह कदहूं नहिं चूकै।
रूदि करै खरभ ज्यों रूता।
कूड़ न डरै कड़कता बोलै, भव विण भार अथर्वण तोलै।
वेद भेद बिना भड़कै ज्यूं भूता।
गुरु आखर पारख नां जाणै, सिर आयो सैतान बखाणै।
धूते धूत मिल्या ठग धूता।

आप अपरच गति ना परचावै, ठाले ऊपर रीतो नावै।
अचगल बोल कहै विपरीता।
हुंकार्या आंटा भाजे, चोरी जारी करत न लाजै।
शर्म नहीं माई पूता।
जप तप शील सभाय यह पूरा, दान दया सत संजम सूरा।
वील्ह कहै मन इन्द्रिय जीता, जन्म जीत जिण पार पहुंता।।

भावार्थ–दीन दुखी होकर वे विश्वासी लोग जन्म की बाजी को हार गये। वे लोग अपने को बिश्नोई तो कहते है किन्तु नियम धर्म पालन तथा दान करने में कृपणता करते है। वहां उन लोगों के पास नियम धर्म की कोई वस्तु नहीं है। ऐसे लोग धर्म के मार्ग में जुड़कर नहीं चलते। अपने जीवन की भलाई के लिये जागरण सत्संग में नहीं जाते तथा अपने आप तो भूले हुए है तथा दूसरों को भी भुलावे में डाल देते है। वे लोग गहरी निन्द्रा में सोये हुए है। गुरु के ज्ञान से जागने वाले नहीं दिख रहे है। सच्ची झूठी हांक मारते है। दूसरों को डराते है। कहा भी है–''घुरै घुरावै करै इवाणी'' धरती को अपनी मान करके रखवाली करते है यदि कोई सच्ची बात कहे तो उसे ग्रहण नहीं करते। ऐसे लोग कुत्ते के लक्षण वाले होते है। स्वयं अपने आप तो दोष अवगुणों से भरे हुए है परन्तु दूसरों को नीचा दिखाने के लिये निंदा करते है। अपने सामने किसी दूसरे को तो तिनके के समान भी नहीं समझते। माया महल के गर्व में अचेत होकर शयन करते है। जो व्यक्ति संत पुरूषों को सदा ही घटिया कहता है, उन्हें सम्मान नहीं देता। सदा ही कौवे की भांति कांव–कांव करते हुए कलह करने से नहीं चूकता तथा गधे की भांति कभी रूदन भी करता है, केवल लोग दिखावा करता है। कभी भी झूठ बोलने से डरता नहीं है और वह कुवचन भी कड़क कर बोलता है। पास में धन अर्थ सांसारिक वस्तुऐं न होनें पर भी सम्पूर्ण संसार को तोलने का अभिमान करता है। वेदों का भेद जाने बिना भूतों की तरह भड़क जाता है। धैर्य नाम का गुण नहीं है। गुरु के बताये हुए शब्दों का महत्व तो नहीं जानता किन्तु सिर पर चढ़ा हुआ शैतान ही बोलता है। धूर्त से धूर्त मिल जाता है और ठग विद्या से लोगों को ठगता है। स्वयं अज्ञानी है तो उसका कथन दूसरे को ज्ञानी कैसे बना सकता है। जिस प्रकार से खाली घड़े को भरने के लिये उसके उपर दूसरा खाली घड़ा उल्टा करके भरने की कोशिश करना है तो वह खाली घड़ा दूसरे खाली घड़े को भर नहीं

सकेगा और न ही अज्ञानी जन दूसरे को ज्ञान दे सकेगा तथा जब खल व्यक्ति झूठ कपट भरे वचन से भ्रमित करने की कोशिश करेगा तो उसे ज्ञान से दूर अवश्य ही ले जायेगा। हुंकार करते हुए अहंकार में कड़ककर चलते है तथा चोरी जारी करते हुए तनिक भी लज्जा नहीं आती है। माता-पिता, बहन-भाई की मर्याद शर्म भी नहीं है। ऊपर बताये हुए लक्षणों से भिन्न व्यक्ति जो जप तप शील प्रेम तथा पंथ के नियमों का पूर्णतया पालन करने वाला तथा दान दया सत्य संयम तथा सूरवीर है। वील्होजी कहते है कि इस प्रकार से जिन्होनें इन्द्रियों को जीत लिया है ऐसे ही भाग्यवान ने जीवन की बाजी को जीता है। वही संसार सागर से पार पहुंचा है।

साखी उमाहो राग धनाश्री-80

बाबो जंबूदीपे प्रगट्यो, चोचक हुवो उजास।
आप दीठो केवल कथै, जिहिं गुरू की हम आस।1।
बलिजाऊं जांभे रे नाम नें, साधां मोमणां रो प्राण अधार।
थे जांरे हिरदै वसो, तेरा जन पहुंता पार।2।
संभराथल रली आंवणां, जित देव तणों दीवाण।
परगटियो पगड़ो हुवो, निश अंधियारी भाण।3।
एकलवाई थल खड़यो, करत सभी मुख जाप।
स्वयंम्भू का सिवरण करै, जो जपै सो आप।4।
भूख नांहीं तिसना नांही, गुरू मेल्ही नींद निवार।
काम क्रोध व्यापै नहीं, जिहिं गुरू की बलिहार।5।
भगवीं टोपी पहरंतो, गहि कंथा दस नाम।
झीणी बाणी बोलंतो, गुरू बरज्यो वाद विराम।6।
सिकन्दर परमोधियो, परच्यो महम्मद खान।
राव राणा निव चालिया, संभल केवल ज्ञान।7।
मध्यम से उत्तम किया, खरी घड़ी टकसाल।
कहर क्रोध चुकाय कै, गुरू तोड़यो माया जाल।8।
सीप वसै मंझ सायरा, ओपत सायर साथ।
रैणायर राचे नहीं, चाहे बूंद स्वान्त।9।
जल सारे विण माछला, जल बिण मच्छ मर जाय।
देव थे तो सारो हम बिना, तुम बिन हम मर जाय।10।

वोहो जल बेड़ी डुबंता, बूझे नहीं गंवार।
केवल जंभे बाहरो म्हानें, कौण उतारे पार।11।
हंसा रो मान सरोवरां, कोयल अम्बाराय।
मधुकर कमल रै करे तेरा, साधु विसन के नाम।12।
जल बिना तिसना न मिटे, अन्न बिन तिरपत न थाय।
केवल जंभे बाहरो म्हानें, कोण कहे समझाय।13।
पपीयो पीव पीव करे, बोली सह पीयास।
भूमि पड़ियो भावे नहीं, बूंद अधर की आस।14।
ठग पोहमी पाहण घणां, मेल्ही दूनी भूलाय।
पाखण्ड कर परमन हड़े, तहां मेरो मन न पतियाय।15।
गुरू काच कथीर नें राचही, विणज्या मोती हीर।
मेरो मन लागो श्याम सूं, गूदड़ियो गूणों को गहीर।16।
निर्धनियां धन वाल्हमो, किरपण वाल्हो दाम।
विखियां नें वाली कामणी, तेरा साधु विसन के नाम।17।
धन्यरे परेवा बापड़ा, थारो वासो थान मुकाम।
चूण चुगे गुटका करे, सदा चितारे श्याम।18।
अम्बाराय बधावणां, आनन्द ठामो ठाम।
श्याम उमाहो मांडियो, पोह कियो पार गिराम।19।
बोल्यो गुरू उमाहड़ो, करमन मोटी आस।
आवागवण चुकाय के, म्हानें द्यो अमरापुर वास।20।
अवसर मिलिया मोमणा, भल मेलो कब होय।
दु:खी विहावै तुम बिना, हर बिन धीर न होय।21।
काहे के मन को धणी, काहे के गुरू पीर।
वील्ह भणे विश्नोइयां, आपां नाम विसन के सीर।22।

यह उमाहो वील्होजी की विशेष रचना है तथा अन्तिम संदेश तथा वील्होजी की अन्तिम प्रार्थना भी है। जब इस संसार से प्रस्थान की तैयारी होने लगी तब अपने शिष्यों को पास में बैठाकर भाव विभोर होकर यह उमाहो सुनाया था। उमाहो का अर्थ भी उमंग है। उनकी उमंग की तरंगें इस उमाहो द्वारा देखी जा सकती है।

भावार्थ–वील्होजी कहते है कि बाबो स्वामी श्री विष्णु इस जम्बु द्वीप

में प्रगट हुए है। उनके प्रगट होने से चारों दिशाओं में प्रकाश हो गया है, तथा अन्धकार की निवृति हुई है। जैसा सतगुरु जाम्भोजी ने अनुभव किया था वैसा ही कथन किया है, ऐसे गुरुदेव की हम शरण में हैं। तथा उन्हीं की हमें आशा भी है।1। जाम्भोजी के नाम पर मैं न्योछावर होता हूं बार-बार प्रणाम करता हूं। ऐसा दिव्य नाम साधु भक्तों के प्राणों का आधार है। इन्हीं नाम पर मेरे भी प्राण टिके हुए है। हे देव! आप जिसके भी हृदय में निवास करेंगे वही जन संसार सागर से पार हो जायेगा।2। धन्य है वे लोग जो सभी मिलकर सम्भराथल आये है जहां हरि कंकेहड़ी के नीचे स्वयं देव का आसन था। जिस प्रकार से सूर्योदय हो जाने पर रात्रि का अंधकार मिट जाता है और प्रात: का प्रकाश आता है उसी प्रकार से जगत को श्रीदेव ने प्रकाशित किया।3। सम्भराथल पर स्वयं अकेले ही रहकर स्वयंभू का स्मरण करते तथा जो भी उनके पास आता वह भी ऐसा ही जप सीखता एवं करता था। जिस स्वयंभू का जप करते वे तो स्वयं आप ही थे।4। जिनको कभी भी भूख प्यास तृष्णा आदि खट् ऊर्मियां नहीं सताती थी। तथा काम क्रोध भी अपना प्रभाव नहीं दिखा सकते थे। ऐसे द्वन्द्वों से रहित सतगुरु देव की मैं शरण हूं।5। जिन्होनें भगवीं टोपी पहन रखी थी। तथा शरीर पर चोला भी दसनाम सन्यास का धारण कर रखा था। एवं झीणी बाणी तत्व दर्शाने वाली, मधुर वाणी बोला करते थे। तथा वाद-विवाद व्यर्थ के झगड़ों को मिटाने वाले ऐसे सतगुरु की मैं शरण हूं।6। अहंकार में मुग्ध दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी को हक की कमाई का उपदेश देकर सद्मार्ग का अनुयायी बनाया तथा उसी प्रकार से नागौर के सुबेदार महमदखां को भी अपनी लीला से परचाया। और भी अनेकों रावण राणां नम्र भाव होकर सद्मार्ग पर चले थे। क्योंकि कैवल्य ज्ञान देकर के उन्हें समझाया था।7। जो लोग मध्यम थे उनको उतम किया। उनतीस नियम रूपी मर्यादा को बिल्कुल युक्ति युक्त तथा सत्य बताया। उन लोगों के कलह क्रोध मिटाकर गुरु ने माया जाल को तोड़ दिया।8। सीप समुद्र के अन्दर ही रहती है तथा समुद्र का जल भी उसके साथ ही रहता है किन्तु वह सीप समुद्र के जल को ग्रहण नहीं करती परन्तु उसे तो स्वाति नक्षत्र में वर्षा के जल की बूंदों की ही आशा है तथा उसकी आशा वह पूर्ण भी होती है उसी प्रकार से वील्होजी कहते है कि मेरी भी आशा हे देव आपकी तरफ ही है। मेरी आशा भी अवश्य ही पूर्ण होगी तथा मोती बनकर फलदायक होगी।9। जल तो

मछली बिना भी रह सकता है परन्तु जल के बिना मछली मर जायेगी उसी प्रकार से हे देव! आप तो हमारे बिना रह सकते है किन्तु हम आपके बिना मछली की भांति मर जायेंगे।10। संसार समुद्र का जल तो अधिक है और साधना रूपी नौका तो बहुत छोटी है तथा नाजुक भी है फिर अपने ही बल बूते पर कैसे पार उतर सकेंगे। इतनी कमजोरी होते हुए भी मूर्ख लोग पार उतरने का उपाय नहीं पूछते है। हे देव! हमें तो केवल आप पर ही भरोसा है। आप ही पार उतार सकोगे। आपके अतिरिक्त और कोई हमारा सहायक नहीं है।11। हंसों का सम्मान तो मान सरोवर पर ही है दूसरी जगहों पर तो बगुला ही समझा जायेगा। कोयल का सम्मान आम के बागों में ही है अन्यत्र तो वह कौवा ही समझी जायेगी। भंवरों का सम्मान भी कमल के फूलों पर ही है अन्य स्थानों पर तो वह एक सामान्य कीट ही समझा जायेगा उसी प्रकार से भक्तों का सम्मान भी विष्णु के नाम स्मरण एवं भक्ति भाव से है अन्यथा उनमें क्या विशेषता है।12। जल के बिना प्यास नहीं मिटती और अन्न के बिना तृप्ति नहीं होती उसी प्रकार से हे देव! आपके बिना भी हमारी ज्ञान पीपासा नहीं मिट सकती, हमें भूले भटके हुए लोगों को कौन समझायेगा।13। पपइया पक्षी भी वर्षा ऋतु में पीऊ-पीऊ की रटन लगाता है। उसकी बोली में प्यास की ही रटन होती है। भूमि पर तो जल भरा हुआ था परन्तु उसको नहीं पीता, स्वाति नक्षत्र की अधर बूंद की ही आशा रखता है। तथा उसकी इच्छा पूर्ण भी होती है उसी प्रकार से हे देव! हम भी सांसारिक वासनाओं को छोड़कर आपकी ही इच्छा करते है।14। इस दुनिया में ठग बहुत ही है जो अनेक प्रकार से पत्थर आदि की मूर्तियां बनाकर लेगों को उन्हीं पर सिर पटकने को कहते है और उनसे चढ़ावा लेकर अपना पेट भरते है। ऐसे लोगों ने दुनिया को भ्रम में डाल दिया है। पाखण्ड करके दूसरे के चित को हरण कर लेते है, उन लोगों को अपने वश में करके अपनी इच्छानुसार चलाते है, वील्होजी कहते है कि मेरा मन तो उन पर कभी विश्वास नहीं करता।15। काच कथिर रूप पाखण्डों में वील्होजी कहते है कि मेरा मन नहीं रचता। इन्हें छोड़कर सत्य ज्ञानरूपी हीरों का व्यापार ही करना है। मेरा मन तो श्याम श्री भगवान से ही लगा हुआ है जो गूदड़ियों-मोटा चोला तथा गरीबी वेश में रहते हुए भी गुणों का खजाना है।16। निर्धन आदमी को तो सबसे प्यारा धन ही है। तथा कृपण व्यक्ति को भी रूपये प्यारे है। विषयी व्यक्ति के लिये युवती प्यारी है उसी

प्रकार से हे देव! आपके साधु को तो विष्णु का नाम ही प्यारा है।17। धन्य वे प्यारे कबूतर आदि पक्षी जो सदा ही मुकाम के मन्दिर के छाजे पर रहते है। वहां पर चूण चुगते है और श्याम परमात्मा का नाम स्मरण करते हुए गुटरगूं कर रहे है।18। वील्होजी को यहां चारों तरफ खड़े हुए सघन वृक्ष आम के बागों की स्मृति दिलवा रहे है इसलिये कहा-''अम्बाराय बधावणां'' चारों तरफ सघन वृक्ष मानों स्वागत करते हुए दिखाई दे रहे है। सर्वत्र आनन्द ही आनन्द छाया हुआ है इस आनन्द के क्षण में हे श्याम! मैनें यह उमाहो बोला है। क्योंकि मेरे अन्तिम शरण आप ही है।19। हे गुरुदेव! मैने यह उमाहो रूपी प्रार्थना आपके ही सामने की है। यह प्रार्थना मैनें बहुत बड़ी इच्छा लेकर की है। बार-बार जन्म मरण के चक्कर से छुड़वा करके हमें अमरापुरी में सदा के लिये निवास प्रदान कीजिये।20। हे भक्तों! यह सुअवसर प्राप्त हुआ है फिर न जानें कब यह मिलन हो या न भी हो इसलिये इस समय को चूकना ठीक नहीं है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना तो दुखी ही जीवन बिताना होगा। हरि बिना तो धैर्य धारण नहीं हो पाता।21। किसी के तो कोई स्वामी होगा किसी के कोई गुरु पीर होगा, वील्होजी कहते है कि हे बिश्नोइयों। अपना तो विष्णु के नाम में ही सीर संस्कार है। इसलिये विष्णु का ही जप करें।22।

साखी राग आसावरी-81 (वील्होजी द्वारा रचित)

ऐसी सींचो बाड़ी, सूख न जाई।टेक।
काया कूप चित चांच बणाई, पवण तेज जिभिया घड़ लाई।1।
हरि नांव नीर कुल सुरधारा, सहजे पांणी सींचत संत कियारा।2।
सींचत जब ऋतु आई, फूली फली बाड़ी सुहाई।3।
वील्हा विसन कण के जीवारा, लुण चुण हरिजन उतरे पारा।4।

भावार्थ-वील्होजी कहते है कि हे भाई बहनों! इस शरीर रूपी बाड़ी की अच्छी प्रकार से सिंचाई करो अन्यथा यह सूख जायेगी। यह बाड़ी रूपी शरीर सूख जायेगा तो अन्दर बैठा हुआ इसका स्वामी जीव भी सूखे खेत में नहीं रह सकेगा। यहां से विदा हो जायेगा। यह शरीर रूपी कुआ है जिससे जल बाहर निकालकर चित रूपी चांच-मुख बनाकर पवन-श्वांस रूपी तेज को जिभिया से अन्दर प्रवेश हो जाने दे अर्थात् हरि के नाम का स्मरण एक मन चित से करें। तथा जिभ्या द्वारा हरि-हरि उच्चारण करें और हृदय से होकर नाभि तक जाने दें। यही इस जीव आत्मा की भलाई स्थिरता के लिये सिंचाई

होगी। इस प्रकार हरि के नाम रूपी सहज जल से इस बाड़ी की सिंचाई निरंतर करते रहें। जब समय आयेगा तब यह बाड़ी फूलेगी फलेगी जीव अनन्त गुणा आनन्द का फल प्राप्त करेगा। वील्होजी कहते है कि जब बाड़ी-खेत फल-फूलकर पक जाये तब उसमें से ''गुरु मुख पवन उड़ाइये, पवणा डोले तुस उड़ेला, कण ले अर्थ लगाइये'' ''लुण-चुण लीयो मुरातब कीयो, कण काजै खड़ गाहिये, कण तुस झोड़ो होय नवेड़ो''।सबद। इसी गुरु वचन के अनुसार अमृत कण ज्ञान विज्ञान प्राप्त करके संसार सागर से पार उतर जाये।

कवि संख्या-34

केशोदास जी गोदारा का जीवन संवत् 1630-1736 के मध्य में है। ये वील्होजी के प्रमुख शिष्य थे। बाल्यावस्था से ही वैराग्य धारण करके वील्होजी के शिष्य बन गये थे। वील्होजी के पश्चात् तथा उनके साथ में ही समाज में धर्म प्रचार तथा विकास में उनका अटूट सहयोग था। ये कवि की सभी कलाओं में निपुण थे। केशोजी ने अपने जीवन काल में अनेकों रचनाऐं की थी। जिनमें आख्यान कथाऐं छन्द, कवित, दोहा, साखी आदि प्रसिद्ध है। केशोजी द्वारा रचित प्रहलाद चरित्र आदि अति प्रसिद्ध एवं बहुत ही उच्च कोटि की रचना है। जो इस समय प्रकाशित की गई है केशोजी ने उन्नीस साखीयों की रचना की थी उनमें से 14 साखियां यहां पर है। इनके द्वारा विरचित अधिकतर साखियां जागरणों में गायी जाती है। इससे ही इनकी प्रसिद्धि का पता चलता है। जाम्भाणी साहित्य में केशोजी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। यहां पर आगे केशोजी द्वारा रचित केवल साखियों का भावार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

साखी कणां की-राग सुहब-82

जीव के काजे जुमलै जाइये, कीजे गुरू फुरमाइये।1।
सुणिये ज्ञान कटे तन कसमल, ज्ञान सरोवर न्हाइये।2।
श्री पति सिंवरो सदा सुखदाता, जाय लीजै शरणाइये।3।
ऊधो भक्त हुवो अपरंपर, जो जप तो मह माइये।4।
रावण सांसे ओले आण्यां, गोविन्द सा गुरू भाइये।5।
लोहा पांगल सुण कर सीधा, सतगुरू हुआ सहाइये।6।
सिकन्दर यो कीवी करणी, दुनियां फिरि दुहाइये।7।

महमदखां नागोरी परच्यो, चाल्यो गुरू फुरमाइये।8।
सेख सदू परचे पर आण्यां, मरती गऊ छुड़ाइये।9।
सिध साधु पैगम्बर सीधा, गिणियो ज्ञान न जाइये।10।
रहो एकायन्त अन्तर खोजो, भरम चुकावो भाइये।11।
सुमति आवै साधां संग बैठे, कुमति नै आवै काइये।12।
गहकर ज्ञान सुणों संग साधो, केशोजी साख सुणाइये।13।

भावार्थ–जीव की भलाई के लिये जुमलै जागरण में जायें, वहां जाकर ज्ञान श्रवण करें। जैसा सतगुरु ने फरमाया है वैसा ही कीजिये।1। ज्ञान श्रवण करने से शरीर के पाप कट जाते है। वहां पर ज्ञान के सरोवर में स्नान कीजिये।2। श्री लक्ष्मी पति भगवान विष्णु का स्मरण करें।3। ऊदो भक्त महमाई का जप करने वाला पुजारी था। वह भी गुरु की शरण में आकर महमाई की पूजा जप करना छोड़ दिया तथा गुरु की शरण ग्रहण की।4। रावण और गोविन्द दोनों ही चोर थे, चोरी करना ही उनका धन्धा था वे भी चोरी छोड़कर गुरु की शरण में आये और विष्णु का जप किया।5। लोहापांगल नाथ योगी गुरु की शरण में आये तथा शब्द श्रवण करके सन्मार्ग के पथिक बने, सतगुरु ने ही सहायता की थी।6। दिल्ली का बादशाह सिकन्दर लोदी था जिन्होनें दुनिया में अपने नाम की दुहाई फेर दी थी वह भी गुरु की शरण में आकर हक की कमाई करने लगा था।7। नागौर का सुबेदार महमर खां भी गुम्‍ की शरण में आया और उनकी आज्ञा मानकर गुरु मार्ग का अनुसरण किया।8। मलेर कोटले का शेख सदू भी नित्य प्रति गौ हत्या करवाता था, उसे भी श्री गुरुदेव ने अपने चमत्कार से चमत्कृत करके गौ हत्या बंद करवायी थी।9। और भी अनेकों सिद्ध साधु पकंबर आदि गुरु की शरण में आये तथा सद्पंथ के पथिक बने, जिनकी कोई गिनती भी नहीं है।10। एकान्त में रहकर अन्तर हृदय मुखी होकर खोज करो। आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार करो और भ्रम को मिटा दो।11। साधु महात्मा के पास बैठने से सुमति आती है, अच्छे विचार बनते है। कभी भी संतों के पास बैठने से कुमति कुविचार नहीं उपजते।12। बार–बार एकाग्र मन से ज्ञान श्रवण करो तथा उसे याद भी रखो, तथा ज्ञान के अनुसार क्रिया भी करो तभी लाभदायक होगा। वह ज्ञान साधु संगति से ही प्राप्त होगा। इस प्रकार से केशोजी ने यह जुमलै की साखी सुनाई है।13।

साखी छन्दां की-83

रे मन मेरा न कर मुकेरा, काया ढ्ढुलैली काची।
निरत सुरत लिव लाय पियारा, सबद अनाहद राची।
तन मां तीरथ न्हाय त्रिवेणी, गगन गुफा कर डेरा।
गुरु प्रसादे रहे उनमुन, यों समझे मन मेरा।1।
रे मन हंसा परिहरि संसा, सांसो सोक न कीजै।
त्रिकुटि तीर्थ मनवा काजै, महा अमीरस पीजै।
बड़पण मांण बड़ाई मेटो, बड़पण गाल्यो वंसा।
अन्तर ध्यान उलट धुन सुणिये, करी हरि सूं हित हंसा।2।
रे मन जांणी सुण सुर वाणी, माया मोह निवारी।
अजप्या जाप जपी मन मेरा, कर उनमुन सूं यारी।
गरजै गगन अधिक धुन सुणिये, उपजै अनहद वाणी।
जिंहि डोरी सिध साधु विलंब्या, सो जीवड़ा सत जाणी।3।
रे मन भाई सहज समाई, पखा पखी नहीं कीजै।
परलै होय पराछत बांधो, जीव दुनि मिल छीजै।
सुसबद राची मन मेरा, अलख पुरूष लिव लाई।
कषमल कटे कह जन केशो, विसन सिंवर मन भाई।4।

भावार्थ-संत कवि केशोदास जी अपने मन को समझाते हुए कहते है कि रे मन! तूं मेरा अपना है तो फिर वादा किया हुआ पूरा क्यों नहीं करता? इस समय मुकर क्यों रहा है। यह काची काया धीरे-धीरे बिखर जायेगी। फिर कुछ भी नहीं कर पायेगा। इस सुरति को संसार से हटा करके परमात्मा में लगा दें, वही सभी से प्यारा है अनहद नाद रूपी शब्द में ही रच जाओ यही तेरा कर्त्तव्य है। यह शरीर ही तीर्थ है, इसमें ही गंगा यमुना सरस्वती है जिसे इडा, पिंगला और सुषुम्ना कहा जाता है। इस त्रिवेणी में स्नान करके दसवें द्वार रूपी गुफा में आसन लगाकर स्थिर हो जा। गुरु की अपार कृपा से ऊर्ध्वगमन करके संसार से उपराम हो जा इस प्रकार से समझना है हे मेरे मन।1। हे मन! तूं हंस सदृश निष्कलंक है। तो फिर संशय क्यों करता है। किसी भी प्रकार का शोक न करें। अन्य तीर्थ तो शरीर के लिये हो सकते है परन्तु त्रिकुटि का तीर्थ तो मन के लिये ही है। वहां पहुंच करके महा अमृत रस का पान करें। स्वयं का बड़पन अहंकार को मिटा दे। क्योंकि इस अहंकार ने ही तो

बड़े-बड़े वंश मिटा दिये है। संसार की तरफ से वृति को मोड़कर अन्तर ध्यान करें तथा अन्तर वृति होने से नाद ध्वनि का श्रवण करें। हे हंसा! हरि से प्रेम करते रहना, यही तेरी साधना है।2। रे मन! तूं तो सभी कुछ जानने वाला ज्ञानी है। इसलिये तूं देव वाणी का श्रवण कर। तथा मोह माया का निवारण कर। अजप्पा जाप जो नित्य निरंतर श्वांस में ही स्मरण होता है जहां माला की आवश्यकता न पड़े ऐसा स्वाभाविक होने वाला ओम सोहं का जाप करें। इस प्रकार से उर्ध्व द्वार से सम्बन्ध जोड़। यहां दसवें द्वार में अत्यधिक गर्जना होती है, स्पष्ट ओम सोहं नाद की ध्वनि सुनाई देती है। वह ध्वनि श्रवण करें। जिस मार्ग को पकड़कर सिद्ध साधु संसार सागर से पार उतर गये वही मार्ग जो ऊपर बताया है सत्य है, उसे पकड़ करके तूं भी पार उतर जा।3। रे मन तूं तो मेरा भाई है। इसलिये मेरे से द्रोह न कर। सहज ही रूप में परमात्मा में समाहित हो जा किसी प्रकार का राग द्वेष आदि पक्षपात नहीं करना। नित्य प्रति प्रलय हो रही है, पराजय गले में मत बांध। ये सभी जीव दुनिया से सम्बन्ध जोड़कर दिनोंदिन नष्ट होते जा रहे है। हे मेरे मन! अच्छे सत्य शब्दों में रच जाओ, उन्हें धारण कर लो। अलख पुरूष परमात्मा में ही लीन हो जा। केशोजी कहते है कि इस प्रकार से साधना में रत होगा तो तेरे पाप कट जायेंगे। हे भाई! तूं विष्णु का स्मरण बार-बार करते रहो।4।

साखी छन्दां की-84 'मुकाम की शोभा'

ओ निज तीरथ तालवो, जोति सही नित श्याम की।
देव बराबर कोई नहीं, महिमा घणी मुकाम की।
महिमा तो घणी मुकाम सोहे, पेड़ियां पग दीजिये।
झालरां जमाती छांजा, देख रचना रीझिये।
होम जप जश जहां कीजै, ध्याविये पूरो धणी।
जिसो ध्यावै तिसो पावै, तालवो तीर्थ सही।1।
चोकी बणी मुकाम की, श्याम सपेत पीली बणी।
कारीगर मेल मिली, छीट वरणी अति सोहवणी।
वणी चोकी मंझ तीर्थ, ज्ञान चर्चा अति घणी।
जहां करै चोहलर पंछियां, मुकुट शोभा भली बणी।
चौतरे अति चूंप दीसै, भूरज शोभा अति घंणी।
गुगल की महकार आवै, चोतरे चोकी बणी।2।

खिड़की पालक देहरे, सूल सदा अति सोहणी।
हरि हजूर दीसे भली, थिरकी थानि सुहावणी।
थिरकी थांनी सुहावणी नै, जहां चांदणी चहुं दिशा।
झलके जंजीर देव सुरगां, जोति जहां विसो विसां।
छाजा तो छाजै ताल बाजै, काज हरि सेयां सरे।
दीसै अति सुहावणी, खिड़की खालक बारणे।3।
कली विराजे कांगरा, सोभा मुकुट बखाणिये।
रूंखां बलि रलि आंवणां, श्याम सही जित जाणिये।
जाणिये जित श्याम सतगुरु, पात हरि जन पेखणां।
इण्डो तो मुकुटि मुकाम सोहे, देव दरगे देखणां।
कलश अरू त्रिशूल झलकै, भांत हरि मेले मिली।
देख शोभा कहे केशो, कांगरे सोहै कली।4।

भावार्थ–यह अपना तीर्थ तालवा मुकाम है जहां पर विष्णु श्याम सुन्दर की ज्योति जगमग हो रही है। देव के जैसा और दूसरा गुरु कोई दिखाई नहीं देता उन्हीं देव का अन्तिम मुकाम ही यह मुकाम है जिसकी महिमा बहुत ही अधिक है। अपनी महिमा से मुकाम शोभायमान हो रहा है। सर्व प्रथम दर्शन के लिये पेड़ियों पर पैर दीजिये। जब पैड़ी पर पैर देकर आगे बढ़ेंगे तो आप नीचे झुककर ही आगे बढ़ पायेंगे। सर्व प्रथम आप मन्दिर के झुके हुए छाजे के दर्शन करेंगे। वैसी दिव्य रचना को देखकर प्रसन्न होइये। वही छाजे के नीचे बैठकर हवन करें। तथा पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर का ध्यान करें। जैसा ध्यान करेंगे फल भी वैसा ही प्राप्त होगा, ऐसा दिव्य तीर्थ मुकाम तालवा मानें।1। मन्दिर के चारों तरफ चोकी बनी हुई है जो श्वेत श्याम एवं पीले रंग के पत्थरों से बनी हुई है। चतुर कारीगरों द्वारा पत्थरों की जोड़ाई की गई है। जिससे चित्र विचित्र रंगों में शोभायमान हो रही है। इस प्रकार से तीर्थ के मंझ में चोकी बनी हुई है। जहां ज्ञानी भक्तजन बैठकर ज्ञान चर्चा कर रहे है, वहीं चोकी के चारों तरफ वृक्षों पर बैठे हुए पक्षी भी मानों ज्ञान चर्चा करते हुए किलोल कर रहे है। मन्दिर के मुकुट की शोभा तो देखते ही बनती है। चबूतरे पर बहुत सारी चूंप चमक दमक दिखाई देती है। सम्पूर्ण मन्दिर एक गढ़ की भांति दिखाई देता है। वहीं पर हवन में होमे गये गूगल की महकार आ रही है। इस प्रकार से चोतरे की चोकी बनी हुई है।2। चारों तरफ जंगलों की

खिड़कियां तथा मुख्य द्वार के किवाड़ों पर सुरक्षा की दृष्टि तथा सुन्दरता के लिये सूल लगाई गई है वे अति शोभायमान हो रही है। निज मन्दिर के अन्दर हरि स्वयं ही मानों समाधी के रूप में दिखाई देते है ऐसा सदा ही स्थिर रहने वाला थान समाधी शोभायमान हो रही है। ऐसे दिव्य थान पर चारों तरफ से सूर्य की किरणें आकर प्रकाश करती है। इसी प्रकार से चांदनी रातों में भी चारों तरफ से चांदनी आकर दिव्य आलोक से समाधी जगमग हो उठती है। उस समय ही शोभा देव स्थान स्वर्ग की शोभा से भी कहीं अधिक होती है। मन्दिर में सदा ही अडिग ज्योति रहती है। इसलिये शत प्रतिशत स्वर्ग का ही देव स्थान है। प्रातः सांय आरती के समय में ताल मृदंग घंटे घड़ियाल शंख आदि बजते है। हरि की प्राप्ति हेतु भक्त जन सेवा करते है। इस प्रकार से खिड़की द्वार आदि अति शोभायमान होते है जो मन को मोहित कर देते है।3। मन्दिर के अन्दर पत्थरों की सुक्ष्म खुदाई करके जो कांगरे उकेरे गये है, दिव्य चित्रकारी की गई है वह तो अनुपम ही है। मुकुट की शोभा तो वह कलाकारी ही बता रही है। ऐसे दिव्य भवन में अन्तिम मुकाम श्री देव ने किया है देवजी पहले कभी वृक्षों के नीचे ग्वाल बालों के साथ विश्राम किया करते थे। वही श्याम आज यहीं मन्दिर में समाधी के रूप में विद्यमान हुए है। यहीं पर श्याम सतगुरु को जानकर हरि के भक्तजन पवित्र भावना से वहां दर्शन करके जीवन को सफल बनाये। ऐसा दिव्य मन्दिर हरि के अनुरूप ही बना है। मन्दिर के मुकुट पर स्वर्ण कलश चढ़ाया गया है जो अति सुन्दर है, मन्दिर की सुन्दरता को ओर आगे बढ़ा रहा है। कलश उपर उठा हुआ देखता हुआ मालुम पड़ रहा है मानों देव को स्वर्ग में देख रहा है और यहां पर भक्तों को संदेशा दे रहा हो। इस प्रकार से मन्दिर का कलश तथा त्रिशूल मिलकर श्याम पीत रूप से झिलमिल हो रहे है। अनेक भांति के लोग मेले में आकर एकत्रित होते है। शोभा देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे है। केशोजी कहते है कि शोभा देखते है जो मन्दिर के कंगारों के रूप में विद्यमान है।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-85

बाबै आप लियो अवतार, श्याम सम्भराथल आवियो।
आवियो छै आप अलेख, भाग परापति पावियो।
भाग परापति पावियो नै, मनो ज त्यागो मांण।
अन्हो अजाण अबूझ मूरख, किया श्याम सुजाण।

कुमल कुलक्षण पर हरया, सुध हुवा करणी सार।
भगवै बाने विसन, आयो आप लियो अवतार।
श्याम सम्भराथल आवियो।1।
धुर ओलख जे आचार, परमेश्वर पूरो धणी।
ठग पासी गर चोर, जीव दया पाले घणी।
जीव दया पाले घणी नै, हते जीव न जाण।
मेघा देघा अहेड़िया, घर पीजिये जल छांण।
बकर कसाई झींवरा, मुखां ज त्यागी मार।
मध्यम ते उतम किया, धुर ओलख जे आचार।
परमेश्वर पूरो धणी।2।
मीर मुलक सुलतांण, पीर पुरूष पांये पड़े।
पापां पड़ै भगाण, गुरु भेट्या पातक झड़ै।
झड़ै पातक सकल मनसा, सही सिरजण हार।
आप स्वयंभू आवियो, गुरु तरण तारण हार।
सूत पुराण कुराण पर हरो, करो विसन बखाण।
पवन छतीसों पायें लागे, मीर मुलक सुलतांण।
पीर पुरूष पांये पड़े।3।
रायक आण्या राहि, गुरु फुरमाई से करे।
बोले वचन विचार, मुख सुर बांणी ओचरे।
मुख सुर बांणी ओचरे नै, बोले वचन विचार।
फूल पीतल झालरा नै, नील त्यागे नार।
हरि होम कीजै पाहल लीजै, परस लागे पांय।
कलिकाल संभाल सतगुरु, रायक आण्या राय।
गुरु फुरमाई से करे।4।
म्हारी आवागवण निवार, इण टाणे सूं मत टालियो।
अब लीजो अपणाय, छाप पुरबली पालियो।
छाप पूरबली पालियो थे, जम्भगुरु जगनाथ।
पांच सात नव करोड़ बारा, दिया सतगुरु साथ।
हरि हेत कीजै दरश दीजै, पार घर पहुंचाय।
दास केशो आस थारी, आवागवण निवार।

इण टाणे सूं मत टालियो।5।

भावार्थ-बाबो श्री गुरु जम्भेश्वर जी ने अवतार धारण किया है। स्वयं श्याम सुन्दर श्री कृष्ण ही सम्भराथल पर आये है। स्वयं ही अलख निरंजन आये है। परन्तु जिस जीव के भाग्य उच्च कोटि के है वही प्राप्त कर सकते है। भाग्य से ही प्राप्ति होती है तथा साधना की भी आवश्यकता होती है। जिन्होनें मानसिक अहंकार का त्याग किया है वही अधिकार है। अवतारध ाारी श्री श्याम ने जो स्नानादि शुद्ध क्रियाओं से रहित थे तथा अनजान थे किसी से भी कभी कोई अच्छी बात भी नहीं करते थे एवं मूर्ख लोगों को सुज्ञानी बना दिया। अज्ञानता का आवरण कुलक्षण छुड़वाकर कर्त्तव्य कर्म बताया और उन्हें पवित्र किया। साक्षात् भगवां वस्त्र धारण करके विष्णु ही आये थे। स्वयं विष्णु ने ही बाबे के रूप में अवतार धारण किया था और सम्भराथल पर आये।1। वेद शास्त्रों के द्वारा बताया गया आचार-विचार जो आदि युग में प्रचलित था वही परमेश्वर ने यहां आकर बतलाया था। बड़े-बड़े ठग जीव हिंसक अन्य जीवों को फंसाने वाले तथा चोर लोग जीव दया पालन करके धर्म का पालन करने लगे थे। वे लोग सभी कुछ जानते हुए भी अनजान बने हुए थे। मेघवाल आदि भी शुद्र वर्ण के लोग भी तथा शिकारी लोग भी गुरुदेव के सामने जल छान करके पीने लग गये थे। वे जीव हिंसक लोग जीव हत्या करते थे वे ही लोग जल छानकर पीने लगे थे। बकरों को मारकर उदर पूर्ति करने वाले, मछली मारने वाले झींवर लोग भी अपने कर्म को छोड़ चुके थे। जो लोग मध्यम थे उन्हें उतम किया तथा उन लोगों ने गुरुदेव के आचार-विचार को पहचाना था क्योंकि परमेश्वर तो पूर्ण स्वामी है।2। मीर मुलक के सुलतान, पीर पुरूष भी आकर गुरुदेव के चरणों में अपना सिर झुकाने लगे है। सिर झुकाने से ही पापों की पोटली गिर जाती थी, पाप दूर झड़ जाते। क्योंकि सृष्टि के सर्जन कर्त्ता के सामने पाप कैसे टिक सकते है। स्वयं स्वंम्भू ही आये है, लोगों को संसार सागर से पार उतारने के लिये। सूतजी द्वारा कथित पुराण तथा कुराण को छोड़कर केवल एक विष्णु का ही कथन एवं श्रवण करो। तीन वर्ण के लोग आकर चरणों में सिर झुकाते है जिनमें मीर मुलक सुलतान आदि सम्मिलित होते थे।3। बड़े-बड़े राजा लोग सद्पंथ के अनुगामी बने जैसा गुरुदेव ने फरमाया वैसा ही किया। वचन विचार करके शुद्ध तथा सत्य बोलने लगे। मुख से देव वाणी का उच्चारण करते, देववाणी

को विचार करके कथन करते। महिलायें हाथों में हथफूल, पीतल के अलंकार, मनकों की झालर तथा नील वस्त्र पहनना ये सभी सहर्ष त्याग दिये थे। इन दुर्गुणों को त्याग करके नित्य प्रति हरि के नाम हवन प्रारम्भ कर दिया। पाहल लेकर सभी पवित्र हुए और गुरु के दर्शन करके तो कृत्य-कृत्य हो गये। कलियुग के समय को समझ करके बड़े-बड़े राजा लोग शरण में आये और गुरु के कथनानुसार ही अपना जीवन बिताया।4। केशोजी कहते है कि हे देव! हमारी आवागवण अवश्य ही मिटा दीजिये। हमें आप कहीं मोहमाया में फंसाकर इस अवसर को टाल मत देना। अब तो आप हमें अपना बना लीजिये। अपनी पिछली छाप जो आपने पहले भक्तों को पार उतारा है वह अवश्य ही निभाइये। हे जम्भगुरु! आप तो जगत के स्वामी हो, सभी कुछ जानते हो, हम आपसे क्या कहे। पांच, सात, नव करोड़ को आपनें पार उतारा है। उसी परंपरा में आप हमें भी गिन लीजिये। हरि से प्रेम करना ही हरि के दर्शन में कारण है तथा हरि का दर्शन ही पार उतारने वाला है। हे पूर्ण परमात्मा! केशोदास को तो आप की ही आसा है। इसलिये हमारा आना-जाना अवश्य ही निवृत कीजिये कोई बहाना बनाकर टाल मत देना।5।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-86

साधो सिंवरो सिरजण हार, पार ब्रह्म पहली निऊं।
जिण सिरज्यो संसार, हरि चरणां लागो रहूं।
हरि चरणां लागो रहूं ने, सुणी बात विवेक।
बरग वाने की बहो थे, श्याम राखो टेक।
विष्णु दोषी भष्म होयसी, सांभलो करतार।
पार ब्रह्म पहली नीऊं, सिंवरो सिरजणहार।1।
भक्तां सूं कर भाव, साधां नै सुपह बतावियो।
चोचक दीसै चाव, भाग परापति पावियो।
भाग परापति पावियो नै, जे हुवा करणी सार।
तन मन जो तजो माया, परिहरो परिवार।
पार ब्रह्म सूं प्रीत जे, हेत करि हरि ध्यावियो।
भगतां सूं करि भाव, साधां नै सुपह बतावियो।
केई केई जीव कुजीव, परचाया परचे नहीं।
बरजी बात अलेख, पंथ छोड़ चाल्या कहीं।

पंथ छोड़ चाल्या कहीं नै, लोपी गुरु की कार।
भोगल जीव भरमें घणां, सहै बहुती मार।
काम क्रोध विकार घटमां, पाप पिंड लागा सही।
कुजीव छेड़या कलह मांडे, परचाया परचे नहीं।3।
तजियो गरब गुमान, मन मां मेर न आणियो।
हिरदै धरियो ध्यान, विसन-विसन बखाणियो।
विसन बखाणों सतकर जांणो, काम क्रोध चुकावियो।
जीवने जे जुगत चाहो, श्याम सूं लिव लावियो।
घट पलट क्या हुवै मूर्ख, पहलै न चेत्यो प्राणियो।
बाद विराम विकार तजियो, मन में मेर न आणियो।4।
तेतीसां सूं मेल, मन इच्छा राखो घणी।
सुरगे चाल सुचाल, पहुंचावो, पूरा धणी।
पहुंचावो पूरा धणी नै, मानों मंगलाचार।
पाप सब परलै करो, मुकति देवो मुरार।
पार गिराये देवो वासो, मिलै सुरवर कांमणी।
कह केशो सुणों साधों, अरज सुणो पुरा धणी।5।

भावार्थ-कवि कहते है कि हे साधों! सृजनहार परमात्मा का स्मरण करो। मैं पारब्रह्म परमात्मा को सर्व प्रथम प्रणाम करता हूं। जिस परमात्मा ने सृष्टि की रचना की है। उन हरि के चरण कमलों में ही मैं पड़ा रहूं। हरि के चरण कमलों में ध्यान करने से ही विवेक होगा। मैनें यह विवेक से पूर्ण बात सुनी है कि हरि विष्णु एक वर्ग विशेष पर कृपा करने के लिये आये है। मुझे भी उन्हीं वर्ग विशेष में सम्मिलित कीजिये और अपनी प्रतीज्ञा पूर्ण कीजिये। जो विष्णु के विपरीत आचरण करते है वे तो भष्म हो जायेंगे पनप नहीं सकते इसलिये संभल जायें केवल एक हरि के नाम का ही सहारा है। मैं परब्रह्म को प्रथम प्रणाम करके साखी की रचना करता हूं।1। श्री हरि ने ही अपने भक्तों पर भाव करके साधु सज्जनों को सुमार्ग बताया है। इस समय चारों ओर चहल-पहल हो रही है। जिसका सौभाग्य है उसी ने ही प्राप्त किया है। जैसी क्रियाऐं है वैसा ही तो फल प्राप्त किया है। अपने ही शरीर धन माया का मोह छोड़ो। परिवार कुटुम्ब के साथ किया हुआ लगाव भी डुबा देगा इसलिये त्याज्य है। परब्रह्म परमात्मा से प्रीत करके प्रेम सहित ध्यान करे। वही भक्तों

पर भाव करके आये है और सन्मार्ग के अनुयायी सभी को बनाया है।2। कई-कई कुजीवों को मार्ग पर लाना अति कठिन कार्य है। उन्हें कितनी ही लाभदायक अच्छी बातें कहो तो भी माननें को तैयार नहीं है। जिन दुर्गुणों को हरि अलख निरंजन ने मना किया था वे लोग उन्हीं को अपनाने लगे है। पंथ को छोड़कर न जानें कहां किस कुसंगत में पड़ गये है। पंथ को तो छोड़ दिया और गुरु की मर्यादा का उलंघन करने लगे है। विषय भोगों में रत जीव भ्रम में बहुत जल्दी पड़ जाते है और बहुत ही मार दुखों की सहन करते है। उन लोगों के काम क्रोध आदि अनेक विकार अन्दर रहते है। जिस कारण पाप कर्म ही करते है। पाप उनका पीछा कभी छोड़ता ही नहीं। कुजीव के साथ छेड़खानी करोगे तो कलह लड़ाई ही होगी। कुजीव कभी भी धर्म की अच्छी बात मानेगा ही नहीं।3। गर्व अहंकार अवश्य ही त्याग देना चाहिये। मन में कभी भी मैं पना न आवे। हृदय में भगवान का ध्यान करते हुए बारंबार विष्णु का उच्चारण करते रहे। विष्णु का ही बखान करें वाणी को शुद्ध करें। उसी विष्णु को ही सत्य जानें।काम क्रोध का निवारण कीजिये। यदि इस जीव की युक्ति-मुक्ति चाहते है तो श्याम श्री हरि से चित लगावे। जब यह शरीर रूपी घट पलट जायेगा तो फिर क्या होगा। इसलिये सचेत तो शरीर पलटने से पूर्व ही होना पड़ेगा। व्यर्थ का वाद-विवाद और मानसिक अन्य विकारों को परित्याग कर दीजिये। मन में अहंपना न आ पाये यह अहंकार ही विकारों की जड़ है।4। हे देव! हमें तो आप उन पार पहुंचे हुए तेतीस करोड़ देवताओं से मिलान करवा दीजिये। यही हमारी प्रबल इच्छा है। हे स्वामी! आप हमें अच्छे मार्ग में डालकर स्वर्ग में पहुंचा दो। जब हम वहां पहुंच जायेंगे तो फिर मंगलाचरण होगा। हमारे सभी पाप प्रलय हो जायेंगे और हमें आप मुक्ति दिला दोगे। सदा के लिये पार हो जायेंगे फिर वापिस संसार सागर में आना नहीं होगा। वहां मन वांछित फल की प्राप्ति होगी। केशोजी कहते है कि हे साधु सज्जनों! इस प्रकार से अपने स्वामी से अर्ज करो तो अवश्य ही सुनेंगे।5।

साखी छंदां की राग धनाश्री-87

संतो सिंवरो सिरजण हार, जम्भेश्वर जीवां धणी।
दुख मेटण दातार, भव भंजण जिभिया भणी।
भव भंजण जिभिया भणी नै, अलख शिम्भु आप।
दया कर गुरु दुख मेटो, करोजी परलय पाप।

करोड़ बारां कारणै, कलि आयो इण काम।
श्वांस श्वांस अरदास कीजै, सिंवरियो गुरु श्याम।
जम्भेश्वर जीवां धणी।1।
जुग जाग्यो जगदीश, काया धरि आयो कले।
सुरग देवण सुरराय, सांचो गुरु सम्भराथले।
सम्भराथल गुरु श्याम आयो, पात परसै पांव।
साधा गुरु साचो मिल्यो, सुरग देवण सुरराव।
कहर क्रोध कुबाण कोप, परि हरो उरि रीस।
साच शील सुचाल चालो, जुग जाग्यो जगदीश।
काया धर आयो कले।2।
सार हुई संसार, सतगुरु आयो सांभल्यो।
इला लियो अवतार, मोहन मानवियां मिल्यो।
मोहन मानवियां मिल्यो नै, सही विसवा वीस।
सांध पूगी श्याम आयो, तारसी तेतीस।
अपणां अपणाय लेसी, पापियां पासे टालिया।
इक टंगिया आय नै, परस पांव जे लागियां।
सतगुरु आयो सांभल्यो।3।
सही स्वर्ग दे श्याम, शुचियारा साचो धणी।
परहर पाप विकार, सीख स्वर्ग की जो सुणी।
सीख सुरग की जो सुणी नै, उर मेट्यो अभिमान।
प्रीति कुल की परहरो थे, सांभल्यो गुरु ज्ञान।
अजर जरो मन मेर छाड़ो, दयाकर दाखे दई।
कह केशो करो किरिया, सुरग सुख पावो सही।
सुचियारा साचो धणी।4।

भावार्थ–हे संतों! सृजनहार श्री जाम्भोजी का स्मरण करो। जो विष्णु सर्वजन के स्वामी है। दुख मेटने वाले दाता है। संसार के भय को मिटाने वाले श्री विष्णु को जिभ्या द्वारा जपो। अलख स्वयंम्भू का ही स्मरण करें। वही तो यहां पर सम्भराथल पर आये है। हे देव! दया करके हमारे दु:खों को मिटा दीजिये। इस कलयुग में बारह करोड़ का उद्धार करने के लिये आपका आगमन हुआ है इसलिये प्रत्येक श्वांस में स्मरण करें तथा हाथ जोड़कर

विनती करें। सतगुरु के रूप में आये हुए श्याम का स्मरण करें वे ही जीवों के स्वामी है।

इस युग में जगदीश स्वयं प्रगट हुए है, स्वयं निराकार निरंजन होते हुए भी अपनी माया से शरीर धारण करके आये है स्वर्ग देने वाले देवाधिदेव विष्णु जो सतगुरु के रूप में सम्भराथल पर विराजमान हुए है। सम्भराथल पर विराजमान सतगुरु के चरणों को स्पर्श करने से पवित्र हो जाते है। सज्जनों को सतगुरु सच्चे मिले है जो स्वर्ग देने वाले है। सतगुरु की शरण ग्रहण करने के लिये कलह, क्रोध, कुमार्ग, कोप आदि क्रोध दिलाने वाले दुर्गुणों को छोड़ना होगा। सत्य शील सुमार्ग पर चलो। इस युग में जगदीश प्रगट हुए है। जो काया धारण करके आये है।2।

संसार के लोगों को ज्ञात हुआ है कि सतगुरु सम्भराथल पर आये है तभी से लोग संभल गये। इस धरती पर अवतार लिया है। स्वयं मोहन विष्णु ने ही आकर मानवों से मिलन किया है। मोहन मानवों से मिले है यह बात शत प्रतिशत सत्य है इस प्रकार का समाचार सभी जगहों पर पहुंचा कि संसार सागर से पार उतारने के लिये आये है और तेतीस करोड़ देवताओं से मिलायेंगे। अपने प्रिय जनों को तो अपना बनाकर तार देंगे। इस प्रकार की वार्ता श्रवण करके दूर देश के लोग भी आकर चरणों में समर्पित हुए। सचेत होकर मुक्ति-युक्ति की योग्यता धारण कर सके।3।

वास्तविक में स्वर्ग देने वाले, पवित्र करने वाले, श्याम ही सच्चे मालिक है। जिन्होनें भी स्वर्ग की शिक्षा का श्रवण किया वही पापों को छोड़कर शरण में आया। स्वर्ग की शिक्षा के प्रभाव से हृदय में स्थित अहंकार को मिटा दिया। कुल परिवार से मोह तोड़कर गुरु के ज्ञान को महत्व दिया और सचेत हुए। अजर काम क्रोधादि को जरणां करते हुए, अहंकार छोड़ते हुए दया को धारण किया। केशोजी कहते है कि शुद्ध क्रिया करोगे तो स्वर्ग में सुख अवश्य ही मिलेगा।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-88

जीवड़ा जप जगदीश, जांभेश्वर जीवां धणी।
धर्में धरो ध्यान, नाश हुवै पापां तणी।
पाप प्रलय करे प्रीतम, पार घरवासे दिये।
अनंत पाप अघोर मेटे, हेत हरि राखो हिये।

झूठ कपट कुलोभ परि हरि, साध वायक यूं सुणी।
सांपजै वास स्वर्गे, जीवड़ा जप जीवां धणी।1।
सुक्रत करि संसार, कथि मानों गुरु की कही।
अवसर चेत अजाण, भल अवसर लाभे नहीं।
नाही लाभे ऐसो अवसर, सुपह छोड़ कुपह क्यों पड़ो।
कुटंब काजे कांय विलंब्यो, प्राणियां पंथ सिर खड़ो।
कुल की रीत अनेक इधकी, प्रीत पापां पर हरो।
हक हलाल पिछाण प्राणी, संसार सुक्रत यों करो।2।
सुख नहीं संसार, जम बैरी बांसे बहै।
विषमी कोट न ओट, रंग महला नाही रहै।
रहै न रंक फकीर राजा, हुंस करंता हारिया।
अश्वपति गजपति छत्रपति, मंझ महलां मारिया।
लेवै लेखो आप खालक, लोक परलै होय सही।
विष्णु नाम संभाल प्राणी, संसार सुख कोई नहीं।3।
सुख सगलो सुरग लोक, मन चिंता मन की मिटै।
जित जंवर न गंजे जीव, घटत आव को न घटै।
घटै घटंता आव प्राणी, जूरा जीव न झंपही।
वाव वेद न नाहिं व्यापै, काया काल न कंपही।
जित ताप सीवन रोग तिसनां, दया कर मेटो दई।
कह केशो करो क्रिया, स्वर्ग सुख पावो सही।4।

भावार्थ–हे मेरे जीव! सभी जीवों के मालिक श्री जाम्भेश्वर जी का स्मरण मनन करो। ये जगत के ईश्वर स्वयंभू है। धर्म धारण करके शुद्ध आचरण करें। जिससे तेरे पापों का विनाश हो सकेगा। हे प्रीतम! तुम्हारे पाप प्रलय हो जायेंगे और पार ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी वही तुम्हारा सच्चा घर भी है। हृदय में विराजमान हरि तुम्हारे अघोर अनन्त पापों को मिटा देंगे। साधु संतों द्वारा कहे हुए शब्द श्रवण करके झूठ कपट कुलोभ का परित्याग कर देना। स्वर्ग के सुखों की प्राप्ति हो जायेगी इसलिये सुख के लिये हे जीवात्मा! तुझे परमात्मा का स्मरण करना चाहिये।1।

संसार में रहकर सुकृत पुण्य कार्य करें तथा गुरु के कथनानुसार ही करें। हे अज्ञानी! यह समय व्यतीत हो रहा है। यह बीता हुआ समय वापिस

लौटकर नहीं आयेगा। ऐसा दिव्य अवसर पुनः नहीं मिलेगा इसलिये सुमार्ग को छोड़कर कुमार्ग में क्यों पड़ रहे हो। अपने कुटुम्ब के पालन पोषण करने के लिये क्यों झूठे कपट का व्यवहार करते हो। यह सतपंथ संदेशा तेरे सिर पर घूम रहा है, जानते हुए भी अनजाना क्यों बन रहा है। पाप मार्ग में ले जाने वाली कुल परंपरा भी त्याज्य है, वह चाहे हजारों वर्षो से भी क्यों न चली आयी हो। हक की कमाई की पहचान करो इन्हीं बातों पर विचार करते हुए पुण्य कार्य करो।2।

संसार में सुख नहीं है क्योंकि संसार मूल रूप से दुखमय है। जब कभी सुख की झलक आने वाली होती है तो तुरंत ही मृत्यु का आगमन हो जाता है। मृत्यु आ रही है इतना ही सुख को समाप्त करने में समर्थ है। मृत्यु से बचने का कोई उपाय भी नहीं है। वह चाहे सर्व उच्च कोटि का महल हो या अन्य झोंपड़ियों में चाहे कहीं भी छुप जाये मृत्यु के ग्रास से नहीं बचा जा सकता। बड़े-बड़े अहंकारी जन भी आखिर में हार गये। बड़े-बड़े अश्वों के तथा हाथियों के मालिक तथा छत्रपति सम्राटों को भी महलों में ही मृत्यु ने अपना ग्रास बनाया है कोई भी नहीं बच सका है। स्वयं परमात्मा ही लेखा जोखा लेते है, सम्पूर्ण संसार प्रलय को प्राप्त हो रहा है। सभी कुछ बदलता जा रहा है। हे प्राणी! विष्णु का जप कर, यही यथार्थ है। संसार की तरफ दौड़ मत लगा वहां सुख बिल्कुल ही नहीं है।3।

सम्पूर्ण सुख तो स्वर्ग लोक में ही है, क्योंकि वहां पर मन की चंचलता तथा चिन्ता मिट जाती है, सभी सुख स्वतः ही सुलभ हो जाते है। मन की चंचलता तथा चिंता ही दुख का कारण है। वहां पर मृत्यु का जोर नहीं चलता है क्योंकि वहां पर नित्य घटने वाली आयु भी नहीं घटती, वहां पर मृत्यु को जीत लेता है। वहां पर सदा ही बुढ़ापा न आने से युवावस्था बनी रहती है। वहां स्वर्ग में वायु का प्रकोप, वात, पित, कफ आदि रोग नहीं सताते वहां पर तो ताप शीत, राग द्वेष आदि द्वन्द्व भी नहीं सताते क्योंकि दयालु परमात्मा ने दया करके सभी निवृत कर दिये है। केशोजी कहते है कि शुद्ध क्रिया करोगे तो स्वर्ग में सुखों की प्राप्ति होगी।4।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-89

सिले पछिम रे देश, हिंवर तुरी पलाण सी।
सतगुरु होयसी साथ, खड़ लसकर गढ़ आवसी।

खड़ा लसकर कोटि दिल्ली, दांणौ सूं जुध मांडसी।
खरा खोटा री खबर लेसी, नाज निरंतो बांटसी।
खरच खालक देवे मुक्ति, दाणों के दल दीजसी।
जोड़ कर जगदीश आयो, सिले पछिम रे कीजसी।1।
सहंसे किरणे सूर, सतगुरु फेर तपावसी।
शरणे रहसी साध, असुरां देव दझायसी।
असुर दाझे हुवै घाणो, आंच लागै आकरी।
कोपियो करतार मारै, देखी दूलम यों डरी।
कालिंगे को काल करसी, आंके कलि के आयसी।
धरणी हूं तां नव नेजां, सूरज फेर तपावसी।2।
दुल दुल चढ़िसी देव, जुध करसी जीवां धणी।
चीण म चीण कटक, फोजा फरहरसी घणी।
फरेहरे फोजा धरणी धूजै, आसमान उपर थरहरै।
पवन सूं पर्वत डोलै, छत्र निकलंक सिर धरै।
पांच सात नव कोटि बारा, जाय इक वीसां मिलै।
तिधारो तिण बार सजसी, देव चढ़सी दुल दुले।3।
मिले तेतीसों क्रोड़ करै, उमाहो पार को।
नाचै अपछरां पात, मेलो गुरु दीदार को।
मेलो तो दीदार को, सुन्दरी एक मन होय खड़ी।
साधां को सुख अनंत देसी, रतन काया हीरा जड़ी।
कांमणी करतार मेलो, रूप रंभा अति भली।
तां बीच बासो कह केसो, क्रोड़ तेतीसूं मिली।4।

भावार्थ–यहां पर इस साखी में कवि ने कल्कि अवतार होगा इसकी कल्पना की है। वह कैसा और किस प्रकार से होगा इसका वर्णन किया है। पश्चिम देश के उस किनारे से कल्कि अवतार का आगमन होगा जो हिंवर जाति के घोड़े पर सवार होकर आयेगा अर्थात् पश्चिम देश अमेरिका से तेज वाहन पर सवार होकर सम्पूर्ण विश्व को कंपायमान करते हुए आयेगा। साथ में सतगुरु भी मार्ग दृष्टा के रूप में होंगे। उनके साथ में अन्य छः प्रकार का सैन्य दल होगा। अपने लसकर सैन्य दल के साथ अनेक देशों को पार करते हुए दिल्ली तक पहुंचेगा। दानवों से युद्ध होगा उनमें सुर–असुर खरा खोटा की

खबर ली जायेगी। निर्णय किया जायेगा। दीन दुखी भूखे प्यासे पर कृपा करके उन्हें अन्न-जल प्रदान करेंगे। जो उनकी शरण ग्रहण करेंगे उनको तो मुक्ति प्रदान करेंगे। तथा दानवों का विनाश करेंगे। जो व्यक्ति नम्रता से हाथ जोड़कर आयेंगे उन्हें तो अपना बनायेंगे। इस प्रकार से पश्चिम के किनारे से कल्कि अवतार आयेंगे।1।

हजारों किरणों वाले सूर्य को फिर से तपायेंगे। सम्पूर्ण दुनिया जल उठेगी। जो साधु सज्जन पुरूष है वे तो शरण ग्रहण करेंगे किन्तु असुरों को जला देंगे। असुर जलेंगे तथा रोयेंगे उन्हें आंच में पकाया जायेगा। कर्त्ता कुपित होकर इस प्रकार से असुरों को मारेंगे, यह दृश्य देखकर सम्पूर्ण दुनिया डर जायेगी। कलयुग का अन्त करने के लिये कलयुग की समाप्ति पर भगवान स्वयं आयेंगे। इस धरती पर धर्म की नयी ध्वजा फहरायेंगे और ज्ञान का प्रकाश सूर्य सदृश फिर से फैलायेंगे।2।

जीवों के स्वामी ईष्वर तेजस्वी वाहन पर सवार होकर युद्ध करेंगे, उनके साथ चीन देश, कटक देश आदि की फौज भी साथ देगी और अपना जौहर दिखायेगी। जब सेना साथ चलेगी तो धरती को कंपायमान कर देगी। आसमान भी धूंए से धूसरित हो जायेगा। जब उनकी सेना वेग से चलेगी तो उनके द्वारा उठे हुए तुफान से पर्वत भी डोलने लग जायेंगे। उस समय सभी देशों के एक ही छत्रपति सम्राट भगवान कल्कि ही होंगे। प्रहलाद से बिछुड़े हुए जीव प्रहलाद की परंपरा के अनुसार ही परमात्मा में जाकर मिल जायेंगे। तीन धार वाली खड़ग हाथ में शोभायमान होगी और देव स्वयं तेजस्वी वाहन पर सवार होकर भयंकर युद्ध करेंगे।3।

भगवान के अवतार का मुख्य प्रयोजन भी भटके हुए जीवों को पार उतारना है। भगवान की अहैतुकी कृपा से जब जीव पार पहुंच जायेंगे तो आगे तेतीस करोड़ देवताओं से मिलान होगा। आनन्द की कोई सीमा ही नहीं रहेगी। वहां पर अप्सराऐं नृत्य गान करती हुई स्वागत करेगी। दया स्वरूप प्रभु से प्रेम पूर्वक भेंट करवायेगी। यदि मिलना है तो दयालु गुरुदेव से ही मिलन करें ऐसा कहती हुई पवित्र अप्सराऐं हाथ जोड़े खड़ी रहेगी। सभी का एक मत यही होगा। साधु सज्जनों को अनन्त सुख की प्राप्ति होगी। उन्हें आगे रत्न सदृश दिव्य हीरों से अलंकृत काया मिलेगी। स्वरूप गुणों से युक्त

अनेकों अप्सराऐं युवतियां आगे मिलेगी। केशोजी कहते है कि उनके बीच में ही भक्तों का निवास होगा वे सदा ही सेवा में तत्पर रहेगी इस प्रकार से भगवान तेतीस करोड़ से मिलान अवश्य ही करवायेंगे।4।

साखी छन्दां की-90

कलियुग किसन पधारे, संता करण संभाल।
जन बाड़े सो बिछड़्या, तहां करण प्रति पाल।
प्रतिपाल करण गुवाल आयो, प्रीत भक्तां पालही।
कवल कारण धरो देही, धर्म चाल्यो चालही।
साच शील संतोष संग्रह, प्रीत कर लागो पगे।
पहलाद जी के कवल कारण, किसन आयो कलयुगे।1।
कूड़ा-कूड़ा कुगुरु नै छाड़, सुगुरु विलंब्या सेवजी।
कोड़ी द्वादस कारणै, दुनियां प्रगट्या देवजी।
देव दुनियां हुवो प्रगट, देह धर आया दई।
आन को आराध छूटो, श्यामजी मिलिया सही।
आपणां अपणाय लेसी, स्वर्ग दे साचा सुगुरां।
खरा खोटा करै परेखा, छाड़िया कूड़ा कुगुरां।2।
जब लग पिंजर प्राणियों, जिभिया जप जगदीश।
जीवड़ा ने जम छोड़े नहीं, सही विसोवा वीस।
वीसवा वीस साझी सुक्रत, हेत हरिजी सूं करे।
अंजली जल जांण रे जीव, आव तूटे इण परे।
जबर जालम जगत डांडे, डहकी जीवड़ा नै डसे।
श्वांस श्वांस अरदास कीजै, प्राणियों पिंजर बसे।3।
दरस दीजै देवजी, आवागवण न आंण।
सांसो मेटो श्यामजी, प्रीतम लियो पिछांण।
पिछांण के प्रतिपाल कीजै, मेटियो सांसो सही।
हरि हिसाब नै बूझ ही, वरग वानें की बही।
पांच सात नव कोड़ि बारां, श्याम सब ही लीजिये।
दास केशो आस थारी, देव दर्शन दीजिये।4।

भावार्थ-कलयुग में स्वयं कृष्ण पधारे है। सावधान होकर अपने कर्त्तव्य कर्म को धारण करो। जो प्रहलाद पंथी जीव बिछुड़ गये थे उनका

प्रतिपालन करने के लिये आये है ग्वाल बाल के रूप में भक्तों को पार उतारने के लिये आये है। स्वयं धर्म मार्ग पर चलते है और दूसरों को भी सिखाते है। सत्य शील संतोष का संग्रह करके प्रेम भाव से परमात्मा के चरण कमलों में प्रणाम करो। प्रहलाद जी के वचनों को पूर्ण करने के लिये स्वयं कृष्ण ही कलयुग में आये है।1।

झूठे पाखण्डी कपटी कुगुरु की सेवा क्यों करो। द्वादस करोड़ प्राणियों का उद्धार करने के लिये दुनियां में देवजी ने अवतार धारण किया है। इस दुनिया में देव प्रगट हुए है, देह धारण करके स्वयं विष्णु भगवान यहां पर आये है। आन देवता, भूत प्रेतादि की आराधना छूट गयी है। क्योंकि इस समय देवजी से मिलन हो गया है। अपने जनों को तो अपना बना लेंगे तथा सच्चे सतगुरु उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति करवा देंगे। खरे तथा खोटे लोगों की परीक्षा करके सच्चे जनों को तो अपना लेंगे तथा पाखण्डी जनों को त्याग देंगे।2।

जब तक इस शरीर रूपी पिंजरे में जीवात्मा है तभी तक अपनी जिभ्या से जगदीश्वर का जप कर लें। एक दिन इस जीव को मृत्यु ग्रसित करेगी। यह बात शत् प्रतिशत सत्य है। इसलिये जो भी कार्य करें वह शत् प्रतिशत सत्य ही होना चाहिये तथा प्रेम भी हरि परमात्मा से ही करें। रे जीव! आयु प्रतिदिन घटती जा रही है, जिस प्रकार से अंजलि का जल घटता जाता है। जबरदस्त यम के दूतों ने जगत को दण्डित किया है, किसी को भी नहीं छोड़ा है। अकस्मात् आकर जीव को शरीर से निकाल करके ले जायेंगे। हे प्राणी! इस शरीर रूपी पिंजरे में रहते हुए श्वासों श्वास परमात्मा का स्मरण करें।3।

हे देवजी! आप आकर एक बार उसी रूप में दर्शन अवश्य ही दीजिये। आपकी एक झलक से ही बार-बार जन्म लेना मरना सदा के लिये निवृत हो जायेगा। हे श्यामजी! आप हमारे संशय को निवृत कर दीजिये। जिससे हम अपने प्राण प्यारे को पहचान सके। जब आपकी पहचान हो जायेगी तभी हमारा संशय निवृत हो सकेगा। इसलिये यह पहल आप ही कीजिये। हरि आये है तो पार अवश्य ही उतार देंगे किन्तु अपने प्यारे है, प्रहलाद पंथी जीव है उन्हें ही वरीयता दी जायेगी। क्योंकि इससे पूर्व भी आपने पांच करोड़ प्रहलाद के साथ, सात करोड़ हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ

करोड़ युधिष्ठिर के साथ पार उतारे है। अभी पीछे अवशिष्ट जनों को इस समय पार उतार दीजिये। केशोजी कहते है कि हे श्याम सुन्दर! अब तो आपकी ही आशा है दर्शन दीजिये।4।

साखी छन्दां की राग मारू-91

सिंवरो सिरजण हार, कलिजुग कायम राजा आवियो।
परमेश्वर परगट संसार, भाग परापति पावियो।
पावियो जहां भाग पुरा, पाप परलै जांही करै।
सांध पूगी श्याम आयो, खबर ले खोटा खरै।
दान शील तप भाव पालो, देव प्रीतम पार नै।
संभरथलि आयो श्याम, सिंवरो सिरजण हार नै।1।
चेतो चेतो चतुर सुजान, सतगुरु आयो सांभल्यो।
भूधरजी भक्तां रे काज, मया करि मोहण मिल्यो।
मिल्यो मोहण मया कीन्ही, प्रीत पहलाद तणी।
जागियो जगदीश जुग मां, चार चक चरचा सुणी।
सिंघ बकरी साथ चाल्या, राव रंक परचाविया।
कर्म हीन रह्या कोरा, सतगुरु साध चेताविया।2।
परचे परच्या पूण छतीसूं, पार ब्रह्म पोह आणियां।
बाड़े बिछड़्या जीव, पूरे धणी पिछाणियां।
पिछाण पोह मां आंणियां, सतगुरु सुपह दाखियों।
तीन सौ तिरेसठ मथ मार्ग, उतम पंथ चलावियो।
एकलवाई अलख आया, जिण नव खंड निरतावियां।
पवण छतीसों पाए लागे, पूरै गुरु परचाविया।3।
पाप गयो प्रगट्यो आप, धरम धरां में जागियो।
बोले संत सुजाण, झगड़ो झूठ त्यागियो।
त्यागियो तहां झगड़ो झूठ, साच शील संभालियो।
आंण को आराध छोड़ो, प्रीत हरि सूं पालियो।
चार चक नव खंड निरखो, दीप दीणायर ज्यूं रह्यो।
कह केशो आयो श्याम, पाप परगटियां गयो।4।

भावार्थ-सृजनहार परमात्मा का स्मरण करो। कलयुग में स्वयं परमेश्वर राजाधिराज आये है। परमात्मा परमेश्वर इस समय सम्भराथल पर

आकर प्रगट हुए है। जिसका भाग्य उतम है वही प्राप्त कर सकेगा। जिसको भी प्राप्ति होगी पापों का नाश भी उसी के ही होंगे। समय उपस्थित हुआ तो श्याम आये तथा खोटे लोगों का निर्णय करके खरे लोगों को अपना बना लेंगे। दान शील तप के भाव को समझो तथा पालन करो यही अपने प्रिय देव का संदेशा है। सम्भराथल पर श्याम आये है ऐसे सृजनकर्त्ता श्याम का स्मरण करें।1।

हे चतुर सुजान जनों! इस समय सचेत हो जाओ। सतगुरु का आगमन हुआ है। इस लोक के प्राणियों का उद्धार करने के लिये एक मात्र स्वयं ब्रह्म ही आये है। प्रेम भाव से मोहन मुरलीधर का मिलन हुआ है। स्वयं मोहन ने ही प्रेम से आकर मिलन किया है क्योंकि पिछली प्रहलाद की प्रीति को निभा रहे है। इस युग में जगदीश ही जागृत होकर दयाभाव कर रहे है। यह चर्चा चारों तरफ हो रही है, लोग सुन रहे है जहां जिस देश में भी देवजी का निवास होता है वहां पर सिंह तथा बकरी एक घाट पर पानी पीते है। कहा भी है-''अहिंसा प्रतिष्ठायां तन्सन्निधौ वैर त्याग:।'' जिन्होनें बड़े-बड़े राजाओं को उपदेश देकर शुभ मार्ग पर चलाया तथा रंक को भी उसी तरह परचाया। जो कर्महीन लोग थे वे तो खाली ही रह गये। सतगुरु ने तो सच्चे अधिकारी साधु जनों को ही चेताया। उन पर अपार कृपा दृष्टि बरसायी।2।

चतुर्थ शुद्र वर्ण को छोड़कर अन्य ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य तीन वर्णो को ही विशेष रूप से उनकी योग्यता के अनुसार ही चेताया, क्योंकि वे ही ज्ञान के अधिकारी थे। प्रहलाद के बाड़े के बिछुड़े हुए जीवों की परमात्मा ने पहचान की तथा उन्हें सद्मार्ग का अनुयायी बनाया। तीन सौ तिरेसठ पंथों का अन्वेषण करके यह उतम बिश्नोई पंथ चलाया। इस बार सीता लक्ष्मी रूक्मणी को छोड़कर अकेले ही आये है जिन्होनें नव खण्डों में अपनी धर्म की ध्वजा फहरायी है। विशेष रूप से तीन वर्णो के लोग गुरु के चरणों में प्रणाम कर रहे है क्योंकि पूरे गुरु ने इन्हें परचाया है।3।

आप स्वयं प्रगट हुए तो इस धरती पर धर्म पुन: स्थापित हुआ। सभी संत सुजान सत्य वाणी बोलने लगे है। झूठा झगड़ा व्यर्थ का विवाद त्याग दिया है। सत्य शील की संभाल की है। आन देवता अर्थात् भूत-प्रेत, भेरू-भोमियां आदि की आराधना करनी छोड़ दी है और हरि से प्रेम जोड़ लिया है। सम्भराथल पर विराजमान होकर चार चक नव खंडों को देख रहे है। जिस प्रकार से सूर्य, दीपक, चंद्र अंधकार को भगा देता है और प्रकाश

करके सभी को दिखाता है उसी प्रकार से सतगुरु ने सभी को प्रकाशित किया है। केशोजी कहते है कि श्याम सुन्दर आये है, इनके आगमन से ही पाप भाग गये है।4।

साखी छन्दां की राग सोरठ-92

जां दिन संत मिलै मेरा जीहो, बाजै सुरग बधाई।
कामणी कोड करे मेरा जीहो, अपछर मनो उछाई।
उछाह अपछर करै कामणि, हेत करि मन मां हरि।
विरहनी वर काज बहु विध, कलश सझियो सुन्दरी।
पहर पटोली पांय पायल, बीज ज्यों तन झिलमिलै।
धनि दिहाड़ो धनि घड़ि, सैण साजन रल मिलै।1।
सहजै सोवण मेरा जीयो, कीजै कोड अनेरा।
मोमण लाड लडै मेरा जीयो, विक्रम ते जन तेरा।
जन तेरा रमै नव खंड, जरा जीव न झंपई।
अमर भोम अनन्त आनन्द, रूप राम तिरजई।
अमी अमृत भोग मनसा, दया करि दीन्हां दई।
नर नारी आस पूगी, सो वरणां सहजा सही।2।
स्वर्गा मांहि सुख घणां मेरा जीयो, पीवै अमी कचोला।
तेरा जन केल करे मेरा जीयो, हींडै सहज हींडोला।
सहज हींडोला तेरा जन हींडै, जरा जीव नहीं जहां।
वाव वेद न वांही व्यापै, दुख दरिद्र नहीं तहां।
मांणत सुख अनुप इधिका, सांभलो साधु जणां।
नर नारी निकलंक नेह, जिण सुरगा मांहि सुख घणां।3।
सतगुरु साथ रमै मेरा जीयो, सुरनर सदा संगाती।
ब्रह्मा वेद सही मेरा जीयो, नारी बहु वैण राती।
रवि रात तिथ वार न वरते, पहर पख न बांचिये।
मास वर्ष घड़ी मुहूरत, रूप गुरु के राचिये।
सदा सुख अनुप अधिका, नाहि व्यापै ओपदां।
कह केशो करो केला, श्याम संग खेलो सदा।4।

भावार्थ-जिस दिन संत का समागम और मिलन होता है उस दिन स्वर्ग में भी बधाइयां बंटती है। वहां पर संत के स्वागत में अनेकों देव कन्याऐं

अप्सराऐं खड़ी रहती है तथा खुशी में उत्सव मनाती है। उत्सव भी इसलिये मनाती है क्योंकि उन्हें हरि के प्रिय भक्तों से प्रेम होता है। संत भक्तों के मिलन के लिये कलशों में जल भरकर सामनें आती है। सुन्दर सौम्य वस्त्र एवं अलंकारों से सुसज्जित होकर आती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानों बादलों में बिजली चमक रही हो। धन्य है वह दिन व घड़ी जिस समय प्रेमी भक्तों का आपस में मिलन होता है।1।

प्रेम पूर्वक मिलन के पश्चात् समाधी अवस्था को प्राप्त हो जाते है। सांसारिक विषयों से निवृत हो जाते है। चित की वृतियां सहज में ही शयन को प्राप्त हो जाती है। उस समय अद्‌भुत प्यार का भाव उमड़ता है। जो भगवान के प्यारे भक्त है उन्हें ही इस समाधि सुख में झुलाया जाता है। क्योंकि वे जन ही प्रभु के प्यारे है। प्रभु के प्यारे जन नव खंडों में विचरण करते है अर्थात् नौ दरवाजों को लांघकर दसवें तक पहुंच जाते है। वहां पर पहुंचने के पश्चात् जरा-बुढ़ापा, रूग्णता आदि नजदीक ही नहीं आते। वह परमात्मा का लोक अमर है वहां पर आनन्द भी अद्‌भुत ही है, वहां पर भगवान के ही स्वरूप में रहकर संसार सागर से पार उतर जाता है। दयालु प्रभु वहां पर अपने प्रिय जनों को मधुर अमृत रस का पान भरपूर करवाते है। सभी नर नारियों की इच्छा वहां पूर्ण हो जाती है। सहज में ही तदरूप वहां हो जाते है।2।

हे मेरे जीव! स्वर्गों में सुख अनन्त है। वहां पर अमृत का पान होता है। प्रभु के प्रिय जन वहां पर क्रीड़ा करते हुए आनन्द के हिलोरे ले रहे है। इसलिये शरीर धारी जीव को वहां बुढ़ापा नहीं आता है, वहां पर पहुंचने पर वात, पित, कफ आदि कष्ट नहीं सताते और न ही किसी प्रकार का दुख दारिद्र ही वहां सताता। हे साधु जनों! संभल जाओ। वहां पर नर नारी निष्कलंक है क्योंकि स्वार्थ नहीं है। आपस में सात्विक प्रेम भाव का संचार होता है। स्वर्ग सुखों का अन्त पार ही नहीं है।3।

वहां स्वर्ग लोक में सतगुरु तथा देवता साथ में ही रमण करते है। ब्रह्माजी वहां पर वेद का उच्चारण करते है नारियां अनेकों यश कीर्तन करती है। न तो वहां पर सूर्य ही अपना प्रभाव जमाता है इसलिये सदा ही दिन बना रहता है और न ही तिथि वार प्रहर पक्ष आदि का ही जोर चलता है। इसलिये वहां पर सदा ही एक रस बना रहता है वहां पर महीना वर्ष घड़ी मुहूर्त कुछ भी नहीं है सभी सतगुरु के स्वरूप में ही लीन हो जाते है सदा ही वहां पर अनुपम

सुख रहता है किसी प्रकार की विपत्ति नहीं आती।4।

साखी छन्दां की-93

जुग जागो जम्भेश्वर राजा, कलजुग कायम आइयो।
थल उपर एकलवाई, भाग परापति पाइयो।
भाग परापति पायो भक्तां, पार ब्रह्म परचावै।
सुशब्द शुद्ध विचार सतगुरु, केवल ज्ञान सुणावै।
सहज सुवाणी सुभाषा बोलै, अवगुण आलस त्याग्यो।
नव खंड जाप जपो निरहारी, जम्भगुरु जुग जाग्यो।1।
हरि सिंवरो मेरा भाइयों, नांव जपो निरहारी।
पांच सात नव खड़या उडिके, अब बारां की बारी।
बारां बारी हुई तियारी, सहज समाहो कीजै।
अनहद व्रत हकीकत जाणों, हजरत लेखो लीजै।
दोय काल करो संध्या, हरि रसनां रस पीजै।
दश बंध जीव जगत चुकावो, हिरदै हरि सिंवरीजै।2।
बारां क्रोड़ मिलै इकवीसां, धन्य दिहाड़ो सोई।
रतन काया मिलै नव रंगी, कलंक न लागै कोई।
कलंक न लागै कोई जीव नै, प्रीतम मिलो पियारा।
आरती ले अप्सरा आवै, गावै मंगला चारा।
कामण कंत मिलै बिछड़िया, त्रिकम त्रिसनां तोड़ी।
इकवीसां मन हुवो उमाहो, मिलै जां बारां क्रोड़ी।3।
पार गिराय पहुंचावो बाबो, मोमण मन उमाहियां।
सुगुरां साध संभाल सतगुरु, नरसिंह नांव चढ़ाइयां।
चड़ियां नांव जके निरमल, भोदूं भरम भुलाया।
ओछा तके रहे उरबारे, पूरा पार बसाया।
कारज सकल सरै मनसा सूं, हर दिन रली बधाई।
कषमल कटे कह जन केशो, पहुंचे पार गिराई।4।

भावार्थ- हे वर्तमान युग के सज्जनों! जागृत हो जाओ। कलयुग में स्वयं भगवान विष्णु ही आये है। सम्भराथल पर इस बार अकेले ही आकर विराजमान हुए है। जिसका अहोभाग्य है प्राप्त तो वही कर सकेगा। भक्त लोगों ने भाग्यानुसार परमेश्वर को प्राप्त किया है तथा ज्ञान ध्यान से परिचित

हुए है। अच्छे शब्द तथा शुद्ध विचारों से सर्व साधारण को परिचित करवा करके ज्ञान सुनाते है। सहज ही में ही अमृत तुल्य वाणी बोलते है जिससे श्रवण कर्ता का आलस मिट जाता है। नव खंडों में भ्रमण करते हुए जप कर रहे है तथा दूसरों को भी सिखलाते है ऐसे नर निरहारी सतगुरु यहां पर जागृत हुए है।1।

हे मेरे भाइयों! हरि का स्मरण करो तथा निराहारी निरंजन का नाम द्वारा स्मरण करो। पांच सात नव करोड़ तो पार पहुंच चुके है। आगे आपकी प्रतीक्षा हो रही है। क्योंकि इस बार आप की ही बारी आयी हुई है। इससे चुकना नहीं। बारह करोड़ पार पहुंचने वाले है उनके साथ आप भी तैयार हो जाइये साथ ही जाना है अनहद नाद ध्वनि का श्रवण करो तथा हकीकत वास्तविकता को जानों आगे स्वयं मालिक आपसे लेखा जोखा लेंगे। दोनों समय में संध्या करो रसना से हरि के नाम रस का पान करो। अपनी कमाई का दसवां भाग दान पुण्य में करो। हृदय में हरि का स्मरण करो।2।

उस दिन को धन्य कहेंगे जिस दिन बारह से मिलान इकीस करोड़ का हो जायेगा। रतन सदृश काया की उपलब्धि होगी वहां पर किसी प्रकार का कलंक नहीं लगेगा। जब प्यारा प्रीतम मिल जायेगा तो किसी प्रकार का कलंक नहीं लगेगा। वहां पर स्वागत के लिये हाथों में आरती सजाकर अप्सराऐं आयेगी तथा मंगल गीत गायेगी। बिछुड़े हुए अपने प्राणों के प्यारे परमेश्वर मिलेंगे। सभी प्रकार की तृष्णाऐं मिट जायेगी। आगे पार पहुंचे हुए इकीस करोड़ के मन में उत्सव होगा क्योंकि अपने बारह करोड़ बिछुड़े हुए जनों का मिलन हो जायेगा।3।

सतगुरु देव पार पहुंचा देंगे। भक्तों के मन में उत्साह होगा। सतगुरु सुगरा जनों को संभाल कर नृसिंह द्वारा निर्मित की गई धर्म की नौका पर चढ़ा देंगे। जो निर्मल शुद्ध हृदय वाले लोग थे वे तो नाव चढ़ गये तथा मूर्ख अज्ञानी जन थे वे भ्रमित होकर भटक गये। जिसकी भावना-वासना सांसारिक विषयों तक ही सीमित थी वे तो संसार में ही जन्म मरण में भटक गये। तथा जो पूर्ण थे वे पार पहुंच गये। इच्छा ही बलवती है। जैसी इच्छा करेंगे वही तो फल मिलेगा। ओच्छी इच्छा भावना वाला ही भटक जाता है। जिसकी भावना शुद्ध तथा उच्च कोटि की होती है वह परमात्मा में सम्मिलित हो जाता है केशोजी कहते है कि संसार सागर से पार उतर जाओगे तो सम्पूर्ण पाप कट जायेंगे।4।

साखी दोहा-94

बूचो बारां करोड़ में, कियो वैकुण्ठा वास।
इल मांही इणि एचरो, जुग लियो जसवास।1।
मेड़ताटी रा मानवी, परगट पोलावास।
जिण नगरी विश्नोई वसै, रूंखां तणो निवास।2।
सरवर नीर सुहावणां, तरू रहिया धर छांय।
वन विगताले राखियो, मंझ मेड़ताटी मांय।3।
राखो विश्नोई खेजड़ी, जे चाले गुरु राह।
राव रखावे तो रहे, का पाले पतिशाह।4।
जहां दीठा तहां कही, बनरावन उणिहार।
ब्रह्म गऊ गुरु खेजड़ी, एह तुलसी तत सार।5।
रैण नै राजोद मां, दूदे तणी ओलाद।
नुगरो गुरु मांने नहीं, विरछ बढ़ावै कर बाद।6।
बाढ़ बिरछ होली कीवी, फिर फिर दीठां गोढ़।
आई खबर जमात मां, खोज गया राजोद।7।
चिठी मेल्ही चोखलै, चोगावां मिलिया आय।
नर सो नरसिंघ दास रो, संक न मांनै कांय।8।
करम चंद नै कालो चड़यो, दुरजण लीयो सराप।
मेड़तियां सूं मेड़तो, उतरियो इणि पाप।9।
बुध हीणां बामण बाणियां, पति बारो परधान।
सिर धन आवै सिर साटै, सिर साटै सनमांन।10।
सिर साटै लाभे सुरग, जे सिर दीनों जाय।
उत तागाला तमकिया, बूचे बीड़ो लियो उठाय।11।
नियात जमाते परगटियो, दरगे अरू दरबार।
सीख करे परवार सूं, मांडयो कंध करार।12।
कंध करारो मांडियो, रतना तेग संवार।
तीन हुकम बूचे किया, तन बूही तरवार।13।
काया कंवल जूवो हुयो, सुरग गया सुचियार।
अखी अवचल एचरो, साख रही संसार।14।
झीणां कंठा झबकती, पदमल करे पियार।

हस्त नखतर तीज दिन, होली मंगलवार।15।
जम्भेश्वर तहां ओलख्यो, लंघिया भवजल पार।
सुकरत कर सुरगे गया, केशो कह विचार।16।

भावार्थ–बूचोजी एचरा पोलावास गांव मेड़ताटी के रहने वाले थे। उन्होनें हरे वृक्षों की रक्षा हेतु अपना बलिदान स्वेच्छा से दिया था। इस घटना का वर्णन केशोजी ने अपनी इस साखी में किया है।

प्रहलाद के बिछुड़े हुए बारह करोड़ों को जाम्भोजी ने वैकुण्ठ पहुंचाया था उनमें बूचोजी एचरा अग्रगण्य थे। इस धरती पर एचरे ने ऐसा पुण्य कर दिखाया जो सराहनीय है। इस जगत में यश की प्राप्ति बूचोजी ने की है।1। मेड़ताटी में पोलावास गांव के बूचोजी निवासी थे। उस समय जहां जिस गांव में बिश्नोई बसते थे उन्हीं गांवों में हरे वृक्षों की बहुतायत थी।2। वहां पर तालाब शुद्ध जल से भरे हुए थे तथा तरूओं की घनी छाया थी। वृक्षों ने अपनी छाया से सम्पूर्ण धरती को ढ़क रखा था। मेड़ता के आसपास के गांवों में बिश्नोइयों ने हरे वृक्षों की रक्षा की थी। वहां के कटते हुए वन को बचाया था।3। बिश्नोई लोग खेजड़ी की रक्षा करते है। गुरु के बताये हुए नियमों का पालन करते है। यही वन की रक्षा का कारण था। जब तक गांव पति ठाकुर या बादशाह वृक्षों की रक्षार्थ सहयोग नहीं देगा तब तक रक्षा होना अति कठिन होगा।4। जहां–जहां पर वृक्ष दिखाई देते थे वहीं पर ही बिश्नोईयों के द्वारा ही रक्षा होती थी। यह बात सर्वत्र प्रचलित थी। वन की शोभा वृन्दावन से भी अधिक हो रही थी।5। ब्रह्म, गुरु, गऊ और खेजड़ी ये सभी तुलसी के समान ही पूजनीय तथा सार रूप है। गांव रैण तथा राजोद में दूदोजी की संतान राज्य करते थे। दूदोजी तो जाम्भोजी के परम शिष्य थे परन्तु पीछे ओलाद कुपात्र हो गई जो हठ करके वृक्षों को कटा रहे थे। अच्छी शिक्षा तो मानते ही नहीं थे।6। उन लोगों ने वृक्ष काटकर ढ़ेर कर दिया। आगे होली आने वाली थी, होली को जलाने के लिये लकड़ी चाहिये। वन में विचरण करने वाले ग्वालों ने जब कटे हुए रूंखों के गूंढ़ देखे तो बहुत ही चिन्तित हुए और वहां से वापिस आकर बिश्नोइयों की जमात के लोगों को खबर सुनाई कि इस प्रकार से वृक्ष काटे जा चुके है। इस सूचना को प्राप्त करके जमात के लोग पता लगाने के लिये राजोद गांव में पहुंचे वहां पर कटे हुए वृक्षों का ढ़ेर पड़ा था।7। जमात के प्रधान लोगों ने चारों तरफ बिश्नोइयों को चिट्ठी लिख करके भेजी और पत्र

पहुंचते ही गांवों के लोग आकर राजोद में एकत्रित हो गये। बिश्नोई जनों ने ग्राम पति ठाकुर नरसिंघ दास के आगे जाकर हाथ जोड़ते हुए कहा कि आपके अनुचरों ने खेजड़ी काटकर ढ़ेर कर दिया है। आप इन्हें उचित दण्ड प्रदान करें। किन्तु अभिमानी नरसिंघदास ने उनकी एक बात भी नहीं सुनी, उनकी कुछ भी परवाह नहीं की।8। उसी समय ही वहां पर उपस्थित करमचन्द का क्रोध रूपी नाग फूंफकार मारने लगा तथा दुरजन ने भी उसी का ही साथ दिया। वह बिश्नोइयों को खरी खोटी सुनाने लगा। यही कारण था कि कालान्तर में मेड़ता इसी कारण से तो उनसे छीना गया था क्योंकि ये लोग कुछ भी ज्ञान धर्म मर्यादा की परवाह नहीं करते थे।9। ठाकुर के पास रहने वाले शिक्षक भी बुद्धिहीन ही थे। नगरी में रहने वाले ब्राह्मण बनिया आदि भी कुछ भी नहीं कह सके। बिश्नोइयों ने हाथ जोड़ते हुए कहा–कि आप लोग हमारी बात को सुन नहीं रहे हो किन्तु हम लोग अपना सिर देकर भी अपने सम्मान एवं वृक्षों की रक्षा करेंगे। अपना सिर समर्पण करके भी बहुमूल्य वृक्ष बचायेंगे।10। पुण्य कार्य हेतु सिर कटा देनें से स्वर्ग की प्राप्ति होगी इसलिये हम इस सौदे से चुकेंगे नहीं। जिन्होनें भी धर्म रक्षार्थ अपने प्राणों का बलिदान दिया है उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हुई है। वहां पर एकत्रित हुए बिश्नोई लोग सभी अपने सिर देने के लिये तैयार थे। ज्योंहि इस प्रकार की वार्ता हुई त्योंहि सभी एक साथ झटिति तैयार हो गये। यह धर्म का बीड़ा बूचे ने ही सर्वप्रथम उठाया था।11। सम्पूर्ण न्यात जमात से बाहर निकलकर आगे आकर बूचे ने कहा–सर्व प्रथम मेरा शरीर वृक्षों की रक्षार्थ समर्पित है। आगे स्वर्ग और यहां राज दरबार में दोनों जगहों पर बूचोजी प्रथम श्रेणी में उपस्थित थे। अपने परिवार जनों को शिक्षा देकर अपना सिर तलवार के आगे उपस्थित कर दिया।12। बूचे अपना सिर आगे करके रतने से कहा खड़ा क्या देख रहा है अपना खड़ग उठा करके पहले मेरा सिर काट फिर कभी दरखतों को काटना। यदि इस समय चूक गया तो फिर कभी हिम्मत नहीं करना। प्रथम मेरा सिर कटेगा पीछे मेरे इन साथियों का उसके बाद में फिर वृक्ष कटेंगे। इस प्रकार से बूचे ने तीन बार अपना सिर काटने का आहवान किया। रतने ने तीसरी आवाज पर बूचे के सिर पर तलवार चलाई।13। तलवार की तीखी धार से धड़ से सिर अलग होकर गिर पड़ा। उपस्थित जनों में हा हाकार मच गया। बूचोजी स्वेच्छा से अपने प्राणों का बलिदान देकर स्वर्ग में पहुंच गये। जब तक सृष्टि रहेगी

तब तक बूचोजी अमर रहेंगे। मरकर भी बूचोजी अमर हो गये। संसार में बूचोजी की यह साखी अमर रहेगी।14। यह लोक छोड़कर दिव्य स्वर्ग लोक में बूचोजी ने निवास किया जहां पर दिव्य मधुर स्वरों से अप्सराऐं देव कन्याएं गान करती हुई प्यार करती है स्वागत करती हुई सुख प्रदान करती है। जिस दिन बूचेजी ने बलिदान दिया वह दिन हस्त नक्षत्र मंगलवार होली का अवसर था। वृक्ष काटने के ठीक तीसरे दिन बलिदान हुआ।15। जिन लोगों ने जाम्भोजी को पहचाना तथा उनके नियमों पर चले वे ही संसार सागर से पार उतर गये। केशोजी कहते है कि पुण्य कर्म करके बूचोजी स्वर्ग में गया ऐसा मेरा मत है।16।

साखी राग सिन्धु-95

मेलो कर मोटा धणी, गिणी तेतीसूं ज्ञान।
दरसण दीजै देवजी, विसन विछोहा भान।1।
पंदरासौ अरू तिराणवै, वदि मिंगसर वमेख।
तिथि नवमी निरखी निर्मली, ओल्हे हुवा अलेख।2।
लालासर की साथरी, पहुंच कियो परवाण।
इल मां अंधियारो हुवो, भोम बरत्यो भांण।3।
जल बिन मरे ज्यूं माछला, सारस मरै स्नेह।
हरि पाखो हरिजन मरै, दुनि त्यागै देह।4।
झुरै पपइयो बूंद विण, बालक पखो ज मांय।
तो विन जग जीवां धणी, भक्तां एसी विहाय।5।
किसन चरित कलयुग हुवो, सुणियो चोचक सार।
पूरब पश्चिम कालपी, गिणियो गंगा पार।6।
सिरजण हारो साध को, सदा संवारे काम।
तके जन आया तालवै, मेलो थरप्यो मुकाम।
पहिले मंहि तांतू खड़ी, उरे उतारो आथ।
एक सहंस अरू चार सौ, खड़या सवेरी साथ।8।
गोविन्द भक्त गुणांवती, अन्तर हुवो उदास।
एक सहंस अरू आठ सौ, सीधा संत सुजाण।9।
अपरंपर विण आदमी, उरै सही री आंच।
छव सौ भींयासर खड़या, सूजो वै सौ पांच।10।

साधु सुरगे नावड़या, सही विसवा बीस।
टोहे संग सुरगे गया, सौ उपर चालीस।11।
जग जीवत मृतक हुवा, निंव चाल्या हुय खाख।
धारू संग सुरगे गया, सांभलिया सो लाख।12।
झीमां जप जीवां धणी, अंतर पूगी आस।
जीव अंत ले उधरी, परगट लाख पचास।13।
सुरग गया सांसो मिट्यो, खालक मेटी खोड़।
अतली संग सुरगे गया, करता केई करोड़।14।
चाखूं चोकस सांभल्यो, दूदे समरप्यो सीस।
राणै संग सुरगे गया, सो जांणै जगदीश।15।
हाथू अरू नाथू निरखी, कसमा किसन सहाय।
चालाणों किया चलत, पहुंता सुरग पुलाय।16।
हरि विन हरि जन ना रहै, उरे इधकी अणराय।
विसन भक्त किरतो खड़यो, खड़यो बहुता खड़ाय।17।
करमणी जांणी कहै, करां नै कुल की कांण।
बाड़ाणी भीछर खड़या, चड़िया सुरग विवाण।18।
गोदारे गुरु ओलख्यो, समधा संत सुजांण।
सोनी किसन भादू सही, सारे रे सुरतांण।19।
जगो जमाते प्रगट्यो, झोरड़ साध बखाण।
लिछमण अरू पांडू परखि, खड़या खरिंगे जाण।20।
गंगा पारी गंगा खड़या, सिंवरै सिरजण हार।
कूलचंद संग सुरगे गया, दाख्या दोढ़ हजार।21।
कहिये कनवज कालपी, करता सारै काज।
साधु खड़या छव सात सौ, महामुखी महाराज।22।
बाल बिरध तरणी तरल, काया तजै के तान।
कुण जांणै कितना खड़या, गोविन्द करसी ज्ञान।23।
करि काठी बूही कंवल, तका हुई तरवार।
घर का घर ही मैं खड़या, बन रा बणी मंझार।24।
तहां बिछड़ वासै रहया, अन्तर अधिक उदास।
परमेश्वर पूरी करो, अन्तर जागी आस।25।

है है कारो बरतियो, इला फिरि जग आंण।
कांप्या सुरनर देवता, हिन्दू मुसलमान।26।
श्वेत पुवंग पुरो पुरूष, दीठो समझ सवेर।
दिन तीजो केशो कहै, राह फिरी जुग रेर।27।

भावार्थ–श्री विष्णु मालिक से मिलान करें। वहां पर तेतीस कोटि देवता विराजमान है। एक से एक बढ़कर अग्रगण्य है। उनसे ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वे लोग यहीं हमारे बीच में से निकल कर गये है। हे देवाधिदेव! आप हमें भी दर्शन देकर कृतार्थ करें। हमारे से विष्णु का बिछुड़ना हो चुका है।1। आगे कवि जाम्भेश्वरजी के अन्तर्धान होनें के सम्बन्ध में वर्णन करते है। विक्रम संवत् 1593 मिंगसर वदि नवमी को गुरुदेव अन्तर्धान हुए थे।2। उस समय सम्भराथल को त्याग करके लालासर की साथरी में पहुंच करके प्रयाण किया। जिस समय दिव्य शरीर का त्याग किया उस समय धरती पर अन्धकार छा गया। मानों भूमि से सूर्यदेवता सदा के लिये ही विदा हो गया हो।3। जिस प्रकार से जल बिना मछली मर जाती है तथा सारस का जोड़ा बिछुड़ जाता है तो स्नेह के कारण मर जाता है उसी प्रकार से हरि के भक्त भी हरि के वियोग में अपने देह त्याग रहे है।4। जिस प्रकार से पपइया स्वाति नक्षत्र की बूंद बिना कलाप करता है और बालक अपनी माता से बिछुड़कर रोता है उसी प्रकार से भगवान के बिना भक्त भी विह्वल होकर रोने लगते है।5। इस कलयुग में कृष्ण चरित्र ही हुआ था यह सार बात सावधान होकर सुनो। दिव्य कृष्ण चरित्र का आनन्द लेने के लिये पूर्व पश्चिम आदि देशों से तथा कालपी गंगापार से लोग आये थे।6। स्वयं सृष्टि के रचियता साधु के वेश में आये तथा सदा ही लोगों का कार्य सिद्ध किया। अन्तिम में लालासर से भी शरीर को प्रस्थान करवाके तालवा ग्राम में शरीर को समाधि दी और मेले की स्थापना हुई।7। आगे कवि साखी में वर्णन करते हुए कहते है कि उस समय गुरुदेव का वियोग सहन नहीं कर सके वे लोग स्वेच्छा से वियोग में अपने प्राणों का परित्याग किया था। उन्हीं का नाम यहां पर गिनाया गया है। सर्व प्रथम जाम्भोजी की बूआ तांतू का नाम आता है। तत्पश्चात् लाखों की संख्या में भक्त जनों का नाम कवि ने अमर किया है। ये लोग प्रेम से पूर्ण थे तथा वियोग को सहन नहीं कर सके थे। ऐसी अवस्था में प्राण त्याग ही एक उपाय था। आगे आप साखी गाते जाइये अर्थ स्वयं ही प्रगट होता जायेगा।

इसलिये संक्षेप में इतना ही अर्थ किया है।

साखी राग सिन्धु-96

हटवाड़े हलचल हुवो, असुरे दीन्ही आंण।
रामइये कीवी रूड़ी, दुनि छुड़ायो डांण।
जोधाणै लग जाणियो, भले जे बीकानेर।
चाल गयी चितौड़ लग, साह नगर अजमेर।
तूं सूरां सिर सूरमो, मोड़ बंधण मयमंत।
पण राखो रूंखां तणौ, पोहमी परगट पंथ।1।
खोड़ खड़ंतै खल खिस्या, हुइ सकल सराह।
धनकारे बरत्यो धरां, धन रामों धन राह।
मंझ मारू के देश, कहिये कापरड़ो।
मेलो मंडोवर भोमि, नव कोटि सूं नेड़ो।
नव कोटि नागौर नोहर, जालौर जेसलमेर का।
मुलतान मथुरा मालवो, मेवाड़ि अर आंवेर का।2।
उजीण ईडर थलि थटो, हांसी अरू हिसार का।
कच्छ कनवज कालपी, गुजरात गंगा पार का।
सिंधु सवालख सोतर सांभर, लोक लाहोरी कितो।
कांप अर सांचोर सोरठ, मड़हर मांडू मेड़तो।
आगरो अजमेर दिल्ली, बीकानेर बिकुंपुरा।
चार खंड सूं चाल आया, मेड़तो मेलो मुरधरां।3।
सौदागर अरू साह, मिलिया बड़े व्योपारी।
सांडि सुरह असीब ऊंठ, निपट मिल्या नरनारी।
नर नारी मेले आय मिलिया, नाद निसांणे सुरां।
हटवाड़े थाट थाटे, घणां गहम घुंघरा।
नारेल नाणों नव निधि, भांति-भांति लाभ लहिया।
धन धरती हुवा लाभे, शाह सौदागर मिल्या।4।
आरती कीजै आय, करसण सौदो कीजै।
दीये बसत देवाल, लाहै कारणै लीजै।
लीजिये कस्तुरी केसर, मखतूल मिसरी मोलिये।
कांसी कपड़ो मोहर मोती, कसे कंचन तोलिये।

कलाकन्द बादाम खारक, गिरी किसमिस अंत घणी।
नर नारी मेले आय मिलिया, आरती आपो आपणी।5।
चौहटे दीने चाव, धान धरि उपर छाजै।
अंत डेरे उणिहारि, ताणियां तम्बू विराजै।
विराज ही अति घणां तम्बू, पुर प्रजा पेखिये।
गुदली तो गाहक मिल्या, गहमह दुनी की गति देखिये।
सिरे सकल निरख नाणो, सकल वस्तु लाभै सटे।
थिर काया दे थाट धारी, चाव दीसै चौहटे।6।
सकल वस्तु संसार, विणजै साह बिकावै।
बाणियां आवै अनेक, लाह कारण लावै।
लावही अति काज लाहै, कपूर किरियाणो कितो।
साटै नांणै सकल लाभै, बरतियो जुग मां जितो।
लाभ लहियो भाग सारू, साह सीजै रंजिये।
जाम जनमी पिता पाखो, सकल बाना विणजिये।7।
दुनि उगाह डांण, शहरी प्रजा सतावै।
हीर पखो हुजदार, मारगे मिनख रूकावै।
रोकी रस्ता दुख दीजै, दुनि इण पर भीड़िये।
खबर हीणां खालक खोसे, पुर परजा पीड़िये।
दीवाण दाद पावही, कूक दुनियां यो कहै।
दाणी दुसमण होय लागा, डांण दुनियां ऊगहै।8।
अनर न हीये दांण, झूज हुई जाम्भाणा।
खल चढ़ियां कर खीज, सूरां गही कबाणां।
कबांण कर गहि संबह, तिण बार तागाला रहै।
निसरै तरवार तीखी, बांण सर गोली बहै।
लिखे विण क्यों लोह लागै, सार अंग सुरा सहै।
बिश्नोई पतिशाह प्रगट, दांण से क्या नै दैवे।9।
मंगल रचियो राम, विधि सु बेरी विसाई।
मिलियो मिनख अनेक, जान जुगत सूं आई।
जुगति जानी हुवा भेला, निज कर्म लाभै न्योतियो।
रामटो रण खेत आयो, मोड़ मस्तक बांधियो।

तखगिरी तिरे आरती, रची चंवरी चौहटै।
खिवै भाला मंड्यो भारत, मंगल रचियो रामटै।10।
साहो सजियो राम, रन मां विवाह रचायो।
धन्य सुरों सिंह हाक, गह कर सार समाहयो।
समाही सार संघार आयो, कटक दल कियो कड़ो।
परणाय जसवंत पार पहुंचो, लिख्यो साहो सांकड़ो।
जैसी जुगति सूं तेग वाही, देखी सुरतो ओलख्यो।
इन्द्र भवन उच्छाह हूंतो, रामइये साहो सज्यो।11।
बड़ साको संसार, खोड़ खड़न्ते कीयो।
वास धवै सुत सूर, जग मांहि जस लियो।
लियो जस जिण जीव काजै, शुक्ल पक्ष काया कसी।
मघा नक्षत्र वार मंगल, चैत सुदी एकादशी।
सतरह सौ सइये समै, नर दांण काजै सिर दियो।
मुक्ति पहुंतो कह केसो, संसार बड़ साको कीयो।12।

भावार्थ-यह साखी केशोजी द्वारा विरचित है। इसमें कवि ने बड़े ही विस्तार से धवां के रहने वाले रामोजी खोड़ के बलिदान का वर्णन किया है। सर्वप्रथम सात छन्दों में तो जोधपुर से पूर्व की ओर कापरहेड़े गांव में लगने वाले मेले का सजीव वर्णन किया है। उस मेले में हर प्रकार की वस्तुऐं बिक्री हेतु आती है। तथा कुछ लोग तो बेचने के लिये तथा कुछ खरीदने के लिये आते है। ऐसा विशाल मेला लगता था जहां पर माता-पिता, भाई-बन्धु को छोड़कर कुछ भी खरीदा बेचा जा सकता था। ऐसे दिव्य मेले में सर्व साधारण लोग आते थे। इससे पूर्व में मेले में प्रवेश का कोई कर-टेक्स नहीं लगाया गया था। किन्तु इस बार राजाज्ञा के बिना ही गरीब प्रजा पर अधिकारियों ने कर लगा दिया था। गरीब जनता अकारण ही सतायी जा रही थी। उसी प्रजा में बिश्नोई लोग भी आये हुए थे। उन्होनें मेले में प्रवेश करने की स्वाभाविक प्रवृति दिखलाई थी। उसी समय सिपाहियों ने उन्हें रोका और टेक्स मांगा। बिश्नोई कहने लगे हम टैक्य नहीं देंगे। यह सरासर अन्याय है न तो हम अन्याय करेंगे और न ही करने देंगे। इस प्रकार से विवाद बढ़ चुका था। चारों तरफ से लोग एकत्रित होनें लगे। उसी समय ही धवां गांव के रहने वाले रामोजी खोड़ भी आ गये थे। सिर मोड़ यानि अपने श्वसूराल जा रहे थे। वही

वैवाहिक चिन्ह रूपी पगड़ी बंधी हुई थी। साथ में बाराती भी थे। रामोजी ने आकर स्थिति देखी और विवाह में जानें को त्याग करके वहीं पर स्वर्ग में जानें के लिये कमर में बंधी हुई तलवार निकाल ली और युद्ध भूमि में कूद पड़े। दोनों तरफ से भयंकर युद्ध हुआ, कई लोगों को मोत के घाट उतारकर स्वयं भी मृत्यु का वरण किया अर्थात् मृत्यु के साथ विवाह रचाया। रामोजी के बलिदान होते ही युद्ध वहीं पर ही रुक गया तथा जोधपुर राज दरबार में यह खबर पहुंची तब राज दरबार ने आकर क्षमा याचना की तथा उन अधिकारियों को दण्डित किया इस प्रकार से दुनिया पर हो रहे अन्याय को उखाड़ फेंका तथा सदा के लिये धर्म मार्ग को प्रशस्त किया। यह घटना वि. सं. 1700 की चैत्र सुदी एकादशी मघा नक्षत्र वार मंगलवार के दिन घटित हुई थी। कवि का कहना है कि रामोंजी ने यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण करके दिखाया था। जिसके प्रत्यक्ष दृष्टा स्वयं केशोजी थे।

कवि सं.-35 (सुरजनदास जी)

सुरजनदास जी पुनिया का जन्म वि. सं. 1640 है तथा परलोक गमन संवत् 1748 में हुआ था। ये भींयासर गांव के पुनियां गोत्र से थे। बाल्यावस्था में ही वील्होजी के शिष्य बन गये थे। वील्होजी के शिष्य केशोजी एवं सुरजनजी ये दोनों प्रतिष्ठ कवि थे। ये दोनों ही अपने गुरु के समान महान कवि और समाज सुधारक थे। सुरजनजी को वील्होजी ने रामड़ास का महंत बनाया था। वहां पर गांव से बाहर एक तालाब पर झूंपड़ी बनाकर रहते थे। काव्य कविता की साधना और योग साधना में लीन रहते थे। पौराणिक कथाओं के महान पण्डित तथा कवि थे। जाम्भोलाव महात्म्य सुरजन जी ने ही उजागर किया था।

अपने जीवन काल में सुरजन जी ने अनेक रचनाऐं की थी जिनमें आख्यान कथाऐं, हरजस, कवित, फुटकर छन्द, राम रासौ तथा साखियां प्रसिद्ध है। अन्य जाम्भाणी कवियों की अपेक्षा सुरजनजी की भाषा अधिक कलिष्ट है तथा काव्य कला से युक्त भी है यहां पर सुरजनजी द्वारा रचित नौ साखियों का भावार्थ किया जा रहा है। जम्भसार में सुरजनजी की कथा विस्तार से साहबराम जी ने लिखी है।

साखी छन्दां की-97

रे गुरु भाई मानों विसन सगाई, जीव स्वार्थ सोई।

क्षमा दया दृढ़ जुगत पिछाणों, आवागवण न होई।
कलि मां केवल ज्ञान प्रकाश्यो, उतम राह चलाई।
संभराथल सतगुरु परकाश्यो, भेद भूला गुरु भाई।1।
यो पंथ साचा अवचल वाचा, टलो नहीं फुरमाई।
गुरु के वचने निव खिंव चालो, जल सुचि जुगति बताई।
जुगति बिहुणां मुक्ति न होई, करतब न कर काचो।
झूठे झूठ हुवैला भारी, सांचा सो पंथ सांचो।2।
पंथ जाम्भाणो सतकर जांणो, असत न मानों लोई।
हरि का नाम धियावो एक मन, नाम दियो विसनोई।
परिहरि पाप वीरजैण जोगैण्य, विसन-विसन बखाणों।
निर भरम देव निरोतर वाचा, सत पंथ जाम्भाणों।3।
रे विसनोई निरमल होई, विस की गांठ चुकावो।
परिहरि वाद विरोध न कीजै, हाक हुकम सिर आवो।
गुरु वट चाले ते जन साचा, कुलवट भूला लोई।
सुरजन दास विसन के शरणै, सोई खरा विसनोई।4।

भावार्थ-हे गुरु भाईयों! विष्णु से सम्बन्ध अवश्य ही जोड़ें। क्योंकि इसी में ही जीव की भलाई है। जीवन जीने के लिये क्षमा दया को दृढ़ता से पालन करते हुए जीवन मुक्ति की पहचान करें। जिससे संसार के चक्र से छूट जाओगे। गुरुदेव ने आकर कलयुग में कैवल्य ज्ञान का प्रकाश किया है तथा उतम मार्ग का प्रवर्तन किया है। सम्भराथल पर आकर सतगुरु ने सभी को ज्ञान ध्यान तथा शुभ कर्मो से परिचित किया है। जिससे गुरु भाई आपस में द्वेत, द्वेष भाव को भूल गये है।1।

यह पंथ सच्चा है, गुरुदेव की वाणी सत्य सनातन है। गुरु ने जैसा फरमाया है वैसा ही सभी लोग करते है गुरु के वचनों को नम्रता के भाव से स्वीकार करें। क्षमा दया भाव से जीवन यापन करें। जल से शौच स्नान करना यह युक्ति गुरुदेव ने बतलाई है। जब तक युक्ति नहीं सिखेगा तब तक मुक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता। कर्त्तव्य कर्म पूर्ण रूपेण करें। अधूरा कार्य फलदायक नहीं होता। झूठ कपट का व्यवहार करने से अन्त काल में भारी पड़ जायेगा। जो सच्चे है उन्हीं का पंथ मार्ग साधना सच्ची है।2। जाम्भाणां पंथ ही सत्य कर मानों। हरि का ध्यान एक मन होकर के करें। जो सच्चाई से श्रद्धा से ध्यान

करता है वही पक्का बिश्नोई होता है। पापों को छोड़कर सद्‌गुणों का संग्रह करो। और विष्णु मन्त्र का जप करो। सत गुरु देव निश्चित ही परम देव है उनकी वाणी अगोचर है। 'जिहिं के खरतर गोठ निरोतर वाचा' महान विद्वानों की संगोष्ठियां भी उनकी वाणी पर विचार करती हुई चुप हो जाती है ऐसा सत्य पन्थ जाम्भाणा है।3।

हे बिश्नोई! निर्मल हो जाओ। विष की गांठ मिटा दो। अन्दर के कलुषित भावों को मिटा दीजिये। व्यर्थ के विवाद को त्याग करके शुद्ध निर्मल हो जाइये। किसी से भी विरोध न करें। परमात्मा की वाणी को जान करके तदनुसार जीवन यापन करें। जो गुरु के मार्ग पर चलता है वही सच्चा मानव है। लोग तो अपनी कुल परंपरा में फंसे हुए है भूल से व्यर्थ का भार उठा रहे है। सुरजनजी कहते है कि मैं तो विष्णु की ही शरण में हूं जो विष्णु की शरण ग्रहण करेगा वही सच्चा बिश्नोई है।4।

साखी छन्दां की, राग धनाश्री-98

बाबो मिलियो त्रिभुवण तार, जोति विराजे निज थले।
आवियो गुरु आप अलेख, साच सबद जग सांभले।
सबद साचा सांभल्या, परतीत आई मोमणां।
पंथ को झणकार बाजै, पाप छूटै अति घणां।
आण भरम कुथान पूजा, तजै सकल विकार।
आश गुरु की कीजिये, मिलियो त्रिभुवण तार।
जोति विराजे निज थले।1।
बरतियो धनि धनि कार, धन्य मुहूरत धन्य घड़ी।
झीणां सबद झणंकार, जोजन वाणी सुहावणी।
जोजन वाणी सुहावणी, जे सकल धर्म निवास।
हंस हींयाली परगटियो, अधिक कीजिये आस।
काम क्रोध विकार परहर, पंथ चाल्यो सार।
धर्म चोथे जुग सांभल्यो, बरत्यो धिन-धिन कार।
धिन मुहूरत धिन घड़ी।2।
गुरु कथियो केवल ज्ञान, सुकरत कर पहुंचा निज घरां।
सतगुरु कियो मिलाप, पांच सात नव करोड़ बारां।
पांच सात नव करोड़ बारां, मेली सी सुर लोय।

बात साचे श्याम की थे, जपो एक मन होय।
होम जाप समाध पूजा, धरो संभू को ध्यान।
ब्रह्म किरिया दाखवी, गुरु कथियो केवल ज्ञान।
सुकरत कर पहुंता निज घरां।3।
अवर न दूजो कोय, इण गुरु तणों पटंतरे।
गुरु धरियो भेख अनेक, सकल दया सतगुरु करे।
दया सतगुरु दाखवै, सहज शील संतोष।
आस गुरु की कीजिये, जो देवे तुठे मोख।
बलि बलि विसन बखाणिये, तरण तारण सोय।
श्याम साचो प्रगट्यो, और न दूजो कोय।
इण गुरु तणै पटंतरै।4।
प्रगट्यो कृष्ण मुरार, वैणे विसन बखाणिये।
करसी गुरु पूर्ण वाच, सबद श्याम पिछाणिये।
सबदे श्याम पिछाणिये नै, जे सुर मेलण काज।
सुरजन जन की वीणती, सदा जी राखो लाज।
साध संगति भगती हरि की, सुपह सिरजण हार।
सु गुरु जीवां तारसी, प्रगट्यो किसन मुरार।5।

भावार्थ-तीनों लोकों को तारने वाले भगवान विष्णु ही जाम्भेश्वरजी के रूप में आये है। जो ज्योति स्वरूप सम्भराथल पर विराजमान हुए है अवश्य ही भेंट कीजिये। गुरु स्वयं अलख निरंजन है वही यहां पर आये है। सत्य शब्दों का उच्चारण करते है। हे जगत के लोगों! सावधान हो जाओ! सत्य शब्द श्रवण करने से भक्तों को विश्वास हुआ है, धर्म के प्रति प्रेम जगा है। भूत प्रेतादि की पूजा करना तथा भ्रम को छोड़कर लोग सतपंथ के अनुयायी बने है। अन्य सभी कल्पित देवताओं की आसा छोड़कर एक गुरु की ही आस कीजिये। आप त्रिभुवन के स्वामी से मिलाप कर सकोगे। जो ज्योति स्वरूप निज थल पर अब भी विराजमान है।1।

चारों ओर से धन्य की ध्वनि गुजायमान हो रही है। धन्य है उस मुहूर्त एवं उस घड़ी नक्षत्र को जिसमें स्वयं परमेश्वर ने ही अवतार धारण किया है। सूक्ष्म तथा यथार्थ ज्ञान कराने वाले शब्दों की ध्वनि दूर-दूर तक सुनाई दे रही है। जब सभी मिलकर समवेत स्वर में गुरु वाणी का उच्चारण करते है तो

सभी धर्म वहीं पर आकर निवास करते है। बोलने वाले तथा सुनने वाले कृत्य कृत्य हो जाते है। हंस ही मानों यहां मानसरोवर को छोड़कर आ गये है। ऐसे भक्त लोग एकत्रित होकर बैठे दिखाई देते है। सांसारिक आशा छोड़ करके गुरुदेव से ही सम्बन्ध स्थापित कीजिये। काम क्रोध आदि विकारों को त्याग करके सार रूप सद्पंथ पर चलें। यह कलयुग में धर्म की संभाल हुई है। चारों ओर धन्य धन्य कार हो रहा है। उस समय को भी धन्य है जिसमें गुरु देव प्रगट हुए।2।

गुरु ने कैवल्य ज्ञान का ही कथन किया है उस ज्ञान के प्रकाश में हम सुकृत करके अपने सच्चे घर को वापिस पहुंच जायेंगे। सतगुरु हमें पांच सात एवं बारह करोड़ से मिलान करा देंगे। चार युगों में तेतीस करोड़ पार पहुंच गये है हमें भी वहीं पर जाना है। वहां पर सुर लोक में देवताओं से मिलान होगा। यह वार्ता सच्चे श्याम सतगुरु की है इसलिये विश्वास करने योग्य है। हे जनों! आप लोग विष्णु का जप एक मन होकर करें। नित्य प्रति हवन विष्णु का जप गुरु देव की बताई हुई समाधी का ज्ञान प्राप्त करें। समाधी तक पहुंचने का प्रयास करें। ब्रह्म ने जो क्रिया बतायी है वह कैवल्य ज्ञान है जो समाधी में पहुंचा देता है। उसी ज्ञान के प्रकाश में सुक्रत करते हुए अपने सच्चे घर को अवश्य ही पहुंचे।3। गुरु देव जाम्भेश्वरजी जैसे अन्य गुरु संसार में मिलना असंभव है जो संसार सागर से पार उतार दे। भेष धारण करने वाले तो अनेक होंगे परन्तु दयालु सतगुरु इनके जैसे असंभव है। स्वयं दयालु होते हुए अन्य लोगों को भी दया का भाव सिखाते है तथा सहज ही में शील व्रतधारी तथा संतोषी होते हुए अन्य लोगों को भी सिखाते है। आसा केवल एक गुरु की ही कीजिये। जब वे संतुष्ट हो जायेंगे तो मुक्ति प्रदान करेंगे। बार-बार विष्णु का नाम स्मरण कीर्तन करें, वही तारने वाले देव है। हमारे गुरुदेव शिरोमणि है।4। स्वयं विष्णु भगवान प्रगट हुए है, अपने वचनों द्वारा विष्णु का ही भजन करना बतला रहे है। गुरु ने बारह करोड़ प्राणियों को उद्धार का वचन दिया था वह अवश्य ही पूर्ण करेंगे। शब्द से ही श्याम मुरारी की पहचान हो रही है। शब्दों में ही बताया है कि मैं आप लोगों को देवताओं से मिलान करवाने के लिये आया हूं। सुरजन जी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! सदा ही हमारी लज्जा रखो। साधु पुरूषों की संगति हरि की भक्ति तथा सुमार्ग पर चलना यही जीवन का तथा धर्म का सार है। यह बताने के लिये सतगुरु का

आगमन हुआ है इन्हीं सभी कारणों से सतगुरु अवश्य ही हमें पार उतार देंगे। क्योंकि स्वयं कृष्ण मुरारी ही प्रगट हुए है।5।

साखी राग धनाश्री-99

पंनरासै अवतार लियो, गुरु आठम सोम अठोतरै।
छापर नीबी दूण पुरै, गुरु आसा तिसनां न करै।
ना करै आसा नींद तिसनां, जगत पति जीवां धणी।
मोह माया नहीं छाया, निरभय वाणी निरंजणी।
सधर गुरु सूं सुरग लाभै, कहयो गुरु को जै करै।
पंनरासै अवतार लियो, गुरु आठम सोम अठोतरै।1।
काल बंयालो कहत सही, गुरु अन्न दे जीव उबारिया।
कातिक बदि अरू कलश थाप्यो, जुग-जुग सतगुरु तारियां।
जुग-जुग सतगुरु तरण तारण, धरम धर्‌यो कलयुगे।
सुरताण राण बखाण सुरनर, परच गुरु के पायें लगे।
अंधियार घर मां सूर उगो, तिन तिथि तिमर घट्‌यो।
कातिक बदि हरि कलश थाप्यो, पंथ बंयाले प्रगट्‌यो।2।
जप तप क्रिया जुगत मिलिया, म्हानें पुरे गुरु परचाविया।
छमां दया सत शील सही, कुपह तज सुपह आणियां।
कुपह तज हरि सुपह आण्या, ज्ञान केवल पावियो।
पहलाद जी के वचन कारण, किसन कलजुग आवियो।
सैतान भूत प्रेत परि हरो, भरम भागो भावियो।
जप तप क्रिया जुगत मिलिया, म्हानें पुरे गुरु परचावियो।3।
महर गुरु की मुक्ति हुवै, अजर जरे जीवत मरे।
काठ संगीणी लोहा तिरै, साध संगत सेवक तिरै।
साध संगति भगती हरि की, परम तत दुतर तिरै।
सबल सिंघ के अजा सरणै, गुरु शरणां गति उधरै।
आधीन होय कर दीन बोले, कहयो गुरु को कीजिये।
सुरजन जन की विनती, मोहि मुक्ति को मार्ग दीजिये।4।

भावार्थ-गुरु देव ने वि. सं. 1508 भादव वदि अष्टमी वार सोमवार के दिन अवतार लिया था। छापर नीबी दूणपुर के जंगलों में हरि ने लोहटजी को दर्शन दिया था। लोहट जी की आशा पूर्ण करने के लिये हरि ने संत के

रूप में अवतार धारण करने का वचन दिया था। जगत पति जीवों के स्वामी का दर्शन हो जानें से सम्पूर्ण आसाऐं निवृत हो जाती है। जिनकी निर्भय प्रदान करने वाली वाणी श्रवण करने से मोह माया की छाया लेश मात्र भी नहीं रहती। धैर्यवान गुरु की शरण ग्रहण करने से स्वर्ग सुखों की प्राप्ति हो जाती है। ऐसे परम गुरु ने पन्द्रह सौ आठ में अवतार धारण किया।1।

संवत् 1542 में मरूभूमि में भीषण अकाल पड़ा था। उस भयंकर परिस्थिति में गुरु ने अन्न देकर जीवों को बचाया था। कार्तिक वदि अष्टमी के दिन कलश स्थापना की थी। उसी दिन पाहल पिलाकर युगों-युगों तक जीवों के उद्धार का मार्ग खोल दिया था। युगों-युगों तक गुरु के बताये हुए मार्ग पर चलेंगे तो कलयुग में धर्म की स्थापना हो सकेगी। देव दानव मानव योगी फकीर किसान आदि सभी गुरु के द्वारा धर्म धारण करके चरणों में शीश झुकाया। इस प्रकार से अंधियार घर में सूर्य उदय हो गया। उन पंथ स्थापना की तिथियों में अंधकार की निवृति हुई। कार्तिक वदि अष्टमी को कलश स्थापन किया और 1542 में बिश्नोई पंथ प्रगट हुआ।2।

जप तप क्रिया तथा युक्ति की प्राप्ति हुई। हमारे पूर्ण गुरु ने हमें ज्ञान दिया। क्षमा दया सत्य शील धारण करके कुमार्ग को त्याग दिया तथा सुमार्ग के अनुयायी बने। कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति से ही यह सुमार्ग संभव हो सका है। प्रहलाद जी के वचनों को पूरा करने के लिये स्वयं कृष्ण ही कलयुग में आये। शैतान भूत प्रेत आदि की पूजा त्याग करके भ्रम की निवृति की। गुरुदेव के आने से उक्त बिमारियां स्वतः ही मिट गई। जप तप क्रिया युक्ति की प्राप्ति हुई। हमारे पूरे गुरु ने हमें परचा दिया है।3।

यदि गुरु की अपार कृपा हो जावे तो मुक्ति की प्राप्ति संभव है। अजर काम क्रोधादि को जला दें तथा अहंकार की निवृति करें। काष्ठ के संग लोहा भी जल से पार उतर जाता है उसी प्रकार से साधु की संगति से जीव भी संसार सागर से पार उतर जायेगा। साधु की संगति तथा हरि की भक्ति ये दोनों ही तत्व को प्राप्त करवाने वाली तथा संसार सागर से पार उतारने वाली है। सबल सिंह के बकरी भी जब शरण में आ जाती है तो सिंह उसकी रक्षा करता है न कि अपना भोजन बनाता तो फिर मानव यदि ईश्वर की शरण ग्रहण करे तो आश्चर्य ही क्या है। परमात्मा के अधीन होकर दीन भाव से प्रार्थना करें तथा गुरु के कथनानुसार जीवन यापन करें। सुरजनजी विनती करते हुए

कहते है कि हे प्रभु! आप मुझे युक्ति मुक्ति का मार्ग दे अन्य मुझे कुछ भी नहीं चाहिये।4।

साखी छन्दां की-100

सतगुरु वाचा क्यूं सरै, क्यूं धरा हुई उमेद।
सुकरत की पति कारणै, पाठ चल्यो रूगवेद।
एक पाठ चल्यो रूगवेद, आण पूजा पर हरि।
तिहूं लोक मां अलोप मूरती, अलख न लख्यो जग हरि।
सिव बाच साची राखै, सतगुरु नरसिंघ दाणूं हरे।
कोड़ी पांच सूं प्रहलाद सीधो, सतयुग वाचा यूं सरै।1।
जुग तेता मोमणो क्रोड़ी क्यूं तरै, वेद यजुरवण करो।
साध सेवक के कारणै, आप लियो अवतारो।
एक आप हरि अवतार लियो, सार कारण मोमणा।
परमोध उतर खण्ड ल्यायो, दैत संग यह अति घणां।
परसराम सहसाबाहूं मार्‍यो, टेक राखी सत युगे।
रोहितास हरिचन्द धन्य तारा, कोड़ी सात तरी तेतायुगे।2।
जुग दवापुर कोड़ी क्यूं तिरै, सुलै सोखे सरीर।
साध सेवक के कारणै, कसणी सह शरीर।
एक हरिजन सह कसणी, घर जुग जुग सारिखो।
तिण बार सतगुरु आय पहुंतो, खरा खोटा पारिखो।
बुध काफिर संघारे, धरम जुग जुग संचरै।
पांच पांडु धिन कूंता, नव क्रोड़ी जुग द्वापर तिरै।3।
कलियुग बारां कारणै, आयो गुरु आप अलेख।
सुरजन सोई सिंवरिये, जिण धार्‍यो भगवों भेख।
एक धार भगवें भेख आयो, सुगुरु वाणी सांभले।
सबदां सूं परीत सांची, जोति प्रगट निज थले।
अकलि अलेख आदि मूरति, वाचा जुग जुग सांचरै।
अनंत करोड़ी अलेख तारण, कलियुग आयो बारां कारणै।4।

भावार्थ-सत्ययुग में वचन पूर्ण कैसे हुआ। धरती का भार हल्का होगा यह आशा कैसे हुई? सुकृत करने हेतु ऋगवेद का पाठ प्रारम्भ हुआ। उस समय केवल ऋगवेद का ही पाठ होता था। उससे ही ईश्वर पूजा का विध

ाान हुआ। अनेक देवी-देवताओं की पूजा प्रचलित नहीं थी। तीनों लोकों में भगवान अलख निरंजन प्रगट थे। भगवान अपनी बनायी हुई मर्यादा को तोड़ने नहीं देते किन्तु रक्षा करते है। मर्यादा तोड़ने वाले हिरण्यकशिपू को भगवान ने नृसिंह रूप धारण करके मार दिया था। पांच करोड़ प्रहलाद के साथ पार उतर गये इस प्रकार से अपने वचनों को पूर्ण करते है।1।

त्रेता युग में सात करोड़ भक्त पार कैसे उतर गये? उस समय यजुर्वेद का पाठ होता था। अपने साधु सेवकों के लिये भगवान ने अवतार धारण किया था। आप हरि ने अवतार लेकर सार वस्तु का संग्रह किया। उतराखण्ड में दैत्य बहुत ही ज्यादा बढ़ चुके थे इसलिये यहां पर आना हुआ। परशुराम अवतार धारण करके सहस्रबाहु को मारा था। संतों की लज्जा रखी थी। धन्यवाद के पात्र है राजा हरिश्चन्द्र रानी तारामती पुत्र रोहिताश्व जिन्होनें अपने साथ सात करोड़ का उद्धार किया।2।

द्वापर युग में नौ करोड़ पार कैसे उतर गये जिस युग में शूल से शरीरों को सुखाया जाता था। साधु सेवकों के लिये भगवान स्वयं ही आ जाते है, भक्तों के कष्ट को वे अपना स्वयं का ही कष्ट मानते है एक हरि ही अपने जन के साथ सम्पर्क स्थापित करते है। युगों-युगों में शरीर धारण करते है। जैसा युग होता है वैसा ही कार्य करते है। द्वापर युग में सतगुरु ने आकर सच्चे तथा झूठों की परीक्षा करते है। बुद्ध रूप धारण करके राक्षसों व नास्तिकों को हराया तथा बौद्ध धर्म की स्थापना की थी।इस प्रकार से युग-युग में धर्म की स्थापना करते है। पांच पाण्डव माता कुन्ती धन्यवाद के पात्र है जिन्होनें नौ करोड़ जीवों का उद्धार किया है।3।

कलयुग में बारह करोड़ प्राणियों का उद्धार करने के लिये हरि ही स्वयं गुरु रूप धारण करके आये है। जिन्होनें भगवां वस्त्र धारण किया था उस गुरु का स्मरण कीजिये। ऐसा सुरजन जी का कथन है भगवां वस्त्र धारी गुरु देव की वाणी को समझो। इस बार शब्दों से ही अधिक लगाव है ऐसे ज्योति स्वरूप सम्भराथल पर प्रगट हुए है काल से परे अलख अनादि मूरत गुरुदेव की वाणी युगों-युगों तक जीवित रहकर प्रकाश करती रहेगी। अनन्त करोड़ों का उद्धार करने वाले अलख निरंजन कलयुग में आये है और बारह करोड़ का उद्धार करेंगे।4।

साखी छन्दां की राग सोरठ-101

ओदर वास लियो मेरा जीयो, तां दिन बार करारी।
परगट हंस बसै मेरा जीयो, हरि सूं कवल बिसारी।
कवल बिसार न जाय रे जीव, अब ओ तन छीजसी।
नेकी बदी दोय साथ चालै, अंत लेखो लीजसी।
तिरे भक्त अभेद डूबे, पाप पुन्य दोय पायसी।
सांच सुकरत तिरै दुस्तर, कपट जुलम करायसी।1।
जां दिन भीड़ पड़ै मेरा जीयो, तां दिन विसन सहाई।
माया मोह तजो मेरा जीयो, भरम सभी जुग भाई।
भरम सभी जुग जांण रे जीव, करम जुलम करायसी।
पल पल घटे सो आयु खूटे, अंत सो दिन आयसी।
साध संगति हरि की भक्ति बिना, संसार सागर है फंदा।
जगदीश सहाई होय भाई, भीड़ पड़सी जां दिनां।2।
वास उजड़ चल्यो मेरा जीयो, आय बुग बहेला।
ओ घट पलटी चल्यो मेरा जीयो, हरि सूं जाब दुहेला।
जाब दुहेला जीव अकेला, दूत दसों दिस देखिये।
गांठि ग्रन्थ न हाथ रे जीव, परिवार साथ न पेखिये।
सुकरत पाखो मीत माया, चेत ओ अब तन बीसरे।
उड़िया विहंगम बुग बैठा, चेत जीव इण अवसरे।3।
सागर खार मिटे मेरा जीयो, सुकरत करि संसारी।
ओ तन खाख मिले मेरा जीयो, पर उपकार चितारी।
उपकार सार चितार रे जीव, कहयो गुरु को कीजिये।
अजर जरिये जीवत मरिये, नांव निहचल लीजिये।
सुरगे तो सुख अनुप इधिका, विसन दर्शन भेंटिये।
सुरजन जन की वीणती, संसार सागर मेटिये।4।

भावार्थ-इस मेरे जीव ने गर्भवास के दिन व्यतीत किये है। उन दिनों में गर्भ से बाहर आने के लिये भगवान से बार-बार प्रार्थना करते हुए प्रण कर रहा था। जब गर्भ से बाहर आ गया तो सांसारिक कार्य धन्धे में लगकर अन्दर की वार्ता को भूल गया। हरि से किये हुए वचन तोड़ दिये। रे जीव! इस समय तो यह शरीर क्षण पल करते हुए नष्ट होता जा रहा है। शुभ कार्य तथा

ईमानदारी ये दोनों ही साथ जायेंगे। शरीर के अन्त यानि मृत्यु के पश्चात् तेरे से हिसाब मांगा जायेगा। जो भगवान के प्रिय भक्त होंगे वे तो संसार सागर से पार उतर जायेंगे तथा भ्रान्त अविश्वासी जन डूब जायेंगे। पाप पुण्य के अनुसार ही सुख दुख प्राप्त करेंगे। सत्यवादी शुभ करने वाले तो दुस्तर संसार सागर से पार उतर जायेंगे किन्तु कपटी लोग अनेकानेक जुल्म कमाऐंगे।1।

जिस दिन भारी विपत्ति आयेगी उस दिन तो एक विष्णु ही सहायक होंगे। हे मेरे भाई! माया मोह को त्याग करके उससे होने वाले भ्रम का भी त्याग करें। यह सम्पूर्ण जगत माया मोह से ग्रसित हो चुका है। अनेकों कुकर्म करते हुए जुल्म करते है। ज्यों-ज्यों एक-एक पल घटती है त्यूं-त्यूं आयु भी घटती जाती है। अन्त में वह मृत्यु का दिन भी आ जायेगा। साधु की संगति तथा हरि की भक्ति के अतिरिक्त संसार सागर तो फांसी का फंदा ही है। जो सभी के गले में डाला जा चुका है। जिस दिन विपत्ति आयेगी उस दिन जगदीश ही सहायक होंगे।2।

संसार से वैराग्य लेकर उजड़ मार्ग में चल पड़ा है। कहीं भी नहीं पहुंच पायेगा बीच में ही वृद्धावस्था आकर अपना डेरा जमा लेगी। इस शरीर को पलट करके यह जीव जब रवाना हो जायेगा तो आगे हरि तेरे से जबाब मांगेगे तब तुम्हें जबाब देना ही होगा। वहां पर जबाब देने के लिये तेरे साथ ओर कोई नहीं होंगे। दसों दिशाओं में भयंकर यम के दूत ही दिखाई देंगे। तुझे कौन सहायता देगा? साथ न तो धन, रूपया, परिवार, साथी मित्र ले जायेगा तो आगे तुझे कौन छुड़ायेगा। सुक्रत के बिना तेरा साथी अन्य मित्र माया आदि कोई नहीं है इसलिये इस शरीर के रहते हुए ही सचेत हो जावें। हंस था वह तो उड़कर चला गया पीछे अब बगुले बैठे है अर्थात् युवावस्था तो चली गई अब तो बुढ़ापा ने आकर घेर लिया है। हे जीव! इस अवसर पर अब सचेत हो जा।3।

खारे समुद्र की भांति संसार में भी दुख भरा हुआ है। इसकी निवृति सुकर्म करने से ही हो सकेगी। यह तेरा शरीर तो खाख में मिल जायेगा इसके रहते हुए ही शुभ कार्य करें। अजर काम क्रोधादि को मारे तथा स्वयं अहंकार से रहित होकर जीवन जीनें की कला सीखें। एकाग्र मन से परमात्मा का नाम स्मरण करें। स्वर्ग के अत्यधिक अनुपम सुख की प्राप्ति होगी। वहां स्वयं परमात्मा विष्णु का दर्शन हो सकेगा। सुरजनजी विनती करते हुए कहते है कि

हे देव! इस संसार सागर से होने वाली विघ्न बाधाऐं आप हमारी मिटा दीजिये।4।

साखी छन्दां की राग मारू-102

विसन-विसन बखाण, बलि बलि सारंग प्राणी।
कलिमा केवल ज्ञान, कहे अकथ कहांणी।
अकथ कहांणी सुर बाणी, साच श्रवणें सांभलो।
सत शील संतोष संग्रह, पाप सूं पासे टलो।
पहलाद सूं प्रतीत साची, सुगुरु मारग जाणियो।
भ्रम परहर जीव निभ्रम, विसन नांव बखाणियो।1।
कलि मां ब्रह्म ज्ञान, सुण सहज स्नानी।
महा जड़ जीव अज्ञानी, किया छै ब्रह्म ज्ञानी।
ब्रह्मज्ञानी किया करता, करत कलयुग आणिया।
अटल गुरु का बोल जुग जुग, जास अमृत बाणियां।
सबद गुरु जास मुक्ति मार्ग, सांभलो गुरु भाइयो।
अवतार जम्भ नरेश को, कलि मंझ प्रगट आइयो।2।
परगट खेल पसार, सर बैठो सांई।
तेतीसां प्रति पाल, क्रोड़ बारां के तांई।
क्रोड़ बारां काज आयो, राज निर्मल निज थले।
अहंकार वाद विरोध परहर, ज्ञान सांवल सांभले।
भाग परापति भाग आयो, पूर्व कोल चितारियो।
क्रोड़ बारां काज सतगुरु, प्रगट खेल पसारियो।3।
कहर क्रोध चुकाय, गुरु निंद न होई।
नर परगट निरहार, सुरां गुरु सोई।
सुरां गुरु संसार आयो, पार पहुंचो भाइयों।
विदकार में उपकार दाता, रतन भवन बताइयो।
जुग चौथे क्रोड़ बारां, अनन्त क्रोड़ी उधारियो।
साध संगति भक्ति हरि की, कहर क्रोध निवारियो।4।
दिया गुरु मोख दवार, संभलो गुरु भाई।
जप तप भाव भक्ति, गुरु जुगति बताई।
जुगति बताई मुक्ति दाता, मेल वैकुण्ठा मोमणां।

अवतार सूं परतीत सांची, रूप जप हरि का अति घणां।
गरीब रूपी गुण निर्गुण, कहयो गुरु को कीजिये।
सुरजन जन की वीनती, मुक्ति मारग दीजिये।5।

भावार्थ–सारंग धनुष धारी भगवान विष्णु का ही बार–बार बखान कथन स्मरण करें। कलयुग में कैवल्य ज्ञान कथन करने वाले भगवान विष्णु की ही वार्ता कहें और सुनें। ईश्वरीय कथा सत्य तथा देव वाणी है इसलिये सुनकर संभल जायें। सत्य शील संतोष का संग्रह करें तथा पाप कर्मो से बच कर चलें। प्रहलाद भक्त के प्रति सच्चा प्रेम होने से सतगुरु ने आकर मार्ग बताया। भ्रम को छोड़कर जीव निर्भ्रम हो जायें। तथा विष्णु का नाम बखान कीर्तन करें।1।

कलयुग में ब्रह्मज्ञान का श्रवण करनें से ही महाजड़ जीव अज्ञानी भी ज्ञानी होकर सहज में ही ज्ञानामृत में डुबकी लगाने लगे है इस युग में ही सतयुग का आगमन हो चुका है सदा सत्य सनातन गुरु की वाणी युगों–युगों तक जीवित रहने वाली है ऐसी गुरुदेव की अमृतमय मधुर वाणी है। गुरु का शब्द मुक्ति का मार्ग है गुरु भाईयों संभल जाओ। कलयुग के मंझ में भगवान विष्णु ही जाम्भेश्वर के रूप में आकर प्रगट हुए है।2।

प्रत्यक्ष रूप से धर्म का पसारा करते हुए मानों खेल ही खेल रहे है। सांई आकर स्वयं विराजमान हुए है बारह करोड़ को उन तेतीसों से मिलाने के लिये यहां पर आये है। निर्मल निज थल सम्भराथल पर आकर बारह करोड़ का उद्धार किया है। अहंकार वाद विरोध को छुड़ाकर के कैवल्य ज्ञान की तरफ लोगों को लगाते है तथा उन्हें सचेत करते है। हमारा पूर्व जन्म का भाग्य ही प्रबल था जिस कारण से यहां पर आगमन हुआ है पूर्व में प्रहलाद से किये हुए वचनों को निभाने के लिये ही आना हुआ है बारह करोड़ का उद्धार करने के लिये ही प्रगट खेल का पसारा किया है।3।

कलह क्रोध मिटा देवें तथा गुरु की निंदा से दूर रहें। निरहारी नर रूप में प्रगट हुए है वे तो देवताओं के भी गुरु भाई हैं। हे भाई! ऐसे देवताओं के गुरु इस संसार में आये है पार पहुंचने की तैयारी करो। विद्या के दाता एवं महान परोपकारी है। जिन्होनें अप्रगट आनन्द को प्रगट करके बताया है। अनुभव कराया है इस चौथे युग में बारह करोड़ का उद्धार किया है साधु की संगति और हरि की भक्ति ही काम क्रोध आदि को मिटा कर पार उतारने में

सहायक होगी।4।

हे गुरु भाई! संभल जाओ! गुरु ने मोक्ष का मार्ग बता दिया है। गुरु ने हमें जप तप भाव भक्ति की युक्ति बताई है। ऐसे मुक्ति के दाता गुरु देव ने हमें युक्ति बताई है। जिससे वैकुण्ठ में पहुंचे हुए भक्तों से मिलन हो जायेगा। भगवान के अवतारों से सच्चा प्रेम करें। हरि के अनन्त रूप एवं अवतार है। स्वयं गुरुदेव गरीब रूप में है। ''म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियो'' निर्गुण निराकार होते हुए भी साकार रूप में साक्षात्कार हो रहे है। जैसा गुरु ने कहा वैसा ही कीजिये। सुरजनजी विनती करते हुए कहते है कि हमें मुक्ति का मार्ग प्रदान करें।5।

साखी छन्दां की-103

देश पिछम कै गरज करै, घण ओल्हर आयो।
मन मोमणां के आनन्द भयो, कथि ज्ञान सुणायो।
कथ्यो ज्ञान सुणावै सतगुरु, सुगण सोबति बूठियो।
चेत दिल मां भयो भगता, गुरु गांवां तूठियो।
अवगत अमृत ज्ञान बूठो, लिख्यो साधां पाइयो।
सब मोमण देश पिछम, घण गरज ओल्हर आइयो।1।
अमीयन के बूंद झरै, दिल भीनां तेरा साधां।
हिरदै जांकै ज्ञान बस्यो, जांका कंवल था सीधा।
कंवल घट जां हुवा सीधा, हक साच पिछाणियो।
नांव हरि को भयो ऐसो, नांव केशो जाणियो।
हरि हरि जपो साधो, अवसर न दूजो केहनां।
चेत दिल मां भयो भगता, साध भीनां तेहनां।2।
बहरा आगै ज्ञान कथो, गुरु अबूझ बूझाया।
अमलां को गुरु माण मल्या, गुरु अनु नवाया।
अनु नवाया गुरु दाता, धरणी धर धीयाइयो।
दीन कायम रहै वसेखी, रतन भवन बताइयो।
जासै करता भयो शंभू, वाचा पालण आवियो।
वाचा पाल यति वर्ता, अजाण अबूझ बुझाइयो।3।
जम्भराज तूठो भाव करै, क्रोड़ी बारां के तांई।
जुग चोथे फेर करे, हरि घर पहुंचाई।

पहुंचाय घर हरि होय बेली, सुचियारा तो लहयो।
नरसिंघ रूप बण भाख्यो, पहलाद सेती ते कहयो।
कांही कृत जुग कांही त्रेता, कांही द्वापर तूठियो।
जुग चौथे क्रोड़ बारां, जंभ जुग जुग बूठियो।4।

भावार्थ–पश्चिम देश मरूभूमि में ज्ञान की गर्जना करते हुए गुरुदेव ने अमृत की घनी वर्षा की है। भक्तों के मन को प्रसन्न करने के लिये शब्दों का कथन करते हुए ज्ञान के शब्द सुनाये है। ज्ञान का कथन किया है। ऐसे सतगुरु सभी को अच्छे लगते है, शोभायमान हो रहे है अच्छे सज्जन लोग ज्ञान सुनकर संतुष्ट हुए है। भक्तों के दिल में प्रकाश हुआ है। इस बार सतगुरु ने प्रत्येक गांवों पर अपार कृपा की है। अपार अमूल्य ज्ञान की वर्षा हुई है किन्तु जिसके भाग्य में लिखा था उसी ने ही प्राप्त किया है पश्चिम देश के सभी भक्तों को ज्ञानामृत से पावन किया है, ऐसी दिव्य वर्षा हुई है। अमृत की बूंदें झर रही है। हे देव! तुम्हारे साधु जन प्राप्त करके दिल में खुशी प्राप्त कर रहे है। जिसका हृदय कमल सदृश था अर्थात् परमात्मा की तरफ लगा हुआ था उसी के हृदय में ज्ञान ठहर सका है। जिसने हक तथा सत्य की पहचान की है उसका ही हृदय ज्ञानाधिकारी हुआ है। हरि का नाम ऐसा दिव्य है जो सीधे हृदय कमल पर ही ठहरता है। हे साधों! हरि का जप करो ऐसा अवसर दुबारा कहां आयेगा। दिल में सचेत होकर भक्त बन चुके है ऐसे साधु दिव्य है।2।

जिन लोगों ने अब तक कभी ज्ञान नहीं सुना था ऐसे बहरों के आगे ज्ञान का कथन किया। अज्ञानियों को ज्ञानी बनाया। जो अमली यानि अहंकारी थे उनके अहंकार को मिटाया जो कभी किसी की भी बात न मानने वाले थे उन्हें झुकाया। ऐसे अनवी लोगों को झुकाने वाले धरणी धर का ध्यान करें। विशेष रूप से उनका बताया हुआ धर्म कायम रहेगा क्योंकि सच्चा मार्ग है। जिस पर चलने से रतन भवन वैकुण्ठ में पहुंच सकता है। जिस प्रकार से स्वयं स्वयंभू भी संसार में कार्यकर्ता बनकर आये है। क्योंकि अपने वचनों को निभाया भी है। स्वयं यतीश्वर अपनी वाचा का पालन करते है तथा दूसरों के लिये भी प्रेरणा प्रदान करते है। ऐसे देव ने अज्ञानियों को ज्ञानी बनाया है।3।

जाम्भेश्वर जी संतुष्ट हो चुके है इसलिये प्रेम भाव से यहां पर आये है। बारह करोड़ का उद्धार करना ही उनका उद्देश्य था। इस चौथे कलयुग में

बिछुड़े हुए जीवों को वापिस घर पहुंचा देंगे। जो अपने घर वापिस पहुंच जायेंगे वे सदा के लिये परमात्मा के अपने हो जायेंगे। जो पवित्र आत्मा होगा वही प्राप्त हो सकेगा। भगवान विष्णु ने ही नृसिंह रूप धारण करके वचन दिया था क्योंकि उनका प्रिय भक्त प्रहलाद सामनें था। कभी सतयुग कभी त्रेतायुग में तथा कभी द्वापर युग में इस प्रकार से संतुष्ट होकर बारह करोड़ का उद्धार करने के लिये स्वयं विष्णु का ही आगमन हुआ है।4।

साखी छन्दां की-104

झड़कर बूठो भाव करै, भगतां के तांई।
भाग परापति भेंट हुई, थल बैठो सांई।
सधर गुरु संसार आयो, जोत जागी निज थले।
शैतान भूत प्रेत पर हरि, ज्ञान सांवल संभले।
सबद बूंद स्वाति बूठो, जंभ बूठो झड़ करे।1।
जुग चोथे फेर करे, जुग जीव जगाया।
नव खंड गुरु की खबर हुई, सम्भराथल आया।
सम्भराथल प्रकाश कियो, विसन नाम चितारियो।
द्वीप जम्बू भरत खण्डे, प्रगट खेल पसारियो।
स्नान दान ध्यान केवल, भाग पायो भाइयों।
जुग चौथे मेर कीवी, धर जीव जगाइयो।2।
नव खंड सिंह की खबर हुई, शुद्ध खेती कीजै।
अवसर गुरु से भेंट हुई, जुग लाहो लीजै।
लाहो लीजै दया कीजै, और लोभ न लागिये।
दान दे स्तुति कीजै, नांव निहचल लीजिये।
निरहारी आप आयो, चारू धर्म चलाइयो।
नव खंड खेत किसान जिह का, साच खेत कमाइयो।3।
शरण जिह के पार लंघे, गुरु प्रगट आयो।
क्षमा दया शील सही, जोग जुगत दृढ़ायो।
जोग दृढ़ाया विसन आयो, भाग पायो भाइयो।
पहलाद सूं हरि कवल कीयो, वाचा पालण आइयो।
जोग जिन रो साच इल मां, ब्रह्म ज्ञान चितारियो।
सुरजन जन की विणती, शरणै पार उतारियो।4।

भावार्थ–भक्तों के प्रति प्रेम भाव की वर्षा हो रही है। सम्भराथल पर बैठे हुए सांई से साक्षात् भेंट हो रही है। हमारा यह सौभाग्य ही कहा जायेगा। धर्म तथा धैर्य को लेकर सतगुरु संसार में आये है। निज थल पर ज्योति प्रज्वलित हो रही है। शैतान भूत प्रेतों को हटाकर कैवल्य ज्ञान ही सुनकर धारण कर रहे है। स्वाति नक्षत्र की बूंद की तरह शब्दों की वर्षा कर रहे है। जिन से तीन गुण प्रगट हो रहे है, कदली, शीप, भुजंग में स्वाति नक्षत्र की बूंद गिरने से केले में कपूर बन जाती है। शीप में मोती बन जाता है और सर्प में मणी बन जाता है। जल एक ही है परन्तु गुण तीन होते है। उसी प्रकार से शब्द भी अधिकारी अनुसार ही परिवर्तन कर देता है। आज तो अमृत की धारा बह रही है। स्वयं जाम्भोजी प्रसन्न होकर वर्षा कर रहे है।1।

चौथे युग में लौटकर फिर विष्णु ही आये है तथा सोये हुए जीवों को जगाया है। नव खंडों में गुरु की खबर पहुंच चुकी है। सभी को मालूम हो चुका है कि सम्भराथल पर विष्णु का आगमन हो चुका है। सम्भराथल पर विराजमान होकर विष्णु का जप बताया है। भरत खंड जम्बू द्वीप में प्रत्यक्ष रूप से खेल का पसारा किया है। लोगों को स्नान ध्यान दान आदि उतम क्रियाऐं बतला रहे है। इस प्रकार से चौथे युग में जीवों को जागृत किया है।2।

जिनके सिद्धान्तों की नव खंड में खबर पहुंच चुकी है। सभी को यही आदेश दिया है कि खेती व्यापार भक्ति आदि शुद्धता से कीजिये। इस अवसर पर गुरु से भेंट हुई है। जिसे लाभ लेना है वह अवश्य ही लीजिये। दया का भाव रखिये किन्तु लोभ न कीजिये। यथा शक्ति दान देवें तथा परमात्मा का नाम लीजिये। स्वयं निराहारी निरंजन विष्णु आये है और सुन्दर पन्थ की स्थापना की है। नव खंड पृथ्वी ही जिनका खेत है और उसमें बसने वाले सभी उनके किसान है इसलिये हे किसानों! सच्ची खेती करो।3।

जिस गुरु की शरण ग्रहण करने से संसार सागर से पार उतर सकते है। ऐसे ही गुरु प्रगट हुए है। गुरु हमें क्षमा, दया, सत्य, शील योग की युक्तियां बतला रहे है। योग मार्ग में दृढ़ करते हुए हमें योगी बना देंगे। ऐसे दिव्य विष्णु आये है किन्तु जिनका भाग्य अच्छा होगा वही प्राप्त कर सकेगा। प्रहलादजी से कवल किया हुआ था, वह अपना वचन पूरा करने के लिये ही आये है। जिनका योग सिद्धान्त संसार में सत्य मार्ग है। जिस योग के द्वारा ही ब्रह्म की प्राप्ति तथा स्मरण संभव है। सुरजनजी विनती करते हुए कहते है कि

हम आपकी शरण में है। हे देव! हमें तो अवश्य ही संसार सागर से पार उतार दीजिये।4।

साखी कणां की-105

अंतर जामी आतमा, गरभ वास पुजाये।1।
जां दिन जग प्रगटे, लिछमी केतक लाये।2।
जामण मरण अगोचर, क्यूं कर्म लिखाये।3।
भाव लिख्या उसवास मां, पूरण दत पाये।4।
बरख दवादस बाल मतो, पित मात खिलाये।5।
जीव ऊंच नीच कुल अवतरयो, बोह जूणी अघाये।6।
भूय बोहला भूप घणां, सिरि छत्र धराये।7।
जात बड़ी कुल पेखियां, बोह जीवन भाये।8।
दिन कटत न देखियां, नर वेस बणाये।9।
बाहर खड़ी अडीकतड़ा, जंम ताल बजाये।10।
मात पिता पख दोय चले, एक दिन पराये।11।
कोठी हंदे नाज ज्यूं, घट छेह दिखाये।12।
एक रहीम पुकारियां, एक राम सुणाये।13।
अंतरजामी एक सही, क्यूं दोय लखाये।14।
हक ते नाथ हजूरी सदा, दोय पंथ कहाये।15।
विदिया भणी बाणारसी, तोऊं पार न पाये।16।
जंतर ताल स तंत मंत, सरल कंठि गाये।17।
राग छतीसूं अलापिया, सुर सात सुणाये।18।
गीत कवित विधान कहया, कवि पात कहाये।19।
एक विसन की भक्ति विना, सोह बकि गुमाये।20।
साध संगति हरि भगती विना, जमवारो जाये।21।
अबूझ ते अंधक अजाण, नर अवसर जाये।22।
ओ संसार विकार सब, सी कोट बणाये।23।
मूल गहया तत पाय लीया, क्या डाल फिराये।24।
सुरजन ते जन उबरै, जे हरि हरि गाये।25।

भावार्थ-आत्मा अन्तर्यामि होते हुए भी बार-बार गर्भवास में आती है, यह भी एक आश्चर्य ही है। जो सर्वत्र व्यापक सता होते हुए भी एक देश में

कैसे आ सकती है? जिस दिन गर्भ से बाहर आता है, उस दिन बड़े ही उत्सव मनाये जाते है। कितनी लक्ष्मी दौलत न्यौछावर की जाती है। आत्मा तो जन्म मरण से रहित है फिर भी कर्मों के बन्धन में बंध जाती है।3। श्वांस-श्वांस में कर्मो का फल लिखा हुआ होता है जिसे जीव सुख दुख के रूप में भोगता है। पूर्ण तो तभी हो सकेगा जब दाता को प्राप्त कर सकेगा।4। बारह वर्षो तक तो बाल्यावस्था में माता-पिता ही भोजन खिलाते है।5। यह जीव बहुत बार ऊंची नीची योनियों में जन्म ले चुका है। अब थका हुआ मुक्ति चाहता है।6। न जानें यह कितनी बार बादशाह बना होगा इसके सिर पर मुकुट भी रखा होगा।7। न जानें कितनी बार उच्च कुल में जन्म लिया होगा तथा योवन का सुख भी भोगा होगा।8। और न जाने कितनी बार नीच कुल में जन्म लिया होगा जिस दुख की घड़ी में समय कटना भी मुश्किल हो गया होगा। नर वेश में भी अपार दुख भोगा होगा।9। बाहर सदा ही यम के दूत खड़े हुए प्रतीक्षा भी कर रहे है, ताली बजाकर आगमन की सूचना भी दे रहे है किन्तु जीव अब भी अपने भोग विलास में मस्त है।10। अपने निजी सहायक माता-पिता, भाई-बन्धु भी उस दिन पराये हो जायेंगे।11। जिस प्रकार कोठी में भरा हुआ अन्न कोठी में छेद हो जाने से धीरे-धीरे बाहर निकल जाता है। उसी प्रकार यह तेरा जीवन भी दिनों-दिन व्यतीत हो रहा है एक दिन अवश्य ही खाली हो जायेगा।12। कोई तो राम-राम कहते है तो अन्य दूसरा रहीम नाम से पुकारता है वह अन्तर्यामी तो एक ही है। फिर दो नामों से क्यों पुकारा जाता है।14। जो सत्य के मार्ग पर चलता है उनके तो हजूर सदा ही उपस्थित है। दो पन्थ तो नाम मात्र के ही है।15। विद्वान ब्राह्मण काशी में जाकर विद्या पढ़ लेते है तो भी पार तो नहीं पा सकते।16। कुछ लोग यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, ध्वनि आदि द्वारा उपासना करते है तथा छतीस प्रकार की राग रागनियों द्वारा उसे रिझाने की कोशिश करते है। कुछ लोग गीत कविता छन्द आदि का कथन करते है। किन्तु एक हरि की भक्ति के बिना यह मानव जीवन व्यर्थ ही बरबाद कर रहे है।20। साधु की संगति तथा हरि की भक्ति के बिना यह जीवन जीना व्यर्थ ही है।21। कुछ लोग अहंकारी होते है जो दूसरों से ज्ञान ध्यान की बातें पूछते नहीं है। कुछ अन्धे लोग है जो सुनते हुए भी स्वीकार नहीं करते। कुछ अनजान बनकर बात की अवहेलना करते है वे लोग इस अमूल्य मानव जीवन से हाथ धो रहे है। यह संसार विकार रूप ही है इससे बचने के लिये सैकड़ों कोट

किला बनाते है। फिर भी प्राकृतिक विपदाओं से बच नहीं सकते।23। जिन्होनें मूल को खोजा है उसने तत्व को प्राप्त कर लिया तो फिर डाल पतों में भटकने से क्या लाभ अर्थात् सांसारिक सुखों में भटकने से कुछ भी मिलने वाला नहीं है।24। सुरजनजी कहते है कि वे ही जन संसार सागर से पार उतरेंगे जो हरि-हरि शब्द का उच्चारण प्रेम से करते है।25।

कवि सं.-36 माखनजी

माखनजी का जन्म 1650-1750 मध्य अनुमानित है। ये नगीना के रहने वाले साधु थे। इनके द्वारा रचित राग खंभावची में गेय यह एक सोहलो प्राप्त हुआ है जो प्रायः प्रभात समय में प्रेम से गाया जाता है।

सोहलो राग खंभावची-106

जिभिया जपले जंभ सवेरा, आज सम्भराथल आनन्द अपारा।टेर।
सुर तेतीसूं रहत सनमुख, आगे उधोजन करत उचारा।
देव घणां सब हिलमिल गावै, इन्द्र बधावा मंगलचारा।2।
जैसे दणियर उदय होत है, तिमर तूटत होत उजारा।
मुनिजन वेद पढ़त है ब्रह्मा, धिन-धिन लोहट भाग तुम्हारा।3।
खोड़स अरू षट् नरपति आये, बड़े-बड़े भूपति भूप भुजारा।
हरष भये सबदों की धुन सुण, परसत कर कर प्रीत पियारा।4।
अवगत नाथ अयोध्या के पति, तुम ही वृजपति नन्द कुमारा।
आज सम्भराथल आये हो स्वामी, नव खंड पृथिवी खेल पसारा।5।
झिग मिग जोति विराजै संभू, कंचन नगरी अनूप किवारा।
तीन लोक जांकी महिमा गावै, पावत माखण मोख दवारा।6।

भावार्थ-हे जिभ्या! प्रातः सांय संध्या बेला में जाम्भोजी द्वारा बताये हुए विष्णु का जप कर ले। आज सम्भराथल पर अपार आनन्द हो रहा है।1। तेतीस कोटि देवता सदा ही देवजी के सामने हाथ जोड़े हुए खड़े रहते है ऐसे गुरुदेव से ऊदोजी अनेक प्रश्न पूछ रहे है। गुरुदेव सभी को यथा योग्य उतर दे रहे है। सभी देवता हिलमिल कर स्तुति कर रहे है तथा देवराज इन्द्र भी बधाइयां बांटते हुए मंगलाचार कर रहे है क्योंकि देवता को विपुल आहुति यज्ञ द्वारा मिलने लग गयी है इसलिये धन्यवाद कर रहे है।2। जिस प्रकार से सूर्योदय होनें से अन्धकार भाग जाता है उसी प्रकार से श्री देव के ज्ञान से अज्ञान भाग गया है सर्वत्र प्रकाश फैल चुका है। ब्रह्मा सहित मुनिगण वेद

मन्त्रों की ध्वनि कर रहे है। लोहट जी को बार-बार धन्यवाद दे रहे है उनके भाग्य की सराहना कर रहे है।3। सोलह तथा छः कुलमिलाकर बाइस राजा लोग दर्शनार्थ आये है जो बड़े से बड़े भूपति सम्राट है। शब्दों की ध्वनि सुन करके हर्षित हो रहे है। प्रेम भाव से एक दूसरे के गले लग रहे है। आपसी शत्रुता भूल चुके है, अत्यधिक प्रेम भाव उमड़ रहा है।4। हे देव! आप ही अयोध्या के पति राम हो या वृजपति नन्दकुमार श्री कृष्ण ही हो। आज पुनः यहां सम्भराथल पर आये हो। यहां पर नव खण्डों वाली सम्पूर्ण पृथ्वी पर खेल पसारा किया है।5। आप विराजमान होते है तो मानों ज्योति की तरह झिगमिग करते हुए प्रकाशमान होते हो। आपकी यह सम्भरा नगरी बड़ी ही विचित्र एवं रम्य है। स्वर्णमयी नगरी यह आपकी है। जिसके अनुपम हीरे-मोती जड़े हुए किवाड़ है उसमें प्रवेश तो कोई भाग्यशाली ही कर पाता है। तीनों लोक आपकी महिमा का बखान कर रहे है। माखनजी कहते है कि जो भी आपकी महिमा का बखान करेगा वह मोक्ष को प्राप्त अवश्य ही होगा।6।

कवि सं.-37 रामूजी खोड़

रामूजी खोड़ का जन्म संवत् 1675-1700 के बीच अनुमानित है। ये धवा के रहने वाले सद्गृहस्थ बिश्नोई थे। संवत् 1700 में कापड़ हेड़ा में अनुचित कर छुड़वाते हुए स्वेच्छा से युद्ध करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। रामोजी दूल्हे बने जा रहे थे, उसी समय दूल्हन की जगह मृत्यु को ही वरण किया था। इस घटना से पूर्व ही यह साखी बोली थी। इस साखी में जाम्भोजी के प्रति अगाध प्रेम भरा हुआ है। स्वर्ग प्राप्ति की अपार खुशी दिखाई देती है स्वर्ग सुख के सामने सांसारिक भोग तुच्छ हो जाते है। सभी साखियों में यह साखी अत्यन्त महत्वपूर्ण मान्य है। गायक जन बड़े ही प्रेम से यथा अवसरों पर गायन करते है। श्रोता तथा गायक दोनों को ही प्रेम में विभोर कर देने वाली यह रामोजी की साखी है। केशोजी ने तथा साहबरामजी ने रामोंजी की कथा विस्तार से लिखी है।

साखी राग भंवरो कणां की-107

जां थलियां देव जी भंवरो अवतरियो, जां थलिया छै गाढ़े नूर।
भक्तां रे मन चान्दणों, दिलमां उग्यो सूर।।1।।
अलीयल टाली भंवरो रम रह्यो, रह्यो दिसावर छाय।

बाग बिहूंणों भंवरो क्यों रहे, फूल रह्यो कुमलाय।।2।।
आवो आवो भंवरा घर चिणां, आयो सांवणीयांरो मास।
भीजण लागी पांखड़ी, छीजण लागो मास।।3।।
घण गरजै दावण खिंवै, चातक मने उदास।
सर छलिया सरिता बह, रटत पीयास पीयास।।4।।
तोड़ो तोड़ो भंवरा पींजरो, भांज करो चकचूर।
मोमण स्वर्गे नावड़या, तूं कांय रहीया मंजूर।।5।।
भंवरा एक सनेसड़ो, मोमणां नैं थे कहियो जाय।
पींजर नांही प्राणीयां, थाई दिस लहिया होय।।6।।
हीरा बिणजो साधो मोमणों, भले न चढ़िस्यां हाथ।
म्हे जपस्यां निस्तारसो, रमस्यां झूलरिये रे साथ।।7।।
स्वर्गे सौरभ अतिघणी, मोर रही वणराय।
चंपो मरवो केवड़ो, भंवर रह्या रंगलाय।।8।।
मेलो गुरू पहलाद सुं, मेलो हरिचन्द राय।
मेलो पांचे पाण्डवे, धन्य कुन्ता दे माय।।9।।
जां बूठो तां बाहीयो, जारां सुपह सुवाया खेत।
ते जन भंवरा नीपजां, जारां जम्भगुरू सुं हेत।।10।।
कर सुकरत स्वर्गे गया, ते जन पहुंता पार।
बीनतड़ी रामो कह, म्हारी आवागवण निवार।।11।।

भावार्थ–हे भंवरा! हे मधुप! हे जीवात्मा! जिस सम्भराथल पर देवजी विष्णुजी ने अवतार लिया है। उस थल देश से देवाधिदेव को अत्यधिक प्रेम था। भक्त जनों के मन में ज्ञान का प्रकाश हुआ है क्योंकि अति निकट दिल हृदय में ही सूर्योदय हो चुका है। मन बुद्धि अपना कार्य प्रकाश में ही करेंगे। इसलिये पुण्य का कार्य ही सम्पन्न होगा।1।

हे भंवरा! तूं हरि हरि डालियों में ही क्यों भटक रहा है तथा दसों दिशाओं में अपने को चक्र में डाल रहा है। यहां हरि डालियों में फूल कहां है? फूलों के रस की प्राप्ति यदि करनी है तो बागों में पहुंच जाओ वहां अनेक खिले हुए सुगन्धित फूल मिलेंगे। वहां पर फूल बिना ग्राहक के कुम्हला रहे है। यहां तूं हरि डालियों में ही भटक रहा है। हे जीव! तेरी भी वही दशा है तूं भी संसार के शुष्क विषयों में भटक रहा है किन्तु आगे स्वर्ग में अति सुख है।

उस सुख की प्राप्ति का प्रयत्न करें।2।

हे भंवरा! आओ आगे बढ़ें। पहले रहने के लिये घर बनायें क्योंकि आगे श्रावण का महीना आ रहा है। श्रावण में वर्षा होगी तो पंखें भीग जायेगी फिर उड़ न सकेगा उसी प्रकार से हे जीव! तुम्हारा भी बुढ़ापा आ रहा है इस अवस्था में आने से पूर्व ही यदि कुछ उपाय करना है तो कर ले क्योंकि तेरी आयु व्यतीत हो रही है। हाथ पांव आदि कार्य नहीं कर सकेगे इसलिये अपने आगामी घर जानें की तैयारी कर लें।3।

श्रावण के महीने में गर्जना होती है। बिजलियां चमकती है घने कजरारे बादल छा जाते है तथा मूसलाधार वर्षा होती है। तालाब जल से भर जाते है, नदियां बहने लगती है। चारों ओर जलाकार ही हो जाता है। फिर भी चातक पक्षी उदास ही रहता है। स्वाति नक्षत्र की बूंद पाने के लिये रटन लगाता है। परमात्मा उसकी भी आशा पूर्ण करते है उसी प्रकार हे जीव! तुम्हें भी चातक की भांति परमात्मा की प्राप्ति के लिये रटन लगानी चाहिये। जब एक पक्षी की आशा पूर्ण हो जाती है तो तुम्हारी क्यों नहीं हो सकती? सांसारिक विषय भोगों की तरफ से मुंह मोड़कर परमात्मा की तरफ वृति लगाना होगा।4।

हे भंवरा! मोह माया रूपी नकली पिंजरे को तोड़कर चकना चूर कर डालिये। कहीं नामोनिशान भी नहीं रहे। अन्य भक्त जन थे वे तो पार पहुंच चुके, तुम्ही क्यों बेबश हो रहे हो। तुम स्वयं ही बन्धन में पड़ रहे हो।5।

हे भंवरा! यह एक ज्ञान वर्धक संदेशा सभी भक्तों को जाकर कहना कि जिस मोह माया रूपी पिंजरे को तुम सत्य समझते हो वह वास्तव में सत्य नहीं है तोड़ा जा सकता है। क्योंकि तुम भी उस परमात्मा के अंश हो जैसी परमात्मा की ज्योति है वैसी तुम्हारी भी तो है। राख में ढ़की हुई अग्नि को प्रगट कर दीजिये।6।

हे साधो मोमणों! हीरों का व्यापार करो। यदि इस बार चूक गये तो दुबारा फिर यह अमूल्य मानव तन नहीं मिलेगा, हमें ऐसी ही जप साधना करनी चाहिये। जिससे इस जन्म में ही संसार सागर से पार उतर जायेंगे। उन्हीं पार पहुंचे हुए पवित्र आत्माओं के साथ ही रमण करें।7।

हे भंवरा! आगे स्वर्ग में अत्यधिक सुगन्ध वाले फूल खिले हुए है जिससे सम्पूर्ण वातावरण महक रहा है। सम्पूर्ण वन में कोपलें निकल चुकी है

उनसे आने वाली पराग मन को मोहित कर देती है। वहां पर चंपा मरवा केवड़ा आदि के फूल खिल रहे है। वहीं पर अनेकों जीव आनन्द मगन हो रहे है। हे जीव! तेरे को तो वहीं पर चलना चाहिये। यहां सूखे ठूंठों में क्या रखा हुआ है। 'जिहिं ठूंठड़िये पान न होता ते क्यूं चाहत फूलूं।8।'

हे जीव! वहां पर आगे तुम्हें गुरु प्रहलाद से मिलन होगा तथा हरिश्चन्द्र पांचों पाण्डवों तथा कुन्ती माता से भी मिलन होगा जो सभी धन्यवाद के पात्र है, उनसे मिलने के लिये तैयारी करें।9।

हे भंवरा! जहां पर भी वर्षा होती है वहीं पर जाकर खेती करें। यही गुरु देव का आदेश है। खेती भी उसी की ही सवायी फलीभूत होती है। अर्थात् जहां पर भी साधना निर्विघ्न पूर्ण हो वहीं पर ही जाकर साधना रूपी खेती करें। उसी को ही सिद्धि मिलती है। खेती भी उसी की ही निपजती है जो सच्चाई ईमानदारी से परमात्मा के अर्पण करता है ठीक उसी प्रकार से साधना भी उसी की ही फलीभूत होती है। जो परमात्मा गुरुदेव के समर्पित होकर श्रद्धा से करता है।10।

जिस व्यक्ति ने भी सुक्रत किया है वही स्वर्ग में पहुंचा है। जरा मरण से छूट गया है। रामोजी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! हमारा जन्म मरण से छुटकारा दिला दीजिये, यही हमारी इच्छा है।11।

कवि सं.-38 गोकुलजी

गोकुलजी का जन्म संवत् 1700-1790 मध्य जीवन काल था। ये संत जोलियावाली गांव के निवासी थे। कवि गोकुलजी अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। इन्होनें इन्दव छन्द अवतार स्तुति होम की स्तुति आदि अनेक छन्दों की रचना की थी। तथा इनके द्वारा दो साखियों की रचना हुई थी। प्रसिद्ध खेजड़ली खड़ाणे के प्रत्यक्ष दृष्टा कवि थे। इन्होनें साखी खेजड़ली में तीन सौ तिरेसठ लोगों के बलिदान की कथा कही है। यह इनकी बहुत ही प्रामाणिक तथा ऐतिहासिक रचना है। यहां पर इनकी दोनों साखियों का भावार्थ किया जा रहा है।

साखी छन्दां की राग धनाश्री-108

तेतीसां प्रतिपाल, धरणी धर असी धरो।
भव भंजन भूपाल, सतगुरु जी कृपा करो।
सतगुरु जी कृपा करो, अड़बड़िया आधार।

बारां इकवीसां मिलै, लंघे भवजल पार।
भव भंजण भक्ति कीजै, कटे जम का जाल।
जुग चौथे जोड़ी मिले, तेतीसां प्रतिपाल। धरणी धर असी धरो।1।
सतयुग कोल संभाल, म्हारो श्याम सपियर आवियो।
आवियो आप अलेख, भगतां रे मन भावियो।
भगतां रे मन भावियो नै, गुरु भला बहोड़ा भेद।
बाड़ै हुंता बिछड़या, उरे होती घणी उमेद।
होती घणी उमेद उर में, पीव सोई पावियो।
सतयुग कोल संभाल, पूरे गुरु परचावियो।
म्हारो श्याम सपियर आवियो।2।
बाबे परच्या पात सुपात, परच्या बामण बाणिया।
सोध्या जीव सुजीव, सुमति दे सुमार्ग आणियां।
सुमति दे सुमार्ग आणियां नै, मनो मेल्ही भ्रान्ति।
राजा रायक भाट भोजक, परच दीठा पांति।
भ्रान्ति मेल्ही हुवा भाई, जे गुरु ज्ञान पिछाणियो।
बाबे परच्या पात सुपात, परच्या ब्राह्मण बाणियां।
सुमति दे सुमार्ग आणियां।3।
कोड़ा रो तारणहार, वाचा पालण आपणी।
पवण छतीसूं पार, पहुंचावो पूरा धणी।
पहुंचावो पूरा धणी, पवण छतीसूं पार।
एक लवाई थल खड़यो, भगवी टोपी धार।
कुलह वेद पुराण बखाण, बानो देव पूठो पार।
अवतरयो इण कांम कलि में, क्रोड़ा रो तारण हार।
वाचा पालण आपणी।4।
आस करण अरदास, पार ब्रह्म सूं दाखियो।
प्रीति पहलो की पालिये, पति बानै की राखिये।
पति बानै की राखिये, कृत जुग री कांण।
लेखो न लीजै दया कीजै, भेख आपणों जांण।
सन्मुख न्हालो कोल पालो, सुणों श्याम सधीर।
दास गोकुल आस थारी, सत जांणो गुरु पीर।

पत बांनै की राखियो।5।

भावार्थ–प्रहलाद पंथी तेतीस करोड़ का पालन पोषण करने वाले, धरती के आधार स्वरूप श्री विष्णु ने ही ऐसा दिव्य रूप धारण किया है। संसार के भय को मिटाने वाले भूपालक सतगुरु देव हमारे पर भी कृपा करो। हे सतगुरु देव! कृपा करो। हमारा सहारा गड़बड़ा गया है। इस समय आप ही हमारे मात्र एक सहारे हो। तीन युगों में पार पहुंचे हुए तेतीस करोड़ से बारह करोड़ जाकर मिल चुके है जिन्होनें भी भव भंजन श्री विष्णु की भक्ति की थी वे तो पार पहुंच गये। वे तो यमराज के जाल से मुक्त हो गये। इस चौथे युग में भी सतयुग जैसा भक्त विराजमान है वे ही वहां तक पहुंच सकेंगे। तेतीसों का पालन करने वाले इस धरती पर आये है।1।

सतयुग में प्रहलाद से कवल किया था उसको पूर्ण करने के लिये ही हमारे प्यारे श्याम विष्णु ही यहां पर आये है। आप स्वयं अलख निरंजन आये है। भक्तों को बहुत ही प्यारे है। सतगुरु देव भक्तों को ज्ञान ध्यान भक्ति का रहस्य बताया है और भ्रम की निवृति की है। वे ही भक्त थे जो प्रहलाद पंथी कहलाते थे। इस समय वे लोग अपने को भूल चुके थे उन्हें सचेत किया जिससे हृदय में प्रेम की गंगा प्रवाहित होने लगी। हृदय में मिलन की बहुत ही इच्छा थी इसलिये परम प्रिय देव को प्राप्त कर लिया। सतगुरु का कवल संभालकर पूरे गुरु ने सन्मार्ग का अनुयायी बना दिया। श्री गुरु देव ने पात्र सुपात्र की परीक्षा करके अपनाया। जिनमें ब्राह्मण बनियां आदि परिचित हुए, सन्मार्ग के अनुयायी बने। सुजीवों को खोज करके तथा उन्हें सुमति मार्ग पर चलाया। सुमति प्राप्त करके सुमार्ग पर चलने से मानसिक भ्रान्तियां मिट गई। राजा रायक भाट भोजक सभी प्रकार के लोग आये और ज्ञान से परिचित होकर पंक्ति लगाकर बैठ गये अर्थात् सभी बिश्नोई बनकर एक ही पंक्ति में आ गये। उन्होनें गुरु के ज्ञान की पहचान की थी। इस प्रकार से गुरु देव ने परीक्षा कर के सुपात्रों को सुमति देकर सन्मार्ग का अनुयायी बनाया।3।

करोड़ों को पार उतारने वाले तथा अपने वचनों को पूर्ण करने वाले गुरुदेव के रूप में आये है। हे देव! हम तीन वर्ण के लोगों को पार उतार दीजिये। इसी समय आप अकेले भगवीं टोपी पहने हुए सम्भराथल पर खड़े दिखाई दे रहे है अर्थात् सचेत होकर सभी को देख रहे है तथा परीक्षा कर रहे है। स्वकीय कुल वेद पाठ पुराणों का व्याख्यान आदि को छोड़कर कैवल्य

ज्ञान दे रहे है। इसलिये ही कलयुग में देव ने अवतार धारण किया है जो करोड़ों को पार उतार देंगे। यही उनकी प्रतिज्ञा है।4।

परब्रह्म परमात्मा से यही हमारी आशा एवं प्रार्थना भी है। अपनी हार्दिक भावना हम और किससे कहें। हे देव! पहले वाली प्रीति का ही पालन करें। हमनें आपकी ही आशा पर आपका ही भगवां वेश धारण किया है इसकी मर्यादा रखें। इस बाने की लज्जा रखें यह सतयुग की ही परंपरा है। हे देव! आप हमारे कर्मो का हिसाब-किताब न पूछिये क्योंकि उसमें तो हम जबाब नहीं दे सकेंगे हमारे कर्म कोई ज्यादा अच्छे भी नहीं है। आप हमारे पर दया कीजिये अपना ही भेख अपना ही शिष्य मानकर हम सभी आपके ही है और आप एक मात्र हमारे सहारे है। आप हमारे सामने एक बार दर्शन देकर कृतार्थ अवश्य ही कीजिये। अपने वचनों को स्मरण कीजिये। हे श्याम सधीर हमारी प्रार्थना सुनो। दास गोकुल विनती करते हुए कहते है कि हमें तो आपकी ही आशा है, यह मैं सत्य ही कहता हूं। हमारे तथा आपके बाने की रक्षा अवश्य ही करेंगे।5।

साखी राग सिन्धु-109 (खेजड़ली की)

प्रस्तुत साखी के रचयिता 18 वीं सदी के संत कवि गोकलजी वणियाल है। गांव जोलियाली जिला जोधपुर निवासी श्री गोकलजी 'खेजड़ली खड़ाणे' के समय वर्तमान थे। अपनी इस लघु ऐतिहासिक काव्य-कृति रूपी साखी में इन्होंने विश्व प्रसिद्ध 'खेजड़ली बलिदान' का आंखों देखा वर्णन किया है।

पण पालण पीसणां गंजण, रूंखां राखण हार।
जोधाणै जालम तप्यो, अजमल जी अवतार।1।
इण कलि मां अजमल सो, कोई राणो हुवो न राव।
तप मेट्यो तुरकां तंणो, कीया अमर पसाव।2।
वन राख्यां वैरी गंज्या, जालम किया जेर।
पतिशाही ऊपर तप्यो, थिर थाणै अजमेर।3।
पतशाही रो पेखाणों, पिसणां पूरो साल।
प्रतापी पोहमी हुवो, अरि गंजण अजमाल।4।
हाकिम मति हरजी हड़ी, देखारी कीवो दाव।
डाकर कर डंड मांगस्यां, इण विध करो उपाव।5।

विरच कह्यो बाढ़स्यां, करस्यां वणी विणांस।
पण राखो तो पैसा दो, दाखै गिरधरदास।6।
भंडारी भ्रमै मतै, विण वादर वे कांम।
सिर सुपां रौखां सटै, टुकड़ो न द्यां दाम।7।
दाग लगे जो दांम द्यां, पंथ मां पुणो होय।
पण राख्यां पांणी चढ़ै, कलंक न लागै कोय।8।
चालै चाल वणी करी, तसकर घात्यो तांण।
साख पडूयां सिर सुंपस्यां, पहलां किसा वखांण।9।
सतरासौ सतीयासीयै, दसवीं मंगलवार।
भादव सुद सादु खड़या, खरतर खांडै धार।10।
कुण पोहमी पंण मेटसी, धरम सटे कुण धीज।
पण राख्यों विश्नोइयां, राठोड़ां री रीझ।11।

साखी

राजा रै मन रीझ, मन मां मतो उपायो।
हाकम सूं कर हेत, विध सूं वैग बुलायो।
बुलाय विध सूं बात पूछी, जस कीजो जै अपजस जुवो।
पाज पुन री बांधिये, नरपति कैहै कीजै निवों।
निवों त करस्यां नींव थरपां, ज्ञान खोजो नरपति।
बामंण सरवण व्यास भोजग, पूछिया जोगी जति।1।
पढ़िया पुस्तक वांच, धोरी धरम बतायौ।
हाकम रे मन जोर, दिल में दाय न आयो।
दाय न आयो दूज राखी, पाप कुल रो प्राणियो।
राज कुल री रीत मेटै, करै भूंडी वांणियो।
सादर सुणियो श्याम सांचा, महर कर मोटा धणी।
विसनुं दोषी भसम होसी, वाद कर वाढ़ी वणी।2।
आबां हर री वार, चेलो चोगस लागो।
वरण मिल्या बोहो भांत, तमक्यां करस्यां तागो।
तागो तो करस्यां नहीं डरस्यां, ध्यान मन ऐसो धरो।
मान तज्या क्यूं मान रयसी, सिर सुंपां साको करो।
कीयो साको हुयो साकत, भड़क भड़वो भाजसी।

सार वयसी सीस पड़सी, लांणतीया तद लाजसी।3।
सिर सुंपै सुचीयारा, गोष्ट करै गुरभाई।
खारतर खांडैधार, अणदे तेग समाई।
तेग समाई हुवो तागो नर नारी, नीसचै खड़्या।
वणीयाल वीर तो चढ़ी वांनी, पण राख्यो पातग झड़या।
झड़या पातक हेत करकै, दुःख मेट्यो दाळद हड़यो।
भलै वणी नै वुरो ताक्यो, दिन दसवै चाचो खड़यो।4।
करै जका करतार, सुरां सार समावो।
अकरम हुवो अपार, वैगा वार न लावो।
वार न लावों हुवो वेगा, पाछां खिस्यां तो पण घटै।
ऊदो सार समाहं आयो, सिर सुपां रूंखां सटै।
सीस सुपां नहीं कंपा, मरण हूं मत को डरो।
होय हो तब कौल गुरु कै, सिर सुंपां साको करो।5।
कर मन कोल करार, कांनै कंथ नीवायो।
किसनै रे मन कोड, सिर पर सिर दज आयो।
सिरदज आयो सांम धायो, साख राखी सिर दीयो।
दैराज दरगै दाद पाई, जीव तग्यो जस लीयो।
लीयो जस जिण जीव काजै, आथ उरसूं परहरी।
ग्यांन गुरु कै ध्यान धरीयो, सुरत सुरगे संचरी।6।
सुरगे सुख अपार, मंन की तिसनां भागी।
कीयौ वचन कबुल, दांमी देह त्यागी।
देह त्यागी भरम भागो, सोभ देसां सांभली।
किरपा हुई कुलोभ छूटो, पण राख्यो पुगी रली।
रली पुगी सांम आयो, मंनवंछ कारज सारीया।
सीध साधु वीवांण चढ़िया, प्रभु पार उतारीया।7।
बै यूं दाखौ वैण, राजी रण वट आवो।
चीमां जलम सुधार, रतन काया धीन पावो।
पावो त काया तजो माया, मन को मोह निवारीयो।
फेर ओ तन काम केहै, परभु पंथ कूं सारीयो।
वीरख पड़िया ऋखी खड़ीया, पंथ की पारख पड़ी।

तागांळां सुं तेग बांधी, हाकम नै हतीया चड़ी।8।
हतीया करै हैरान, कुबधी कुबध कमाई।
चेले रे मन ओर, चोगस चाल चलाई।
चाल चलाई हुवो तागो, आस क्युं ओ सैस लै।
वड़ अवसर खड़्यो मांझी, चाच पहुंतो चोसलै।
खड़्ग धारा खेल मांडियो, ओर आयो मारीयो।
ग्यान गुरु के ध्यान धरीयो, प्रभु पंथ कुं सांरीयो।9।
करता करै ज सार, राज करै कुफरांणा।
हरिजन पहुंतो पार, विधि सूं बात वखांणा।
बात वखांणा सत जाणां, पण राखो पूरा धणी।
पापियां नै तुरंत पहुंचो, तागाला तीखी अणी।
अणी तीखी सुरंगी सर पर, तके आखर क्युं ओसरे।
पाछां खिसियां तो पण घटे, तंत लीया तागा करै।10।
तागाळा सुं ताण, काल्हा कदेह न कीजै।
अैकारां अैनांण, दुख दे दांण न लीजै।
दांण न लीजै मांन दीजै, वरण सतायो रानीयै।
सरब सदामद साख पारख, रीत रकंम न भानीयै।
आपो त मारै वेग सारै, दया पालै देखातां।
तीन सौ तेसठ उपर, पंथ पुरो पेखातां।11।
ओ तागो संसार, जुग मै जोर वखांणा।
सत मानै सुरतांण, राजा राव वखांणा।
राव वखांणा सत जांणा, जीव काया राखैं जुवो।
खरा खोटा रा भेद लाधै, खेजड़ली खलकट हुवो।
मूल मरणो अमर नांहीं, मोमणां कीयौ मतो।
खड़्या खांडै चड़्या चंवरी, करै अपछर आरतो।
जात कुळ की तात नीसचै, पंथ पर काजै मील्यो।
गुंण ग्रंथ गोकल कहै साखी, खेजड़ली खळकट सांभल्यो।12।

भावार्थ- जोधपुर के शासक अजीतसिंह प्रण का पालन करने वाले, शत्रुओं का नाश करने वाले तथा वृक्षों की रक्षा करने वाले प्रतापी शासक हुए।1।

अजीतसिंह के शासन काल में उनके समकक्ष कोई राजा या राव नहीं हुआ। उन्होंने यवनों (मुसलमान शासकों) के प्रभाव को मिटाया तथा अपने राज्य का विस्तार किया।2।

उन्होंने वनों की रक्षा की, शत्रुओं का दमन किया तथा दुष्ट लोगों को नियंत्रित किया। अजमेर के हाकिम (सफीखाँ) पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया।3।

जो शासक राजा जोधपुर की तरफ बुरी नजर से देखा करते थे, उन्हें रौंद डाला। उनके दिल में (अजीतसिंह) शूल की तरह चुभा करते थे। ऐसा प्रण का पालन करने वाला, दुश्मनों का नाशक, प्रजा पालक राजा अजीतसिंह हुआ।4।

अजीतसिंह के पुत्र अभयसिंह राज गद्धी पर थे तब उसके मंत्री गिरधरदास भण्डारी ने राजा की बुद्धि का हरण कर लिया। मौका देखकर दांव खेला। उसने राजा से कहा कि महाराज! राज्य में धन का अभाव है। विश्नोईयों से दंड के रूप में धन मांगना चाहिये। ऐसा उपाय किया जाना चाहिये।5।

राजा की आज्ञा लेकर गिरधरदास ने विश्नोइयों से कहा ''राजा की आज्ञा है, हम वृक्षों को काटेंगे तथा वनों का विनाश करेंगे। अगर (पेड़ों को नहीं कटने देने का) प्रण रखना हो, तो (दंड स्वरूप) धन देना होगा।6।

(विश्नोई लोगों ने जवाब दिया) कि भंडारी (गिरधरदास) तुम भ्रम में मत रहना। बिना काम का व्यर्थ का विवाद मत कर। वृक्षों के बदले हम अपना शीश सौंप देंगे तथा (दंड के रूप में) एक रूपया भी नहीं देंगे।7।

अगर हम दंड (दांण) के रूप में धन दे, तो कलंक लग जाए। पंथ (विश्नोई पंथ) में नीचे माने जाएंगे। लेकिन अगर हमने प्रण का पालन किया तो हमारा मान-सम्मान बढ़ेगा। किसी प्रकार का कलंक नहीं लगेगा।8।

भंडारी वृक्ष काटने को उद्यत हुआ। चोरों की तरह वन में प्रवेश किया। विश्नोई स्त्री-पुरुषों ने कहा कि जरूरत पड़ी तो पेड़ों के लिये सिर सौंप देंगे। पहले बड़ाई करने से क्या होता है।9।

इस प्रकार संवत् 1787 भादवा माह के शुक्ल पक्ष की दसवीं मंगलवार को 363 सज्जन लोगों ने आत्म-बलिदान किया। उनके लोगों ने अपने धर्म नियमों का पूर्ण रूपेण निर्वहन किया।10।

ऐसा कौन राजा धरती पर पैदा हुआ है, जो विश्नोईयों को प्रण से डिगा दें तथा धर्म से विमुख कर दें। इस प्रकार अपनी दृढ़ता से विश्नोईयों ने राठौड़ राजाओं का कोप भाजन बनते हुए भी अपने प्रण (प्रतिज्ञा) अर्थात् धर्म की रक्षा की।11।

साखी- राजा ने प्रसन्न होकर मन में विचार किया। हाकिम (गिरधरदास भंडारी) को अपना हितैषी मानकर उसकी वृक्ष काटने की बात पर निर्णय करने के लिये विद्वानों की (जल्दी ही) बैठक बुलाई। विद्वानों को बुलाकर राजा ने कहा कि हमको वही कार्य करना चाहिये, जिससे यश की वृद्धि हो तथा अपयश न हो। पुण्य की मर्यादा (पाज) बांधी जा सके। नम्रता को बढ़ावा मिले। नम्रता ही (धर्म की) नींव है। हमें नींव की स्थापना करनी होगी। राजा ने (गिरधरदास भंडारी के प्रस्ताव पर विचार करके उसका) समाधान खोजने के लिये (भिन्न-भिन्न विद्वानों) ब्राह्मणों, श्रमणों, व्यासों, भोजकों, योगियों एवं यतियों से सलाह पूछी।1।

पढ़े लिखे लोगों ने शास्त्रों को पढ़कर यह बताया कि (पेड़ों को न काटना ही) ईश्वर ने धर्म बताया है। किन्तु हाकिम (गिरधरदास भंडारी) के मन में बड़ा घमण्ड था। (उसको विद्वानों की सलाह) मन में अच्छी नहीं लगी। (विद्वानों की सलाह) पसंद न आने पर उनको (राजा से) भेद रखा। (अर्थात् छिपा लिया, कहा नहीं)। (भंडारी ऐसा इसीलिये कर रहा था, क्योंकि वह)पापी कुल में पैदा हुआ प्राणी था। वह राजा के कुल की मर्यादा मिटा रहा था। वह बनिया बड़ा बुरा काम करने जा रहा था। (जब भंडारी ने राजा को अपने पक्ष में कर लिया, तो सभी विद्वानों ने परमात्मा से प्रार्थना की) हे श्याम! हमारी विनती सुनो। हे मालिक कृपा करो। (विद्वानों ने कहा) विष्णु भगवान का गुनाहगार (गिरधरदास) नष्ट हो जायेगा। जो वाद-विवाद करके वनों को काट रहा है।2।

अनेक वर्ण (गौत्र) के बहुत से लोग एकत्रित होने लगे। आत्म बलिदान होने को तैयार थे। (वृक्षों की रक्षा करेंगे) प्राण त्याग देंगे, डरेंगे नहीं, ऐसा मन में ध्यान करते हुए (आगे बढ़े)। (अपनी धर्म-मर्यादा का) मान त्यागने से (अपना) स्वाभिमान कैसे रहेगा। इसलिये हमें सिर सौंपकर साका (आत्म बलिदान) करना चाहिये। हम लोग मरने के लिये तैयार रहेंगे, अपने को कठोर बना लेंगे, तो वह दुष्ट (भंडारी) (आयेगा) तो भी भाग जायेगा।

शस्त्र चलेंगे तथा सिर कटकर गिरेंगे (तब ये कर) मांगने वाले (लांणतिया) लज्जित होंगे।3।

गुरु भाई (विश्नोई-बन्धु) मिलकर विचार-विमर्श करने लगे कि इस समय प्राणों के बलिदान के अलावा कोई उपाय नहीं है। सर्वप्रथम अणदे (भादू) ने बलिदान का बीड़ा उठाया। उनके बाद अनेक स्त्री पुरुष अपना आत्म बलिदान देने को तत्पर हो गए। वीर (अमृतादेवी) वणियाल (शहीद होने के) बांने (विवाह के समय की ऐ रस्म जिसमें दुल्हा-दुल्हन) को घी पिलाकर हल्दी लगाकर बिठाया जाता है) बैठ गई। उसने अपने प्रण की रक्षा की और पापों को मिटा दिया। प्रेम सहित धर्म की रक्षा के लिये तैयार हुई, इसलिये पाप मिट गए। दु:ख मिट गए तथा दरिद्रता भी समाप्त हो गई। (इधर गिरधरदास भंडारी ने) फिर वनों को (काटने का) बुरा विचार किया। वृक्षों को काटना शुरु किया। (जिसका विरोध करते हुए) दसवें दिन चाचोजी (वणियाल) ने अपना बलिदान दे दिया।।4।।

वीर अपना बल समेटकर, ईश्वरीय करनी को स्वीकार कर (आगे बढ़े)। बहुत अनर्थ हो चुका है। अब (सामना करने में) देर नहीं करनी चाहिये। इस समय पीछे हट गये तो हमारा प्रण चला जाएगा। ऐसा घोष सुनाई दिया उदोजी नामक वीर अपना सम्पूर्ण बल समेटकर आगे आए। अपना शीश पेड़ों की रक्षार्थ कटवा दिया। अपना सिर कटवाते समय भी नहीं डरे। लोगों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा भाईयों! मरने से मत डरना। गुरु जम्भेश्वर भगवान के वचनों का पालन करने का जब समय हो, तो सिर सौंपकर (कटवाकर) साका (आत्मबलिदान) करना चाहिये।5।

मन में पक्का इरादा करके कानोजी नामक वीर ने आकर अपना शीश बलिदान देने के लिये झुकाया। किसना नामक वीर के मन बड़ा उत्साह था। लाशों पर चलकर आया। श्याम गुरु जम्भेश्वर भगवान को याद किया। उनके वचनों का पालन किया और सिर (बलिदान) दिया। ईश्वर की चौखट (स्वर्ग) में शाबासी प्राप्त की। अपना जीवन अर्पण करके यश प्राप्त किया। जिस जीवन के कारण उन्होंने यश प्राप्त किया। उस जीव आत्मा को हरि (परमात्मा) को सौंपने आए। उन वीरों ने अपने गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताए ज्ञान से ईश्वर का ध्यान किया। उनकी जीव आत्मा (सुरत) स्वर्ग में पहुंची।6।

स्वर्ग में अपार सुख है। शहीद हुए वीरों के मन की तृष्णाएं मिट गई। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के वचन जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहीं घावै को स्वीकार करके दांमी (अणदेजी भादू की पुत्री) ने अपना आत्म बलिदान दिया। शरीर का बलिदान करते ही भ्रम मिट गया। दांमी की प्रशंसा दूर दराज के क्षेत्रों तक फैली। ईश्वर की कृपा हुई। लोभ (तृष्णा) समाप्त हो गया। जम्भेश्वर भगवान के वचनों का पालन करके दांमी स्वर्ग में पहुंची। स्वर्ग में पहुंचने पर अगवानी करने श्याम भगवान आए। उन्होंने शहीदों के मनवांछित कार्यों को पूर्ण किया। सिद्ध और साधु लोग (ईश्वरीय) विमान में चढ़े। ईश्वर ने उन्हें भवसागर से पार उतार दिया।7।

वे सभी लोग इस प्रकार कह रहे हैं कि हमें खुशी-खुशी युद्ध भूमि में आना चाहिये। चीमां अणदेजी भादू की पुत्री ने भी अपना बलिदान देकर जन्म सुधार लिया। चीमां धन्य है जिसने इस नाशवान शरीर को छोड़कर दिव्य रतन काया प्राप्त की। उसने काया प्राप्ति की मोह माया को त्याग दिया। सांसारिक मोह को छोड़ दिया। फिर यह शरीर किस काम का जो प्रभु (जाम्भोजी) के पंथ (धर्म-नियमों) को पूर्ण न कर सके। वृक्ष तो सही सलामत बच गए, लेकिन ऋषि रूपी महापुरुषों ने आत्म बलिदान दे दिया। इस घटना से पंथ की परीक्षा हुई। जो प्राण त्यागने को तैयार खड़े थे। उनसे हाकिम ने विरोध मोल लिया। हाकिम (गिरधरदास भंडारी) के सिर पर खून सवार हो गया।8।

यह नरसंहार हैरान करने वाला था। फिर भी उस कुमति व्यक्ति ने दुष्टतापूर्ण यह कार्य किया। तदुपरांत भी राजा के हाकिम गिरधरदास के मन में कुछ ओर ही षडयंत्र चल रहा था। उसने चालाकी पूर्ण हमला किया। उस भंडारी के चाल चलते ही आत्म-बलिदान (तागो) हुआ। इस बड़े अवसर (आत्म बलिदान के अवसर) पर घर के मुखिया (चाचोजी) ने भी बलिदान दिया। चाचोजी युद्ध भूमि के बीचो-बीच पहुंचे। तलवार का खेल प्रारम्भ हुआ और उन्होंने स्वयं को बलिदान कर दिया। गुरु जाम्भोजी के ज्ञान को आत्मसात कर उनका ध्यान किया। ईश्वर ने उन्हें भवसागर से पार किया।9।

सभी के स्वामी परमात्मा सार-असार के कर्त्ता है। लेकिन इस समय राज्य करने वाले नास्तिक लोग है। प्रभु के लोग आत्म बलिदान होकर उनके पास पहुँचे। ईश्वर से घटना का सही वृतांत सुनाया। हे मालिक ! हमारा

प्रण पूरा करो। पापी लोगों का शीघ्र नाश करो। जो लोग अपने शरीर को सूली पर चढ़ाने को तैयार है। उनकी रक्षा करो। जब आपकी (ईश्वर की) शक्ति हमारे साथ है। तब हम उदास क्यों होवें। पीछे हटने पर तो प्रण टूट जाएगा। हमने तत्व लिया है, बलिदान होने को तैयार है।10।

जब इस घटना की सूचना राजा अभयसिंह को पहुंची तो उन्होंने हाकिम गिरधरदास भण्डारी की निन्दा करते हुए कहा कि मूर्ख! जो लोग बलिदान होने को तैयार खड़े हो, उनको कभी जिद करके नहीं जीता जा सकता। यह घटना इसका प्रमाण है। कभी भी प्रजा से दु:ख देकर कर नहीं लेना चाहिये। ऐसे लोगों से कर नहीं लेकर उल्टे मान देना चाहिये। सर्वस्व शक्ति लगाकर किसी की परीक्षा लेना मर्यादा रूपी कोष को समाप्त करना है। जो अपना बलिदान देकर भी धर्म की रक्षा करते हैं। दया (धर्म) का पालन करते हैं। ऐसे इस घटना में बलिदान हुए तीन सौ तिरेसठ लोगों पर सम्पूर्ण बिश्नोई पंथ गर्व करता है।11।

यह आत्म बलिदान संसार में बहुत सराहा गया। इसको राजा-प्रजा सभी सत्य का मार्ग मान रहे हैं। राजा, राव सभी ने इस घटना का बखान किया है। इन साहसी लोगों ने जीव और शरीर की भिन्नता दिखा दी। कौन सच्चे धार्मिक तथा कौन पाखंडी है। इसका भेद खेजड़ली में इकट्ठे होकर (विश्नोईयां) ने कर दिया। धर्म निष्ठ लोगों ने यह निश्चय किया कि मरना तो सत्य है लेकिन अमर होना नहीं। वे वीर तलवारों से बलिदान होकर बलिवेदी रूपी चंवरी में बैठे हैं। अप्सराएं उनकी आरती कर रही है। अपनी जाति, कुल का कुछ भी निश्चय नहीं किया और विश्नोई पंथ के परोपकारार्थ इकट्ठा हुए। पेड़ों कर रक्षार्थ शहीद हुए लोगों के गुणों की माला गुंथकर के संत कवि गोकलजी यह साखी कह रहे हैं। खेजड़ली में इस प्रकार की अविस्मरणीय घटना घटी।12।

कवि सं.-39 हीरानन्द जी जन्म संवत् 1750-1800, इनकी प्रसिद्ध रचना हींडोलणो प्राप्त हुई है जिसमें हजूरी कवि भक्तों तथा संतों के नाम गिनाये है इसलिये इस रचना का महत्व है।

साखी हिंडोलणो-110 (राग मलार)

सरस हिंडोलणो सम्भराथल, झूलै हो साध।टेर।
दोय शील संयम थंभ रोपे, नांव बेड़े आधार।

चार डांडी सरल सुन्दरी, वेद के झणकार।
सत्य धीरज बणे मरवो, जड़त प्रेम सवार।
सुरत पटड़ी बैठ कर, थे झूलो जम्भ द्वार।1।
लोहट हांसा भाव पूरे, जिण लियो उर लाय।
नौरंगी के भात लाये, संग साल्हिया आय।
सिरिया झीमां रूपा मिरिया, पूर्व प्रीत विचार।
दोय कंवर आगै धरै, लाछां आये झूलण वार।2।
भूवा तांतू चली झूलण, नायकी लीवी बुलाय।
अजब देश वीर ते तहां, झाली पोंहती आय।
लोचा गवरां अवर मांगू, पालै वचन विचार।
उदो अतली हेत सेती, झूले जम्भ द्वार।3।
राव दूदा टोहा ठकरा, केल्हण वरसंग लेख।
लोहा पांगल भींया परच्या, सोवन नगरी देख।
रावण गोविंद लक्ष्मण पांडु, मोतिये के भाय।
रणधीर अली सैसा साल्हा, सहजे देत झुलाय।4।
खींया नाथा पूर्व झीमां, राणा प्रीत विचार।
कोजा बूढ़ा लूणा सायर, आये पूल्ह पुंवार।
धन्नो बिछू सुरगण भंवरा, चेला कुलचंद पियार।
पहलाद की परतंग्या कारण, विसन को अवतार।5।
महाराज दाउद घाटम पूरो, थापन हर खेता।
धारू चोखा वैरा प्रीत, हिरदै धरी मंगला रेड़ा।
हासम कासम संता सेती, सदा रहे सहाय।
तास सैंसो उदो दासा, आयो पांचा को समझाय।6।
रावल जेतसी सांगा राणा, लूणों मालदे राव।
महमद खान मुल्ला सधारी, आये परसे पांव।
शाह सिकंदर राव सांतल, शेखा सदू जांण।
कान्हा तेजा अल्लू चारण, बलि बलि करत बखाण।7।
हुकम उदो दीन बोल्यो, वील्ह कियो उपदेश।
सुजा सुरजन आलम केशव, ज्ञान का उपदेश।
चन्दन रायचंद जसो पंचायण, शब्द का आचार।

हीरानन्द की अरजी एती, संगत पार उतार।8।

भावार्थ–आनन्द रस से परिपूर्ण हींडोला सम्भराथल पर लगा हुआ है जिससे कोई कोई विरले साधुजन ही हींड रहे है। यह हींडोला किसका बना हुआ है, यह आगे बतला रहे है। शील संयम रूपी दो खंभे रोपे गये है। परमात्मा विष्णु का नाम ही इस बेड़े रूपी झूले का आधार है। झूले का चार डंडियां ही चार वेद रूपी शब्दवाणी है। वेदों की भांति ही स्वर लय की झणकार हो रही है। कहा भी है–''मोरे सहजे सुन्दर लोतर वाणी'' सत्य तथा धीरज रूपी सौम्य सुगन्ध मय मरवे के नीचे झूला बांध रखा है। सत्य एवं धीरज की छत्रछाया में झूला झूल रहे है। झूले के अनेकों चित्रकारी की गई है। वह सरल शुद्ध सुन्दर प्रेम भाव को प्रगट कर रही है। सुरति यानि चितवृति के पटड़े पर बैठकर जाम्भेश्वर जी के द्वार सम्भराथल पर झूला अवश्य ही झूलें सभी के लिये ही दरवाजा खुला हुआ है।1।

अब आगे इस हींडोलने में हींडने वाले उन साधु भक्तों का नाम गिनाये गये है। जिन्होनें सम्भराथल आकर समय समय पर झूला झूले है। ये सभी नाम स्पष्ट है हजूरी शिष्य ही नहीं जाम्भोजी के माता–पिता से आरम्भ करके अन्तिम आलम सूजा सुरजन रायचन्द आदि संतों कवियों को भी गिनाया है कुल नामों की संख्या 83 गिनाई गई है। इनमें जिन लोगों के नाम आये है उनकी कथा जम्भसार में वर्णित है। तथा कुछ भक्त सन्तों का जीवन चरित्र विस्तार से प्राप्त नहीं हुआ है। प्राय: सभी सन्तों एवं भक्तों का नाम यहां पर एक ही साखी में कवि ने बड़ी ही चतुरता से किया है। यह साखी अपने ढ़ंग की एक ही सम्पूर्ण जाम्भाणी साहित्य में उपलब्ध हुई है। इसलिये इनका अपना महत्व निराला ही है।

कवि सं. 40 हरजी वणियाल जन्म संवत् 1745–1835 मध्य अनुमानित है। ये जांगलू के वणियाल गोत्र के बिश्नोई गृहस्थ थे। ये दामोजी के शिष्य थे। ऐसी प्रसिद्धि है कि हरजी ने स्वयं एक पोथी लिखी थी। उसका आधार भी परमानन्द जी ने ''पोथो ग्रन्थ ग्यान संग्रह'' में लिया था। ये स्वयं ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं का आधार मानकर साखियों का सृजन करते थे। इनके द्वारा रचित साखियां वर्तमान काल में सर्वाधिक प्रचलित है। ये साखियां प्राय: जागरणों में गायी जाती है। हरजी ने जो भी रचना की है वह उच्चकोटि की काव्य रचना कही जा सकती है। नीचे उनके द्वारा रचित

साखियों का भावार्थ किया जा रहा है।

साखी छन्दां की-111

लोहट तणी जे लाज, पत राखो पूरा धणी।
गऊ चरावण काज, गोवल चाल्या म्हे सुणी।
गोवल चाल्या म्हे सुणी नैं, धणी जे आयो धाय।
भगवे बानें विष्णु आयो, दरसण दीन्हों आय।
लोहट करै छ बीणती नैं, विनय सुणों सुरराय।
पुत्र दीजौ देव जी, लौहट तणीजै लाज।
पत राखौ पूरा धणी।।1।।

ऐसो जलमें पूत, सुण लोहट सत गुरू कही।
जोगी महा अवधूत, डर पै मत आशा सही।
डर पै मत आशा सही नैं, करणी ऐती बात।
गोविन्द गोवल चालिया नैं, जहां हांसलदे माय।
सखियां बैठी सामठी नें, आण खड़्यो अवधूत।
हांसा नैं सत गुरू कही, ऐसो जलमैं पूत।
सुण लोहट सत गुरू कही।।2।।

माता मन अणराय, मोसिरजी करतार क्यों
बलि-बलि लागूं पांय, झुरवै कायर मोर ज्यूं।
झुरवे कायर मोर जूं, नें पुत्र बिहूंणी माय।
जमवारो ऐलो गयो नैं, मैं क्या कियो जुग आय।
जब दयानिधि बोलिया नैं, सुण हांसलदे माय।
नवै महीनें अवतरूं नैं, घरां तिहारे आय।
हांसा नैं सत गुरू कही।।3।।

सम्भराथल अवतार, गोवल रमंतो डावड़ो।
किसन सही करतार, नन्द घर होतो छाबड़ो।
नन्द घर होतो छाबड़ो नैं, डावड़ो रणधीर।
वांकी बेला सदा ज आवै, भक्त भजंनता भीड़।
गज को ग्राह घेरियो, जल डूबत सुणी पुकार।
गरूड़ छोड़ प्यादे भये, गज को लियो उबार।
गोवल रमन्तो डावड़ो।।4।।

कुल पुंवार तणै प्रकाश, पींपासर प्रगट्यो दई।
चोचक हूवो उजास, जाणैं रवि ऊगो सही।
जाणै रवि ऊगो सही नैं, माता मन आणन्द।
पुत्र जनम्यो पुंवार घर, गावे गुण गोविन्द।
शरणै राखो श्याम जी नैं, हरिजी हर की आश।
लोहट घरां बधावणा ,कुल पुंवार तणै प्रकाश।
पींपासर प्रगट्या दई।।5।।

भावार्थ–गुरु जाम्भेश्वर जी के अवतार से पूर्व पींपासर के ठाकुर लोहटजी पंवार एवं उनकी धर्म पत्नी हांसा देवी की स्थिति का वर्णन इस साखी के द्वारा कवि ने किया है। वह स्थिति ही अवतार का कारण बनती है। विक्रम संवत् 1507 में पींपासर के आसपास गांवों में अकाल पड़ गया था। पशुओं को चराने के लिये घास तृण नहीं था। सभी ग्रामवासियों की सहमति से उनको साथ में लेकर लोहटजी छापर दूणपुर के जंगलों में चले गये थे। वहां पर पशुओं के लिये चारा पानी की कमी नहीं थी। लोहट जी स्वयं गऊ चराने जाया करते थे। एक दिन रात्रि में गऊवें चरने गई थी। लोहटजी भी गऊवों के साथ थे। ब्रह्म मुहूर्त में गऊवें चरकर वापिस आ रही थी। प्रथम वर्षा भी हुई थी किसान जोधा जाट शकुन मनाता हुआ जा रहा था। लोहटजी को देखकर दुखी हो गया तथा गाड़ी लेकर वापिस मुड़ गया। लोहटजी ने कहा भाई! वापिस क्यों जा रहा है? परन्तु लोहट जी की एक भी नहीं सुनी। यह कहते हुए वहां से वापिस चला गया कि निरपुत्रे का दर्शन आज इस शुभ बेला में हो गया है। एक भी दाना नहीं होगा अवश्य ही अकाल पड़ेगा। लोहटजी ने ऐसी वार्ता सुनी तथा वहां से वन में चले गये तथा जाकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। भगवान विष्णु ही साक्षात् साधु का वेश धारण करके आये और लोहटजी से वरदान मांगने के लिये कहा उसी समय ही बिना ब्याही बच्छी का दूध दूहकर भी लोहटजी को विश्वास दिलाने के लिये पिलाया। उसी अवस्था को यह साखी बताती है।

लोहट जी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! मेरी लज्जा रखो। हम यहां गोवलवास में आये हुए है। गऊवें चरा रहे है आप ही हमारे स्वामी हो। भगवां वस्त्र धारण करके हे देव! आप नें ही हमें दर्शन देकर कृतार्थ किया है। लोहटजी ने हाथ जोड़कर विनती करते हुए कहा कि हे देवाधिदेव!

आपने हमें सभी कुछ दिया किन्तु पुत्र नहीं दिया। हम आपसे पुत्र की आशा करते हुए विनती कर रहे है मेरी लज्जा एवं प्रतिज्ञा आपके ही हाथ में है।1।

इस प्रकार लोहट की विनती भगवान विष्णु ने श्रवण की और कहा कि ऐसा योगी महा अवधूत पुत्र जन्म लेगा चिता मत करो। भय को निकाल दीजिये और वापिस गोवलवास में अपने सगे सम्बन्धियों के पास चले जाइये। लोहट को वरदान देकर स्वयं विष्णु साधु रूप धारी वहां पहुंचे जहां हांसा माता बैठी हुई सखियों के सामने विलाप कर रही थी। अकस्मात् अवधूत धारी भगवान विष्णु ने कहा कि ऐसा ही दिव्य मेरे जैसा पुत्र तुम्हारे होगा।2।

माता हांसा अति दुखी थी मन में विलाप कर रही थी। हे प्रभु मुझे नारी का शरीर ही क्यों दिया यदि दिया तो फिर मेरी कोख खाली क्यों रखी। महिला होनें का अर्थ ही क्या है जब तक उसकी गोदी में संतान का सुख नहीं हो तो। बारंबार चरणों में गिरने लगी। इस बार तो बहुत ही कायर दीन दुखी हो चुकी थी। जिस प्रकार मयुर नृत्य करता हुआ आंखों से आंसू की बूंदें गिराता है ऐसी दशा हांसा की भी हुई थी। मेरा यह जीवन व्यर्थ ही चला गया, मैनें संसार में आकर भी क्या किया। तभी दयानिधी विष्णु कहने लगे-हे माता हांसा सुनो! जब नवां महीना आयेगा तभी मैं आपके घर पर अवतार लूंगा। मेरे आनें से सम्पूर्ण वनस्पति, पशु, पक्षी, मानव संतुष्ट हो जायेंगे। ऐसा भादवा कृष्ण पक्ष अष्टमी का ही शुभ दिन होगा।3।

वही संवत् 1508 भादव कृष्ण पक्ष अष्टमी जिसे कृष्ण जन्माष्टमी कहा जाता है ठीक उसी दिन उसी शुभ घड़ी में सम्भराथल का ही अवतार हुआ था। जिसने गोवलवास में आकर दर्शन दिया था वही इस समय सम्भराथल पर आये थे। जो कृष्ण नन्द के घर पर लीला किया करते थे। उन्होनें ने ही आज लोहट के घर पर लीला प्रारम्भ की है। जब कभी भी विपति का समय आता है तभी वही कृष्ण-विष्णु दौड़कर आ जाते है और भक्तों के दुख भंजन कर देते है। जिस प्रकार से गज को ग्राह ने पकड़कर जल में खींचा था तो उस गज ने हरि से पुकार की थी। उसी समय ही विष्णु ने अपनी प्रिय सवारी गरूड़ कों छोड़कर पैदल ही भाग आये थे। और हाथी को उबार लिया था। ऐसे विष्णु ही आज लोहट को बचाने के लिये तथा धर्म की रक्षा करने के लिये दौड़ करके आ गये।4।

पंवार कुल में प्रकाश हुआ था। पींपासर में आकर प्रगट हुए थे। उस समय चारों ओर प्रकाश पुंज फैल गया मानों रात्रि में ही सूर्योदय हो चुका हो। माता के मन में आनन्द की लहरें बहने लगी। पंवार लोहट के घर पुत्र का जन्म हुआ है ऐसा मानकर भक्त जनों ने गुणगान किया अपने को तथा लोहट को धन्यवाद कहा। हे श्याम मुरारी! हम तो आपकी शरण में है, हमारी रक्षा कीजिये। आप ही हमारे सर्वस्व है और किसी का भी सहारा हमें नहीं है। ऐसी विनती हरजी करते हुए कहते है कि लोहट जी के घर पर बधाइयां बंटने लगी। पंवार कुल में प्रकाश हो गया क्योंकि स्वयं विष्णु ही प्रगट हुए थे।5।

साखी छन्दां की-112

सही विसवा वीस, सांचो गुरू समराथले।
कान्ह कुंवर नन्दलाल कृपाकर आयो भले।
कृपाकर आयो भले नैं थली चरावै थाट।
परच्या बामण बाणियां नैं भोजग चारण भाट।
पवन छतीसों एकल सतगुरू ज्ञान दियो जगदीश।
चरण वन्द कर चलूं जे लीनों, सही विसवा वीस।
साचो गुरू समराथले।।1।।

पूरे गुरू परमोध, सुपह सुमार्ग आणियां।
शोध्या जीव सुजीव, मोक्ष मुक्त दिस ताणियां।
मोक्ष मुकत दिस ताणियां नैं, किया पर उपकार।
जाटां ऊपर झुक पड़ा नैं, हमकले अवतार।
जंगी-जंगी परसतियां नैं, राता कलहर क्रोध।
अड़क नर परचाविया पूरे गुरू परमोध।
सुपह सुमार्ग आणियां।।2।।

प्रगटयो पूरण भाग, सांचो गुरू समराथले।
दाख्यो आदू माघ, कृपा कर आयो भले।
कृपा कर आयो भले नैं धणी जे आयो धाय।
भव सागर में डूबतां नें काढ़ लियो गुरू सहाय।
ओर गुरां नैं जंभगुरू में अन्तर हंसरूं काग।
परम गुरू संसार, आयो प्रगट्यो पूरण भाग।
सांचो गुरू समराथले।।3।।

गुरू दीन्हीं मोक्ष बताय भव भवतो भूला फिरे।
रीज करी सुर राय, मन इच्छा कारज सरे।
मन इच्छा कारज सरै नैं, हरे जे पोते पाप।
भाव सूं भक्तां गुरू मिलिया, कलूं पधारया आप।
पींपासर प्रगट्यो दई, देव जे आयो दाय।
घर लोहट के अवतरा नैं, दीन्हीं मोक्ष बताय।
भव भव तो भूला फिरे।।4।।
गुरू किया निपट निहाल, पाप करन्ता पालिया।
सत् त्रेता की चाल थरपण एकण थापिया।
थरपण एकण थापिया नैं आप दियो गुरू ज्ञान।
विष्णु भणों विश्नोइयां थे धरो जे स्वयंम्भू ध्यान।
शील सिनान सुचाल चालो, मानों हक हलाल।
जिन हरजी की बीणती, गुरू किया निपट निहाल।
पाप करंता पालिया।।5।।

भावार्थ-शत प्रतिशत यह सत्य है कि सतगुरु देव सम्भराथल पर आये है। सतगुरु स्वयं द्वापर युग में कृष्ण कुंवर नन्द जी के आनन्द रूप ही थे। नन्द नन्दन गोपाल ही कृपा करके यहां पर आये है। ऐसी दिव्य कृपा करके आये है। जो किसी राजमहल में सुख नहीं भोग रहे है किन्तु थलों पर गऊ आदि पशु चरा रहे है इसलिये सभी के लिये सुलभ भी है। सर्व सामान्य जन उनसे भेंट कर रहे है तथा परिचित हो चुके है। अपने जीवन का सुधार कर लिया है। ब्राह्मण बनियां भोजक चारण भाट आदि तीन वर्ण के लोग पास में आये तथा उन्हें ज्ञान दिया। सभी ने हाथ जोड़कर चरणामृत यानि पाहल लिया और सतगुरु की शरण ग्रहण की थी। ऐसे गुरुदेव सम्भराथल पर आये है।1।

पूर्ण गुरु ने प्रबोधित किया अर्थात् गहरी निंद्रा में सोये हुए लोगों को जगाया तथा नीति मर्यादा का अच्छा मार्ग बताया एवं उन्हें सुमार्ग पर चलाया। सुजीवों का सोधन अर्थात् जो मुमुक्षु जन थे उनको पार किया, मोक्ष मुक्ति का मार्ग दिखाया। साधारण जीवों को भी धर्म के मार्ग पर लगाया। ऐसा मार्ग दिखा करके महान परोपकार का कार्य किया। इस अवतार में विशेष रूप से जाटों पर महान कृपा की है। बड़े-बड़े मूर्ख अहंकारी जाटों को परास्त किया

जो सदा ही कलह क्रोध में रचे पचे थे। ऐसे अड़क अज्ञानी नरों को परचाया उन्हें सन्मार्ग में लाया यही उन्हें जागृत करना था, सुमार्ग में लाना था।2।

हमारा पूर्ण भाग्य उदय हुआ था इसलिये सतगुरु यहां इस मरूभूमि में आये। सम्भराथल पर सतगुरु आये है। आदि अनादि का सत्य वैदिक मार्ग हमें भूले भटके लोगों को बताया। कृपा करके यहां पर इस भले कार्य के लिये आना हुआ। ऐसी देव ने महान अनुकम्पा की जो हमारे लिये प्रेम से पूर्ण होकर यहां पर अतिशीघ्र से दौड़कर आये। हम तो भवसागर में डूब ही रहे थे। डूबते हुए हम लोगों को बचा लिया। अन्य गुरु जो लोगों को भ्रम में डालते है, पाखण्डी है, सत्य मार्ग से दूर है ऐसे कौवे जैसे है किन्तु हमारे गुरु तो हंस जैसे है जो विवेक द्वारा दूध का दूध और पानी का पानी कर देते है। इस प्रकार से दोनों में अन्तर है। परम गुरु संसार में आये है। भाग्य ही महान था इसलिये अति निकट सम्भराथल पर आकर प्रगट हुए है।3।

गुरु ने हमें मोक्ष का मार्ग बता दिया है। हम तो कई जन्मों से भूले हुए संसार में भटक रहे थे। देवाधिदेव विष्णु ने ही हमारे से प्रेम किया है। इस समय जैसा हम चाहते है, हमारी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण हो जायेगी। इच्छानुसार कार्य पूर्ण होगा तथा पूर्व जन्म के किये हुए पाप जमा पड़े होंगे तो उनका हरण करके मिटा देंगे। भक्तों की शुद्ध भावना के अनुकूल ही कलयुग में स्वयं आकर भक्तों से भेंट की है। श्री देव पींपासर में प्रगट हुए है जिसे भी देव अच्छे लगे वे जाकर भेंट करें। लोहट के घर पर अवतार लेकर मोक्ष का मार्ग बताया है। हम तो जन्म जन्मान्तरों से संसार में भटक रहे थे।4।

सतगुरु ने हमें कृत्य कृत्य कर दिया। अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचा दिया, पाप करते हुए हम लोगों को निवृत कर दिया। सत त्रेता की मर्यादा पर हमें चला दिया। अनुपम बिश्नोई पन्थ की स्थापना कर दी है। गुरु ने ज्ञान से सभी को पवित्र किया है। हे बिश्नोइयों! आप लोग विष्णु का जप करो। वही विष्णु ही स्वयंभू है, उन्हीं का ध्यान करो, शील व्रत का पालन करो, नित्य ही स्नान करो, नीति मर्यादा पर चलो, हक की कमाई की आशा रखो। किसी से बेहक की छीना झपटी न करो। हरजी विनती करते हुए कहते है कि सतगुरु ने हमें अत्यन्त निहाल कर दिया, आनन्दमय कर दिया। पाप करते हुए लोगों को रोक दिया।5।

साखी छन्दां की-113

महिपत मछ अवतार, संखासुर संतापियो।
जन्म हुवो तिण बार, जल में जाय बुहावियो।
जल में जाय बुहावियो नै, माता भयी सधीर।
संखावती सहेलिया साथै, गई जल भर तीर।
दीठो मच्छ रमंतो रेती, काढ़ लियो कर धार।
सूक्ष्म रूप धरयो करूणानिधि, महिपत मछ अवतार।
संखासुर संतापियो।1।
कच्छ रूपी किरतार, मलमद कीचक नै हन्यो।
बैठो संमद मंझार, वेद लिया ब्रह्मा तणो।
वेद लिया ब्रह्मा तणो नै, बैठो समंद मंझार।
रीता हाथा जगदगुरु, हरि से करी पुकार।
वासग नेतो मेर मथाणी, कर कर सांई सार।
इण विध रूप रच्यो मैंणावत, कच्छ रूपी करतार।
मलमद कीचक नै हन्यो।2।
धर वाराह अवतार, मुरदाणु हरि मारियो।
डाढ़ा दई पसार, सारो साथ सिंघारियो।
सगलो साथ सिंघारियो नै, पापी किया पहमाल।
मुख में रोल रवै ज्यूं राख्या, डाढ़ा बीच दयाल।
अपणां संत उबारिया, सही सिरजण हार।
पुष्कर तीर्थ प्रगट कियो, धर वाराह अवतार।
मुरदाणूं हरि मारियो।3।
बाबै धारयो नरसिंह रूप, पत राखी पहलाद की।
छूट गयी करतूत, आवाज सुणी सिंघ साध की।
आवाज सुणी सिंघ साध की नै, भाज गयो अहंकार।
दाणू भाग्यो डरपा लाग्यो, कर पकड़यो करतार।
किया पावै आपका, खाड खिंणता कूप।
हरजी संता कारणै, बाबै धारयो नरसिंह रूप।
पत राखी पहलाद की।4।

भावार्थ-महीपति भगवान विष्णु ने ही मछली का अवतार धारण

किया। अवतार लेकर संखासुर दैत्य का विनाश किया। मच्छ का जब जन्म हुआ तो प्रभु की माता संखावती पहचान नहीं सकी और जल में ले जाकर बुहा दिया। प्रभु की माया ही बलवान है उसे कौन जान सका है। पहले तो जल में बुहा दिया पीछे पुत्र मोह के कारण माता दुखी हो गई। अपनी सहेलियों के साथ जल भरने के लिये गयी थी वहां पर जल के किनारे मच्छ को खेलते हुए देखा और दया प्रेम के वशीभूत होकर जल से निकाल लिया। अपने पुत्र से अत्यधिक प्रेम किया। महीपति भगवान ने ऐसा ही सूक्ष्म रूप धारण किया था और संखासुर को मार करके उससे वेद लाकर ब्रह्माजी को वापिस दिया तथा प्रलयावस्था से पूर्व सत्यव्रत राजा को ज्ञान दिया, सृष्टि की वस्तुओं के बचाने का उपाय भी बतलाया और स्वयं सहायक सिद्ध हुए।1।

दूसरा अवतार कछुवे के रूप में धारण करके अहंकार के मद में मस्त कीचक को मारा था। ब्रह्माजी से वेद छीनकर समुद्र के मध्य में जाकर बैठ गया था। खाली हाथ जगद गुरु ब्रह्माजी ने जाकर हरि से पुकार की थी। तब हरि ने ही कीचक को मारा था तथा दूसरा कार्य जब देव दानवों ने मिलकर मन्थन किया था तब वासुकी नाग की रस्सी बनायी थी, सुमेरू पर्वत को मथानी बनायी थी, उस समय मथानी को रोकने के लिये कछुवे का रूप धारण करके भगवान ने ही अपनी पीठ लगायी थी। इस प्रकार द्वितीय अवतार ने देव दानव मानव तथा ब्रह्माजी का कार्य पूर्ण किया था।2।

तीसरा अवतार भगवान ने वाराह का धारण किया था। तथा मुर नाम के दैत्य को मारा था। अपनी दाढ़ों को फैला दी तथा मुर दैत्य सहित सभी दानवों को मार गिराया था। पापियों को मारकर धरती को पवित्र किया था। दूसरा कार्य भी हिरण्याक्ष दैत्य को मार करके धरती को जल से बाहर निकाला था। सम्पूर्ण धरती को इस प्रकार से धारण किया। जिस प्रकार से एक मिट्‌टी के कण को मुख में धारण कर लेते है। अपने संतों की रक्षा की थी। पुष्कर तीर्थ प्रगट किया। इस प्रकार से बाराह अवतार धारण करके भगवान ने अनेक शुभ कार्य किये।3।

चतुर्थ अवतार भगवान विष्णु ने नृसिंह का धारण किया। प्रहलाद की प्रतीज्ञा पूर्ण करते हुए रक्षा की थी। उस समय नृसिंह की दहाड़ हिरण्यकश्यपु ने सुनी तो अपनी सम्पूर्ण करतूत भूल गया। ऐसी भयंकर आवाज सुनते ही अहंकार निवृत हो गया। भगवान नृसिंह को देखा तो वह वहां

से भागने लगा था। तुरन्त नृसिंह ने हिरण्यकश्यपू का हाथ पकड़ लिया और अपने नाखुनों से चीर डाला। अपने किये हुए कर्म तो स्वयं ही भोगा है। यदि कूवा स्वयं ही खोदोगे तो उसमें कोई दूसरा क्यों पड़ेगा। हरजी कहते है कि संतों के लिये भगवान ने नृसिंह रूप धारण किया था और प्रहलाद की रक्षा की थी।4।

साखी छन्दां की-114

राजा बलि के द्वार, जांचण आयो नरहरि।
बावन रूप मुरार, तीन पैंड वसुधा करी।
तीन पैण्ड वसुधा करी नै, लीन्ही देह बधार।
भूप कहै सुंण देवता, मापो पीठ हमार।
आया था हरि बलि छलन को, आप गये हरि हार।
चार महीने तापसी नै, राजा बलि के द्वार।
जांचण आयो नरहरि।1।
सहसां अर्जुन आय, कामधेनु हड़ ले गयो।
जमदग्नि रैण का माय, दोनों ने दुख दे गयो।
दोनों ने दुख दे गयो नै, पुत्र हेत पुकार।
कीवी माता रैण का नै, कान पड़ी भणंकार।
उठियो पुरूष ध्यान तज नै, लीन्हो धनुष उठाय।
एक बाण सो मारियो, सहंसा अर्जुन आय।
कामधेनु हड़ ले गयो।2।
सोलह सहस्र चौक, रावण के घर स्त्री।
राज गयो निरवंश, राम तणी सीता हड़ी।
राम तणी सीता हड़ी नै, आण पहुंतो अंत।
लंका तोड़ी कंध मरोड़ी, महा बली हणुमंत।
इक लख पुत्र सवा लख नाती, रवि किरणा में हंस।
पाट सिरै मंदोदरी, सोलह सहस्र चौक।
रावण के घर स्त्री।3।
परवाड़ा अनेक, किसन देव किया घणां।
महा दुष्ट कंस एक, पकड़ पिछाड़ियो आंगणां।
पकड़ पिछाड़ियो आंगणां नै, बला जे कारी बाल।

टांग पकड़ अरू ठरड़ियो, अजहूं कहै कंस खाल।
उग्रसेन को राज तिलक दियो, रही भक्तां की टेक।
मथुरा पूरी बधावणां, परवाड़ा अनेक।
किसन देव किया घणां।4।
ऊंडो नीर अथाघ, जुग सारे हो तो सही।
पगे पगे पग पांय, कलयुग कीवी गुरु जम्भ ही।
कलियुग कीवी गुरु जम्भ ही, पगे पगे पगवाय।
अमृत जल से हेम भरी, हर कोई पीवण जाय।
हरजी गरजी मुक्ति का, दर्शन दो सुरराय।
जम्भ गुरु से वीणती, अब कै मोहे मिलाय।
पार उतारो गुरु देव जी।5।

भावार्थ-पांचवां रूप भगवान नें बावन रूप में धारण किया तथा राजा बलि के यहां यज्ञशाला में पहुंचे थे। बलि के पास याचक बनकर गये थे। भगवान ने बावन ही अंगुल का रूप बनाया था। बलि ने भगवान के मांगने पर तीन पैंड भूमि का दान दिया था। धरती मापने के लिये बावन रूप धारी विष्णु जब शरीर का विस्तार करने लगे तो एक पैंड से धरती को नापा दूसरे में स्वर्ग लोक को भी नाप लिया। भगवान ने कहा बलि! अब तीसरा पैर कहां रखूं? तब बलि ने सचेत होकर कहा-कि मेरी पीठ नाप लो। ज्योंहि भगवान ने पीठ पर पांव रखा त्योंहि बलि पाताल लोक में चला गया। भगवान ने अपना पैर वापिस खींचा तब बलि ने पकड़ लिया और कहा अब कहां जाओगे? अब तो मेरे पास यहीं रहो। हरि गये थे बलि को परास्त करने के लिये किन्तु हरि स्वयं ही हार गये। चार महीने चौमासे में अब भी राजा बलि के यहां पर भगवान निवास करते है। बाकी महीनों के लिये लक्ष्मी के पास वैकुण्ठं में निवास करते है। ऐसी हरि ने याचना की थी।1।

छठा अवतार हरि ने परशुराम के रूप में धारण किया था। माता रेणुका एवं पिता जमदग्नि के पास से कीर्तवीर्य सहस्राबाहु अर्जुन कामधेनु हरण करके ले गया था। जब परशुराम जी के माता-पिता दोनों ही दुखी हो गये तो महेन्द्र पर्वत पर तपस्या में लीन अपने पुत्र परशुराम को याद किया तब परशुराम ने आकर सहस्रार्जुन सहित सभी क्षत्रियों का विनाश कर दिया था। अपनी ध्यानावस्था को त्यागकर परशुराम ने इकीस बार क्षत्रियों का नाश

किया था। ऐसे परशुराम के रूप में हरि विष्णु ही थे।2।

सातवां अवतार हरि ने राम के रूप में लिया था। लंकापति रावण को मारने के लिये ही यह अवतार विशेष रूप से हुआ था। रावण की लंका में सोलह सहस्र स्त्रियां थी जो सुन्दरियां थी। फिर भी अपने राज्य का तथा कुल का विनाश करने के लिये सीता का हरण किया था। सीता हरण का अर्थ था कि रावण का अन्त आ गया था। राम वानरी सेना लेकर लंका में पहुंचे थे। साथ में महाबलि हनुमान थे। जिन्होनें लंका तोड़ डाली, राक्षसों के कंधे मरोड़ डाले थे। जिस रावण की लंका में एक लाख सैनिक पुत्र की भांति रावण की रक्षा करने में तत्पर थे तथा सवा लाख नाती पोते आदि सम्बन्धिगण भी थे। जिस रावण की जीवात्मा का निवास सूर्य की किरणों में था। नाभि देश में जीव रहता था जहां अमृत कुण्ड में अमृत पान करता था जिसके बल पर रावण मरता नहीं था। जिस रावण के यहां शिरोमणी रानी मंदोदरी थी। इतना होते हुए भी रावण की रक्षा नहीं कर सकी। सभी कुछ व्यर्थ में ही चला गया। वही रावण राम लक्ष्मण के हाथों मारा गया।3।

आठवां अवतार श्री हरि ने कृष्ण के रूप में धारण किया था। कृष्ण ने अवतार लेकर अनेकों विचित्र कार्य किये थे। महादुष्ट कंश को राज गद्दी से खींचकर आंगन में पटक दिया था और उसे मार डाला था। जहां पर टांग पकड़कर नीचे घसीटा था वहां पर अब भी खाल-निशान पड़ा हुआ है। जिसे कंस खाल कहा जाता है। अपने नाना उग्रसेन को राज सिंहासन पर बैठाकर राजतिलक दे दिया। सदा ही भक्तों की रक्षा की है। मथुरापुरी में मंगलगान होने लगा तथा बधाइयां बंटने लगी। कृष्ण देव ने तो अनेकों दिव्य चरित्र किये है कहां तक गिनाये जिनका कोई पार ही नहीं है।4।

नवें अवतार में हरि ने बुद्ध रूप धारण किया था। बुद्ध आदि नवों अवतार जो कार्य पूर्ण नहीं कर सके अर्थात् अवशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिये ही जाम्भेश्वर जी के रूप में श्री हरि आये थे। उस समय जल बहुत ही गहरा था अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति भी गहरे जल की भांति दुर्लभ ही थी। एक देश की बात नहीं सम्पूर्ण देशों की यही हालत थी। ज्ञान का अधिकार एक वर्ग विशेष तथा संस्कृत भाषा में ही प्राप्त था। यह सर्व साधारण के लिये सुलभ नहीं था। कलयुग में आकर जाम्भेश्वर जी ने वही जल यानि ज्ञान कदम कदम पर सुलभ कर दिया। अमृत जल सोने के घड़े में भरा हुआ है, सभी

कोई आकर पान करें। किसी के लिये प्रतिबन्ध एवं कठिनता नहीं है अर्थात् स्वर्ण घड़ा रूपी मातृभाषा में अमृत रूपी ज्ञान शब्दवाणी में भरा हुआ है। यह शब्दवाणी मातृभाषा में श्री गुरुदेव ने उपलब्ध करवायी है इससे प्राप्त होने वाला ज्ञान अजर अमर कर देने वाला है। हरजी विनती करते हुए कहते है कि हे गुरुदेव! मुझे तो केवल मुक्ति ही चाहिये यही मेरी परम इच्छा है। अबकी बार आप मुझे विष्णु से मिला दीजिये, जहां से वापिस जन्म मरण के चक्कर में न आना पड़े।5।

साखी छन्दां की-115

मन को बूरो स्वभाव, इनके मते न चालिये।
ये जाणै बहुत उपाय, अनेक जतन कर पालिये।
अनेक जतन कर पालिये नै, झालिये गहि बांहि।
बाहर जातो आणिये नै, काया गढ़ के मांहि।
दश दिश चौकी राखिये नै, दुष्टि जाणे दाव।
निकस जावै पवन ज्यूं, मन को बूरो स्वभाव।
इनके मते न चालिये।1।
एक शृंगी रिखराज, तप करंतो महाबलि।
मन दीन्ही सिर मांय, मोहनी रूप लियो छली।
मोहनी रूप लीयो छली नै, कियो अन्त अधीन।
गह आयो ले गांव में, दर्शन दुनिया दीन।
सेवा स्मरण हरि कथा, भूल गयो ऋषिराज।
रातो सुख संसार में, एक शृंगी ऋषिराज।
तप करंतो महाबलि।2।
सुण मन का उपकार, रावण सूं रगड़ा करी।
छेद्या लछमण कुंवार, दश मस्तक लंकेशरी।
दश मस्तक लंकेशरी नै, छिन में दियो गुड़ाय।
मन का मारा मर गयो, महाबलि अंणराय।
रावण असुरा राजवी, लंका तणों दरबार।
रूठो रावण राम सूं, सुण मन का उपकार।
रावण सूं रगड़ा करी।3।
मन के बहुत मरोड़, जाय रूठो इन्द्र आप सूं।

तिरिया चौसठ करोड़, फंसियो गोतम वाम सूं।
फंसियो गोतम वाम सूं नै, फंस र लियो सराप।
छांटो लागो सुरपति, अजहु अजो लग पाप।
मन अण होणी करै, गिणै न ठोर कुठोर।
मन सूं कदै न धीजिये, मन के बहुत मरोड़।
जाय रूठो इन्द्र वाम सूं।4।
मन की क्या परतीत, ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो।
लियो जगत गुरु जीत, रूप मोहणी कर छल्यो।
रूप मोहणी कर छल्यो नै, सही विसवा वीस।
सागी पुत्री सरस्वती नै, होय दीयो दुरशीश।
सुर नर मुनि जन देवता, सकल भया भय भीत।
जन हरजी की वीणती, मन की क्या परतीत।
ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो।5।

भावार्थ–हरजी द्वारा वर्णित अपने ढ़ंग की निराली ये दो साखियां है दोनों ही साखियों में मन की चंचलता तथा उससे होने वाले अपराधों के बारे में उदाहरण सहित समझाया है।

मन का स्वभाव प्रायः अच्छा नहीं होता है। अपना भला चाहने वाले से यही कहना है कि मन के पीछे कभी नहीं चलें। यह मन बहुत ही पैंतरा बाजी जानता है। यह मन अपनी कलाओं द्वारा रीझानें का प्रयत्न करें तब अनेक उपायों द्वारा इसे रोक कर रखें। एक साधन जब कार्य न करे तो दूसरा साधन अपनाऐं। मन की चंचलता अवश्य ही रोकिये, बाहर संसार में भटकते हुए मन की बांह पकड़कर स्थिर कीजिये। बाह्य विषयों से हटाकर मन को काया गढ़ के भीतर ही आत्मस्थ करें। दसों दरवाजों पर कड़ा पहरा रखना चाहिये यह दुष्ट मन बहुत ही तरीके जानता है, न जाने कब कौनसी चालाकी करके बाहर चला जाये। पवन की भांति अदृष्ट एवं वेगवान मन झट निकलकर चला जाता है। इसलिये मन के पीछे कभी न चलें।1।

एक शृंगि ऋषिराज वन में तपस्या करने में लीन थे। मन ने सिर पर चोट मारी यानि बुद्धि को बदल दिया। मन ने ही मोहनी रूप धारण करके छल किया। बुद्धि को मोहित कर डाला। ऋषि को अपने अधीन करके नगर में ले आया। दुनिया का दर्शन हुआ संसार के विषय भोगों का अनुभव किया

और संसार के सुखों में रच पच गया। हरि स्मरण सेवा कथा वेद पठन पाठन सभी कुछ भूल गया। ऐसे मन ने शृंगी को नचाया था।2।

मन राजा का कार्य कलाप आगे और भी देखिये। इसी मन ने ही तो रावण से रगड़ा किया था। इसी मन ने ही अपराध करवाये थे। जिस कारण से लक्ष्मण कुमार ने लंकाधीश रावण के दस मस्तक काटे थे। रावण अकेला ही नहीं, रावण का सम्पूर्ण परिवार मन के मारे ही मर गया था। मन की वजह से ही रावण राम से रूठ गया था जिसका परिणाम सर्वनाश ही हुआ था। यह मन के ही उपकार थे अन्यथा रावण स्वयं विद्वान था। उन्हें सीता हरण करने की आवश्यकता ही नहीं थी। जो मन महाबलि रावण से भी टक्कर ले सकता है, तो सामान्य जन की तो बात ही क्या कहें।3।

मन के बहुत ही मरोड़ है यानि सदा ही टेढ़ा उल्टा ही चलता है। यह मन ही तो इन्द्र से रूठ गया था। जिस कारण से इन्द्र को भी नचा दिया था। जिस इन्द्र के यहां पर चौसठ करोड़ स्त्रियां रहती है। किन्तु उन्हें छोड़कर गौतम पत्नी अहिल्या के यहां जाकर फंस गया था। गौतम ने इन्द्र को शाप दिया था। उसी शाप कलंक को अब तक नहीं धो सका है, यह मन राजा अनहोनी भी कर बैठता है। ठोर कुठोर उचित अनुचित कुछ भी नहीं देखता। मन से कभी परास्त न होवें तथा मन के बहकावे में आकर पीछे न चलें क्योंकि मन सरल साधु नहीं है। यह स्वयं इन्द्र से भी रूठ गया था और नाच नचा दिया था।4।

मन का क्या विश्वास किया जावे। यह तो स्वयं ब्रह्माजी से भी नहीं टला। उन्हें भी नचा दिया। जगतगुरु को भी मन ने हरा दिया। मोहनी रूप धारण करके मन ने ही तो उपद्रव किया था। ब्रह्माजी मन के द्वारा छले गये। अपनी पुत्री सरस्वती के ऊपर भी कुदृष्टि डाल दी, यह मन की ही करतूत थी। एक क्षण के लिये ऐसा चमत्कार मन ने ब्रह्माजी को भी दिखा दिया था। इसी मन ने ही सुर नर मुनि देवता ऋषि आदि सभी को भयभीत कर दिया। हरजी विनती करते हुए कहते है कि मन का क्या विश्वास जो ब्रह्माजी से भी नहीं टला।5।

साखी छन्दां की-116

मन सो बुरो न कोय, शिव शंकर संतापिया।
पारवती पति खोय, ध्यान अटारन थापिया।

ध्यान अटारन थापिया नै, महाबलि मन राय।
नाचण लागो डोकरो नै, कर सूं ताली लाय।
थुगिदिन थुगिदिन ओचरे, लाग रही धुन सोय।
ईश्वर देव नचाविया, मन सो बूरो न कोय।
शिव शंकर संतापिया।1।
मन बोयो बूबकशाह, लाग रहे मन मोतियां।
बड़यो लाकड़े मांय, रहि गयो मुख पोतियां।
रहि गयो मुख पोतियां नै, गयो समन्दां तीर।
माल भरयो ले कोथला नै, मुक्ता मोती हीर।
नारी आई काज कर, ओ बड़ बैठो मांह।
गल सूं बांध्या कोथला, मन बोयो बुबक शाह।
लाग रहयो मन मोतिया।2।
रथ पर बैठी नारि, मंत्र पढ़े चूड़ामणी।
नारी करै विचार, पोहर एक में जांवणो।
पोहर एक मैं जांवणो नै, घणी बीच में दूर।
आज लाज कैसे रहै, सही जे ऊगै सूर।
रथ भारी हालै नहीं, नारी करै विचार।
रथ छिटकायो समंद में, डूबर मरो गिंवार।
मंत्र पढ़े चूड़ामणी।3।
मन जाणै सब बात, जाणत ही कावल खड़ै।
कदे नहीं कुशलात, कर दीपक कूवै पड़ै।
कर दीपक कूवै पड़ै नै, गिणै नहीं परिवार।
भाइयां सूं भूंडी करै, मन मति हीण गिंवार।
आदि अन्त को चुगलियो, माय बहण लग घात।
ओ गुजरै नहीं बाप सूं, मन जांणै सब बात।
जाणत ही कावल खड़ै।4।
मन का मता अनेक, क्या जाणै जीव बापड़ो।
महा मस्त मन एक, सब सिर थापे थापड़ो।
सब सिर थापे थापड़ो नै, बापड़ो संसार।
सुर नर मुनि जन देवता, सबको करै सिंघार।

महा मस्त मानै नहीं, कही न छाड़ै टेक।
जन हरजी ऐसी कही, मन का मता अनेक।
क्या जाणै जीव बापड़ो।5।

भावार्थ-मन जैसा उद्दण्ड कोई नहीं है। मन ने ही तो शिव शंकर को संताप दिया। जब मन ने शिव पर अपना प्रभुत्व जमाया था तब पार्वती को त्याग करके अटल ध्यान में स्थित हो गये। ऐसा दिखलाया था मानों अखण्ड तपस्या में लीन हो गये है यही मन जब दूसरी तरफ मुड़ा तो शिव को भी समाधि से खड़ा कर दिया। काम देव को जलाने वाले स्वयं शिव काम के ही वशीभूत हो गये। भगवान विष्णु की त्रिगुणी माया को देखकर शिव नाचने लगे थे। माया की प्राप्ति का उद्योग प्रारम्भ कर दिया था, वह तो माया जो ठहरी शिव के हाथ लगने वाली कहां थी किन्तु शिव तो हाथों से ताली बजाते हुए ताण्डव नृत्य करते हुए माया की प्राप्ति के धुन में थे। शिव के देखते ही देखते माया तो विलीन हो चुकी थी, माया के लुप्त होते ही शिव सचेत हो चुके थे किन्तु अब तक तो ईश्वर देव काफी नृत्य कर चुके थे। ईश्वर को नचाने वाला भी मन ही था। इसलिये कहा है कि मन से बूरो न कोय।1।

मन ने ही तो बुबकशाह को भ्रमित किया था। वह बेचारा हीरे मोतियों में फंस कर मर गया था। उसकी कहानी इस प्रकार है- साह बूबक सेठ की धर्मपत्नी एवं पुत्र वधु दोनों ही किसी दूर देश अर्थात् स्वर्ग में नित्य प्रति सत्संग श्रवण करने के लिये जाया करती थी।उनके जाने का साधन एक अनघड़ लकड़ था। वह गांव के बाहर पड़ा रहता था। उसी पर बैठकर वे दोनों जाया करती थी। वे मन्त्रों द्वारा उस लकड़े को आकाश मार्ग से उड़ाकर ले जाया करती थी। रात्रि में सभी लोग सो जाते तब वे घर से बाहर निकल कर जाती थी और प्रातःकाल होने से पूर्व ही वापिस आती थी। यह उनका नित्य प्रति का क्रम था। एक दिन सेठ ने यह देख लिया कि ये दोनों रात्रि में कहां जाती है यह पता करना चाहिये। ऐसा विचार करके एक दिन उसने उनका सम्पूर्ण कार्यकलाप देखा और सभी बातें समझ गया। दूसरे दिन उसने उस लकड़े के नीचे एक खोखला बनाया और उनके आने से पूर्व ही वह सेठ बड़े-बड़े कोथले लेकर अन्दर प्रवेश करके बैठ गया। उन सास बहू को तो कुछ पता नहीं लगा वे दोनों रोज की भांति उस लकड़े पर सवार होकर चल पड़ी और जहां पर भी उन्हें जाना था वहीं पर लकड़े को छोड़कर चली गई

और सत्संग सुनने लगी। पीछे सेठ ने वहां पर हीरे जवाहारात सोने आदि के आभूषण एकत्रित करके कोथला भर करके उनके आने से पूर्व ही उस लकड़े में जाकर बैठ गया। वे दोनों सास बहू भी आकर नित्य की भांति उस पर सवार होकर चलने लगी। किन्तु आज वह वाहन रूपी लकड़ा काफी वजनदार हो गया था। चलने में परेशानी आ रही थी आज तो वह धीरे चल रहा था। उन्होनें सोचा कि आज घर जाने से पूर्व ही सूर्य उदय हो जायेगा कैसे पहुंचेगी ? उन्होनें उस वाहन रूपी लकड़ को समुद्र के बीच में ही छोड़ दिया और मंत्रों के बल से वे अपने घर समय पर पहुंच गई किन्तु वह लालची सेठ अपने ध् ान के सहित ही समुद्र में डूब कर मर गया। इस प्रकार से इस चंचल मन ने बबूकशाह को मृत्य का ग्रास बना डाला। मन नें ही तो लोभ पैदा किया था, वही लोभ ही उसकी मृत्यु का कारण बना था। वे रत्न धन किस काम आये। यह मन अनेक रूप धारण करके सामने आता है।3।

मन सभी बात जानता है, शुभ अशुभ का उसे पूरा पता है किन्तु सभी कुछ जानते हुए भी विपरीत हो जायेगा, अशुभ ही करवायेगा। मन के पीछे चलने से कभी कुशलता नहीं होगी। यह तो वैसा ही जैसे दीपक का प्रकाश करके कूवे में गिर जाता है। जिसे गिरना ही है उसके लिये प्रकाश भी क्या करे। स्वयं तो गिरता ही है और अपने साथ अपने परिवार को भी गिरा देता है। यह मन अपने ही भाइयों से झगड़ा करवा देता है यह मन मतिहीन गंवार तथा मूर्ख ही है यह मन आदि से लेकर अन्त तक दूसरों की निंदा करने में ही रस लेता है। सच्चाई तथा सद्गुणों के निकट ही नहीं जाता। दूसरों से तो चूकेगा ही क्यों ? अपनी माता-बहिन से भी नहीं चूकता उनकी भी निंदा कर देता है तथा यह मन तो अपने बाप की भी निंदा अनादर कर देता है। यह सभी बातें जानता भी है और जानते हुए भी उल्टा ही चलता है।4।

मन के अनेक विचार है वह कभी कभी किस रूप में तो कभी दूसरे रूप में सामने आता है और अपना प्रभाव जमाता है। यह बेचारा जीव क्या जाने इस मन की चालाकी को। यह मन महामस्त अद्वितीय है। यह सभी के मस्तकों पर नाचता है तथा नचाता भी है। इसके सामने सम्पूर्ण संसार बेचारा असहाय मालूम पड़ता है। यह मन ही सुर नर मुनि देवता आदि सभी का संहार कर देता है, सभी को मार देता है इसके सामने सभी बलहीन हो जाते है। यह महामस्त मन किसी की सीख नहीं मानता, अपनी प्रतिज्ञा हठ नहीं

छोड़ता। हरजी ने यह बात कही है, इस मन का अनेक विचार रूप लीला तथा रंग है। यह जीव बेचारा क्या जाने। यह तो निर्दोष है किन्तु लोग दोष तो जीव को ही देते है।5।

साखी छन्दां की-117

रे मन मूरख नहचा तूं रख, भगवत तणां भरोसा।
कीट पतंग सकल कूं पोखे, दई न दीजै दोसा।
दोस न दीजै हरि सिंवरीजै, चित बरत नटणी ज्यूं रख।
बार बार समझायो तो कूं, विसन सिंवर मन मूरख।1।
रे मन कायर भजि हरि सायर, छिलरीयां कांय सोधे।
देवी देवां धोके मूरखां, भौपा भांड परमोधे।
परमोधे भोपा मति हीणा खोपा, बैठो मूंड मुंडायर।
परपंथ करि जग समुलाणा, बात सुणी मन कायर।2।
रे मन मंगता क्यूं रातो जगता, जग में कोई न रहसी।
राजा राव अरू रंक सुरताणां, एकण मार्ग बहसी।
मारग बहसी बदिया लदसी, रोगी रहसी रगता।
भजन किया भव सागर तरसी, बात सुणी मन मंगता।3।
रे मन भंवरा ताकम जंबरा, ताको जतन जु कीजै।
कांटे वाली केतकी है, बांको रस नहीं पीजै।
रस नहीं पीजै कांनो लीजै, मत ले लाहा लबरा।
जन हरजी जे हरि कूं सिंवरे, तो उधरे मन भंवरा।4।

भावार्थ-रे मन मूर्ख! तूं बार-बार मूर्खता क्यों करता है धैर्य धारण कर। भगवान पर भरोसा भी रखो। जो पूर्ण परमात्मा है वह सभी कीट पतंगों से लेकर आदमी तक का पालन पोषण करने वाला है वह तुम्हारी रक्षा करेगा। यदि कभी कोई कार्य सम्पूर्ण नहीं हो पाता है तो देव को दोष मत दें। वह तो तुम्हारे परिश्रम में ही कहीं भूल होगी। इसलिये व्यर्थ में किसी अन्य को दोष न दें, हरि का स्मरण भजन करें। अपनी चित वृति को एकाग्र करें जिस प्रकार नटणी रस्से पर चलते समय अपनी दृष्टि एकाग्र करके रस्से पर ही टिका देती है इसलिये बिना किसी सहारे के रस्से पर चल लेती है। ऐसे ही चितवृति एकाग्र होनी चाहिये। रे मन मूर्ख! मैंनें तुझे बार-बार यही समझाया कि तूं विष्णु का ध्यान स्मरण कर।1।

रे मन! तूं कायर है। हरि के भजन से दूर भागता है। सावधान होकर हरि का भजन करें। छिलरीये में हरि कहां मिलते है यहां संसार के विषय भोगों में आनन्द कहां ढूंढ़ता है। रे मूर्ख! क्षुद्र देवी देवताओं तथा भूत प्रेतों को धोक लगाता है और पण्डों भाण्डों को प्रसन्न करता है उन्हें चढ़ावा चढ़ाता है वे तुम्हारा क्या भला कर देंगे। जो स्वयं मरकर प्रेत बन गये है या जीवित ही दुखी है वे तुम्हें सुख कहां से दे देंगे। भोपों को जगाता है उनसे मांगता है तो बुद्धिहीन बैल की तरह ही है। वे तो स्वयं ही दुखी होकर सिर मुंडा कर बैठ गये है उनके पास सुख कहां रखा है। ये भोपे लोग तो अनेकों पाखण्ड करके जगत को भ्रम में डालते है। वहां क्या मिलेगा। इसलिये मेरी बात को सुन तथा धारण कर।2।

रे मन! तूं क्यूं मांगता है यानि भिखारी बनता है। रात्रि में जागकर के जागरण करता है फिर क्षुद्र देवताओं से मांगता है। वहां कुछ भी नहीं मिलेगा। और न ही जगत की कोई वस्तु स्थिर ही रह सकी है। राजा राव रंक सभी एक ही मार्ग से जायेंगे। मृत्यु छोटे बड़े सभी को ग्रसित कर लेगी। सभी उसी मार्ग से चलेंगे तथा अपने कर्मों का हिसाब किताब लाद कर ले जायेंगे। इस परंपरा से कोई नहीं बच पायेगा। जो हरि का भजन करेगा वह भवसागर से पार उतर जायेगा। हे मंगते मेरा मन! इस बात पर विश्वास करके सन्मार्ग पर लग जाओ।3।

रे मन! तूं भंवरे की भांति अनेक पुष्पों पर बैठकर रस ग्रहण करता है। तेरी ताकत महान है किन्तु मृत्यु के सामने तेरी ताकत मंद पड़ जायेगी। उस मृत्यु के ग्रास से बचने की कोशिश करनी चाहिये। यह संसार तथा विषय भोग तो कांटे वाली केतकी के फूल है। इसका रस ग्रहण करने के लिये उतना उतावला न हो क्योंकि इस चक्कर में कांटे चुभ जायेंगे। इस प्रकार के रस से दूर रहना ठीक होगा। ऐसे सुख से भी क्या लाभ जिसके पीछे दुख आ रहा हो। रे भंवरा! हरजी कहते है कि यदि हरि का स्मरण करेगा तो जन्म मृत्यु से बच जायेगा अन्यथा भटकेगा।4।

साखी छन्दां की-118

फिटि रे नर फिटि फीटो फिरै, थूल सूं जाय करि प्रीति जोड़ै।
पति कूं छाड़ि कर प्रीत औरां करै, जाण तो जड़ नर सीस फोड़ै।
अपणो बाप तजि बाप औरा कहै, वरणसंकर हूं फिरै सारै।

दास हरजी सरम कैसे रहै, धूड़ि मुंहि धूड़ी मूंहि थारै।1।
आव रे आव नर ओट हरि आपकी, आन की ओट सूं चोट खाये।
भूत अरू प्रेत तजि भाजि सांचो धणी, जम्भगुरु याद कर मुक्ति पावै।
साच अरू शील संतोष हृदय धरो, कूड़ अरू कपट सूं काम कांई।
दास हरजी कहै लाज तबही रहै, याद करि याद सांई।2।
जागी रे नर जागी विरिया थई, नींद सूं नेह क्यूं करै भाई।
रात अरू दिन में आणि जम घेरसी, मात अरू तात सूं सरैन कांई।
जीव जोखे पड़े सास हिचकी अड़ै, सैन ही सैन समझाय हारयो।
दास हरजी कहै जीव वांसै रहै, धीग सूं धको कांय मारयो।3।
चेत रे नर चेत तासूं कही, बार बार ही समझाय थाका।
तै नहीं एक धरी चित भीतर, कहत सुनत मांही पिंजर पाका।
जत अरू सत की पाज मैटे मती, सिद्ध अरू साध सब साख गावै।
दास हरजी कहै दिढ़ कैसे रहै, जांणतो नर जहर खावै।4।
जांहि रे नर जांहि जग जोवता, राव अरू रंक उठि लागा।
ऊंच अरू नीच को आंतरो नांहि, एक ही पंथ सब जाहि भागा।
जम की झपट सूं कपट रहता नाहि, लपट है जीव डर वाट लागा।
दास हरजी कहै आज दीयो लहै, लछि वांसै रही जाहि नागा।5।

भावार्थ–हे नर! तुझे धिक्कार है, बारंबार धिक्कार है। फिर भी जीता है, स्थूल दुष्टों से जाकर प्रेम सम्बन्ध जोड़ता है। अपने स्वामी को छोड़कर अन्य भूत प्रेतों से जाकर सम्बन्ध जोड़ता है। जानकर भी अनजान की भांति क्यों सिर फोड़ता है। अपने पिता को छोड़कर अन्य को पिता कहता है। वर्ण शंकर होकर क्यों भटकता है। दास हरजी कहते है कि इस प्रकार शर्म कैसे रहेगी, तुम्हारे मुख में धूड़–रेत है।1।

हे नर! तूं हरि की शरण में आ जा। हरि ही तुम्हारे स्वामी है। अन्य शुद्र देवता की ओट से चोट खा जायेगा। भूत और प्रेतों को छोड़कर हरि का भजन करें। गुरु जाम्भोजी को याद करेगा तो सच्ची भक्ति की प्राप्ति होगी जिससे मुक्ति मिलेगी। सत्य शील संतोष को हृदय में धारण करो। झूठ कपट से आपको क्या लेना देना है। दास हरजी कहते है कि लज्जा तो तब ही रहेगी जब हरि को याद करेगा, बारंबार याद करेगा।2।

हे नर जाग जाओ! प्रभात हो गया है। नींद से प्यार क्यों करता है।

रात्रि या दिन में कभी यम के दूत आकर घेर लेंगे उस समय माता-पिता भाई बन्धु कोई सहायक नहीं होंगे। जीव विपति में पड़ जायेगा, श्वांस अटक जायेगी, हिचकियां आने लग जायेगी, ये इशारे दिये जा रहे है परन्तु फिर भी सचेत नहीं हो सकेगा। दास हरजी कहते है कि जीव वहां परमात्मा के धाम यानि अपने सच्चे घर से वंचित रह जाता है। उस मालिक से जोर जबरदस्ती कहां चलती है।3।

रे नर सचेत हो जा! बार-बार यही कहा जा रहा है कि सचेत हो जा ऐसा समझाते हुए मैं थक गया हूं। तुमनें अब तक एक बात भी सुनकर धारण नहीं की है। कहते सुनते यह पिंजर रूपी शरीर थक चुका है। जाति तथा सतीपनें की मर्यादा न मिटे। इस बात को सिद्ध तथा साधु सभी कहते आ रहे है। हरजी दास कहते है कि दृढ़ता कैसे रहेगी यदि जानकर भी नर जहर को खाता है।4।

रे नर अब जाने की तैयारी करो। अब तुम्हारे प्रयाण का समय आ चुका है। संसार तुम्हारी तरफ देख रहा है। बड़े-बड़े राजा रंक यहां से चले गये, अपने मार्ग पर लग गये, वहां ऊंच और नीच का कोई फर्क नहीं है। सभी के लिये जाने का मार्ग तो एक ही है। यह इस लोक का भेदभाव आगे नहीं चलेगा। जब यम के दूतों की झपट लगेगी तो कपट नहीं कर पायेगा। यह जीव सीधा सरल होकर अपने मार्ग पर लग जायेगा। दास हरजी कहते है कि यहां पर दिया हुआ ही आगे मिलेगा। यह धन दौलत पीछे यहीं रह जायेगा, वहां तो बिल्कुल नंगा जाना पड़ेगा।5।

साखी दोहे-119

देव तणी परमोध में, कसवैं समो न कोय।
सेंसो तो सारा सिरै, अरू स्वर्गा में होय।1।
अरज करूं गुरुदेव जी, और न करसी कोय।
म्हां समान कोई मानवी, जग मां देख्यो न लोय।2।
सैंसो तो सतगुरु सूं कहै, मांगे सीख जमात।
घर आया नै दीजिये, सुण सैंसा आ बात।3।
जोखाणी जोखो घणों, सुण ले साची सीख।
घर आया नै दीजिये, भाव भले सूं भीख।4।
बार बार म्हांसो कही, एक बात सौ बार।

मेरे घर को जगत् गुरू, जाणें सब संसार।5।
आंजस कर सैंसे कही, दइय न आई दाय।
सतगुरू आप पधारिया, पत्री लई उठाय।6।
अवाज करी हरि आवंता, हाजर है सो लाव।
सतगुरू उभा आंगणें, देखण आया भाव।7।
नारी सारी आंगणें, बैठी जोड़या थाट।
भीख न घातै भाव सूं, ऊभा जोवे बाट।8।
लैणायत ज्यूं क्यूं खड़्यो, समझायो सौ बार।
कह्यो न मानें श्यामियो, हैं तो बड़ो गिंवार।9।
जर झाली ठमको दियो, नारी कियो जोर।
भनाय चल्या घर आपणें, पत्री केरी कोर।10।
परभाते सैंसो आवियो, देव तणै दीवाण।
सुण सैंसा सतगुरू कह, ऐ सहनाण पिछाण।11।
एह पटंतरा सांभलो, सैंसो गयो सरमाय।
आंख भींच भूं में पड़्यो, धरती में रहूं समाय।12।
मूंधे मूंडै पड़ रहयो सांभल सकै न जोय।
इण खूंदी खूंद किया घणां, अरज करो मत कोय।13।
साथरिया कह श्याम सूं, अरज सुणो सुरराय।
जे थे छोड़ो हाथ सूं, जड़ा मूल सूं जाय।14।
उठ सैंसा सतगुरू कहै, गर्व न करो लिंगार।
जन हरजी ऐसे कहै, सांच बड़ो संसार।15।

भावार्थ-एक बार गुरु जाम्भेश्वरजी अपनी शिष्य मण्डली सहित भ्रमणार्थ प्रस्थान किया था। एक रात्रि जांगलू की साथरी में निवास करते हुए दूसरी रात्रि नाथुसर के पास झींझाले धोरे पर निवास किया था। वहीं प्रात:काल नाथुसर का सैंसा भक्त जो कस्वां गोत्र का था वह भी अपने मित्र सम्बन्धियों सहित दर्शनार्थ झींझाले आया था। आगे साखी में बतलाया है-

देव जाम्भोजी के दरबार में सैंसोजी आये थे। उनके जैसा अन्य भक्त और नहीं था। सैंसो तो शिरोमणि भक्त था। सैंसे की जाम्भोजी ने स्वयं भूरि-भूरि प्रशंसा भी की थी। यह भी कहा था कि यह भक्त निश्चित ही स्वर्ग का अधिकारी है।1। गुरु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर सैंसे ने भी यही कहा

कि हे देव! मैं आपसे विनती कर रहा हूं ऐसी विनती प्रार्थना जप अन्य कोई नहीं कर सकता। वास्तव में मेरे जैसा मानव और कोई नहीं होगा।2। सत्संग पूर्ण हुआ संध्या बेला हो गई सभी ने अपने अपने घरों को जाने की आज्ञा मांगी तथा सैंसे ने भी हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा कि हे देव! मुझे क्या आज्ञा है? गुरुदेव ने कहा कि घर आये हुए सुभ्यागत का आदर सत्कार करना यही तुम्हारे लिये आज्ञा है।3। हे जोखाणी! इसी बात की तुम्हारे घर पर कमी है। इसकी पूर्ति करना ही सच्ची शिक्षा है।4। सैंसे ने कहा-हे देव! एक ही बात यह आप मुझे बार-बार क्यों कहते हो। मेरे घर को तो सम्पूर्ण संसार जानता है। मैं घर आये हुए सुभ्यागत का सत्कार तन मन धन से करता हूं।5। यह बात सैंसे ने बड़े ही अहंकार से कही थी। देवजी को अच्छी नहीं लगी थी। ऐसी गर्व पूर्ण वार्ता कहकर सैंसा तो अपने घर चला गया। पीछे-पीछे श्रीदेवजी ने अपनी पत्री उठा ली और वेश बदल लिया और सहसा सैंसे के घर पर पहुंच गये।6। घर में पहुंचते ही हरि ने भिक्षा के लिये उच्च स्वर से आवाज लगाई और कहा कि जो भी भोजन है वह लाकर देवें। ऐसा कहते हुए दरवाजे पर खड़े हो गये। सैंसा का भाव देख रहे थे अभी-अभी अपनी बड़ाई करके आया है, इसके अहंकार का खंडन करना चाहिये।7। घर की सभी छोटी-बड़ी महिलाऐं बैठी बातें कर रही थी। कोई भिक्षुक आया है, इस बात की उन्हें कुछ भी परवाह नहीं है। इसलिये भिक्षा नहीं दे रही है। देवजी खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे है।8। एक प्रधान नारी ने यह कहते हुए नाराजगी प्रगट की कि ऐसे खड़ा हुआ क्या देख रहा है मानों कर्जदार कोई कर्जा मांगने आया है। इसे कितनी बार समझाया है किन्तु यह मानता ही नहीं है। सैकड़ों बार इसे यहां से जानें के लिये कहा किन्तु यह बड़ा ही हठीला है मानता ही नहीं है न जानें यह कैसा स्वामी फकीर है। यह तो निपट मूर्ख गंवार मालूम पड़ता है।9। अन्त में जब वहां से नहीं हटे तब हार करके कड़सी-जरिये में बची खुची ठंडी बासी खिचड़ी लेकर आयी और उन्हें देने लगी किन्तु वह तो कड़सी के चिपट गई थी छूट नहीं रही थी। उसे छुटाने के लिये जोर से पत्री पर चोट मारी तब पत्री एक तरफ से खण्डित हो गई। इस प्रकार से खण्डित पत्री और बासी भोजन लेकर चल पड़े।10। चलते हुए यह सवाल भी किया कि रात्रि में सर्दी अधिक है इसलिये ओढ़ने के लिये वस्त्र भी दीजिये इस सवाल को सुनकर एक फटा पुराना गूदड़ा पकड़ा दिया और वहां से रवाना

कर दिया। दूसरे दिन प्रातः काल ही सैंसा अपनी मण्डली सहित वहां झींझाले पर पहुंच गया और वहीं पर दान की वार्ता चली तब सैंसे ने बड़े ही गर्व के साथ कहा कि मैं दान देता हूं। मेरे घर को सारा संसार जानता है। तब गुरुदेव नें सैंसे के घर पर टूटा हुआ पात्र एवं भिक्षा का अन्न दिखाया और कहा कि यही तेरे घर की भिक्षा एवं फटा मैला वस्त्र है। इसकी पहचान कर ले।11। ये दोनों वस्तुऐं अपने ही घर की देखकर सैंसा शर्मिंदा हो गया। आंखें बन्द कर ली और भूमि पर उल्टे मूंह गिर पड़ा। विलाप करते हुए कहने लगा–इस समय यदि धरती फट जाती तो अन्दर समा जाता।12। सैंसा मूंधे मुंह पड़ा रहा सामनें भी नहीं देख सका। कहने लगा–यह सैंसा हत्यारा है ऐसी हत्याऐं न जानें मैनें कितनी की है। हे लोगों! श्री देव जी से मुझे क्षमा करने के लिये प्रार्थना न करो। मैं प्रार्थना करने के तथा क्षमा करने के योग्य भी नहीं हूं।13। फिर भी साथियों ने श्री देव से प्रार्थना करते हुए कहा–कि हमारी अर्ज सुनो। यदि आपने इस समय सैंसे को नहीं सम्भाला तो यह जड़ मूल से ही समाप्त हो जायेगा। इसलिये इस दीन पर कृपा करो।14। तब गुरुदेव ने कहा सैंसा! खड़े हो जाओ। किन्तु फिर कभी इस प्रकार का अहंकार नहीं करना। हरजी कहते है कि संसार में सत्य ही बड़ा है। इस प्रकार से सैंसे के अहंकार को मिटाया था। वह खण्डित भिक्षा पात्र अब भी जांगलू के मन्दिर में रखा हुआ है। इस समय भी गुरुदेव को भिक्षा के रूप में उस पात्र को घी से भरते है।15।

साखी–120 (अज्ञात कवि कृत)

उतर दिसा दोय मोमीण आया, घर पुछावै रूड़ै साध को।
ऊचौ मरवौ बारि बिजौरौ जी, औ घर रूड़ै साध को।1।
पुछत पुछत साधु जण आया, हेत करि मिली सती आमैणी।
मन्यसा भोजन इम्रत मेवा, प्रीत का पीलंग बीछाइया।2।
कांय थार मावल्ययाइ कांय थार प्रीत्रयाइ, आज अंबेला पाहणा।
नां म्हार पीतरेयाइ ना म्हार मावल्ययाइ, साध मोमीण आया पाहणां।3।
लेह न पड़ोसण पांवरी हे पायल, म्हारी तो सासु आगल्य मत कह।
थांहरी तो पायल थेइज पहरोजी, म्हारी तो अलवी बंहनड़ ना रह।4।
लेह नै पाड़ोसैण्य हाथ रो मुंदड़ो, म्हारा तौ छंदा बैनड़ तो रह।
थांरो मुंदड़ो थेइज पहरो जी, म्हारी नीमाणी बैहैनड़ न रह।5।

लेह नै पाड़ोसण्य सीसरी हे चुंदड़ी, म्हारा तौ छंदा बैहनड़ छायले।
थांहरी तो चुंदड़ी थेइज ओढ़ौ जी, म्हारी नीसरमी बैहनड़ नै रह।6।
लेह न पाड़ोसण्य गल रो हेवाललो, म्हारी वड़ेरी आगल मत कहो।
थांहरो वाल लो थेइज राखौ जी, म्हारी तजो अलवी बहैनड़ न रह।7।
नै जाणौ चोर थानै जांणै साध था, तारा रै उगैण्य दोय जंण मोकल्या।
काला बलदां पुता वहल्य जुपाड़ो जी, घरा नी कालौ बहु आमैणी।8।
आवेलो बेटो कड़ीया लीयो जी, नीबोवल गायौ सती आगली।
नीबलो बेटो भूखो हुवो जी, खोखा खीरि धरती पड़या।9।
आंबेलो बेटो तीसायो हुवोजी, सुका सर पांणी छल्या।
माया हुति सातो कोयला हुइ जी, रीध्य सीध्य लेगी बहु आमैणी।10।
धोला बलदां पुता वहल्य जुपाड़ोजी, पाछी लेयावौ बहु आमैणी।
धरती माता वेहारज दीन्हौ जी, धरा समाणी सती आंमैणी।11।
सुरगापुर मां हुई बधाई, सरग्य पहंती सती आंमैणी।
जिसौ कमावै तिसो फल पावै, कुमाई लहै छै आपो आपणी।12।

अज्ञात कवि द्वारा रचित यह साखी है। इसमें किसी घर की बहु जो ''अड़सठ तीर्थ एक सुभ्यागत घर आये नै आदरियो'' की उक्ति को चरितार्थ कर रही है। उतर दिशा से दो भगवान के भक्त भ्रमण करते हुए किसी गांव में पहुंचे थे। वहां पर सूर्य अस्त हो जाने से रात्रि विश्राम करने के लिये किसी भगवान के प्यारे भक्त का घर पूछा था। किसी पड़ोसी ने भक्त का घर बताते हुए कहा कि जिस घर में ऊंचा मकान दिखाई देता है कमरों की खिड़कियां और मरवों आदि का पेड़ पौधे दिखाते हुए कहा कि वहीं चले जाओ।1।

इस प्रकार पूछते हुए साधु जनों ने उस घर में प्रवेश किया तो आगे घर की लक्ष्मी बहु थी उन्होनें आये हुए सुभ्यागतों का आदर सत्कार किया और प्रेम से ''आओ जी बैठो पीयो पाणी'' द्वारा स्वागत किया। बैठने के लिये प्रेम से पलंग बिछाया और मनसा भोजन बनाया तथा उनको प्रेम से भोजन कराया।2।

घर में आये हुए अतिथि को देखकर पड़ोसण दौड़ी-दौड़ी आयी और पूछने लगी कि ये तुम्हारे घर पर कौन आये है क्या तुम्हारे पीहर से आये है या नाना दादा के यहां से आये है। तुम्हारे ये मेहमान पाहुंणो क्या लगते है जो इनकी इतनी सेवा कर रही है। उस घर की लक्ष्मी बहु ने कहा कि ये तो हमारे

घर पर साधु भक्त आये है। जाभोजी ने कहा कि "जां जां आव नै वेसूं, तां तां सुरग नै जैसूं" घर में आये हुए सुभ्यागत का आदर करने के लिये कहा है वही मैं कर रही हूं। हे बहन! यह बात मेरी सासू से नहीं कहना क्योंकि सासूजी को ऐसे संस्कार नहीं है वे नाराज होगी।

हे बहन! यह बात सासू से नहीं कहना यदि इनके बदले में यदि तूं कहे तो मैं अपने पैरों की पायल तुम्हें दे सकती हूं। वह पड़ोसण कहने लगी तुम्हारी पायल तो बहन तूं ही पहनो। यह मेरी अनाड़ी जीभ बिना कहे तो नहीं रह सकती। फिर वह कहने लगी हे बहन! यह मेरे हाथ की मूंदड़ी-अंगुठी ले ले मेरी सासू को नहीं कहना। पड़ोसण कहने लगी-यह तुम्हारे हाथ की अंगुठी तूं ही पहनो यह मेरी नीमाड़ी जीभ बिना कहे तो नहीं रह सकती। फिर कहने लगी हे बहन! यह मेरे सिर की चुनरी ले लो। किन्तु सासू से मत कहना। पड़ोसण बोली। हे बहन यह सिर की चुंदड़ी तुम ही ओढ़ो यह मेरी निशरमी जीभ बिना कहे तो नहीं रह सकती।

हे पड़ोसण बहन! यह मेरे गले का हार ले लो किन्तु सासू से नहीं कहना। पड़ोसण कहने लगी-यह गले का हार तुम ही पहनो यह मेरी दुष्ट जिभ्या बोले बिना नहीं रह सकती। मैं यह नहीं जानती कि ये दोनों रात्रि के तारा दिखने के समय प्रवेश किया था जो चोर है या साधु है। यह बात छुपाये छुप नहीं सकती।

उसी समय सासूजी घर आ गई और कहने लगी कि इस बहू को काले बैलों की गाड़ी जोड़कर उन पर बिठाकर घर से बाहर निकाला जाये। यह बहू इस प्रकार से तो घर को बर्बाद कर देगी। मां का बेटा उस बहू का पति खेत से घास लकड़ी आदि लेकर आ रहा था। सती के पुण्य से घर आते हुए भूख लगी तब खेजड़ियों के खोखा गिरकर धरती पर गिर पड़े और उनसे भूख मिटाई। जब प्यास लगी तब सूखे तालाब भी पानी से भर गये। स्वच्छ जलपान किया। सती बहु घर से बाहर जहां पर भी जा रही थी वहीं पर सूखी खेती हरीभरी हो रही थी किन्तु घर में पड़ी हुई माया-धन जलकर कोयला हो गया। घर से पुण्य बाहर चला गया था पाप ने घर में पसारा किया था जिससे सभी कुछ जलकर भष्म हो गया था। इसलिये कहा है कि पुण्य को घर में पांगला करके रखो कहीं घर से बाहर न निकल जाये।

यह सभी कुछ देखकर सासू ने कहा कि यह बहु तो हमारे घर की

लक्ष्मी थी इसे सफेद बैलों की गाड़ी जोड़कर उस पर बिठाकर वापिस आदर सहित बुला लाओ। इसने मेरी आंखें खोल दी है। किन्तु वह सती बहु वहीं वन में ही धरती फट गई और अन्दर समा गई और स्वर्ग पहुंच गई। जैसी कमाई करेंगे वैसा ही फल मिलता है। मानव अपनी ही कमाई का फल प्राप्त करता है। यही सार इस साखी का प्राप्त हुआ है।

साखी-121 (अज्ञात)

म्हार गुर क पंथ न्यै जुवल्या मेरा बाबा, जांका हरीया भाग।
गढ़ वैकुण्ठे अलख लड़ी, चढ़िया जोवै छै माघ।
सदरंग कामैण्य माघ जोवै, कदि साध मोमीण्य आवस्यै।
नर सतगुर आस पूरव, रतन काया पायस्यै।
आरतो ले मुंध आव, सुरग बाजै दौदही।
अनंत बधावा हुवै जा दियां, मंगल गावै मिल्य सही।1।
अलखाड़ी अरदास्य करै, मो पीव सूं कदि मेला।
थारी तीहुगा इकवीस कोड़ि पहुंता, हींडै सहज हींडोला।
सहज्य हींडोला तेर साध हींडै, दुख दाल्यद ना तहां।
जुग्य चौथ विसन मेलो, इकवीस कोड़ि र बार ही।
वैकुण्ठे बेड़ौ विसन ढ़ोयो, सची सार साधा लैविसी।
पार गिराय पहुंचाय स्वामी, वास नीहचल देविसी।2।
पार गिराए नीतर अजरावण, गुर साहिब सूं लव लीणां।
मोमीणा नै मन्यसा भोजन अमी कचोला, पीवणां अमी कचोला।
चीर पटोला अख खांणि वर कांमणी, तेतीस गढ़ तेरासदा नीहचल।
दैणा संम्रथ तुं धैणी, झिणकार नेवर जोति रतना।
कोड पायलज पेखणा, दीदार आगे सभा तेरी।
देव देइ नीत देखणां।3।
धन्यै धंन्य हो जीवड़ा का कायमै राजा, जो म्हानै सुरग्य मीलावै।
सोइ दत देइ हो म्हारा कायम राजा, जो थारी गति भावै।
दत देह दाता मुकति मन्यसा, रतन काया पार दो।
देव दरग मील्या मोमिणा, सुर सभा दीदार दो।
अनी पात अनेक अपछरा, हेत बोहरंग्य भाव छ।
तेतीस कोड़ि मील्य जांनी, वींद त्रभुवण राव छ।4।

भावार्थ–हमारे गुरु जाम्भोजी के द्वारा बताये हुए पंथ मार्ग पर जो भी चला है उनका बहुत बड़ा सौभाग्य है। इस जीवन में युक्ति पूर्वक जीते हुए अन्त समय में इस पंथ द्वारा अलख लोक भगवान विष्णु के धाम में चढ़ चुके है। जिस मार्ग से वहां तक पहुंचे है उसी मार्ग को देख रहे है और धन्यवाद दे रहे है। वहां वैकुण्ठ लोक में सदा ही युवती रहने वाली अप्सराऐं ऐसे धर्मात्मा के वहां पर पहुंचने पर स्वागत के लिये प्रतीक्षा करती है। वह दिन कब आयेगा जब भगवान के भक्त हमारे लोक में आयेंगे। सतगुरु की कृपा प्रेम भाव ही हमारी अन्तिम इच्छा पूर्ण करेंगे। यह शरीर तो यहां का यही मृत्यु लोक में ही रह जायेगा किन्तु वहां दिव्य रतन काया मिलेगी। उसी काया से ही उस दिव्य सुखमय लोक में पहुंच सकेंगे। वहां पर प्रेम विभोर होकर नव यौवना अप्सराऐं आरती लेकर स्वागत हेतु सामने आयेगी और अनेक प्रकार बाजे दुदुम्भियां बजने लगेगी। उस दिन अनन्त बधावा स्वागत होगा सखियां मिलकर मंगल गीत गायेगी।1।

जो भी भक्ति प्रेम भाव में भाव विभोर होकर अरदास करती है और अपने पीव परमात्मा से मिलने की प्रबल इच्छा प्रगट करती है। हे गुरुदेव! अब तक इकवीस करोड़ तो पार पहुंच चुके है। अबकी बार हमारी भी बारी है। हम कब पहुंचेंगे कब मिलेंगे और सदा सदा के लिये जन्म मरण संसार के दुख से छूटेंगे। वहां जो भी पहुंचा है वह सहज रूप से आनन्द में विभोर होकर सुध बुध भूलकर अनहद नाद में मग्न होकर झूल रहे है। हम ही पीछे क्यों रहे। वहां पर किसी प्रकार की दुख दरिद्रता नहीं है इस चौथे युग कलयुग में विष्णु ही जाम्भोजी के रूप में आकर उन तीन युगों के पार पहुंचे हुए लोगों से मिलान करवायेंगे। पार उतारने वाले देवजी निश्चित ही अमरापुर निवास देंगे।2।

पार उतारने वाले सतगुरु जाम्भोजी साधां भक्तां की सुध अवश्य ही लेंगे। मोमण भक्त लोगों को स्वर्ग वैकुण्ठ में मन इच्छित भोजन आदि अमृत की प्राप्ति करवायेंगे। उसी अमृत के प्रभाव से युगों–युगों तक रतन काया लेकर अमर हो जायेंगे। हे देव! तुम्हारे तेतीस करोड़ जीव सदा निश्चल होकर अमर पद को प्राप्त करेंगे। हे समर्थ! दाता आप हमें वह अद्‌भुत ज्योति और अनहद नाद की ध्वनि प्रगट करें तो वह वैकुण्ठ धाम इसी मृत्युलोक में ही प्रगट हो जायेगा। आपकी अद्‌भुत रचना आपकी कृपा से ही देखना संभव

है।3।

धन्य धन्य हो हमारे देव सतगुरु कायम राजा को जो हमें स्वर्ग सुख प्राप्त करवाते है। जो अनन्त सुख प्राप्त कर चुके है उन्हीं से हमें भेंट करवाते है। हम भी आपकी तरह दिव्य काया धारी हो सके वही हमें प्रदान करे जो सदा के लिये त्रिस्ना, भूख, नींद नहीं व्यापे और इस जीवन को सुख पूर्वक जीते हुए अन्तिम में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर सके जिस प्रकार विवाह में दुल्हा प्रमुख होता है और सभी बाराती होते है उसी प्रकार आप ही हमारे तो राजा हो हम आपके बाराती है। हे देव! आप हमें भटकना छुड़वाकर नित्य सुख परमानन्द की प्राप्ति करवा दीजिये। आप तो सुख आनंद के आगार है। आप हमें अपने पास बुला लीजिये। हम आपके दास है। आप हमारे स्वामी है। हम दास जब तक अपने स्वामी वींद से नहीं मिलेंगे तब तक हमें शांति कैसे मिल सकती है।4।

साखी-122 (दामोजी द्वारा कृत)

विसनो विसन भंणति, जग तारण जीवां धणी।
किसन कायम करतार, हरि हरि जपियो दुनि।
हरि सांचौ जपौ दुनिया, संगठ मांहि उबारयसी।
संगठ मांहि उबारसी नै, पहलाद वीरिया तुरत्य आयो।
मील्यो मया करि मीत, परमेसर पुरो धणी।
देव को दीदार दीस, विसन-विसन भणंत।1।
झंभ गुरु जगनाथ, मधु सुदन मन्य भांवणौ।
खाल्यक दैत दीवाण्य, सांई को सबद सुहावणौ।
सांई को सबद सुहावणौ, सकल को आधार।
मोहनी मुरती सकल शोभा, साम्य सिरजैण हार।
गोम्यद गीरधर नांव नरहरी, अंतर जामी ईस।
रीणछोड़ राघौ क्रीम कैसो, झंभ गुरु जगदीश।2।
लिछमण राजा राम, परस परम गुर पेखीया।
कान्ह कुंवर नंदलाल, सिरजण हारा देखीया।
सिरजण हारा देखिया नै, पत्यसाह पुरो कछ कोरंभ तूं धणी।
मछ महपत्य मेल्य मेख, बावन बुध रामै धणी।
निरंकार निरंजण अलख संभु, चत्रभुज तंमै थया।

लछण राजा राम, परस परमेसर गुरु पेखिया।3।
नारायण नीज नाम, जपीय तो सुख पाइया।
त्रिकमे तिलक तीयार, गोम्यद का गुण गाइये।
गोम्यद का गुण गाइय जी, जो श्री लाल गोपाल।
चवदै भुवण रो राजियो, निकलंक दीन दयाल।
जगनाथ जी का कोड कीजै, दवारि का सुदामा।
मढ़ी पलटी हरि महल कीया, नारायैण नीज नाम।
जपीय तो सुख पाइये।4।
नारसिंघ नर मुलताण्य, मेछ मलण नै आवियो।
साधा करण संभाल, रीण मां साध उबारियो।
रीण मां साध उबारियो नै, सारीया सह काज।
देव दया करि मुकति दीजै, जांह नै तुठो राज।
वीसन दांम मुकति दीजै, रथि आयो रहमांण।
पोहप मा परगास कीयो, नारयसिंघ नर मुलताण।
भगता संग्य बुधर रंम्यौ।5।

भावार्थ–जगत को तारने वाले मालिक विष्णु का स्मरण भजन करें वही विष्णु ही कृष्ण के रूप में कर्ता धर्ता बनकर आये थे उसी हरि का स्मरण बारंबार करें। सच्चे मन से हरि का स्मरण करे वही अनेकों प्रकार के कष्टों से रक्षा करेंगे। निश्चित ही संकटों से रक्षा करेंगे क्योंकि वही एक ही परमेश्वर सभी का मालिक है। प्रहलाद को जब संकट आया था तब वही विष्णु ही नृसिंह का रूप धारण करके तुरन्त आये थे। वही विष्णु ही इस समय जाम्भेश्वर जी के रूप में अपनी माया द्वारा ''अनेक रूप रूपाय'' धारण करके आये है। देवजी की कृपा बरस रही है अपने घड़े को सीधा करें। अवश्य ही अमृत वर्षा से आपका घड़ा भर जायेगा।1।

जम्भगुरु जी जगन्नाथ स्वामी है। मधुसुदन भगवान विष्णु सभी के मन को आकर्षित करते है। संसार के स्वामी सभी के सहारा रूप श्री देवजी की वाणी सुहावणी शोभायमान है। श्रवण कीर्तन करने से सभी के मन को हरण करने वाली है। सभी शास्त्रों की आधार वाणी श्रवण करें। सिरजन हार स्वामी की दिव्य मोहनी मूरति शोभायमान हो रही है। परमात्मा को अनेकों नामों से पुकारा जाता है। जैसे गिरधर, गोविन्द, नरहरि, विष्णु, अन्तर्यामि,

ईश्वर, रणछोड़, राघव, करीम, केसव, झंभगुरु, जगदीश, लक्ष्मण, राजाराम, परसराम, गुरु आदि कान्ह, कृष्ण, कंवर, नन्दलाल, परमेसर, सतगुरु, सृजनहार, पातसाह, पूर्णरूप, कच्छ, कौरंभ, मच्छ, महीपति, बावन, बुध, निरंकार, निरंजन, अलख, शंभु, चतुर्भुज, नारायण, त्रिकम, तिलक, श्रीलाल गोपाल, चवदै भवन का राजा, श्री भगवान इत्यादि नामों से उस गोविन्द का गुणगान करें। जप-तप करें। वह निष्कलंक दीन दयाल जगन्नाथ से प्रेम करें जिन्होनें द्वारिकानाथ ने सुदामा की झोंपड़ी पलटकर महल बना दिया था। उसी का जप करें तो सुख मिलेगा।4।

भगवान ने नृसिंह का रूप धारण करके राक्षस हिरण्यकश्यपू को मारने के लिये आये थे। संत प्रहलाद की रक्षा की थी और युद्ध भूमि में जो सेवकों की रक्षा करता है पाण्डवों को बचाता है वही देव हमारी रक्षा करे। हे देव! दया करे! दामोजी कहते है कि हमें जीवन युक्ति और मुक्ति प्रदान करें। जिन्होनें फूल में सुगन्धी और सूर्य रूप होकर सभी को प्रकाशित एवं विकसित किया है। उसी देव को मेरा बारंबार नमन है। स्वीकार करें एवं आनन्दित करें। भक्तों के साथ भूधर स्वामी परमात्मा ने खेल किया है। वह हमें भी सफल जीवन जीने की कला प्रदान करें।

साखी-123 (अज्ञात)

ओ जपीयो जी भाई मोमीणौ, हम घर वीरंण आए।
हम उन मेलो करि गुरु कायमा, जांणौ अठसठि तीरथ न्हाए।
जो पुंन अठसठि जी भाई तीरथो, गुर सुभीयागत म्हारो।1।
देव दियाव जी भाई मोमीणौ, देत न करो उधारौ।
जैसा सुपना जी भाई रैण का, असा यौ संसारौ।2।
कांय भाइ मोमीणौ औ धन संचौ, संच्य संचि छलो बुखारौ।
यो धन खंक जी भाइ होयसी, खाली रहया बुखारौ।3।
दुल दुल घोड़ो भाई साखंती, होय कायम असवारौ।
वसधा कंवरी जी भाई परण्यसी, आप कीसन मुरारो।4।

भावार्थ-हे भाई मोमिणो! उस परम पिता परमात्मा का स्मरण जप ध्यान करे हम यहां पर इस मृत्युलोक में पराये घर पर आये हुए है क्योंकि ''घर आगे इत गोवलवासो, कुड़ी आधो चारी''।।सबद।। हम उस प्रत्यक्ष गुरुदेव से संमेलन करें उससे मानों अड़सठ तीर्थों में स्नान हो जायेगा।1।

जो पुण्य अड़सठ तीर्थों में स्नान करने से होगा वही पुण्य हमारे गुरुदेव के घर पर आने से उनके सदुपदेश श्रवण मनन निदिध्यासन करने से होगा। जो देव तुल्य सज्जन महात्मा है उसे तो सर्वस्व दे देते है तथा जो दैत्य सदृश जन है उनका भी उद्धार कर देते है।2।

हे भाई मोमिणो! केवल दिन-रात धन एकत्रित करने में ही क्यों लगे हो अन्य भी कुछ कार्य तुम्हारे लिये निर्धारित किया गया है। धन-धान्य की कोठियां भरने में ही लगे हो। यह धन तुम्हारा अन्तिम समय में साथ नहीं देगा। ये धान की कोठियां खाली हो जायेगी। तुम्हारे कर्मों की कोथली भी भोगने से खाली हो जायेगी। आखिर में खाली हाथ ही यहां से जाना होगा। क्योंकि यह संसार रात्रि के स्वप्न के समान है जो निन्द्रा टूटते ही स्वप्न का संसार समाप्त हो जाता है।3।

यह कलयुग बीतेगा और सतयुग का आगमन होगा तब स्वयं काया राजा विष्णु दिव्य अद्भुत तेजस्वी घोड़े पर सवार होंगे और पापियों का विनाश करेंगे। इस धरती के भार को मिटायेंगे पुन: सतयुग का आगमन होगा। पापों के भार से हल्की हुई पवित्र धरणी से पुन: विवाह रचायेंगे। यानि पुन: नई सृष्टि इस धरती पर बसायेंगे। ऐसा अनेकों बार करते आये है।

साखी-124 (अज्ञात)

कल्यजिग देवजी को चिलत वखाण्य, पनरासरि तिराणवै।
वदि मंगसरि नुव्य दीन जाण्य, संभराथल्य परवाणियो।
संभरथल्य परवाण कीयो, चीलत सुरा दीखाइयो।
सब मोमीण जीव काज, साह चोर चीताइयो।
केइ चालै खाड़ग धारा, केइ चालण कुं लागे।
संसार आयो करम पायो, चीलत कीयौ कल्यजुगै।1।
किसन आयो कल्य मांहि, भाग परापति भगतां पाइयौ।
सींघ बकरी एकण्य घाटि, ग्यान सहजे गुर म्हार पाइयौ।
सींघ बकरी एक घाट पाया, देस देसा चालीयौ।
हुकम प्रथमी हुइ चोहचक्य, इबक मीलस मीलीयौ।
मनी दोयंनी परीख लेसी, संभलौ गुर भाइयो।
पहलाद जी क कवल काज, कीसन कल्यजुग्य आइयो।2।
कल्यजुग्य च्यारयै धरम, एकण ठांय फुरमाया।

मुस्यल व्रभा जेण्य, जोगी जुगति बताया।
जुगत्य जोगी की बताई, मुकति धारा तीरथै।
कागद देखौ गुर नै चीन्ह, तेन पावै ओ पंथो।
छंद जाका हुवै कल्यमा, अगम पंथ चलाइयो।
संभरथल्य गुरु पंथ चलायो, च्यारय धरम फुरमायौ।3।
परभ नै टाली म्हारा सांम्य, हंमर उमाहो तेरे दीदार कौ।
भाइड़ा सीधा एकण्य धार, करे उमाहो जुमलै पार कौ।
करे उमाहो पारय पहुंता, माया दुख घैणर हो।
जुग जुगंतरि कौल पुरौ, ओ भरोसो तेर हो।
संत दे करतार दील मां, कोड़ि बारा मेलिया।
चीलत पाखौ क्यौ सहारू, साम्य प्रभु नै टालिया।4।

भावार्थ–कलयुग में देवजी जाम्भोजी ने चरित्र दिखाया था उसका यहां बखाण किया जाता है। वि. सं. 1508 भादव वदि अष्टमी से वि. सं. 1593 मिंगसर वदि नवमी तक इस संसार में रहे। अधिकतर समय सम्भराथल पर विराजमान होकर बिश्नोई पंथ की स्थापना वि. सं. 1542 में कार्तिक वदि अष्टमी को की थी। 85 वर्ष 3 महिना पूर्ण होने पर सम्भराथल से प्रस्थान करके लालासर की साथरी पहुंचे और वहीं पर देवताओं को दिव्य चरित्र दिखलाया। सम्भराथल 51 वर्षो तक रहकर सभी प्रकार के जन समुदाय को सचेत किया। भक्त जनों के उद्धार हेतु दिव्य अलौकिक सबदवाणी कही। सभी तो सद्मार्ग पर चलने में समर्थ नहीं हो सकते किन्तु मोमण भक्त लोग धर्म पर चले। अवश्य ही खड़ग की धार पर चलना कठिन है। उसी प्रकार से सद्धर्म पंथ पर चलना भी कठिन अवश्य ही था किन्तु केई लोग चले है और पार पहुंचे भी है। संसार के लोग आये और अपने कर्मो का संज्ञान लिया और पार पहुंचे इस प्रकार का चरित्र श्री देवजी ने किया।1।

निश्चित ही कृष्ण कलयुग में आये है किन्तु जिनका भाग्य सौभाग्य बलवान था वही प्राप्त कर सके है। सभी प्रकार के लोग मित्र दुश्मन जाम्भोजी के पास आते थे किन्तु वहां आकर एक साथ बैठकर गुरु ज्ञान श्रवण कर आपसी वैर भाव भूल जाते थे। सिंह और बकरी को एक ही घाट पर पानी पिला दिया था। यह उनकी अहिंसा वृति का प्रभाव था। ''अहिंसा प्रतिष्ठायां तन्सिन्निधौ वैर त्याग''। गुरुदेव के हुकम से इस पृथ्वी पर चर्चा

चली थी। लोगों ने आपस में एक-दूसरे से कहा यदि मिलना है तो अबकी बार ही मिलान कर ले। हे गुरु भाइयों! संभल कर जाना दोय मन दोय दिल से जाओगे तो वहां पर पकड़े जाओगे। इसलिये सावधान होकर ही जाना। प्रहलाद जी को वचन दिया था इसलिये वही विष्णु कृष्ण कलयुग में आये है।2।

एक ही स्थान विशेष सम्भराथल पर चारों धरम फरमाया है। यहां पर ब्राह्मण, हिन्दू, मुसलमान, जैन आदि को उनके धर्मानुसार चेताया है। योगी लोगों को भी युक्ति मुक्ति का मार्ग बतलाया है। तीर्थ जल धारा का भी रहस्य बतलाया है। जो विद्वान लोग पुस्तक पोथा तो पढ़ते है किन्तु गुरु की पहचान नहीं करते वे लोग इस बिश्नोई पंथ सुपंथ को प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु का मार्ग इन पोथियों कागदों में नहीं लिखा जा सकता इस कलयुग में जिनके छुपे हुए पाप है उनका खुलासा हुआ है। यह अगम वैदिक पंथ जाम्भोजी ने चलाया है। यहां सम्भराथल पर गुरु जाम्भेश्वर जी ने पंथ बताया है। उस पर चलने के लिये जन समुदाय को प्रेरित किया है और चारों धर्मों की बात इस पंथ में फरमाई है।3।

हे गुरु देव! इस समय हमें आप अपनी प्रभा अलौकिक प्रकाश से वंचित नहीं रखना। हमारे मन में उमंग उठ रही है। आनन्द की लहरों से सरोबार हो रहे है। आपकी अपार कृपा से हम आपसे सम्बन्ध जोड़ सकते है और आपका शुभ आशीर्वाद प्राप्त कर सकते है। हे भाई लोगों! यह पंथ सीधा स्वर्ग तक पहुंचने वाला है। इस पर चलकर पार पहुंचने की उमंग करें। एक उमंग प्रेम रस में विभोर होकर इस पंथ पर चलने का उपाय है। इस संसार में तो दुख का कोई अन्तपार ही नहीं है। हे गुरुदेव! युगों-युगों का वचन दिया हुआ प्रतिज्ञा की हुई अब आप पूरी करो। इस समय तो केवल आपका ही भरोसा है। हे कर्त्ता! आप हमें सत्य शक्ति प्रदान करें। जिससे हम बारह करोड़ लोग उन इकवीस करोड़ से मिल सके। आपके दिव्य चरित्र से अतिरिक्त मैं किसका सहारा लूं। हे स्वामी! अबकी बार हमें छोड़ना नहीं। उन बारह करोड़ की पंक्ति में मिला देना। यह आपकी अपार कृपा से ही संभव है।

कवि सं.-41 'परमानन्द जी वणियाल'

जन्म वि. सं. 1750-1845 के मध्य अनुमानित है। ये जांगलू के ही

रहने वाले बणियाल गोत्र के थे। परमानन्दजी ने अपने से पूर्व प्राप्त साहित्य का संग्रह किया था वह अब भी सर्वमान्य प्राचीन ''परमानन्द जी का पोथा ग्रन्थ ज्ञान'' उपलब्ध है। जिसमें सम्पूर्ण जाम्भाणी साहित्य का संग्रह है। परमानन्दजी स्वयं भी कवि थे। इन्होनें अनेक नीति परक दोहे छन्द एवं साखियों की रचना की थी। परमानन्दजी द्वारा रचित चार साखियों का यहां पर भावार्थ दिया जा रहा है।

साखी-125 (परमानन्द जी)

मीनखा जलम मीले मेरा जीवौ, चूकै भव चौवरासी।
नुवौ लेखो हुवै मेरा जीवो, करिसी सो जीव पायसी।
कीयो पाव जीसो करिसी, दोस काहु नहीं दीजीयै।
सोदो वसत अनेक करसी, समझ लाहो लीजीयै।
सवा दोढ़ा दुणां अनंता, असो माल वीसाहीया।
सुमति कुमत्य दोय, मिनख जंमारो पाइया।1।
कुमति संग्य कांम किरोध मेरा जीहो, हठ अहंकार कुलोभी।
लालच चोरी ठगाइ मेरा जीवो, कुमली कुचाल कुसोभी।
कुसोभी मुख कुसभ भाख, सुभ साच नै उचरै।
दान सील तप भाव नांही, दया हीरदै ना धरै।
सीनान ध्यान भजन नांही, दोरै वासो दीजीयै।
मीनख जमारो अफल इण्य परे, कुमति संग न कीजियै।2।
सुमति संग्य सील संतोष मेरा जीहो, सुवचन साच सुभावा।
कीरीया भजन धरम मेरा जीवौ, गुण गोम्यद का गावा।
गुण गाव मुकति पावै, आन सेव नै उचर।
उपगार सार अपार अहोनीस, ध्यान हरि हीरद धर।
मुकति माघ इण्य विध्य धाव, दान सुपहा जीजीय।
रतन जलम संसार सागर, सुमति सुसंग कीजीय।3।
औ ओसर मीनख जलम मेरा जीवो, वांरो वार नै पाव।
हरिजन पारय लंघ्या मेरा जीहो, बोहड़य इण्य खंडि आव।
इण्य खण्डि नै आव करे केला, सदा कोड सुहावणां।
हुर कांमैण्य करे केला, रतन गढ़ रल्य आंवणां।
विसन दरसण सदा परसौ, वे सुन्य वासो विसन करे।

परमाणंद गाव दरसण पाव, ओ ओसर मिनख जनम को।4।

भावार्थ–परमानंद जी कहते है कि हे मेरा जीव! तुझे यह मानव जन्म मिला है क्योंकि इसी शरीर से ही चौरासी लाख योनियों से छूटा जा सकता है। इसी मानव शरीर से ही नया कर्म करने का अधिकार प्राप्त है। इसी शरीर से ही जो कुछ किया जायेगा वही फल प्राप्त होगा। जैसा करेगा वैसा ही फल पायेगा। किसी को दोष नहीं देना। ''आपे खता कमाणी, विसन नै दोष किसो रे प्राणी''।सबद। इस जीवन में अनेकों कार्य व्यवहार किया जायेगा किन्तु समझ सचेत होकर कार्य करेगा तभी सुफल की प्राप्ति हो सकेगी। यहां संसार में आकर व्यापार करे जिससे शुभ कर्मों को दोगुणा चौगुणा अष्टगुणा करके वापिस जाना है। यहां मानव जीवन में सुमति और कुमति दो मार्ग है। सुमति से शुभ जीवन मुक्ति प्राप्त होगी और कुमति से दु:खी जीवन जन्म–मृत्यु को प्राप्त होगा।1।

कुमति के साथ काम, क्रोध, हठ, अहंकार, कुलोभ, लालच, चोरी, ठगाई, कुचीलता, परनिंद्या, मुख झूठ आल बाल बोलना इत्यादि सहयोगी है। स्वयं ही निंदनीय और परनिंद्या करेगा। दान, शील, तप, भाव, दया, स्नान, ध्यान, भजन, इत्यादि कुमति के संग नहीं हो सकेगा। शुभ कर्मों के अभाव में नरक में निवास मिलेगा। यह मानव जीवन निष्फल हो जायेगा। इसलिये कुमति का संग नहीं करना चाहिये।2।

सुमति के साथ शील, संतोष, सुवचन, साच, शुभ क्रिया, हरि भजन, धर्म गोविन्द के गुणों का गान करेगा। ऐसा संत जन ही मुक्ति को प्राप्त करता है। अन्य देवता भूत प्रेतों की उपासना नहीं करता। एक निरंजन निराकार विष्णु की ही उपासना करता है। इस प्रकार से मुक्ति के मार्ग पर तेजी से चलता है तथा सुपात्र को दान देता है। संत जनों का संग करता है। इस प्रकार से सुमार्ग पर चलने वाला सुमति को प्राप्त करके इस शरीर से जन्म मरण से छूटकर संसार सागर से पार उतर जाता है।3।

इस मानव जीवन में यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है जो अन्य जीव योनियों में नहीं मिलता। अनेकों हरि के भक्त इसी सुमार्ग पंथ को पकड़कर संसार सागर से पार उतर गये है फिर से संसार सागर में नहीं आये है। इस मृत्यु लोक में नहीं आते है किन्तु वहां वैकुण्ठ धाम में हरि के पास आनन्द उत्सव मनाते है। शुन्य में भगवान विष्णु का वास है वही भगवान का परम

धाम है जहां जाने पर वापिस लौटकर नहीं आते। सदा ही भगवान विष्णु के संग में रहते है। किसी प्रकार का दु:ख वहां पर नहीं है। परमानन्द गाते है और उस अलौकिक आनन्द को प्राप्त करते है। यह दुर्लभ अवसर मानव जन्म को सार्थक करते है। आप भी कीजिये।4।

साखी-126

आवो जमे साधो सेवगो, संभलो ग्यान सुजाण जी।1।
सतगुरु आयो संभरा, विध्य सूं सुणौ वखाण जी।2।
जिण्य पहराजा उधरयौ, मल्या असुर का माण जी।3।
धू अमर पद जिण्य दीयौ, चौकी द्यै सीस भांणजी।4।
हरिचंद रोहितास तारासती, सत्य सींघासन सुजांण जी।5।
पांच पांडु कुंता द्रोपती, चाल्या गुर फुरमांण जी।6।
कल्यजुग्य कायंमै आवीयो, अयाणां कर सयाणां जी।7।
पूंण छतीस परचाइया, कीया साध सुजाण जी।8।
दान दया जप साच सुच्य, विसन कर वखाण जी।9।
चौह जुग्य सीध साधां जंप्यौ, सीव व्रंभा सेस जपाण जी।10।
अनंत कोड़ि परचाविया, झांभेसर सुभीयाण जी।11।
पार गिराए पोह कियौ, चुकै आवाजाण जी।12।
परमाणंद की वीनती, राखौ संग्य रहमाण जी।13।

भावार्थ-यह परमानन्द द्वारा विरचित साखी है। जुमलै की साखी के अन्तर्गत इसकी महिमा है। साधु सेवकों को जागरण सत्संग में आने का आह्वान किया गया है। सत संगति से ही ध्रूव, प्रहलाद, हरिचंद, रोहितास, तारामती, पांचु पाण्डव आदि का उद्धार हुआ था।

इस समय कलयुग में गुरु जाम्भोजी महाराज सुजीवों का उद्धार करने के लिये सम्भराथल पर आये है। जिज्ञासु जनों को दान, दया, जप, तप, पवित्रता आदि का ज्ञान देकर विष्णु के जप करने की विधि बतलाई है। चारों युगों में अनेक अवतार धारण करके भगवान विष्णु ने ही अनेक लोगों को संसार सागर से पार उतारा है। इस समय सम्भराथल पर वही विष्णु ही आये है। जो भी संगति से गति पाना चाहते है वे अवश्य ही उनकी शब्दवाणी महावाक्य का श्रवण एवं यज्ञ रूपी ज्योति का दर्शन करके तेतीस कोटि जीवों के साथ मिलान कर सकते है ऐसी ही विनती परमानन्द जी कर रहे है। हे गुरु

देव! अबकी बार अवश्य ही पार उतारो।

साखी राग धनाश्री–127

बाबो आपै उपन्ना आप, मछ संखासुर मारियो।
कच्छ रूपी कीचक, वराह मुरदत सिंघारियो।
वराह मुरदत सिंघारियो नै, नरसिंघ हिरणांक।
बावन बलि परसराम, अरजन राम लिछमण लंक।
कनड़ कंस बुद्ध गय सुर, जपायो विष्णु जाप।
असुर उथप्या सुर थप्या, बाबो आपे उपन्ना आप।
मछ संखासुर मारियो।1।
पहलाद कहयो परगट, देव विसनु वाचा दई।
तेता हरिचंद साथि, सात करोड़ सिधा सही।
सात करोड़ सीधा सही नै, नवै दहूटल राय।
पांच सात नव तिहूं जुगै, हुवो विसनु सहाय।
लालच लोभ चोरी ठगाई, कलि जुगै कूड़ कपट।
करोड़ बारां तारणै, पहलाद कहयौ देव परगट।
देव विसनु वाचा दई।2।
कथ सुणी करतार, भगता पति बूधर भणी।
आप लियो अवतार, धर उपर जीवां धणी।
धर उपर जीवां धणी नै, बाल चिरत अपार।
काचै करवै नीर राख्यो, जोसी मानी हार।
दीवां सजल जगाविया, बाल चिरत अपार।
अनेक स्याणां हार चाल्या, कथ सुणी करतार।
भगतां पति बूधर भणी।3।
हुकम चरावै पाल, हुकमें पाणी पीजिये।
बाला संग जग आप, कहियो बाला कीजिये।
कहियो बाला कीजिये नै, कियो खेल किरतार।
लोहटजी ने चरित दिखायो, मेंह अखंडा धार।
खेत निपायो सांझ पहली, उधरण परचो सार।
दूदै ने गढ़ मेड़तो दीन्हो, हुकम चरावै पाल।
हुकमें पाणी पीजिये।4।

परगट कियो पन्थ, बंयाले मां अन्न आपियो।
बंयाले कातिक मास, थिर नामी कलश थापियो।
थिर नामी कलश थापियो नै, परच्या सुरग देख।
पहली पूल्ह परचियो, अरू ओलख्यो अलेख।
ज्यूं महि घृत काढ़यो, सरब मारग मथ।
परमानन्द पूरो धणी, परगट कीयो ज पंथ।
च्यार चक परचाविया।5।

भावार्थ–बाबो श्री जाम्भोजी अपने आप ही प्रगट हुए है। उनके कोई माता–पिता आदि नहीं है। वैसे कहने को तो लोहट एवं हांसा पिता माता अवश्य ही है। जिन्होनें पूर्व में भी ऐसे ही अवतार लिये थे। उन अवतारों में मच्छ रूप धारण करके शंखासुर को मारा था। कछुवे का रूप धारण करके कीचक को मारा था। वाराह रूप धारण करके हीरणाक्ष तथा मुर दैत्य को मारा था। बावन अवतार लेकर बलि को परास्त किया तथा परशुराम होकर सहस्रार्जुन आदि क्षत्रियों को मारा था। राम लक्ष्मण होकर रावणादि राक्षसों को मारा था। कृष्ण रूप होकर कंस को मारा था। बुद्ध रूप में आकर गया जी में रहकर असुरता का विनाश किया था। इस प्रकार से असुरों का विनाश किया और देवताओं की स्थापना की थी। वही बाबो यहां पर अवतार लेकर आये है।1।

प्रहलाद ने भगवान नृसिंह से वचन लिया था उन्हीं वचनों को पूरा करने के लिये त्रेता में हरिश्चन्द्र के साथ सात करोड़ का उद्धार किया। द्वापर में नौ करोड़ युधिष्ठिर के साथ पार पहुंच गये। इस कलयुग में लालच लोभ चोरी ठगाई कूड़ कपट आदि बहुत ही फैल चुका था। ऐसी दशा में बारह करोड़ का उद्धार करने के लिये यहां पर देवजी प्रगट हुए है क्योंकि प्रहलाद को वचन दिया हुआ था।2।

भगवान ने भक्तों की टेर सुनी थी। परमात्मा सभी के स्वामी है। इस धरती पर स्वयं ने ही अवतार लिया है। यहां पर अवतार लेकर अनेकों बाल चरित्र किये है। काचै करवै–घड़े में जल ठहराय दिया और ज्योतिषी को हार मना दी। जल से दीपक प्रज्वलित करके दिखा दिया ऐसे अनेक बाल चरित्र करके दिखला दिये। अनेकों भोपे स्याणा हार करके चले गये ऐसा दिव्य अवतार भक्तों की पुकार सुनकर हुआ था।3।

आज्ञा मात्र से पशुओं को चराते जल पिलाते थे। बालकों के संग में रहते थे। बालक पशु पक्षी आदि जिनकी आज्ञा मानते थे। गऊ चराते समय अनेकों खेल खेला करते थे। अपने पिता श्री लोहट जी को भी परचा दिया और बिना बादल ही अखण्ड धारों वाली वर्षा करवा करके तृप्त किया तथा शाम से पूर्व ही एक ही दिन में हल चलाकर खेती निपजा कर अपार अन्न पैदा करके दिखलाया था। जोधपुर नरेश के भ्राता कान्हा का पुत्र उधरण को परचा दिखलाया। उनके पशु धन की रक्षा की थी। राव दूदा को मेड़ते का राजा बनाया था। ऐसे अनेकों दिव्य चरित्र गऊ चराते समय दिखाया करते थे।4।

संवत् 1542 कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी को पंथ प्रगट किया था। अकाल से पीड़ित लोगों को अन्न देकर उनकी रक्षा की थी। उस शुभ घड़ी में प्रथम कलश की स्थापना करके अनेकों लोगों को पवित्र किया था। इससे पूर्व पूल्है को स्वर्ग भी दिखाया था। बिश्नोई पंथ ऐसा दिव्य प्रगट किया जो सभी धर्मों का सार है। जिस प्रकार से दही को मन्थन करके घृत निकाला जाता है उसी प्रकार से अनेक मार्ग पन्थों को मन्थन करके यह घृत सार रूपी बिश्नोई पन्थ प्रगट किया। परमानन्द जी कहते है कि पूर्ण परमेश्वर ने वही बिश्नोई पन्थ प्रगट किया है। चारों दिशाओं से लोगों को शुभ मार्ग पर लाये है।5।

साखी राग धनाश्री-128

बाबो आवियो आदि विसनु, सम्भराथल साचो धणी।
परच्या पवन छतीसूं, सपत दीप शोभा सुणी।
सपत दीप शोभा सुणी नै, आवियो हरि आप।
खुध्या तिसना नींद नहीं, सोक नहीं संताप।
छाया खोज न आपदा नै, कलू आवियो किसन।
करतार पार पावै कवण, आवियो आदि विसन।
सम्भराथल सांचो धणी।1।
सरब धरम संसार, परगट किया परम गुरु।
पाप धरम निवेड़, न्यारा किया सुगर गुरु।
न्यारा किया सुगर गुरु नै, साच शील सिनान।
कारण किरिया होम जप तप, सुपह सुमार्ग दान।
आन भरम कुथान पूजा, अन्तरा सर्वस निवार।

विष्णु जाप रू विष्णु पूजा, सरब धर्म संसार।
परगट किया परम गुरु।2।
सिकंदर बाबर बादशाह, पठाण चगदां परचिया।
सांगा राणां चितोड़, रायसल बरसल सिसोदिया।
रायसल बरसल सिसोदिया नै, दूदो सांतल राव।
बीको बीदो हमीर बाघो, जोध दवादस जांण।
जेसाण रावल जेतसी, अजमेर करमसी पुंवार।
महमद खां हारण खां सेखसदो, सिकन्दर बादशाह बाबर।
पठाण चगथा परचिया।3।
और परच्या कै एक अपार, यारां सुत नाती दोहितरां।
जो जो उतम जीव, सतगुरु का सेवक खरा।
सतगुरु का सेवक खरा नै, सदा श्याम सहाय।
विसनु सहसी वंश बधसी, पाप वंश खै हो जाय।
गिण राजवी ज्ञान मांहि, प्रजा न लहूं पार।
नव खण्ड देसरा नरपति, और परच्या केई अपार।
यारां सुत नाती दोहितरां।4।
दरसण परसण देव, करणी चालै गुरु कही।
साचा साचो श्याम, सतगुरु जहां साथे सही।
सतगुरु जहां साथे सही नै, मोख पावां मन सवां।
अमि कचोला भोग मनसा, सदा आनन्द नित नूंवा।
हिंडोल हिंडण पिलंग पोढ़ण, सरस मनवां सेव।
परमानन्द गावै मुक्ति पावै, दरसण परसण देव।
करणी चालै गुरु कही।5।

भावार्थ–बाबो आदि विष्णु ही यहां सम्भराथल पर सच्चे स्वामी के रूप में आये है। जिनके उपदेशों को धारण करके तीनों वर्णों के लोग पूर्ण रूपेण धार्मिक हो गये है। जिनकी शोभा सप्त द्वीपों में लोगों ने सुनी थी। हरि आप स्वयं ही यहां पर आये है। बाबो जाम्भोजी को न तो अन्य संसार के लोगों की तरह भूख ही लगती और न ही प्यास लगती है। और न ही तृष्णा, नींद, शोक, मोह आदि ही संतप्त करते है। जिनके शरीर में माया की छाया भी नहीं है। उन्हें आपदा कैसे सता सकती है क्योंकि इस कलयुग में कृष्ण ही आये

है। उस कर्त्ता धर्त्ता सर्व समर्थ का पार कौन पा सकता है जो आदि विष्णु ही यहां पर आये है।1।

परम गुरु ने संसार के सभी धर्मों के तत्व को बिश्नोई धर्म के रूप में प्रगट किया है। पाप और धर्म का विवेक करके अलग कर दिया है ऐसे सतगुरुदेव सम्भराथल पर प्रगट हुए है। सुगुरु ने सत्य, शील, स्नान, शुभ क्रियाऐं, होम, जप, तप, दान, सुमार्ग, आन देवता की पूजा आदि का भेद बताकर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है। केवल एक विष्णु की ही पूजा तथा जप बतलाया यही संसार के सभी धर्मों का निचोड़ है।2।

सिकन्दर लोदी, बाबर, बादशाह, पठाण, चगथ, सांगारांणा, रायसल, बरसल, सिसोदिया, दूदो मेड़तियो, सांतल राव नरेश, बीको, बीदो, हमीर, बाघो, जोधाजी ये बारह राजा गुरु देव के अनुयायी बने थे। जैसलमेर के राव जेतसी, अजमेर के करमसी पुंवार, महमद खां नागौरी, हारण खां, सेख सदो, लूणकरण आदि भी धर्म के मार्ग पर अपना तथा अपनी प्रजा का उद्धार किया था।3।

और भी बहुत से राजा एवं उनके पुत्र पौत्र दौहित्र आदि सत्य मार्ग के अनुयायी बने थे। जो जो उतम जीव थे वे सभी सतगुरु के पक्के सेवक थे। श्याम सदा ही उनकी सहायता भी करते है। विष्णु ने जिनकी सहायता की उन्हीं का वंश वृद्धि को प्राप्त हुआ तथा जो पापी थे उनके वंश का विनाश हो गया। कवि कहते है कि ये राजा लोग तो गिनती में आ गये परन्तु प्रजा का तो कोई पार ही नहीं है। नव खंड देश के नरपति तथा अन्य कई देशों के राजाओं का पार ही नहीं है।4।

सतगुरु के पास दर्शन करते तथा उनके चरण स्पर्श करते थे। जैसा गुरु कहते वैसा ही करते थे। जो सच्चे थे उनके पास में श्याम कृष्ण थे। जिनके सतगुरु साथ है वे ही जन जीवन में युक्ति और मृत्यु पर मुक्ति को प्राप्त करते है। मुक्ति की प्राप्ति हो जाने से वहां अमृत की प्राप्ति इच्छानुसार होती है। वहां पर सदा ही आनन्द की अभिवृद्धि होती रहती है। शयन करने के लिये पलंग आदि उतम वस्तुओं की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है। परमानन्द जी गाते हुए कहते है कि वे भक्त लोग मुक्ति प्राप्त करते है। जो गुरु के कथन पर चलते है। परमानन्द जी की इन दो साखियों में जितने भी नाम आये है उनकी कथा विस्तार से जम्भसार या जाम्भा पुराण में पढ़ें।5।

कवि सं.-42 (ऊदोजी अड़िंग)

वि. सं. 1818-1933 के मध्य जीवित रहे है। समाज में तीन ऊदोजी नाम से कवि भक्त हुए है। प्रथम ऊदोजी तापस दूसरे ऊदौजी नैण तथा तीसरे ऊदोजी अड़िंग। इन्होनें अपने जीवन काल में प्रहलाद चरित्र, विष्णु चरित्र, कक्का छतीसी एवं फुटकर साखियां एवं प्रसिद्ध रचना ''लूर'' की थी। एक समय जोधपुर के गांवों में ऊदोजी भ्रमण कर रहे थे उस समय होली के दिन थे। ऊदोजी ने देखा कि स्त्रियां अश्लील गाने गाते हुए नृत्य कर रही थी। उस समय ऊदोजी ने उन्हें मना किया और कहा ऐसे गाने नहीं गाने चाहिये। तब उन महिलाओं ने कहा कि इन होली के दिनों में हमें क्या गाना चाहिये। स्वामीजी आप ही बतला दीजिये? तब उसी जगह पर बैठकर यह ''लूर'' ऊदोजी ने गाकर सुनाई और बोले यह कृष्ण गोपियों का गीत गाया करो। वही लूर यहां नीचे दी जा रही है। जो समाज में बहुत ही प्रसिद्ध है।

लूर राग सोरठ-129

गिरधर गोकुल आव, गोपी संदेशो मोकल्यो।
मोहि दरसण रो चाव, प्रेम पियारा कांन जी।1।
थारे माथे मुकुट सुढ़ाल, केसर तिलक जूं हद बण्यो।
मोहन नैण विसाल, सुन्दर बदन सुहावणो।2।
घुंघर वरणां केस, कानां में कुण्डल झलक रहै।
ओही मनोहर भेस, म्हारे मन में रम रहयो।3।
गल बैजंती माल, पीताम्बर कट काछनी।
हाथ लकुटिया लाल, श्याम सलूणों सांवरो।4।
गावै छतीसूं राग, गिरधर मूरली मोहवणी।
मोह्या मोह्या सुरनर नाग, गोपी मोह्या गवालिया।5।
वे दिन कान्ह चितार, महिड़ो मोपे मांगता।
अब तुम गये विसार, मथुरा में महाराज बने।6।
कुबज्या कंस की दास, भली बसाई भामणी।
वां संग कियो निवास, सहस सहेल्या छोड़ के।7।
थानै झुरै जसोदा माय, राधा पलक न बिसरै।
ललता जीव ललचाय, दरसण कारण दूबली।8।
थानै झुरै बिरज की नार, घर-घर झुरै गवालियां।

गऊवां तिण तज्यो मुरार, बछड़ा छोड़यो चूंगणों।9।
थारै माथै हरियो रूमाल, नखला मेंदी राचणी।
आयो रे फागणिये रो मास, गोपी गीत सुहावणां।10।
ऊधो कहे कर जोड़, कांय बिसारी कान्हवां।
म्हारी अरज सुणों रणछोड़, दरसण दया कर दीजिये।11।

भावार्थ-भगवान कृष्ण को जब अक्रूर अपने रथ पर चढ़ा कर गोकुल से मथुरा को ले गया था। वहां श्री कृष्ण ने कंस को मारा अपने माता पिता को बन्धन से छुड़ाया तथा अपने नाना को मथुरा के राज सिंहासन पर बैठाया किन्तु वापिस लौटकर गोकुल व्रजभूमि में नहीं गये। पीछे गोपियां ग्वाल बाल माता जसोदा अति दुखी हो रही थी। कृष्ण के वियोग में प्रतिपल प्रतीक्षा में व्यतीत करने लगी तथा विलाप करती हुई कह रही थी। हे गिरधर! कृष्ण वापिस आ जाओ। हम सभी आपके दर्शन के लिये व्याकुल है। इस लूर में प्रथम तो कृष्ण की सुन्दरता का वर्णन है फिर वहां के गोप ग्वाल गऊवों बछड़ों के दुख का वर्णन किया गया है। इसमें कृष्ण को मीठा-मीठा उल्हाना भी दिया गया है। माता जसोदा की स्थिति तो बड़ी ही दयनीय बतलाई गई है। कृष्ण को व्यतीत हुए दिनों की भी याद दिलाई गई है। जिन दिनों में गोपियों से जसोदा से मांग-मांगकर मक्खन खाया करते थे। अब मथुरा जाकर महाराज बन चुके हो। परन्तु हमारे लिये तो वही श्याम सुन्दर कन्हैया ही हो। एक बार आकर अपना सुन्दर मुख अवश्य ही दिखा दो यही इस लूर का भाव है। शब्दार्थ स्पष्ट ही है।

साखी दोहा-130

सौ दिन हरि की भक्ति करे, एक दिन ध्यावै आंण।
सो अपराधी जीव है, पड़ै चौरासी खाण।1।
आन देव ने धोकता, गयो जमवारो हार।
जूणी पावै पशु बैल की, ऊभौ बिकै बाजार।2।
एवाड़ै की खोजड़ी, चड़ी दुष्ट के हाथ।
ना तुलसी तन ऊबरै, ना कोई घाते घात।3।
पिरथवी का थाम्भा पड़या, लीवी लांप की ओट।
जाम्भेश्वर को छोड़ के, दीवी मुसाणां धोक।4।
मड़ी मुसांणां शीतला, पूजै कर कर कोड।

जीव पड़ैला नारकी, जम कूटैला भोड।5।
गोगो पूजै प्राणियां, भादरवै के मास।
पकड़ भूजा जम कूटसी, धर्मराज के पास।6।
पड़ा बंचावै भील सूं, ऊभा बालै तेल।
जमराजा हंस बोलिया, दो दिन करले खेल।7।
नेम धर्म सब छूट गया, दया गई सब उठ।
जमो दरावै ठोठ सूं, गई हिये की फूट।8।
ढ़ाढ़ी डूमां नै दान दैवै, लैवे माजनो पाड़।
जूंणी पावै भूत की, ऊभो सुणावै राड़।9।
गऊवां रा गोवा रोकै, आडि छपावै बाड़।
बिश्नोइयां विष्णु भणो, और दीजै सब छाड़।10।
जम्भगुरु हीरा विणजियां, कियो वैकुण्ठे वास।
ऊदो बोलै विणती, मैं थारे चरणों का दास।11।

भावार्थ-इस साखी में कवि ने आन देवता जैसे गोगाजी भूत प्रेत जोगणी शीतला आदि की पूजा करना मात्र पाखण्ड बतलाया है तथा कुपात्र को दान देना निषेध किया है। परमेश्वर सभी के सहायक होते हुए भी क्षुद्र देवताओं का सहारा लेना तो डूबते हुए तिनके का सहारा लेना है। ये भूत प्रेत भोपा आदि न तो मरने देते है और न ढ़ंग से जीने ही देते है। जिस प्रकार से भेड़ बकरी चराने वाले खेजड़ी के पते काट लेते है, न तो उस वृक्ष को पनपने देते और न ही पूरी तरह सूखने ही देते। वही दशा भूत प्रेतों के उपासकों की होती है। बिश्नोइयों को चेतावनी देते हुए कहा कि आप लोग विष्णु का जप करो। सतगुरु ने हीरों का व्यापार किया है, आप लोग हीरे छोड़कर क्यूं काच की तरफ भाग रहे है। इस जीवन को तो अपनी इच्छानुसार जी लो परन्तु आगामी आने वाला जीवन दुखमय हो जायेगा। दो दिन ही हंसने खेलने के है आगे तो अन्धेरी रात है।

साखी-131

मिनखा देही है अणमोली, भजन विना विरथा क्यूं खोवै।
भजन करो गुरु जम्भेश्वर का, आवागवण का दुखड़ा खोवै।
गर्भवास में कवल किया था, कवल पलट हरि विमुख होवै।
बाल पणे बालक संग रमियो, जवान भयो माया बस होवै।

चालीसां में तृष्णां जागी, मोह माया में पड़कर सोवै।
बेटा पोता अर पड़ पोता, हस्ती घोड़ा बघी होवै।
धन कर ऐस करे दुनिया में, मेरे बराबर कोई न होवै।
गर्व गुमान करै मत प्राणी, गर्व कियो हिरणाकुश रोवै।
गर्व किया लंकापति रावण, सीता हड़कर लंका खोवै।
सच्चा पायक रामचन्द्र का, हनुमान बलिकारी होवै।
तन में तीर्थ न्हाय त्रिवेणी, ज्ञान बिना मुक्ति नहीं होवै।
ज्ञान नहीं बन के मृग ने, किस्तुरी बन बन में टोवै।
अड़सठ तीरथ एक सुभ्यागत, मात पिता गुरु सेवा से होवै।
दोय कर जोड़ ऊदो जन बोलै, आवागवण कदै नहीं होवै।

भावार्थ–जीवन के प्रत्येक पक्ष को छूती हुई यह साखी नाना विषयों को उजागर करती हुई प्रवाह गति से गायी जाती है मानव जीवन का लक्ष्य उच्च कोटि का होना चाहिये। लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिये। जिन्होनें जीवन में लापरवाही की है उनकी दुर्गति हुई है। अन्धकार मानव का शत्रु है। निरहंकारी होकर ही जीवन को उन्नत बनाया जा सकता है। यही इस साखी में विशेष रूप से संकेत किया है।

साखी–132

सहंस्र नाम संभाल, परभाते पूजा करो।
आवागवण नै होय, जीव अभय ले उधरो।
जीव अभय ले उधरो नै, सतगुरु करै सहाय।
स्वर्ग तणों सांसो नहीं, जरा मरण मिट जाय।
पाठ कर पूजो हरि नै, कटै जम को जाल।
वेद व्यास कथिया जको, सहंस्र नाम संभाल।
प्रभाते पूजा करो।1।
भगवत गीता गाय, ग्रन्थ नहीं गीता समो।
उर में चेत अजाण, लख चौरासी क्यों भवों।
लख चौरासी क्यों भवो नै, गीता गुण कर याद।
अर्जन पूछी हरि कही, सो संवाद संभाल।
श्याम सदा साथ रहै नै, मन इच्छा फल पाय।
पाप सब प्रलय हुवै नै, भगवत गीता गाय।

ग्रन्थ नहीं गीता समो।2।
भागवत पुरो पुराण, सुणिया ही सांसो मिटे।
हुए अर्थ को लाभ, किया कर्म सब ही मिटै।
किया कर्म सब ही मिटै नै, हुए अर्थ आधार।
पारायण पूरी सुणी नै, परिछित पहुंतो पार।
शास्त्र सुन आलस न कर, उरमें चेत अजाण।
हरि उद्धव संवाद को नै, भागवत पुरो पुराण।
सुणियां ही सांसो मिटै।3।
शब्दां सरीखो सार, म्हारे सतगुरु आप सुणावियो।
पर हर पाप विकार, जोति हुवै जित जाविये।
जोति हुवै जित जाविये नै, लीजै शब्द उच्चार।
शुद्ध मन होकर होम कीजै, हुवै मंगलाचार।
पाप सब परलय करो नै, मुक्ति द्यो मुरार।
श्री वायक संभाल प्राणी, शब्दां सरीखो सार।
म्हारे सतगुरु आप सुणावियां।4।

भावार्थ–अज्ञात कवि द्वारा विरचित यह साखी है। इस साखी में कवि ने सर्व प्रथम सहस्र नाम अर्थात् भगवान विष्णु के हजार नाम वाले सहस्र नाम ग्रन्थ का पाठ श्रवण मनन करने का कहा है। इससे दुखों से छूटकर मुक्त हो जाओगे। इस प्रकार से प्रथम चरण में सहस्र नाम का महत्व बतलाया है। दूसर चरण में श्री मद् भगवत गीता का गायन श्रवण मनन करना बतलाया है। वह गीता जो भगवान कृष्ण ने अर्जुन को सुनायी थी। वह ऐसा दिव्य ग्रन्थ है जो जीवन की सभी उलझनों का समाधान प्रस्तुत करता है। गीता पापों को काट देती है। तीसरे चरण में भागवत महापुराण का महत्व बतलाया है तथा पुराण में भी हरि उद्धव का संवाद ही अधिक महत्वपूर्ण है जिनके सुनने से संशय कट जाता है। चौथे चरण में सतगुरु देव द्वारा उच्चारण किये हुए शब्दों का महत्व बतलाया है। सतगुरु ने हमें सभी वेदों शास्त्रों का सार शब्द रूप में बतला दिया है। शब्द उच्चारण स्वर से करें तथा जहां भी हवन की ज्योति हो वहां पर अवश्य ही जाना चाहिये और एक स्वर से शब्द उच्चारण करना चाहिये यह विधान बतलाया है। शुद्ध मन होकर जीव की भलाई के लिये हवन कीजिये इससे आनन्द मंगल होगा।

साखी-133

आवो मिलो साधो मोमणों, रलि मिली जुमलै होय।1।
आसा तिसनां पापणी, तजिये कारण जोय।2।
ओगण गारो आदमी, गुण कूं लखै न कोय।3।
अजर जरै भवसागर तिरै, पापी परलै होय।4।
अमृत बाणी बोलणों, दोष न लागै कोय।5।
काम क्रोध को मेल है, ज्ञान नीर सूं धोय।6।
चंचल चित को थिर करो, सुरग वास हुवै तोय।7।
ढूंढ़ै सासा पलक में, फिर गति कैसे होय।8।
तपै जो ऋषियां सरण जां, तेरी भरम गांठ दे खोय।9।
पर निंदा मुरखो करै, जिण गुरु नै चीन्हो कोय।10।
भव सागर तिरणों कठिन, मेर तजै नहीं कोय।11।
सांसो सांस सिंवरण करो, साध केशो कह तोय।12।

भावार्थ-साधो तथा भक्तों आओ मिल जुलकर बैठो। मिलकर बैठने से ही जुमला सत्संग हो सकेगी। व्यर्थ की आशाऐं एवं तृष्णाऐं त्याग देनी चाहिये। क्योंकि इनके परिणाम अच्छे नहीं है। ओगण वाला स्वभाव से ही दुष्ट व्यक्ति तो अपनी दुष्टता नहीं छोड़ेगा तथा गुणों की पहचान नहीं कर सकेगा। अजर काम क्रोधादि को जला दो तो अवश्य ही भवसागर से पार हो जाओगे। जो पापी जन वे लोग प्रलय विनाश को प्राप्त हो जायेंगे। अमृतमय मधुर वाणी बोलनी श्रेयष्कर है ऐसी वाणी बोलने से वाणी को दोष नहीं लगता। काम क्रोधादि तो मेल है इन्हें ज्ञान रूपी जल से धोया जा सकता है। चंचल चित को स्थिर करोगे तो निश्चित ही तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी। प्रत्येक पल पल में श्वांस श्वांस में विषयों को ढूंढ़ता है तो फिर गति कैसे होगी? यह चंचल मन संसारमय हो रहा है। अनेकों आशा इच्छाऐं बलवती हो रही है। ऋषि लोग तपस्या में लीन है, उनकी शरण में जाओ तो तुम्हारी भ्रम की गांठ खोल देंगे। पराई निंदा करना ही मूर्खता है वह गुरु को कैसे पहचान सकेगा। भवसागर से पार उतरना अति कठिन है क्योंकि मेरा तथा मैं भाव को छोड़ नहीं पा रहा है। साधु केशोजी कह रहे है कि प्रत्येक श्वांस भगवान के स्मरण में ही बीताया जावें। यह ओम सोहं की ध्वनि प्रत्येक श्वांस के साथ चल रही है इस तरफ केवल ध्यान देने की ही आवश्यकता है।12।

साखी-133 ''प्राणियां'' राग सुहब

जग में तो दातार बड़ो रे, विधि सूं सुणों विचार।
म्हारा प्राणियां रे।टेर।
जल जीवण ऋषि तापियो, कठियारे करधार।
बलि राजा चकवै हुयो, दान तणों उपकार।2।
रांके दत रांके दियो, भाव भुजा भल भीख।
मान धाता मही ऊपरै, अमर हुवो मंडलीक।3।
हाथ दवादस लूगड़ो, दीन्हो हरि के हेत।
दुर्योधन दीठो दुनी, जलम्यो छत्र समेत।4।
एक अधोड़ी दान दीवी, कर पुरो हित सूं प्रीत।
संसार सुण साको कियो, हुयो विक्रमाजीत।5।
भूपति पोख्यो बाघ नै, विध सूं विप्र विचार।
दान दियो राजा मोरध्वज नै, आधा अंग उतार।6।
सींचाण सिंवर संतोषियो, तन कांप्यो कर धार।
अस्थि त्वचा दोनों दिया, देव कहयो दातार।7।
पोहमी प्रगट बादशाह, तास समो सैतुल।
हेतम हेत कर सूंपिया, कीयो कोल कबूल।8।
रावण सिव नें सूंपिया, दस मस्तक दस बार।
नव ग्रह रावण बांधिया रे, दान तणै उपकार।9।
पहिलै परमल सींचियो रे, ऊपर सींधो सींच।
साख रही संसार में, दीयो दान दधीच।10।
अनेक अनेक अरू उधरया, गिणत न आवै पार।
जिण केशव की वीणती रे, म्हारी आवागवण निवार।11।

भावार्थ-जगत में बड़े-बड़े दाता हुए है, विधि विधान से उनके बारे विचार सुनिये तथा दाता बनिये। हे प्राणियों! जल जीवण नाम के एक ऋषि ने वट वृक्ष के नीचे समाधी लगाई थी। वह वृक्ष फैलता हुआ जड़ें पसारता हुआ झोंपड़ी का रूप धारण कर चुका था। एक कठियारे ने सूखी लकड़ी काटने का प्रण लिया था किसी महापुरूष के सामने। उस दिन वह बहुत ही दूर चला गया था। वहां तक चला गया जिस वृक्ष के नीचे ऋषि समाधिस्थ थे। वही सूखा वृक्ष उस कठियारे ने देखा था। सूखी लकड़ी जानकर तुरन्त कुल्हाड़ी

चलाई। शून्य में आवाज आयी और ऋषि की समाधि टूट गई। प्राणों का संचार हुआ तब भूख लग गयी। भोजन एवं जल की मांग की तो उस कठियारे ने अपने पास से तुरन्त ऋषि को रोटी और जल दे दिया। वह रोटी पानी अपने लिये लाया था किन्तु आज उसने एक सुपात्र को दान दे दी थी। ऋषि ने भोजन किया और जल पीकर आशीर्वाद देकर पुन: समाधिस्थ हो गये। कवि कहते हैं कि उस दो रोटी के दान से वह कठियारा चकवै का राजा बलि हुआ था। यह सुपात्र के दान का फल हुआ।2।

किसी भिक्षुक ने अपने ही साथी दूसरे भिक्षुक को अपनी भिक्षा देकर उसके प्राण बचाये थे जिसके फल से मानधाता राजा इस महीमण्डल में वही भिक्षुक हुआ था। यह दान का फल हुआ था।3। बारह हाथ कपड़ा किसी ने सर्दी में ठिठुरते हुए दुखी को प्रदान किया था तथा हरि के अर्पण करके दिया। उसी के फल स्वरूप यह महान दाता दूसरे जन्म में दुर्योधन हुआ था जो छत्र समेत ही पैदा हुआ था।4। एक अधोड़ी का दान देने वाला दूसरे जन्म में राजा विक्रमादित्य हुआ था। संसार के लोगों ने यह सुनकर आश्चर्य ही प्रगट किया था कि यह कैसे हो सकता है।5। राजा मोरध्वज ने सिंह के आगे अपने ही शरीर को काटकर डाल दिया था। ऐसे ऐसे दानी भू पर हुए है।6। राजा शिवि ने सींचाण पक्षी के सामने अपने सिर को काट काट कर डाल दिया था। देवताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। हालांकि राजा मोरध्वज और शिवि की यह परीक्षा ही थी।7। इस संसार में अनेकों बादशाह हुए है जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। जिन्होनें प्रेम सहित अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया। जो वचन दे दिया उससे पीछे नहीं मुड़े। उसके लिये अपने प्राण भी देने पड़े तो सहर्ष दिया भी। रावण ने भगवान को अपना मस्तक काट करके समर्पण कर दिया ऐसा दस बार किया था। उसी दान के प्रभाव से रावण के पास दस मस्तकों की बुद्धि तथा बीस भुजाओं की ताकत थी। उसी के बल पर रावण ने नौ ग्रहों को अपने अधीन कर लिया था। ऋषि दधीचि ने देवताओं की प्रार्थना पर उनका हित करने के लिये प्रथम तो अपने शरीर पर छाछ छिड़क कर अपनी चर्म गऊवों को चटवायी और अपनी हड्डियां देवताओं को सौंप दी।10। इस प्रकार से अनेक दानी संसार में हुए है जिनकी गिनती की जाये तो पार नहीं पाया जा सकता। केशोजी विनती करते हुए कहते है कि हे देव! हमारे जन्म मरण के चक्कर को काट दीजिये।11।

साखी-134

सतगुरु कृपा करी मेरा जीवो, केवल ज्ञान बतायो।
तां दिन भेद लहै मेरा जीवो, ब्रह्मज्ञान सुध पायो।
ब्रह्मज्ञान पायो मन दृढ़ायो, तजो विषय अरू वासना।
भगती चाहूं मोक्ष पाऊं, और कछु नहीं आसना।
आन देव कूं नांय धोकूं, नांव निज हृदय धरूं।
तां दिन आत्म ज्ञान पायो, कृपा करी जम्भ गुरु।1।
भंवर गुंजार ध्यान धरो मेरा जीवो, प्रगटे दीपक माला।
अणभय ज्ञान भयो मेरा जीवो, हिरदै ज्ञान उजाला।
भयो घट में ज्ञान दीपक, जाग सुरता देखिये।
ठाम ठाम सब वस्तु दरसे, अलख पड़दै पेखिये।
रतन पदार्थ मांह लाधो, हृदय कंवल दरसावना।
भंवर भमंग गुंजार मांहीं, हुयो हृदय चानणां।2।
नाभि सूं नाडी चली मेरा जीवो, बंक एक नाड़ बखाणी।
ऊंची गगन गई मेरा जीवो, भेद कोई बिरला जाणे।
भेद बिरला जाणै, चढ़यो गिगन अटारियां।
निरत सुरत को ख्याल देख्यो, चंद सूर दोय नाड़िया।
नजदीक नैणां लाल झांई, जोत दरश लिव लावणां।
बांये अंग नाडि पिंगला, बंक नाडी रस पीवणां।3।
विना पग चले मेरा जीवो, विना मुख हरि गुण गावै।
श्रवण विना शब्द सुणै मेरा जीवो, कर विना ताल बजावै।
अनहद बाजा गिगन बाजै, ब्रह्मरूप होय पूगे।
त्रिवेणी तट हंस अधर बैठो, अमोलक मोती चुगे।
जोत झिलमिल इमी बरसे, तड़ तड़ चमक बादल बिना।
विना पांव नटवा निरत नाचे, ररंकार धुन विना।4।
जीवन मुक्ति भई मेरा जीवो, मिट गई त्रिविध बाधा।
जामण मरण मिटा मेरा जीवो, निर्भय भयो निरासा।
भयो निर्भय सुण सतगुरु को, काल प्रबल तो ना डरूं।
द्वार दसवें गगन चढ़ कर, सोह सिकर डेरा करूं।
सतचित आनन्द भेद निरगुण, धूंध मंडल पावई।

लिछमण पद सायुज्य पायो, मुक्ति जीवत ही भई।5।

भावार्थ–सतगुरु ने ऐसी दिव्य कृपा करके हमें कैवल्य ज्ञान बताया है। उस दिन सत्य असत्य का निर्णय होगा जिस दिन शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होगी। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई उससे मन में दृढ़ता आ गई। विषय वासना का परित्याग हो गया। हे देव! मैं मुक्ति तथा भक्ति चाहता हूं और मेरी कोई वासना नहीं है। आन देवता की पूजा नहीं करूंगा। हृदय में केवल विष्णु नाम ही धारण करूंगा। जिस दिन गुरु जाम्भेश्वर जी ने कृपा की थी उसी दिन आत्म ज्ञान की प्राप्ति हो गई।1।

हे मेरे जीव! दसवें द्वार में भंवरे के गुंजार सदृश नाद ध्वनि हो रही है, वहां पर चित लगाओ। नाद ध्वनि में चित की एकाग्रता होगी तब वहां अनेक दीप मालाओं का प्रकाश दिखाई देगा। उस समय अनुभव ज्ञान होगा। हृदय में उजाला हो जायेगा जिससे हम अपने घर के आनन्द का पता लगा सकेंगे। घट में ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित हो जायेगा। हे सुरति! जागृत होकर देखते रहना। ऐसी अवस्था में जो वस्तु जहां रखी है वहीं पर दूर देश में भी दिखलाई देगी अर्थात् सर्वज्ञ हो जायेगा। परदे के पीछे वह अलख निरंजन दिखाई देगा। एवं हृदय रूपी कमल में वह देव दर्शन देगा। मानों रत्न बहुमूल्य पदार्थ अन्दर ही छिपा हुआ था हम कहीं बाहर ढूंढ़ रहे थे। इस प्रकार से शब्द ध्वनि रूपी भ्रमर गुंजार से हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा।2।

नाभि से एक नाड़ी चलती है वह बंक नाड़ी से मिलती है। वहां से आगे बढ़ती हुई त्रिबंके यानि त्रिवेणी में अर्थात् गगन यानि दसवें द्वार में पहुंचती है। आगे दसवें द्वार में स्थिर हो जाती है। प्राणवायु भी वहीं पर स्थिर हो जाती है तब साधक समाधिस्थ हो जाता है। इस भेद को कोई बिरला ही जान पाता है। चंद सूर दोनों नाड़ियां जब त्रिवेणी सुषुम्ना में जाकर मिल जाती है तब निरति सुरति यानि मन की एकाग्रता का खेल देखती है। उस समय आनन्द दूसरा ही होता है। नेत्रों के निकट लाल-लाल ज्योति का दर्शन होता है। इस प्रकार की ज्योति दर्शन से साधक आनन्द में मस्त हो जाता है। शरीर के बांये हाथ में बंक नाड़ी है उसी नाड़ी द्वारा रस की प्राप्ति होती है। इसे इडा-चन्द्र भी कहा जाता है। दाहिने भाग की नाड़ी को पिंगला यानि सूर्य भी कहा जाता है। दोनों नाड़ियों की समानता को सुषुम्ना यानि सरस्वती भी कहा जाता है।3।

ऐसी दिव्य समाधि अवस्था में हरि स्मरण स्वत: ही चलता रहता है वहां पर हाथ पैर जिभ्या मुख श्रवण शब्द की कोई आवश्यकता नहीं होती। अनहद नाद ध्वनि दसवें द्वार गगन मण्डल में नित्य ही होती रहती है। वहां पर ब्रह्मस्वरूप होकर ही पहुंचा जा सकता है गंगा यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी पर जीव रूपी हंस विराजमान होकर अमुल्य आनन्द रूपी मोती चुगता है। वहां पर ज्योति की झिलमिल जगमग हो रही होती है। अमृत की वर्षा होती है। बिजलियां चमकती है किन्तु बादल रूपी माया का वहां नामोनिशान ही नहीं होता। बिना ही पैर के नृत्य करने वाला मन वहां पर खुशी के मद में नाचने लगता है। वहां नाद ध्वनि ओम के अतिरिक्त और कोई ध्वनि नहीं होती।4।

तीन प्रकार का ताप वहां पर मिट जाता है तथा जीवन मुक्त हो जाता है। जन्म मरण के चक्कर से छूट जाता है। आशाओं से रहित होकर सर्वथा निर्भय हो जाता है। सतगुरु की बतायी हुई विधि श्रवण करके निर्भय हो जाता है। प्रबल काल से भय नहीं रहता। दसवें द्वार पर पहुंचकर ओम सोहम् शिखर पर अपना आसन लगा लेता है। वहां पर शून्य मण्डल में सतचित आनन्द स्वरूपी निर्गुण की प्राप्ति हो जायेगी। लिछमणजी कहते है कि वहां सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति हो जायेगी तथा जीवन मुक्त हो जायेंगे।5।

साखी सोरठा-135

निस दिन श्वांस घटे मेरा जीवो, छ: सौ इकीस हजारा।
पल पल श्वांस घटै मेरा जीवो, हरदम सीजै थारा।
दम सीज जम लेण आवसी, पकड़ ले जावसी।
धन माल माया रहावसी, पीछे घणों पछतावसी।
तै नाम न लियो सुकरत कियो, छोड़ चल्यो घर बार ही।
निश दिन श्वांस घटे मेरा जीवो, छ: सौ इकीस हजार ही।1।
अब तुम वृद्ध भयो मेरा जीवो, पींजर पड़यो रे पुराणों।
इन्द्रियां रो तेज घट्यो मेरा जीवो, उठ गया देव दीवाणों।
उठ्यो दीवाणों भयो बहरो, मुख नैणां पाणी झरै।
शीश धूजै नांय सूझै, अधर अधर पगलां धरै।
पड़यो परवश करै गिरणां, गुण गोविन्द नहीं गावियो।
पींजर तेरा पड़यो पुराणो, बुढ़ापो बेगो आवियो।2।

हरि को भजन करो मेरा जीवो, ज्यूं साहिब मन भावो।
भजन करणां अजर जरणां, क्षमा दया हृदय धरो।
लोभ अहंकार क्रोध तजियो, आप जीवत ही मरो।
कीजिये नित साधु संगति, महा अमीरस पीजिये।
एक मन एक चित करो भक्ति, दूर दुबध्या कीजिये।3।
स्वर्गावास देवो मेरा जीवो, भवसागर दुख हारो।
कोटि असंख्य फिरयो मेरा जीवो, खट् रूत में दुख सारो।
नाम प्यारो जीव निस्तारो, सकल अंग दुख सीजिये।
वाद विवाद निंदा न करणी, मन अपणों बस कीजिये।
पाप संगत सब पर हरो, सु संगत नित कीजिये।
कहे सुरजन करो करणी, मुक्ति का मार्ग दीजिये।4।

भावार्थ-सुरजन जी द्वारा रचित यह साखी है। इससे पूर्व सुरजनजी द्वारा रचित साखियों का भावार्थ हो चुका है। यह साखी छूट गई थी इसलिये यहां पर दी जा रही है। इसका अर्थ भी सरल ही है इसलिये विशेष रूप से अर्थ करने की आवश्यकता नहीं है। प्रथम छन्द में श्वांस घटने की बात कही है प्रतिदिन इकीस हजार छः सौ श्वांस घटते जा रहे है। द्वितीय छन्द में वृद्धावस्था का वर्णन किया है जो सभी के सामने है। तृतीय छन्द में काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि त्याग करके हरि स्मरण की बात कही है। चौथे छन्द में मुक्ति की कामना कवि ने की है।

साखी राग गौड़ी-136

सेवगां सतगुरु बूझियो, तीर्थ कता कहावै।
कवन तीर्थ जाय न्हाइये, जांसूं पाप दुरावै।
पाप दुरावै सो किसो तीर्थ, गंगा यमुना सरस्वती।
प्रयाग काशी अवध मथुरा, सेंतु बन्ध द्वारावती।
जगन्नाथ केदार बद्री, ओर पुष्कर न्हाइये।
मुक्त हुवै सो किसो तीर्थ, सतगुरु हमें बताइये।1।
जम्भेश्वर यूं भाखियो, तीर्थ कहूं बखाणों।
अड़सठ तीर्थ है सही, जामें फेर न जाणोंं।
जामें फेर न जांणों, हृदय तीर्थ न्हाइये।
दान दीजै देह छीजै, फिर फिर पांव घसाइये।

अड़सठ महातम मिले इत ही, शुभ धाम परसाद सूं।
देश फलोदी मंझ तीर्थ, बागड़ मध्य बताव सूं।2।
इण भोमि में कोई जीव तिरयो, तहां को भेद बतावो।
भेद बतावो कुण पार पहुंच्यो, कोई जीव स्वर्गे गयो।
आ भोम सिद्ध कही तुम ही, और प्रगट किणी न कहयो।
वेद पुराण में नहीं संख्या, ऋषिवरां छानो क्यों रही।
चार जुगां में नहीं चावी, भोम पावन किण विध भई।3।
ब्रह्म सरोदक तीर्थ हुंवतो, सातवें कल्प के मांही।
वहां ब्रह्मा ने यज्ञ रच्यो, पावन रिज तांकी छांही।
सहंस अठयासी ऋषिवर आये, मारकण्डेय दत लोमियो।
खट् मास तक यज्ञ रच्यो, वेदी परनाले घी होमियो।
देव महेश सुरपति आये, आये विष्णु साथ ही।
ब्रह्म सरोदक तीर्थ हुंवतो, सातवें कल्प की बात कही।4।
होमायत दस मास भई दुजे जिग, सुरपति देव तणां व्योहारा।
होमें घृत भगवान तिरपत, होम्यां ही घृत अपारा।
होम घृत अपार जिग में, देव मुनि जय जय करे।
शंख धुनि सुर पुष्प वर्षा, गन्धर्व गुण गायन करे।
कंचन कलश चौक पुरायो, ब्रह्मा भेद विचारियो।
शुद्ध भोम अरू भेद विचार, सतगुरु शंकर यज्ञ रचावियो।5।
तीजो जिग पाण्डवां कीयो, कीवी सामग्री तैयारी।
सुरनर सुरपति आविया, आयो कृष्ण मुरारी।
कृष्ण आये जिग थाये, होम विद वेदी रची।
ब्रह्मा धुनि मुख वेद उचारे, वेद व्यास श्रीमद् वची।
मास अठारह भई होमायत, तीन लोक तिरपत भये।
पंचायन कृष्ण पुर्यो, पांण्डवां जिग पूर्ण भये।6।
एक ही कल्प तीनों भये, दतात्रेय भगवान भणीजै।
एक ही कल्प सनकादिक अरू, कपिल देव कल्प गिणीजै।
कल्प एक कपिल गिणीजै, थे तीनों एक कल्प।
ऐसे दो कल्प भये, तीजा वर्तमान कल्प।
चार कल्प तक रहयो ऊजड़, ये सात कल्प मानियो।

वेद पुराण को भेद नांही, भेद सतगुरु जानियो।7।
इण कल्प के वर्तमान में, सतयुग बात संभारियो।
सरस्वती आवत देख, ब्रह्मा कुदृष्टि निहारियो।
कुदृष्टि निहार्‌यो हर चक्र मार्‌यो, विधि मस्तक शंकर हन्यो।
ता पाप से एक चक्र लाग्यो, ब्रह्म हत्या पराछित बन्यो।
विचरत शिव इण भोम आये, खोद भोम आश न करयो।
रिज पावन लगी कर से, शंकर कर चक्र झड़्यो।8।
रजपूत बसै पड़ियाल में, कलयुग कथा संभारियो।
उनकी त्रिया दु:शीलनी, जिन कंत कटारी मारियो।
मार कंत संग और ध्यायी, जिन छोड़्यो चित्रंग ताल में।
कर से ही खवामण कीनो, बैठी दुख हवाल में।
जेठ वदि की बीज बृहस्पति, भई वर्षा भारिया।
रिज पावन लगी कर से, कर सूं झड़ी कटारियां।9।
कियो मनोरथ उतम भोम कूं, रथ चढ़ जम्भ पधारे।
एक सहंस अरू सात सौ, साधु संत जन सारे।
साधु संत संग गुरु गवन कीनो, खींदासर वासो लियो।
दिन दूजे इन भोम संता, आय तट डेरो कियो।
षट् मास तक रहयो आसन, जहां थापी सतगुरु साथरी।
नर नारी माटी सबही काढ़े, जुड़्या जमाती जातरी।10।
सेवगां सतगुरु बूझियो, इण तीर्थ जल क्यों खारो।
जम्भेश्वर यूं भाखियो, इनको सुणो विचारो।
सुणों विचार जद समंद मथियो, शेष नाग नेतो गहयो।
चवदै रतन काढ़ लिया, समंद जल खारो भयो।
मंथन करता नीर उछल्यो, केई जोजन अलगो गयो।
जहां पड़्यो तहां खार प्रगट्यो, यो जल खारो यूं भयो।11।
पनरासै छयासठे, अगहन पख आधार।
पुख नखतर अरू पंचमी, वृहस्पति वार सुवार।
ता दिन नींव तालाब तीर्थ, देव हुकम ओदी दई।
ओ धाम ऐसो मुक्त पावो, श्री जम्भेश्वर यूं कही।
हवन प्रतिष्ठा करि पूजन, गोप प्रगट यूं दाखियो।

तीर्थ विगत तालाब महातम, वील्हाजी से केशव सुण भाखियो।12।

भावार्थ–एक समय सेवकों ने सतगुरु से तीर्थो के बारे में पूछा था। सतगुरु ने तो अड़सठ तीर्थ हृदय के भीतर ही बतलाया। किन्तु जब बाहर लोकाचार की बात का भी समर्थन करते हुए श्री देव ने बतलाया कि आपको कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है यहीं बागड़ देश में ही जाम्भोलाव तीर्थ बतलाया, स्वयं श्री देवजी ने वि. सं. 1548 में तालाब खुदवाने का कार्य प्रारम्भ किया था, संवत् 1566 मिगसर कृष्ण पक्ष की पंचमी के दिन वहां पर पहुंचकर तालाब की प्रतिष्ठा का उद्घाटन किया था। छः महीने तक लगातार आसन वहीं पर ही रहा था। उसी समय ही संतों को तालाब का महात्म्य बतलाया था। जिसमें सतयुग त्रेता तथा द्वापर में अनेकों यज्ञ होने की बात इस साखी में कही गई है। कलयुग में भी अनेक पापियों के पाप यहां पर खण्डन हुए है यह अनेक कथाओं द्वारा पता चलता है जम्भसार में भी जाम्भोलाव की कथा विस्तार से कही गई है। यह कथा वील्होजी ने अपने शिष्य केशोजी से कही थी और केशोजी ने यह साखी के रूप में प्रस्तुत की है इसकी कथा स्पष्ट है। अब आगे दूसरी जाम्भोलाव की साखी गोविन्दराम जी वर्णित करते है।

कवि सं.–43 ''गोविन्दरामजी'' का संवत् 1860–1950 के मध्य में जीवन समय था। साहबराम जी ने जम्भसार में गोविन्दरामजी की स्तुति करते हुए कहा है–गोविन्द तो गोविन्द सम जानो। गोविन्दरामजी ने अनेक फुटकर छन्दों की रचना की थी। इन्होनें वील्होजी की महिमा में कुछ छन्द बनाये थे। तथा इनके द्वारा रचित दो साखियां उपलब्ध है। ये जाम्भा के महंत थे। विख्यात ज्ञानी एवं सामाजिक न्यायकारी वक्ता थे। इन्हींने सबदवाणी सम्पादन का महत्वपूर्ण कार्य किया था। वर्तमान में प्रचलित सबदवाणी शुद्ध रूप इनकी ही देन है।

साखी जाम्भोलाव की–137 ''छपइया''

श्री जम्भेश्वर धाम, जाय जन धका जो खावै।
पाप मिटे पल मांय, जहां जम हाथ न लावै।
लगे चोट धर्म डंड, जम डंड देण न पावै।
होम करे कर हेत, सबद जम्भेश्वर का गावै।
माटी काढ़े प्रेम सूं, जन्म मरण भव दुख मिटै।
श्री जम्भ को परसता, करम जूण खिण में कटे।

साखी-138

कपिल सरोवर नाम, कलियुग तीरथ थापियो।
देश फलोदी मांय, भाग परापति पावियो।
भाग परावति पावियो नै, कृपा करी जगदीश।
आदू तीर्थ प्रगट कियो, सही विसवा वीस।
कपिल मुनि तपै यहां नै, तपै ऋषेश्वर जोग।
जम्भसरोवर नाम अब, परगट कह सब लोग।
कलियुग तीरथ थापियो।1।
दवापर जुग के मांय, बहु जिग कर हरि पूजियो।
पांडू परमारथ रूप, वेद व्यास जी नै पूछियो।
वेद व्यास जी नै पूछियो नै, थे कृपा करो भगवान।
दिव्य दृष्टि है आपकी, म्हां सूं कहो बखाण।
ऐसो तीर्थ जगत में, जहां अनंत गुणो फल होय।
जिहिं तीर्थ म्हे जिग करां, म्हारी मनसा पूर्ण होय।
वेद व्यासजी नै पूछियो।2।
कलियुग मंझ के मांय, पाप पूरे जग छावसी।
तीर्था रो घटे प्रभाव, दसो दिस दोष दरसावसी।
दसो दिस दोष दरसावसी नै, धरम हीण संसार।
श्रुति पुराण भागवत को, मानें नहीं लिंगार।
धर्म अंग राजा हुवै, पूछे श्रुति विचार।
गोप तीर्थ प्रगट कियो, महिमा बधे अपार।
घर घर मंगल छावसी।3।
कपिल सरोवर नाम, कृत जुग में कह भाखियो।
तीर्थ अधिक अनूप, वेद व्यास जी नै यूं आखियो।
वेद व्यासजी नै यूं आखियो नै, पांडू चल्या परदेश।
यज्ञ करण के कारणै, आया बागड़ देश।
विविध भांति सूं यज्ञ कियो, उतम तीर्थ जांण।
हेत करि हरि पूजियो, पांडू परम सुजाण।
जम्भेश्वर यूं आखियो।4।
तीर्थ जाम्भोलाव, हेत कर जहां जावियो।

हरष करे कर कोड, जांण र गंगा न्हाविये।
जांण गंगा न्हाण कीजै, माटी सूं चित लाय।
निसार माटी करो पूजा, निंवत संत जिमाय।
विष्णु मन्दिर होम कीजै, परिक्रमा करि प्रीत।
साखी हरजस सबद गावै, कर कर उत्सव रीत।
श्री जाम्भेश्वर गुण गाविये।5।
तीरथ बड़ो तालाब, जहां जाय सूत फिराविये।
भाव भगति मन सार, सहंस गुणों फल पाविये।
सहंस गुणों फल पाविये नै, जो सेवे मन कांम।
सायुज्य मुक्ति मिले, पावै मन विश्राम।
अड़सठ तीर्थ उपरा, जम्भ सरोवर धाम।
श्री जाम्भोजी की कृपा से, वरणत गोविन्द राम।
जहां जाय सूत फिराविये।6।

जाम्भोलाव की महिमा बताने वाली यह साखी है। इस तीर्थ को कपिल सरोवर के नाम से बतलाया है। यह मान्य है कि कपिल मुनि ने यहां तपस्या की थी। द्वापर युग में पाण्डवों ने वेदव्यास जी से वनवास काल में पवित्र भूमि के बारे में पूछा था वेद व्यासजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से यही जाम्भोलाव तालाब बताया था। पाण्डवों ने वनवास काल अधिकतर यहीं व्यतीत किया था। उस समय यज्ञ उपासना करते हुए अपने पूर्व पापों को धो डाला था।

कलयुग में जाम्भोजी ने भी इसी जगह को सर्वश्रेष्ठ स्थान चुना था और अपने सेवकों को बतलाया था। यहां पर तालाब से मिट्टी निकालना, विष्णु मन्दिर में हवन करना, शब्दों का उच्चारण करना, तालाब के चारों तरफ कपड़ा फेरना, जिसे सूत फिराना कहा गया है और साधु संतों को निमन्त्रण देकर भोजन करवाना आदि पुण्य दायक माना गया है। यहां वर्ष में दो मेले लगते है। अड़सठ तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य मिलता है वही यहां पर स्नान ध्यान यज्ञ द्वारा प्राप्त होता है। यही इस साखी का भाव है। अर्थ साखी में ही स्पष्ट है।

साखी-139 ''छपइया''

अवगत अलख अपार, पार पावै नहीं कोई।
आद अन्त अरू मध्य, वेद कथ हारे सोई।

सचिदानन्द स्वरूप, ध्यान जोगेश्वर ध्यावै।
रात दिवस लव लीन, अन्तर का मेल गमावै।
दासा पण सूं हरि भजै, भगति भाव सूं मन धरै।
भवसागर दुख मेट के, अमर पद वासो करै।

साखी राग धनाश्री-140

मेधा नाम वैकुण्ठ, अखण्ड जोत जहां राजिये।
झिगमिग जोत प्रकाश, वांरो पार न पाविये।
वांरो पार न पाविये नै, झिगमिग जोत प्रकाश।
सूरज जहां ज्यूं है नहीं, उषण ताषण नहीं होय।
पावक तहां दरसै नहीं, सीत नहीं है कोय।
अखण्ड जोत जहां राजिये।1।
सतचित आनन्द रूप, एको हूं बहुता हुवै।
कियो शब्द प्रकाश, प्रकृति भई तिहिं जोत सूं।
प्रकृति भई तिहिं जोत सूं, त्रिगुणी वृति धार।
सतोगुण रजोगुण तमोगुण, कीयो बहुत विस्तार।
तीन वेद तहां मां भया, ब्रह्मा विष्णु महेश।
यां सूं सारो जगत भयो, काट्यो कोट कलेश।
एको हूं बहुता भया।2।
जिण रच्यो ब्रह्माण्ड, तीन लोक चवदा भवन।
मनु मरीच्यादि होय, देव दाणु प्रगट करन।
देव दाणु प्रगट किया नै, चौरासी लख जीव।
और जूण भिन्न भिन्न करी, सब को सतगुरु सीव।
जड़ चेतन रचना रची, कियो ओदर में वास।
ज्ञान विना नहीं ध्यान है, सचिदानन्द को भास।
सतगुरु विना नहीं पाविये।3।
सिंवरो श्याम स्वरूप, आण देव नहीं ध्याावियो।
विष्णु ओही जाप, मोख परम पद पावियो।
मोख परम पद पावियो नै, जो सिंवरे हरि नाम।
मन इच्छा सारी हुवै, फलै जो मनोरथ काम।
एकाग्रह मन को करो, दुबध्या दूर हटाय।

सिंवरो सांच श्याम नै, जलम मरण मिट जाय।
आण देव नहीं ध्याविये।4।
चरण शरण हरि नाम, भवसागर कूं लांघिये।
भक्तां भंजण भीड़, जुग जुग मां जस गाविये।
जुग जुग मां जस गाविये नै, संता सदा सहाय।
दुकरती मार दुख मेट के, दीनो धर्म बधाय।
भगत बछल महाराज कूं, भजिये आठो याम।
भगति किया भव उधरै, चरण शरण हरि नाम।
भवसागर कूं लांघिये।5।
विष्णु परम दयाल, सोई जाम्भेश्वर अवतर्‌यो।
भगति सुधारण काज, कलू में पंथ प्रगट कियो।
कलू में पंथ परगट कियो नै, पापी किया पहमाल।
पापी बहुत परचाविया, सोध्या जीव निहाल।
सुध जीव सोध्या सही, दीन्हो कवल निभाय।
गोविन्दराम कह जम्भ कूं, सिंवरो हित चितलाय।
भरम मत भूलो भाइयो।6।

भावार्थ–वह परमेश्वर अवगत अपार आदि अन्त रहित सच्चिदानन्द स्वरूप है उसका पार नहीं पाया जा सकता। रात दिन योगी लोग उन्हीं का ध्यान करते है, अन्तर के मेल को दूर करते है तथा दास भाव से हरि की भक्ति करते है। भवसागर को पार करके अमर पद प्राप्त हो जाते है।

वैकुण्ठ लोक हरि का परम धाम है। जिनका नाम मेधा भी है। ज्ञान एवं दिव्य प्रकाशमय वह लोक है जिसे मेधा कहना उचित ही है। वहां पर परमात्मा की अखण्ड ज्योति जलती रहती है। वह ज्योति सदैव झिगमिग करती हुई सभी को प्रकाशमान करती है उसका पार नहीं पाया जा सकता। वहां पर सूर्य नहीं है फिर भी करोड़ों सूर्य जैसे प्रकाश सदैव उसी ज्योति से बना रहता है वहां पर चन्द्रमा भी नहीं है। सर्दी गर्मी भी नहीं है। अग्नि के अभाव में वहां ठण्ड भी नहीं है। केवल अखण्ड ज्योति का ही वहां पर प्रकाश है।1।

वह परमात्मा सतचित आनन्द स्वरूप है। सृष्टि के प्रलय की समाप्ति पर उस परमदेव ने इच्छा उत्पन्न की कि एक से मैं अनेक बनूं। इसी

इच्छा के फलस्वरूप सर्व प्रथम शब्द की उत्पति हुई। उसी शब्द की ज्योति द्वारा प्रकृति अपने स्वरूप को पुनः प्राप्त हुई। उसी प्रकृति में तीन गुण आये जो सत्व रज तथा तम के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्हीं प्रकृति ने अपने तीन गुणों द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि का विस्तार किया। सर्वप्रथम तीन देवता ब्रह्मा विष्णु तथा महेश प्रगट हुए। इन्हीं तीनों से सम्पूर्ण जगत हुआ है। करोड़ों क्लेशों को उस देव ने काट दिया और सृष्टि की रचना कर डाली एक से बहुत इस प्रकार से हुऐ है।2।

जिस देव ने ब्रह्माण्ड की रचना की है, उस ब्रह्माण्ड में तीन लोक चवदा भवन विद्यमान है। उन देव ने मनु मरीचि आदि ऋषि भी उत्पन्न किये। देव दानव मानव की उत्पति भी उसी ने ही की है। चौरासी लाख जीव योनियां भिन्न-भिन्न करके उत्पन्न की है। उसी देव ने जड़ चेतन सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की है तथा स्वयं ही सष्टि के रूप में आकर गर्भ में वास लिया है। ज्ञान के बिना ध्यान नहीं होता तथा ध्यान के बिना सच्चिदानन्द की प्राप्ति नहीं होती वह ज्ञान सतगुरु के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता।3।

श्याम स्वरूप विष्णु का स्मरण करो अन्य देवता की उपासना त्याज्य है। विष्णु का जप ही मोक्ष गति देने वाला है। विष्णु का जप करने से मनों वांच्छित फल की प्राप्ति होती है। मन को एकाग्र करके किया हुआ जप सम्पूर्ण द्विधा द्वैत भावना को मिटा देगा। सत्य श्याम का स्मरण करो इससे तुम्हारा जन्म मरण मिट जायेगा।4।

हरि का नाम तथा हरि की शरण ही भवसागर से पार उतारने में समर्थ है। भक्तों के दुखों का भंजन करने वाले हरि का नाम युगों-युगों तक गाया जाता है। हरि ने ही दुष्कृति पाप मेटकर धर्म को बढ़ावा दिया है। भक्त वत्सल भगवान को आठों प्रहर याद रखिये। जिनकी भक्ति करने से संसार सागर से पार उतर जाओगे।5।

विष्णु परम दयालु है वही गुरु जम्भेश्वरजी के रूप में अवतरित हुए है। भक्तों का कर्म सुधारने के लिये कलयुग में पन्थ प्रगट किया है। पापियों को पराजित करके कलयुग में बिश्नोई पन्थ प्रगट किया है अनेक पापियों को सन्मार्ग पर लाये। प्रहलाद पंथी जीवों को खोज करके उन्हें निहाल कर दिया। शुद्ध जीवों को खोजकर के प्रहलाद के वचनों को पूर्ण किया है। गोविन्दराम जी कहते है कि ऐसे पूर्ण देव जाम्भेश्वर को चित लगाकर प्रेम से स्मरण मनन

करें। भ्रम से भूल कर हे भाइयों भटको मत।6।

कवि सं.-44 ''साहबराम जी'' का जन्म वि. सं. 1871-1948 है इनकी निम्नलिखित रचना प्राप्त हुई है-सार शब्द गुंजार, और जम्भसार तथा दो साखियां जो प्रहलाद भक्त से सम्बन्धित है, एक प्रसिद्ध आरती भी साहबराम जी द्वारा रचित है। जम्भसार साहबरामजी की महत्वपूर्ण रचना तथा संग्रह है। यह दो भागों में बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश से पूर्व में प्रकाशित हो चुकी है तथा सार शब्द गुंजार उनकी अपनी अनुभव की रचना है वह भी जम्भसार के साथ ही प्रकाशित हो गई है।

साखी प्रहलाद की-141

परम भगत पहलाद, हिरणाकुश दुख ही दियो।
घोल हलाहल जहर, उण पायो इण पी लीयो।
उण पायो इण पी लियो नै, महा विसनु को नाम।
मुलताने मेलो मंड्यो नै, देखे सारो गांम।
दैतां कुल इचरज भयो, मार्यो मरे न बाल।
हिरणांकुश हिरदै डरै, आय गयो मुझ काल।
पुत्र नहीं कोई देव है।1।

फौजा लई बुलाय, मार मार मुख ओचरे।
तोपा दई झुकाय, ओला ज्यूं गोला पड़ै।
ओला ज्यूं गोला पड़ै नै, तीर तुपक तलवार।
परसी परघा मरगला, मुगदर करे ज बहुती मार।
छुरी कटारी गुपती चालै, लागै नहीं लिंगार।
हरि भक्तां रे संग रमै, जाणै नहीं गिंवार।
जाकै साची टेव है।2।

मरे नहीं पहलाद, हिरणाकुश हिरदै डरै।
गई भूख अरू पियास, रात दिन सांसो करै।
रात दिन सांसो करै नै, कोट चिण्यो कर रीस।
करोड़ साध किया केद में, तीना उपर तीस।
सो जोजन ऊंचो चिण्यो, अन जन कबहूं न दीस।
रवि दवादस गढ़ कांगरा, तपै जो विसवा वीस।
जाणै नहीं तहां भेव है।3।

हरि रा आडा हाथ, बादल नित बरषा करै।
छपन भोग तियार, रिधि सिधि साथे फिरै।
रिधि सिधि साथे फिरै नै, मेवा लिया मिष्ठान।
अन्न इच्छा लेवै नहीं पण, देवै करे गुण ज्ञान।
कुलफ खोय देखे दुष्ट, जब बीता बारा मास।
संता रे सुख अनन्त है, देख अरू भयो उदास।
सिधि करे सब सेव है।4।
खड़ग लिया उण हाथ, पांच करोड़ परलय किया।
पकड़ लियो पहलाद, संत सकल मन में डर्‌या।
संत सकल मन में डर्‌या नै, भागा आठ अरू बीस।
कंठ पकड़यो पहलाद को, कहां तेरो जगदीश।
मो तो खड़ग खंभ के मांहि, तब निकल्यो भभकार।
पकड़ पिछाड़ियो चौक में, जाणैं सब संसार।
साहब सतगुरु सेव है।5।

साखी-142

नरसिंह नर मुलतान, सतयुग में साको कियो।
मार्‌यो दैत दीवान, पहलाद भक्त गोदी लियो।
पहलाद भक्त गोदी लियो नै, सिरपर दोनूं हाथ।
शिव ब्रह्मा आया सही नै, सुर तेतीसूं साथ।
लिछमी हूं लारै लुकै तूं, मांग वचन पहलाद।
बाड़ै हुता बीछड़्या, आण मिलावो साध।
कर जोड़या ऐसे कही।1।
कह हरि महाराज, दूर पड़ै टोली टलै।
सांसो मत कर साध, चहुं फेरा चोकस मिले।
चहुं फेरा चोकस मिलै नै, चार जांमै जुग चार।
हरिचंद पाण्डू अंस तव, नन्द लोहट अवतार।
पांच सात नव करोड़ बारां, बहुरी मिलेंगे आंण।
नहतंती नर लोक में, आवै जम्भ सजाण।
दुख मेटण मोटो दई।2।
तारयो जिण पहलाद, हिरणाकुश मार्‌यो हरि।

असुरां लागी आंच, देख दुनी सारी डरी।
देख दुनी सारी डरी नै, गहया धर्म उणतीस।
अग्नि की पूजा करो, आय निवावो सीस।
असुर बुध अलगी भई, करे सोच सिनान।
पाहल ले प्रसण भया, अरू मांनै गुरु की आंण।
दिल की दुबध्या सब गई।3।
जब का बिछुड़या जीव, बिन खोजी पावै नहीं।
गया समंदरा तीर, विन लाया आवै नहीं।
विन लाया आवै नहीं नै, कलयुग बहै करूर।
भक्ति हमारी कूण करै, यूं जाण्यो विष्णु जरूर।
महा विष्णु को तप कियो, निरह निरंजण देश।
पहलाद कवल के कारणै, आये जम्भ नरेश।
घट घट व्यापक जम्भ वही।4।
लोहट है नन्दराय, जसोदा हांसा भई।
मरूस्थल है वृज भोम, पींपासर वृज है सही।
पींपासर वृज है सही नै, वचन के प्रति पाल।
कृष्ण कवल के कारणै, गुरु जम्भ लियो अवतार।
सतलोक को छोड़ के, गुरु किया भगवां भेस।
जेठ बदि नौमी दिन, गुरु कियो नन्द उपदेश।
साहब सतगुरु है सही।5।

भावार्थ–इन दोनों साखियों में कवि ने सम्पूर्ण प्रहलाद कथा का संक्षेप में वर्णन किया है। कथा का प्रारम्भ प्रहलाद को हिरण्यकशिपू द्वारा विष देकर मारने के प्रयत्न से हुआ है। भगवान नृसिंह खंभे से प्रगट होकर हिरण्यकशिपू को मार देते है। प्रहलाद को उनके तेतीस करोड़ अनुयायियों का उद्धार करने का वचन देते है। पांच करोड़ तो प्रहलाद के साथ पार उतर गये और सात करोड़ हरिश्चन्द्र के साथ त्रेतायुग में तथा नौ करोड़ का उद्धार द्वापर युग में युधिष्ठिर के साथ होने का वचन दिया था। बारह करोड़ का उद्धार कलयुग में जाम्भेश्वर जी के रूप में आकर नृसिंह भगवान ने किया। यही जाम्भेश्वरजी के अवतार का मुख्य कारण बताया है।

दूसरा कारण कृष्ण ने भी अपने माता–पिता को वचन दिया था कि

कलयुग में मैं फिर से आऊंगा और तुम्हें बाल लीला दिखाकर के आनन्दित करूंगा, यह भी एक खास कारण था। इसलिये कहा भी है कि वही पींपासर ही वृजभूमि है और लोहट ही नन्दजी है तथा माता हांसा ही उस समय की यशोदा है। कृष्ण ही जाम्भोजी के रूप में आये है। ऐसी मान्यता इस साखी द्वारा प्रगट होती है। बिश्नोई पन्थ की स्थापना की मूल धारणा प्रहलाद पंथ से ही की जाती है। इसलिये इन दोनों साखियों का समाज में महत्व है। ये दोनों साखियां प्राय: होली के अवसर पर या अन्य अवसरों पर भी प्रेम से गायी जाती है। सरलार्थ होनें से यहां पर विस्तार नहीं किया गया है। विशेष कथा प्रहलाद चरित्र में अवश्य ही पढ़ें।

कवि सं.-45, कुम्भाराम जी पूनियां वि. सं. 1937 में जन्मे थे। ये जेगला के पुनिया गोत्र के थे। इन्होनें दीक्षा साधु हरिनारायण जी से ली थी। इनके द्वारा रचित दो पुस्तकें प्राप्त हुई है। ''निर्वेद ज्ञान प्रकाश'' व ''पंथ यज्ञ प्रश्नोत्तरी मणि भाषा'' तथा अन्य साखियां तथा भजन भी प्राप्त हुए है।

साखी-143

आतम गंग न्हावो भाई, जांसूं सर्व पाप कट जाई।
भूल्या जीव भटकत है बाहर, भटक भटक मर जाई।
अड़सठ तीर्थ है तन मांही, गुरु विन लख्या न जाई।
गंगा जमुना चले सरस्वती, त्रिवेणी इक ठाई।
तन में तीर्थ न्हाय जगत से, सतगुरु शरणै जाई।
ओमकार जप दान गिणी जै, मोक्ष मुक्ति फल पाई।
जो कोई चावै मुक्ति अपनी, तो न्हावो तन मांही।
संचित आगम कर्म मिटे सब, बहुरी जन्म नहीं आई।
इस विध न्हाय लहो तन तीर्थ, पाप मिटे छिन मांही।
कर सतसंग न्हाय नित हित से, कहै संत समझाई।
कुम्भाराम त्रिवेणी न्हाई, सतगुरु विधि बताई।
अनंत जन्म का पाप धोय के, जीवन मुक्ति पाई।

साखी-144

सुण मन भाई कहूं समझाई, कोप न कीजै भाई।
जन्म मरण नित भोगे चौरासी, डरे नहीं कदाई।
लख चौरासी दुख बहु भांति, मुख से वरण्यो न जाई।

आयो दांव गमावै किम मुरख, फेर मिले न सदाई।
सतसंग कर काटी जम फांसी, ब्रह्मज्ञान चित लाई।
सुत वित नारी मित्र सब बन्धु, तुम कूं रहया बिलमाई।
ये सब है मतलब के प्यारे, अंत तजोंगे भाई।
शत्रु लख इन कूं अब तजिये, ब्रह्मज्ञान चित लाई।
श्वांशो श्वांस जप जाप अजप्पा, भूलो मत ना भाई।
अनहद बाजा बाजै गिगन मां, मन कूं तहां लगाई।
अनंत भानु सम तहां उजियाला, महिमा वरणी न जाई।
सर्वदेव ब्रह्माण्ड है तन में, सतसंग कर गम पाई।
हरि हर कुम्भा एक भये, अब द्वितीया दूर बहाई।

साखी भजन-145

साधो भाई ऐसा देश हमारा, जहां नहीं काल का चारा।टेक।
स्वयं प्रकाश एक जोत विराजै, नहीं चन्द नहीं तारा।
अग्नि सूरज वहां नहीं पहुंचे, विना भान उजियारा।
जन्म मरण दुख वहां नहीं पहुंचे, अजर अमर सुखारा।
सत रज तम गुण वहां नहीं पहुंचे, मूल माया से पारा।
ऐसे देश पहुंचे विरला, जिन लिया संता का सहारा।
अगम देश की अद्‌भुत रचना, पुकार कहै संत सारा।
अद्‌भुत महिमा ताकी वरणी न जावै, वेद संत सब हारा।
जाम्भो कुम्भो हरि द्वितीय नाही, ब्रह्म जोत इकसारा।

कवि सं. 46 ''साधु जगदीशराम जी'' जन्म संवत् 1960, ये भींयासर साथरी के भोलाराम के शिष्य थे। इनके लगभग बीस भजन, आरती, साखी, छन्द आदि प्राप्त हुए है। ये बिश्नोई प्राचीन कवियों की अन्तिम कड़ी कहे जा सकते है। आधुनिक कवियों एवं प्राचीन कवियों के बीच में सेतु का कार्य कर रहे है। नीचे एक साखी दृष्टव्य है यह साखी सरल भाषा में वेदान्त योग के विषय को उजागर करती है।

साखी-146

आवो मिलो साधो मोमणों, देखो जुमले री लोय जे।
जाग्रत को स्थूल है, विश्व नेत्र जोय जे।
बेखरी बाणी ऋगवेद की, ब्रह्मा देव पिछाण जे।

क्रिया शक्ति जाणिये, अकार मात्रा जांण जे।
स्वप्न में सूक्ष्म कही, तेजस कण्ठ रहाय जे।
मध्यमा वाणी यजुर्वेद की, सरस्वती गुरु कल्याण जे।
ज्ञान की शक्ति जाणिये, उकार मात्रा प्रवाण जे।
त्रिकुटि लख लीजिये, सही उगसी भाण जे।
कारण की सुषुप्ति, हृदय प्राज्ञ निहार जे।
पश्यन्ति वाणी साम वेद की, शिवदेव समझे सार जे।
द्रव्य शक्ति जाणिये, मकार मात्रा धर ध्यान जे।
तीनों की उपाधी तीन है, स्थूल सूक्ष्म अज्ञान जे।
तुरियां में तीनों नाहि, आत्म देव अपार जे।
परावाणी अथर्ववेद की, अचल देव निज धार जे।
रजोगुणी बेखरी जाणिये, मध्यमा सेती पहचान जे।
तमोगुण पश्यन्ति जाणिये, सतो गुण परा की जाण जे।
अनुभव आत्मा जाणिये, इनमें मीन न मेख जे।
जगदीश राम निज आत्मा, व्यापक घट में देख जे।

छपइयां

पांच पचीस दस लखे, तीन चार अरू दोय।
उणचासां रा मन मिलै, ज्ञान गोष्ठि तब होय।
जप तप तीर्थ योग है, धारण करिये कोय।
चार वेद छः शास्त्र को, सार समझले सोय।
खाणी बाणी अर्थ लखे, भेद खेद दे खोय।
जगदीशराम निज आत्मा, समझे विरला कोय।

हरजस-147

सतगुरु दरसण म्हे जास्यां, निज पुरबली प्रीत पिछाणी ए माय।
तन मन भूली सुधी बुधी भूली, चरणां में लिपटाणी ए मांय।
कथा प्रसंगा नित नव रंगा, चरचा रूचि उपजाणी ए मांय।
हरिगुण गुणस्यां हिरदै मां भणिस्यां, सुणी सुणी अमृतवाणी ए मांय।
हरि रंग राची प्रेम सूं नाची, रोम रोम विगसाणी ए मांय।
उदो दासा प्रेम प्रकाशा, हरि में सुरत समाणी ए मांय।

हरजस-148

आछो लागै जी महाराज , दरसण जाम्भोजी को।टेक।
जोजन धुन सबदन की सुणिये, घट परमल की बास।1।
चहूं दिस सन्मुख पीठ नहीं दीसै, कोड़ भाण प्रकाश।2।
चालत खोज खेह नहीं खटको, नहीं दीसे तन छांय।3।
तिसनां भूख नींद नहीं आवै, काम क्रोध घट नांय।4।
भगवीं टोपी भगवों चोलो, भलो सुरंगो भेश।5।
परमानन्द की विणती, मोहे संगत पार उतार।6।

साखी-149

भगवत आय भली बुध देवे, लेना है सो लेइयो।
सतगुरु आय संतां ने तार्‌यो, सद्‌मार्ग में लाइयो।
सतयुग में जब सृष्टि रची थी, भक्त प्रहलाद सहाइयो।
हिरणाकुश को मार गिरायो, भक्त हुवो शरणाइयो।
पंथ बिश्नोई कियो स्थापन, पंथि प्रहलाद कहाइयो।
त्रेता में जब सत्य हरिचंद, सत का पथिक बनाइयो।
बिछुड़े जीवों को पार किया तब, बिश्नोई पन्थ अनुसरियो।
द्वापर में जब राव युधिष्ठिर, युद्ध में वीर कहाइयो।
बिश्नोई मार्ग सत्य का पालक, सत्य सदा द्वापुरियो।
कलिकाल कहूं कठिन कराला, संत भक्तां नै दुभरियो।
विष्णु व्यापक सदा ही सहायक, जाम्भा रूप अवतरियो।
प्रहलाद भक्त कवल के कारण, मरूधर में सुहाइयो।
ज्ञान ध्यान उपदेशक स्वामी, अद्‌भुत रूप दिखाइयो।
भगवां वेश भक्त भव हारी, भगतां आप भजाइयो।
जाट भाट जोगी सन्यासी, सबकूं समता सिखाइयो।
सब ही नर नारायण रूप, विश्व रूप नरहरियो।
प्रभु जी आय दर्शन दिखाये, ज्ञान सुण्या भवतरियो।
भजन बताया गुरु जाम्भेश्वर ने, विष्णु विष्णु उच्चरियो।
नियम नव बीस दिये जग पालक, आवागवण चुकाइयो।
कृष्णानन्द खड़ो कर जोड़े, अब लीज्यो अपणाइयो।
तेरे गुणों को गावण चाहूं, बुद्धि बल बिगसाइयो।

लेखक द्वारा रचित यह साखी भी इन साखियों के महा समुद्र में बूंद की भांति सम्मिलित की गई है। समुद्र में मिल जाने से बूंद का अस्तित्व नहीं रहता क्योंकि बूंद भी तो समुद्र का ही अंग है। समुद्र से मिलकर प्रसन्नता का ही अनुभव करती है। इस प्रकार से साखियों का संग्रह हुआ है। अब आगे साखियां एवं फुटकर छन्द दिये जा रहे है जो साखियों से पूर्व गाये जाते है।

साखी-कथा गोपीचन्द की-150

मेल्ह बाजोट खवास बुलाया, गरम गंगोदक मंगवाया।
सेखत पाक अंग लगावै, कंचन वरणी काया।1।
चोवा चंदण अंग पर मलै, जोवै सति माता।
कां रह्यो जोवन का रही काया, है ये लेख विधाता।2।
गोपीचन्द ज्यों न्हांण संजोयो, रोई मेणावती माई।
बादल नाही ना कोई विरखा, बूंद कहां ते आई।3।
ऊंचो देख गोपीचन्द राजा, रोवै मेणावती माई।
कांय माता म्हारी अन्न धन उणों, कांय थारै अणराई।4।
ना गोपीचन्द अन्न धन उणी, नां म्हारे अणराई।
ऐसी देह थारे पिताजी री हुंती, जल बल हुई छांई।5।
आही डंबर आही हांणी, कुं कुं वरणी थी देहा।
ऐसी देह थारे पिताजी री हुंवती, जल बल हुई खेहा।6।
कुण गुरु करि थरपूं री माता, करूं कुणां की सेवा।
सोई दिश दाता होय मेरी, अमर हुवै मेरी देहा।7।
पूर्व पछिम देश परहरो, उतर दिखण न जाई।
अमर हुवै गोपीचन्द राजा, भणै मेणावती माई।8।
उतर देश बंगाला भणीजै, पच्छिम भणीजै रोगी।
बारह बरष मोये राज करण दे, पीछे होऊंगा जोगी।9।
कहां पिता तेरो गोपीचन्द, कहां तेरा बहण अरू भाई।
वे ही ज्यों तुम जावोगे, देह चर ले लो काई।10।
जाहुं रमियो जाहुं खेल्यो, जामण भोम सवांई।
अवर सब कुछ तजस्यों माता, धोलगढ़ तज्यो न जाई।11।
कित गया धोलागर राजा, कितना हस्ती घोड़ा।
माता मेणावती इण पर बोलै, कलि मां जीवण थोड़ा।12।

चकवे मण्डली गया सब देखो, सुरपति नरपति सोई।
आसा तिसना मार लिया सब, रहण न पावै कोई।13।
गोपीचन्द संजम लियो, सोर पड़्यो गढ़ मांही।
राज तज्यो जोगूंटो लियो, फिकर किसी की नांही।14।
आय आंगण थारी कुंवरी झुरवै, महल अन्तेवर राणी।
मन्दिर बैठी माता झुरवै, नैणे आवे छे पाणी।15।
राज तज्यो जोगूंटो लियो, वनखंड किया डेरा।
हाथ पतर भिछिया ने चाल्यो, मन ते छाडी मेरा।16।
कहे गोरख सुण गोपीचन्द, भिछिया कहां से ल्यायो।
खीर खांड से पतर छलायो, जोगूंटो सझण नै आयो।17।
हुवो निरालंभ पहरो धोती, अंग भभूति लगावो।
पहले भिक्षा घरां से ल्यावो, पाछे शहर फिरि आवो।18।
गोरख वचन सुण गोपीचन्द, अंग भभूति लगाई।
सज सिणगार अन्तेवर आई, थारे कांसूं मन आई।19।
किण जोगी जोगूंटो दियो, कुण था सीख चड़ायो।
किण जोगी थारो मन हर लियो, किण राजिन्द्र भरमायो।20।
जालंधर यो जोगूंटो दीयो, गोरख सीख चड़ायो।
मोह चक्कर में हूं भरम्यो थो, सांसो सोक मिटायो।21।
माया मोह मेर हम छाडी, थूक्या मने न भावै।
तूं जांणे राज ललचावूं, बोहड़ी धोलागढ़ आवै।22।
जोगी होयकर राजा हुवा, हंसे दुनिया सवाई।
मन राजा उनमन धीर आणों, सुन्दरी सुमति सुहाई।23।
थे राजा जोगूंटो लियो, आंगण मढ़ी चिणाऊं।
चोवा चंदण अंग परमल, आसण बाग लगाऊं।24।
सोने रो थे पतर करावूं, हीरा लाल जड़ाऊं।
खीर खांड सूं पतर पुरावो, ऊपर चंवर ढ़ुलावूं।25।
बाग बगीचा इम घर हुंता, खैण धोलागिर हुंती।
सोना रूपा घर ही घड़ता, आंण जम्बू में फिरती।26।
खीर खांड जीमता राजा, अब क्यूं भिक्षा भावे।
एक घर छोड़्या दोय घर मांग्या, भुगति भली पर भावै।27।

कड़वा मीठा और चरचरा, जिभ्या कूं रस आवै।
आहार करां मन कूं वस सुन्दरी, जिभिया ना थिर होवै।28।
पिलंग पथरणा पोढ़ा राजा, अब क्यों निंदरा आवै।
सिला सिंघासण ईट ओसीस, सुख सूं रैण बिहावै।29।
मां को सीख हुवो वैरागी, मुंध पड़ी मुरझाई।
कहै मेणावती सुण राजिन्दर, दर्शन दीजो आई।30।
तिण ज्यों तोड़ चल्यो राजिन्दर, परजा दुनि बोलावै।
डावी दिसां का सूणज बोल्या, बोहड़ी धोलागढ़ नहीं आवै।31।
गोपीचन्द जी रामत रमंतो, पर मैं नगर गढ़ आयो।
देख तमासो सूल सहर को, नायक नाद बजायो।32।
होय अवधूत जोगेन्दर बैठो, काया भभूति चड़ाई।
दरसण परसण दुनियां आवै, सुण सुण लोग लुगाई।33।
निगह निगह कर नारी पूछै, कवण दिशा ते आयो।
कहि नै उतपति थारी बाला, किण थानै सबद सुणायो।34।
के दध आखर माता कहियो, के कहियो कोई नारी।
जिण कारण थे जोगी हुवा, सोई विधि कहो तुम्हारी।35।
ना दध आखर माता कहियो, ना कहियो कोई नारी।
माता मैणावती सुपह बतायो, अमर कियो संसारी।36।
मरियो मरियो असड़ी माता, जिण ओ कंवर विसार्‌यो।
दूजी दुनिया दरसण आवै, क्यों नारी नेंह निवार्‌यो।37।
रहो रहो म्हारी माई बहणा, म्हारी मां कूं दोष न देणा।
माता मैणावती घणां दिन जीवो, मुख बोलो इम्रत वैणां।38।
सुरख बात सुणी सहर मां, राज महले राणी।
सोच कियो सोहेलाली सुन्दरी, नैणे आवै पाणी।39।
माता मैणावती मांय भणीजै, तूं गोपीचन्द भाई।
मर मर जाऊं थारी सुरत नै, बहण मिलण ने आई।40।
गोपीचन्द जी हित कर मिलियो, भाई भुजा पसारी।
धीरज करो गहो मन गाढ़ो, गोपीचन्द भिखियारी।41।
गोपीचन्द बोल जो बोल्या, गह भरि नैण जो आया।
एकर सौ घर चल मेरा बीरा, बहनड़ शब्द सुणाया।42।

बात करि सो सति करि मानी, बहनड़ बात विचारी।
तुम साहेब गढ़पति राजा, हम जोगी भेष धारी।43।
ऊंचै मन्दिर चढ़ै और जोवै, निरख चहूं दिश न्हालौ।
होय दिलगीर नै सांसौ घात्यो, पंथी पंथ संभालो।44।
रिण मां रहता वन मां बसता, देश दिशावर फिरता।
कह भरथरी सुणों गोपीचन्द, राज ज किस गढ़ करता।45।
हींवर हस्ती गौड़ करंता, सिंघ वराहा लड़ता।
घड़ नाऐ म्हे बस तिरंता, समंदा री लहरा लीता।46।
हर दिन मां हर कोड पड़न्ता, घुरत पखावज बाजा।
खांडी खपरी ले निसरियो, धोलागिर को राजा।47।
बोह सुख तजिया राजा हवै जोगी, चुको जामण मरियो।
गोरख वचनें गुरु प्रसादे, गावै जोगी हरियो।48।

यह साखी गोपीचन्द के योग धारण के सम्बन्ध में योगी हरिरामजी द्वारा रचित है। इस साखी में गोपीचन्द की बड़ी ही मार्मिक कथा कही है। एक राजा होकर अपनी माता के कहने पर सहर्ष योग धारण कर लिया और राज पाट को तिनके के समान त्याग दिया। वह समय था जब कोई वैराग्य को धारण करके सच्चे योगी बन करके अपने जीवन का कल्याण कर लेते थे। उस समय का ऐसा वातावरण ही था जो राज्य से भी बढ़कर योग साधना तथा अपने जीवन का कल्याण तथा जीवन मुक्त होनें की किमीया लोग जानते थे। अन्यत्र साखी में भी कह आये है कि ''कलयुग दोय बड़ा राजिन्दर गोपीचन्द भरथरियो जीवनै, अमर हुवा संसार में गोपीचन्द अरू भरथरी'' शब्दों के प्रसंगों से भी पता चलता है कि गुरु जाम्भेश्वरजी के पास सम्भराथल पर गोपीचन्द और भरथरी आये थे उन्होनें सैनी से कुछ वार्तालाप भी किया था। उस प्रसंग में शब्द भी सुनाया था। ''सुण गुणवंता सुण बुधवन्ता मेरी उत्पति आदि लुहारूं'' शब्द 96। गोपीचन्द और भरथरी की जोड़ी सदा सदा के लिये अजर अमर हो गई। कहते है कि अब भी ये दोनों जीवित है। ऐसा योग का उतम प्रभाव है जो मृत्यु को भी योग साधना के द्वारा जीता जा सकता है। किन्तु इस समय ऐसा वातावरण सुलभ नहीं है और न ही ऐसा सिद्ध पुरूष गुरु ही प्राप्त है और न ही चेला ही तैयार है। ''कबही को गृह उथरी आवै, सैतानी

साथे लियो''। ऐसी दशा इस समय हो चुकी है।

धुन-1

प्रात:-आये म्हारे जम्भगुरु जगदीश, सुर नर मुनि हरि नै नांवै सीस।
सांयकाल-गुरू आप समराथल आये हो, म्हारे सन्तों के मन भाये हो।।
लोहट घर अवतारा हो, ऐतो धिन धिन भाग हमारा हो।1।
अलख निरंजन आये हो, म्हारे सन्तों के मन भाये हो।2।
घट - घट मांय बिराजे हो, ऐतो सरस सबद धुनि गाजे हो।3।
जांके चरण कोई ध्यावे हो, ऐतो चार पदार्थ पावे हो।4।
समराथल आसण साजे हो, ऐतो झिगमिग जोत विराजे।5।
नंद घरे गऊवां चारी हो, ऐतो नख पर गिरवर धारि हो।6।
पूरण ब्रह्म अखण्डा हो, जांके रोम कोट ब्रह्मण्डा हो।7।
इस धुन को कोई गावे हो, ऐतो चार पदार्थ पावे हो।8।
जंभ गुरू की आशा हो, ऐतो यश गावै गंगादासा हो।9।

आरती-2

संध्या सुमरण आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा वाचा कर्मणां, सतगुरु चरण निवास।
पींपासर सूं परगटे, द्वादस कारण देव।
ब्रह्मादिक पावै नहीं, अद्‌भुत जांको भेव।
सीस धरणी धर करत हूं, नमस्कार सौ बार।
इष्टदेव बाबो जम्भगुरु, लीला हित अवतार।

आरती-3

आरती कीजे गुरू जम्भ जती की, भगत उधारण प्राण पति की
पहली आरती लोहट घर आये, बिन बादल प्रभु इमिया झुराए।1।
दूसरी आरती पींपासर आये, दूदा जी नें प्रभु परचो दिखाए।2।
तीसरी आरती समराथल आए, पूला जी नें प्रभु स्वर्ग दिखाए।3।
चौथी आरती अनूवे निवाए, भूंच लोक प्रभु पात कहाए।4।
पांचवीं आरती ऊधो जन गावे, वास वैकुण्ठ अमर पद पावै।5।

आरती-4

आरती कीजे श्री जम्भ तुम्हारी, चरण शरण मोही राखो मुरारी
पहली आरती उनमुन कीजे, मन बच कर्म चरण चित दीजे।1।

दूसरी आरती अनहद बाजा, श्रवणे सुना प्रभु शब्द अवाजा।2।
तीसरी आरती कंठसुर गावे, नवध्या भक्ति प्रभु प्रेम रस पावे।3।
चौथी आरती हिरदै में पूजा, आत्मदेव प्रभु और न दूजा।4।
पांचवीं आरती प्रेम प्रकाशा, कहत ऊधो साधो चरण निवासा।5।

आरती-5

आरती कीजै श्री जम्भ गुरू देवा, पार न पावै बाबो अलख अभेवा।
पहली आरती परम गुरू आये, तेज पुंज काया दर्शाये।
दूसरी आरती देव विराजे, अनन्त कला सत्गुरू छवि छाजे।
तीसरी आरती त्रिशूल ढ़ापे, खुध्या तृष्णा निंद्रा नहीं व्यापै।
चौथी आरती चहुं दिश परसे, पेट पूठ नहीं सन्मुख दरसे।
पांचवीं आरती केवल भगवन्ता, शब्द सुण्या जो जन पर्यन्तां।
ऊधोदास जी आरती गावे, श्री जम्भ गुरू जी को पार न पावै।

आरती-6

आरती कीजे श्री महाविष्णु देवा, सुरनर मुनिजन करे सब सेवा।।
पहली आरती शेष पर लोटे, श्री लक्ष्मी जी चरण पलोटे।।
दूसरी आरती खीर समुद्र ध्यावे, नाभ कमल ब्रह्मा उपजाए।।
तीसरी आरती विराट अखण्डा, जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा।।
चौथी आरती वैकुण्ठे विलासी, काल अंगूठ सदा अविनाशी।।
पांचवीं आरती घट-घट वासा, हरि गुण गावे ऊधौ जी दासा।।

आरती-7

आरती कीजे नरसिंह कंवर की, वेद विमल यश गावे मेरे स्वामी जी की।।
पहली आरती पहलाद उबारे, हिरणाकुश नख उदर बिदारे।
दूसरी आरती बावन सेवा, बलि के द्वारे पधारे हरि देवा।
तीसरी आरती वैकुण्ठ पधारे, सहस्त्राबाहु जी के कारज सारे।
चौथी आरती असुर संहारे, भक्त विभीषण लंक बैठाये।
पांचवीं आरती कंस पछाड़े, गोपियां ग्वाल सदा प्रतिपाले।
तुलसी के पात जो घट घट हीरा, हरि के चरण गुण गावे रणधीरा।

आरती-8

संध्या आरती विष्णु तुम्हारी, चरणों की शरण मोहि राखो मुरारी।टेर।
पहली आरती कंवला कर की, सकल शिरोमणी सचराचर की।1।

दूसरी आरती प्रेम प्रकाशी, अन्तर घट घट के तुम वासी।2।
तीसरी आरती पुष्प विराजै, भक्त हृदय संशय सब भाजै।3।
चौथी आरती वैकुण्ठे निवासी, लक्ष्मी सहित करो तुम वासी।4।
पांचवीं आरती मोतीराम गावै, महा विष्णु को शीश निवावै।5।

आरती-9

ओम जय जम्भेश हरे, प्रभु जय जम्भेश हरे।
तुमरो नाम रटत ही, कोटिक जीव तरे।टेर।
पूरण ब्रह्म दयामय, शंकर अवनाशी।
विष्णु रूप धरंता, घट घट के वासी।1।
तुम हो सर्व गुणां कर, सतगुरु ओमकारा।
नेति नेति कहि गावै, नहीं पावै पारा।2।
परमानन्द नारायण, निश्चय जगदीशा।
शिव ब्रह्मादिक नवावत, तुमको नित शीशा।3।
तुम हो अलख निरंजन, आनन्द के देवा।
तीन ताप मिट जाते, करते ही सेवा।4।
प्रभु तुम दीन दयालु, संतन हितकारी।
कर में माल सुहावत, मुख शोभा न्यारी।5।
सम्भराथल पे विराजे, जग पालन कर्त्ता।
झिगमिग ज्योति प्रकाशे, भव दुख के हर्ता।6।
जम्भदेव की आरती, सेवक जन गावै।
परमानन्द लूटकर, हरि दर्शन पावै।7।

आरती-10

कूं कूं केरा चरण पधारो गुरू जम्भदेव, साधु जो भक्त थारी आरती करे।
जम्भ गुरू ध्यावे सो सर्व सिद्धि पावे, सन्तों क्रोड़ जन्म केरा पाप झरे।
हृदय जो हवेली मांही रहो प्रभु रात दिन, मोतियन की प्रभु माला जो गले।
कानां बिच कुण्डल, शीश पर टोपी नयना मानों दोय मसाल सी जरे।
कूं कूं केरा चरण पधारो गुरू जम्भदेव.....................।
सोने रो सिंहासन प्रभु रेशम केरी गदियां, फूलांहांदी सेज प्रभु बैस्यां ही सरै।
प्रेम रा पियाला थानें पावे थारा साधु जन, मुकुट छत्र सिर चंवर डुले। कूं कूं केरा.
शंख जो शहनाई बाजे झींझा करे झननन, भेरी जो नगारा बाजे नोपतां घुरे।

कंचन केरो थाल कपूर केरी बातियां, अगर केरो धूप रवि इन्द्र जो घुरे।।
मजीरा टंकोरा झालर घंटा करे घननन, शब्द सुण्या सो सारा पातक जरै।
शेश से सेवक थारे शिव से भंडारी ब्रह्मा से खजांची सो जगत घरे।।कूं कूं केरा.
आरती में आवे आय शीश जो नवावे, निश जागरण सुने जमराज डरे।
साहबराम सुनावे गावे नव निधि पावै, सीधो मुक्त सिधावे काल कर्म जो टरै।
कूं कूं केरा चरण पधारो..।

आरती-11

आरती हो जी समराथल देव विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसलदे माय थारी करे हो भक्त लिव लाय।
सुर तेतीसों सेवक जांके, इन्द्रादिक सब देव।
ज्योति स्वरूपी आप निरंजन कोई एक जानत भेव।विष्णु....।।
पूर्ण सिद्ध जम्भ गुरू स्वामी अवतरे केवल्य एक।
अन्धकार नाशन के कारण हुए हुए आप अलेख।विष्णु हर..।
समराथल हरि आन विराजे तिमिर भयो सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा आये आये सकल हजूर।विष्णु हर.।
समराथल की अद्भुत शोभा वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे निर्गुण शब्द उचार।विष्णु हर..।
वर्ष इक्यावन देव दया कर कीन्हों पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुनाये, तारण भव जल पार।विष्णु हर.।
पन्थ जाम्भाणों सत्य कर जाणों यह खांडे की धार।
सत प्रीत सों करो कीर्तन इच्छा फल दातार।विष्णु हर.........।
आन पन्थ को चित से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो पावो पद निर्वाण। विष्णु
भक्त उद्धारण काज संवारण श्री जम्भगुरू निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी मंगल के सुख धाम। विष्णु हर।
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन श्री जम्भगुरू अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की आवागवण निवार।
विष्णु हर की आरती जे।।

आरती-12

आरती जय जम्भेश्वर की, परम सतगुरु परमेश्वर की।टेक।

गुरुजी जब पींपासर आये, सकल संतों के मन भाये।
देवता सिद्ध मुनि दिग्पाल, गगन में खूब बजावै ताल।
हुवा उछाव लोहट नर नांह, मगन मन मांह।
देख छवि निज सुत सुन्दर की।1।
परम सुख हांसा मन मांही, प्रभु को गोदी बैठाई।
नगर की मिली सभी नारी, गीत गावै दे दे तारी।
अलापे राग बड़े है भाग, पुण्य गये जाग।
धन्य है लीला नटवर की।2।
चरानें गऊवों को जावै, चरित्र ग्वालों को दिखलावै।
करे सैनी से सब काजा, कहावै गूंगे जम्भराजा।
रहे योगीश भक्त के ईश, गुरु जगदीश।
पार नहीं महिमा प्रभुवर की।3।
गुरुजी फिर सम्भराथल आये, पंथ श्री बिश्नोई चलवाये।
होम जप तप क्रिया सारे, देख सुरनर मुनि सब हारे।
किया प्रचार वेद का सार, जगत आधार।
सम्मति जिसमें विधि हर की।4।
गुरुजी अब सेवक की सुनियो, नहीं अवगुण चित में धरियो।
शरण निज चरणों की रखियो, पार नैया भव से करियो।
यही है आस राखियो पास, कीजियो दास।
कहूं नित जय जय गुरुवर की।5।

आरती-13

ओ३म् शब्द सोहं ध्यावे, स्वामी शब्द सोहं ध्यावे।
धूप दीप ले आरती, निज हरि गुण गावे।
मन्दिर मुकुट त्रिशूल ध्वजा धर्मो की फररावे।
झालर शंख टंकोरा, नोबत धररावे।।1।।
तीर्थ तालवो गुरू की समाधी, परस स्वर्ग जावे।
अड़सठ तीर्थ को फल समराथल पावे।।2।।
फागण मंझ शिव रात यात्री, रल मिल सब आवे।
झिगमिग ज्योति समराथल, शम्भु के मन भावे।।3।।
धर्मी करत आनन्द भवन में, पापी थररावे।

राजू शरण गुरू की, क्यों मन भटकावे।4।
ओ३म् शब्द सोहं ध्यावे..................।

आरती-14

जय गुरू देव दया निधि, दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक, भव बंधन हारी।।
ओ३म् जय गुरू देवा, जय...।।टेक।।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, गुरू मुरती धारी।
वेद पुरान बखानत,गुरू महिमा भारी।ओ३म् जय....।1।
जप तप तीर्थ संयम, दान विविध दीन्हें।
गुरू बिन ज्ञान न होवे, कोटि यत्न कीन्हें।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.......।।2।।
माया मोह नदी जल, जीव बहै सारे।
नाम जहाज बिठा कर, गुरू पल में तारे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय........।।3।।
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे।
ज्ञान खड़ग ले कर में, गुरू सब संहारे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.......।।4।।
नाना पन्थ जगत में, निज निज गुण गावे।
सब का सार बताकर, गुरू मारग लावे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.........।।5।।
गुरू चरणामृत निर्मल सब पातक हारी।
बचन सुनत तम नाशे, सब संशय टारी।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.........।।6।।
तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे।
''ब्रह्मानन्द'' परम पद, मोक्ष गति दीजे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय........।।7।।

आरती-15

ओम जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करै।टेर।
जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मन का।

सुख सम्पति घर आवै, कष्ट मिटे तन का।1।
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम विन ओर न दूजा, आस करूं जिसकी।2।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामि।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी।3।
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।4।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पति।
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।5।
दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।6।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।7।

साखी से पूर्व में गाये जाने वाले छपइये आगे दिये जा रहे है किस साखी से पूर्व कौनसा छपइया गाया जायेगा यह तो गाने वाले पर ही निर्भर करता है जो जिस साखी से सम्बन्ध रखता है उसे वहीं पर ही प्रयोग करें।

विविध छन्द

विसन जमै के देत ही, पाप विलय हो जाय।
वरष एक में गुरु वचन, जमो करो चित लाय।
जमो करो चित लाय, गऊ दस को पुन होई।
मन इच्छित प्रवाण, सुरग में प्राप्ति सोई।
अन्न धन लिछमी चौगुणी, पुत्रा हुवै हुलाश।
एक गऊ को पुन हुवै, सुणे सुणावै तास।1।
नागौर के परगने, जिले जोधपुर जांण।
पींपासर में प्रकाशिया, सही जे उग्यो भांण।
शीश धरणी धर करत हूं, नमस्कार सौ बार।
इष्ट देव बाबो जम्भ गुरु, लीला हित अवतार।
पींपासर प्रकाशिया, गुरु देवन के देव।
ब्रह्मादिक पावै नहीं, अद्‌भुत जांको भेव।2।
तपै गगन्दर सूर चन्द्र, पणि एको छाजै।

पणी नाऊ एक पवण, पणि एको बाजै।
महि पणि एको एक, वासुदेव एकलवाई।
जम्भ गुरु पणि एक डरे, डर जपो रे भाई।
घणां रूप आगे किया, मान गर्व दैत्या मल्यो।
जम्भ सरीखो इसो गुरु, जुग जुग ओहि संभल्यो।3।
पुरूष प्रगटयो एक, पाप पुनि भेद कथन्तो।
नही भूख तिस नींद, रहयो निरंकार निरंतो।
रूंख बिरख विश्राम, तजि मन हूं तै माया।
मेड़ी मण्डप कोट, तजि घर मन्दिर छाया।
वील्हा सोच विचार अब मन, साधां गुरु सांचो मिल्यो।
जम्भ सरीखो इसो गुरु, जुग जुग और न सांभल्यो।4।
धन्य ही जंगल सम्भराथल, धन्य ही बाल गुंवाल।
जां के संग सतगुरु रम्यो, लालण लिल्ल भंवाल।
हरि कंकेहड़ी धन्य जहां, प्रभ कियो प्रवेश।
रूंखां बल रल आवणां, रमतो बालो वेश।
परच्या पशु अरू पक्षिया, जीवां उतम जात।
हुवा पवित्र जोत सी, परची गुप्त न्यात।
धन्य दिहाड़ौ रेण ही, प्रगट्यो गुरु संसार।
वील्ह कहै जेहि ओलख्यो, तेहि उतरसी पार।5।
दूदा दसोटो दियो, मन में घणो सधीर।
कूवै ऊपर निरखियो, जग तारण जम्भ वीर।
थलिये ओट दूदो मिल्यो, तुठा सारा काज।
जब लग खांडो राखसी, तब लग निश्चल राज।
दूदा दुर्जन पालटै, जे चढ़ आवै भूप।
आज्ञा छै जम्भदेव की, अग्नि दीजै धूप।6।
नवण करूं गुरु जम्भ को, निऊं निर्मल भाय।
कर जोड़ै बंदो चरण, शीश निवाय निवाय।
निवणी खिवणी विणती, सब सूं आदर भाव।
कह केशो सोई बड़ा, जिहिं में घणां समाव।
आम फलै नीचो निवै, ऐरण्ड ऊंचो जाय

नुगुर सुगुर की पारखा, कह केशो समझाय।8।
देवजी तेरे नाव नै, साधु बलिहारी जाव।
हूं बलिहारी जो मोमिणां, जपै जो तेरा नांव।
सतगुरु विणजारो हुवो, गुण्यां छली रतनाह।
सत सुकरत क्रिया धर्म, लइयो पार खुवांह।9।
अड़वो चुगै न चुगण दै, माणस की उणियार।
वील्ह कहै रे भाइयो, सूम बड़ो संसार।10।
सुवा सुफरा बोलिये, विफरा बोलो कांव।
छन्दां ज्यांरा छाइये, जिण रे बसिये गांव।
जैसे कूवा जल बिना, खिण्या ज कैसे कांम।
मिनखा देही पायकर, भजो नहीं भगवान।
दीसण लागा रूंखड़ा, नेड़ो आयो गांव।
परसा विलम्ब न कीजिये, लीजै हरि को नाम।11।

साखी - कवि रामकरण

जाम्भोजी संभराथले, बेठा आसन धार।
स्वर्ग दिखाकर पूल्हव को, शंका दीवी निवार।टैक।
पन्दरा सौ बंयालिये, विक्रम सम्वत् विचार।
लागत काती मास में, आठम वदि गुरुवार।।
ऐक पहर दिन जब चढ़ियो, ओ३म् विष्णु जप धार।
कलश पास जम्भ विराजिया, पास में पूल्हव पंवार।।
कलश हाथ पूल्हव दियो, जाम्भोजी मंत्र उचार।
माला ओ३म् विष्णु नाम की, जब घूमी जल मंझार।।
ओ३म् विष्णु के नाम से, भयो पाहल तइयार।
बिश्नोई पंथ प्रकट कियो, पहला पूल्ह पंवार।।
पाहल दियो ऐकल प्याले, पूंण छत्तीस संभार।
चहुं चक का मिल मानवी, पाहल पिया उंणवार।।
आठम अमावश बीच में, पंथ चाल्यो इकतार।
भव सागर की जहाज है, चढ़े सो उतरे पार।।
काज होवे भल जीव को, टले जमो की मार।

ओ३म् विष्णु ऐक मूल है, सब जग रचने हार।।
जाऐ जीव मत पूजियो, गुरु कहै दिये मंत्र उचार।
रामकरण कहै देव है, ऐक ओ३म् विष्णु करतार।।

साखी (बीरबल खीचड़ की), छप्पइया, दूसरी साखी

सतयुग धर्म विशेष, चार पेर बतलाया।
त्रेता में पग तीन, द्वापर दोय गिंणाया।।
कलियुग में पग ऐक, डिगे है चहुं दिश भारी।
धर्म हीण संसार, घात करे नर नारि।।
कलियुग बहे करूर, पाप पूरे जग छावियो।
अबखी बेलां मांय, बीरबल धर्म कमावियो।।

साखी छन्दां की

हरिणां तणो शरीर, बीरबल खीचड़ ने दियो।
करोड़ तेतीसां सीर, बास बेकुठां में कियौ।टैक।
बास बेकुठां में कियो नै, विष्णु भक्त सुजाण।
फलोदी रे परगनै, अरू जीला जोधपुर जान।।
लाछां जांगु लाडलो नै, सुत बिड़दे रो वीर।
गांव लोहावट ढ़ाणियां में, हरिणा तणों शरीर।।
बीरबल खीचड़ नें दियो।।१।।
सहंस दोय चौंतीस, विक्रम सम्वत् बखाणीयो।
मास मिंगसर रे बीच, शनी सातम सुध जाणीयो।
शनी सातम सुध जाणियो नैं, बेठो गोवल मंझार।
खड़को हुवो बन्दूक रो नै, कान पड़ी भणकार।।
दोड़्यो बीरबल माला जपतो, सुमिर रयो जगदीश।
मरियो मिरघो देखियो नै, सहंस दोय चौंतीस।।
विक्रम सम्वत् बखाणियो।।२।।
पकड़ लिया उण वार, पापी थर्र थर्र काम्पीया।
देख्यो कंध करार, हतियारा मन हांफिया।।

हतियारा मन हांफिया नै, छोड़ै नहीं लिगार।
गोली मारी बुरी बिचारी, पापी हुवे फरार।।
हरिण बराबर सोयो धर्मी, छोड़ मोह परिवार।
बिश्नोई पूरो खरो नै, पकड़ लिया उण वार।।
पापी थर्र थर्र काम्पीया।।३।।
बूचे भक्त सुमार, साबत धर्म नें राखियो।
अंत सुमिर करतार, निर्वंण बीरबल भाखियो।।
निर्वंण बीरबल भाखियो नें, चूंण साथरी हेत।
जीव ना मारे रूंख ना घावे, बिश्नोईयां रे खेत।।
दोजक में पापी पड़्या नै, स्वर्ग गयो सुचियार।
रामकरण साखी भणे नै, ओ३म् विष्णु आधार।।
साबत धर्म नें राखियो।।४।।

साखी-निहालचन्द

लख चौरासी जूंण, सब भगवंत की रचना।
भरण पोषण निज हाथ, खालक घर कोई खंचना।।
दया कर पालै जीव, दयालु दया के सागर।
अहित करे ना कोय, सबका हितेसी परमेश्वर।।
पापी मारे जीव, धर्मी जन रक्षा करे।
पर स्वार्थ के काज, जीव सटै बिश्नोई मरे।

साखी छन्दां की

निहालचन्द जग मांय, बारहा करोड़ संग मानिये।
चूरू जीला कहलाय, गांव सावंतसर जानिये।।टैक।।
गांव सांवतसर जानिये नै, डूंगरगढ़ तहसील।
आये शिकारी हरिण मार लिये, करी ना ऐक पल ढ़ील।।
निहालचन्द बिश्नोई धारणियां, भगवंत ध्यान लगाय।
हतियारों को जा ललकारा, जल्दी पहुंचिया जाय।।
गांव सांवतसर जानिये।।१।।
शिकारी हरिण लिये मार, ऊंटों पर ले भागिया।
कांकड़ टिपण दिया नांय, पीछे निहालचन्द लागिया।।

पीछे निहालचन्द लागिया नै, सब को घेरा जाय।
बोला निहालचन्द हरिण मारिया, तुम्हें भागण दूं नांय।।
सजा भोगणी पड़सी तुमको, कहै दिये बचन सुनाय।
बिश्नोईयों की कांकड़ में क्यों, हरिण मार लिये आय।।
पीछे निहालचन्द लागिया।।२।।
जय भगवंत री बखाण, सनमुख डट गया सूरवां।
सीना लिया अपणां तांण, दुष्टों का उखड़िया पेर वहां।।
दुष्टी का गया पेर उखड़ वहां, सभी गए घबराय।
गोली मारी निहालचन्द के, धरणी दिया गिराय।।
भगवंत कृपा निहालचन्द पर, ओ३म् विष्णु को ध्यान।
गिरा ऊंट से दुष्ट शिकारी, ऊंट लात गए प्रान।।
दुष्टों का उखाड़िया पेर वहां।।३।।
आए बिश्नोई चाल, बाकी दुष्ट सब भागिया।
विष्णु सिंवर ततकाल, निहालचन्द स्वर्ग सिधाविया।।
निहालचन्द स्वर्ग सिधाविया नै, पापी डूबे मंझधार।
आसोज वदी सप्तमी के दिन, कहिये वार गुरुवार।।
दो हजार अरु त्रेपने में, विक्रम सम्वत् को साल।
रामकरण कहे ओ३म् विष्णु जप, साखी कथी है संभाल।।
निहालचन्द स्वर्ग सिधाविया।।४।।

जागरण

पहलो जम्मलो संभराथल पर, जाम्भोजी आप रचायो जीवनै।।टेक।।
पन्दरहा सौ का सम्वत् तंईयाला, फागुण मास बतायो।
सोमवार वदी चवदश मेलो, संभराथल भरवायो।।
दूजो जम्मलो बाजे के घर, जाम्भोजी आय लगायो।
तरड़ गोत्र जसरासर मांही, जाम्भोजी ज्ञान सुणायो।।
सांझे जम्मो सवेरे थापण, गुरु की नाथ डरायो।
वर्ष एक में जम्मलो करिये, हित कर शब्द सुणायो।।
प्रेम भाव से जम्मलो रचावो, सुकरत काम भोलायो।
साधन भजन ओ३म् विष्णु का, उनसे ही भाव बढ़ायो।।
जेसा कर्म करे जो प्राणी, वेसो ही फल पायो।

ओ३म् विष्णु एक साच नाम है, साचो नाम जपायो।।
निराकार साकार वही है, भजे सो उनको पायो।
आन देव को कभी ना पूजो, पाखंड घोर हटायो।।
धर्म नियम गुणतीस बताकर, धारण भी करवायो।
द्वेश भाव किणसूं नहीं राख्यो, क्रिया सार बतायो।।
साधे मोमणे आज्ञा मान कर, रल मिल जम्मो छवायो।
नर नारि जम्मले में आवो, राखे हेत सवायो।।
प्रीती कर गुरु बचन निभावो, भर्म को दूर भगायो।
रामकरण कहै ओ३म् विष्णु शरणे, साचो साच सुणायो।।
गुरु मुख होय ज्ञान गुण धारी, शब्द गुरु दर्शायो।
पहलो जम्मलो संभराथल पर, जाम्भोजी आप रचायो।।

उपर्युक्त चार साखियां रामकरण जी पूनियां द्वारा रचित साभार संग्रहित की गई है।